टोबा टेकसिंह

सआदत हसन मण्टो

सम्पादक तथा अनुवादक
प्रकाश पण्डित

निधि प्रकाशन

क्रम

परिचय

मेरे जीवन की सबसे बड़ी घटना मेरा जन्म था। मैं पजाब के एक अज्ञात गाव 'समराला' मे पैदा हुआ। यदि किसीको मेरी जन्म-तिथि से दिलचस्पी हो सकती है तो वह मेरी मा थी, जो अब जीवित नही है। दूसरी घटना 1931 मे हुई जब मैंने पजाब यूनिवर्सिटी से दसवीं की परीक्षा लगातार तीन साल फेल होने के बाद पास की। तीसरी घटना वह थी जब मैंने 1939 मे शादी की, लेकिन यह घटना दुघटना नही थी और अब तक नही है। और भी बहुत सी घटनाए हुइ, लेकिन उनसे मुझे नही दूसरों को कष्ट पहुचा। उदाहरणस्वरूप मेरा कलम उठाना एक बहुत बडी घटना थी, जिससे 'शिष्ट' लेखकों को भी दुख हुआ और 'शिष्ट' पाठकों को भी।

मैंने कुछ साल बम्बई मे गुजारे और फिल्मी कहानिया लिखी। आज-कल लाहौर मे हू और फिल्मी नही, केवल साधारण कहानिया लिख रहा हू। लगभग दो दर्जन कहानी सग्रह प्रकाशित हो चुके है, जिनके नाम गिनवाकर आपको परेशान नहीं करना चाहता। अपना मौजूदा पता भी इसीलिए नही लिख रहा, क्योंकि स्वय भी परेशान नही होना चाहता।

यह सक्षिप्त परिचय मन्टो ने मुझे उस समय लिख भेजा था जब 1954 मे मैं उर्दू की सवश्रेष्ठ कहानियों का चयन कर रहा था। अब तो सचमुच मन्टो के निवास-स्थान का कोई पता नही है क्योंकि इस ज्वाले कहानीकार का 1955 मे अकाल देहान्त हो गया था।

मन्टो उर्दू का एकमात्र ऐसा कहानी-लेखक था जिसकी रचनाए जितनी पसद की जाती हैं उतनी ही नापसद भी। और इसम किसी सन्देह की गुन्जायश नही है कि उसे गालिया देन वाले लोग ही सबसे अधिक उसे पढते है। ताबड-तोड गालिया खाने, और 'काली सलवार, बू, 'धुआ', 'ठडा गोश्त' इत्यादि 'अश्लील' रचनाओं के कारण बार-बार अदा-

लता के कटहरो म घसीट जाने पर भी वह बराबर उस वातावरण और उन पात्रो के सम्बन्ध मे कहानिया लिखता रहा जिन्ह 'सभ्य' लोग घृणा की दष्टि स देखते है और अपने समाज मे कोई स्थान देने को तयार नही । यह सही है कि जीवन के बार म मन्टो का दष्टिकोण कुछ अस्पष्ट और एक सीमा तक निराशावादी है । स्वस्थ पात्रो की बजाय उसन अधिकतर अस्वस्थ पात्रो को ही अपना विषय बनाया है और अपन युग का वह बहुत बडा Cynic था लेकिन मानव मनोविज्ञान को समझने और फिर उसक प्रकाश मे बनावट और झूठ का पर्दाफाश करने की जो क्षमता मन्टो को प्राप्त थी वह नि सन्देह किसी अन्य उर्दू लेखक को प्राप्त नही है।

जहा तक कलात्मक प्रौढता का सम्बन्ध है मेरे विचार म उर्दू के आधुनिक युग का कोई कहानी लेखक मन्टो तक नही पहुचता । हम उसके सिद्धान्तो स मतभेद हो सकता है । हम यह कह सकते हैं कि कोई कलाकृति उस समय तक महान नही हो सकती जब तक कि कलात्मक प्रौढता के साथ-साथ उसम रचनात्मक पहलू न हो । लेकिन उसकी लेखनी पर उगली रखकर कभी यह नही कह सकते कि कला की दष्टि से उसमे कोई भोल है या यह कि लेखक अपने सिद्धान्तो और मान्यताओ के प्रति निष्कपट नहीं ।

—प्रकाश पण्डित

नया कानून

मगू कोचवान अपने अडडे में बहुत अक्लमन्द आदमी समझा जाता था, हालाकि उसकी शिक्षा शून्य के बराबर थी और उसने कभी स्कूल का मुह भी नही देखा था। लेकिन इसके बावजूद, उसे दुनिया भर की बातो का पता था। अडडे के वे सारे कोचवान, जिनको यह जानने की इच्छा होती थी कि दुनिया के अन्दर क्या हो रहा है, उस्ताद मगू की विस्तृत जानकारी से लाभ उठाने के लिए उसके पास जाते थे।

पिछले दिनो, जब उस्ताद मगू ने अपनी एक सवारी से स्पेन मे जग छिड जाने की अफवाह सुनी थी तो उसने गामा चौधरी के चौडे कन्धे पर थपकी देकर ज्ञानियो के से अन्दाज मे भविष्यवाणी की थी, देख लेना चौधरी थोडे ही दिनो में स्पेन के अन्दर जग छिड जायेगी।'

और जब गामा चौधरी ने उससे यह पूछा था कि यह स्पेन कहा पर है तो उस्ताद मगू ने बडी गम्भीरता से जवाब दिया था, 'विलायत में, और कहा ?'

स्पेन मे जग छिडी और जब हर आदमी को इसका पता चला गया तो स्टेशन के अड्डे मे जितने कोचवान घेरा बनाए हुक्का पी रहे थे, मन ही मन मे उस्ताद मगू की महानता' स्वीकार कर रहे थे और उस्ताद मगू उस समय माल रोड की चमकीली सडक पर तागा चलाते हुए अपनी सवारी मे ताजा हिन्दू मुस्लिम फसाद पर 'विचार विनिमय' कर रहा था।

उस दिन शाम के करीब, जब वह अडडे में आया तो उसका चेहरा गैर-मामूली तौर पर तमतमाया हुआ था। हुक्के का दौर चलते चलते, जब हिन्दू-मुस्लिम दगे की बात छिडी तो उस्ताद मगू ने सिर पर से खाकी पगडी उतारी और बगल मे दाबकर बडे 'विचारको' के-से अदाज में कहा

'यह किसी पीर की बद दुआ का नतीजा है कि आए दिन हिन्दुओ

और मुसलमानों मे चाकू छुरियां चलते रहते है और मैंने अपने बडो से सुना है कि अकबर बादशाह ने किसी दरवेश का दिल दुखाया था और उस दरवेश ने जलकर यह बद दुआ दी थी—जा, तेरे हिंदुस्तान मे हमेशा फसाद ही होते रहेंगे। और देख लो जब से अकबर बादशाह का राज खत्म हुआ है हिंदुस्तान मे फसाद पर फसाद होते रहते हैं।' यह कहकर उसने ठण्डी सांस भरी और फिर हुक्के का दम लगाकर अपनी बात कहनी शुरू की, 'ये कांग्रेसी हिंदुस्तान को आजाद कराना चाहते हैं। मैं कहता हूं अगर ये लोग हजार साल भी सर पटकते रहें तो कुछ न होगा। बडी से बडी बात यह होगी कि अंग्रेज चला जाएगा और कोई इटलीवाला आ जाएगा, या वह रूस वाला, जिसके बारे मे मैंने सुना है कि बहुत तगडा आदमी है। लेकिन हिंदुस्तान सदा गुलाम रहेगा। हां, मैं यह कहना भूल ही गया कि पीर ने यह बद दुआ भी दी थी कि हिंदुस्तान पर हमेशा बाहर के आदमी राज करते रहेंगे।'

उस्ताद मंगू को अंग्रेजो से बडी नफरत थी। इस नफरत का कारण वह यह बतलाया करता था कि वे उसके हिंदुस्तान पर अपना सिक्का चलाते हैं और तरह तरह के जुल्म ढाते हैं। मगर उसकी नफरत की सबसे बडी वजह यह थी कि छावनी के गोरे उसे बहुत सताया करते थे। वे उसके साथ ऐसा बर्ताव करते थे जैसे वह एक जलील कुत्ता हो। इसके अलावा उसे उनका रंग भी बिलकुल पसन्द न था। जब कभी वह किसी गोरे के सुर्ख सफेद चेहरे को देखता तो उसे मतली सी आ जाती न जाने क्यों। वह कहा करता था कि उनके लाल झुर्रियां भरे चेहरे देखकर उसे वह लाश याद आ जाती है, जिसके जिस्म पर से ऊपर की झिल्ली गल गलकर झड रही हो।

जब किसी शराबी गोरे से उसका झगडा हो जाता तो सारा दिन उसकी तबियत नाखुश रहती और वह शाम को अड्डे मे आकर लम्प मार्का सिगरेट पीते या हुक्के के कश लगाते हुए उस गोरे को जी भरके सुनाया करता।

मोटी सी गाली देने के बाद वह ढीली पगडी समेत अपने सिर को झटका देकर कहा करता था, आग लेने आए थे, अब घर के मालिक

ही बन गए हैं। नाक में दम कर रखा है इन बन्दरों की औलाद ने। ऐसे रौब गाठते है, जैसे हम उनके बाबा के नौकर हों'

इसपर भी उसका गुस्सा ठण्डा नहीं होता था। जब तक उसका कोई साथी उसके पास बैठा रहता, वह अपने सीने की आग उगलता रहता।

'शक्ल देखते हो न तुम उसकी जैसे कोढ हो रहा हो। बिलकुल मुर्दार—एक धप्प की मार। और गिट पिट, गिट पिट यो बक रहा था, जैसे मार ही डालेगा। तेरी जान की कसम, पहले पहल जी में आई कि साले की खोपडी के पुर्जे उडा दू, लेकिन इस खयाल से टाल गया कि इस मरदूद को मारना भी अपनी हतक है।' यह कहते-कहते वह थोडी देर के लिए खामोश हो जाता और नाक को खाकी कमीज की आस्तीन से साफ करने के बाद फिर बडबडाने लग जाता।

'कसम है भगवान की, इन लाट साहबो के नाज उठाते उठाते तग आ गया हू। जब कभी इनका मनहूस चेहरा देखता हू रगो मे खून खौलने लग जाता है। कोई नया कानून-वानून बने तो इन लोगो से छुटकारा मिले। तेरी कसम, जान मे जान आ जाए।'

और जब एक दिन उस्ताद मगू ने कचहरी से अपने ताग पर दो सवारिया लादी और उनकी बातो से उसे पता चला कि हिदुस्तान मे नया कानून लागू होने वाला है तो उसकी खुशी का कोई ठिकाना न रहा।

दो मारवाडी, जो कचहरी मे अपने दीवानी के मुकदमे के सिलसिले मे आये थे, वापस घर जाते हुए नये कानून यानी 'इण्डिया ऐक्ट' के बारे मे बातें कर रहे थे।

सुना है कि पहली अप्रैल से हिदुस्तान मे नया कानून चलेगा? क्या हर चीज बदल जाएगी?

'हर चीज तो नही बदलेगी, मगर कहते है कि बहुत कुछ बदल जाएगा और हिदुस्तानियो को आजादी मिल जाएगी।'

'क्या ब्याज के बारे मे भी नया कानून पास होगा?'

'यह पूछने की बात है। कल किसी वकील से पूछेंगे।'

उन मारवाडियो की बातचीत उस्ताद मगू के दिल मे नाकाबिले-बयान खुशी पैदा कर रही थी। वह अपने घोडे को हमेशा गालिया देता

जब नत्थू गंजा पगड़ी बगल में दबाए अड्डे में दाखिल हुआ तो उस्ताद मंगू बढ़कर उससे मिला और उसका हाथ अपने हाथ में लेकर ऊँची आवाज में कहने लगा, 'ला हाथ इधर। ऐसी खबर सुनाऊं कि तेरा जी खुश हो जाए। तेरी इस गंजी खोपड़ी पर बाल उग आएं।'

और यह कहकर मंगू ने बड़े मजे ले लेकर नये कानून के बारे में अपने दोस्त से बातें शुरू कर दीं। बातों के दौरान उसने कई बार नत्थू गंजे के हाथ पर जोर से अपना हाथ मारकर कहा 'तू देखता रह, क्या बनता है। यह रूस वाला बादशाह कुछ न कुछ जरूर करके रहेगा।'

उस्ताद मंगू मौजूदा सोवियत रूस की समाजवादी सरगर्मियों के बारे में बहुत कुछ सुन चुका था और उसे वहां के नये कानून और दूसरी नई चीजें बहुत पसन्द थीं। इसीलिए उसने 'रूस वाले बादशाह' को 'इण्डिया ऐक्ट' यानी नये विधान के साथ मिला दिया और पहली अप्रैल को पुराने निजाम में जो नई फेर बदल होने वाली थी, वह उस 'रूस वाले बादशाह' के असर का नतीजा समझता था।

कुछ अर्से से पशावर और दूसरे शहरों में सुखपोशों (गफ्फार खां के खुदाई खिदमतगारों) का आन्दोलन चल रहा था। उस्ताद मंगू ने उस आन्दोलन को अपने दिमाग में 'रूस वाले बादशाह' और फिर नये कानून के साथ खल्त-मल्त कर दिया था। इसके अलावा, जब कभी वह किसीसे ये सुनता कि अमुक शहर में इतने बम बनाने वाले पकड़े गए हैं या फलां जगह इतने आदमियों पर बगावत के इल्जाम में मुकदमा चलाया गया है तो वह इन सारी घटनाओं को नये कानून की पूर्वसूचना समझता था और मन ही मन बहुत खुश होता था।

एक दिन उसके तांगे में बैठे दो बैरिस्टर नये विधान की बहुत कड़ी आलोचना कर रहे थे और वह खामोशी से उनकी बातें सुन रहा था। उनमें से एक दूसरे से कह रहा था

'नये कानून का दूसरा हिस्सा फेडरेशन है जो मेरी समझ में अभी तक नहीं आया। ऐसा फेडरेशन दुनिया की तारीख में आज तक न सुना, न देखा गया है। सियासी नजरिये से भी यह फेडरेशन बिलकुल गलत है, बल्कि यों कहना चाहिए कि यह फेडरेशन है ही नहीं।'

उन बैरिस्टरा के बीच जो बातचीत हुई क्योंकि उसमे ज्यादातर शब्द अंग्रेजी के थे, इसलिए उस्ताद मगू सिर्फ ऊपर के जुमले को ही किसी कदर समझ पाया और उसने खयाल किया, ये लोग हिंदुस्तान मे नये कानून के आने को बुरा समझते हैं और नही चाहते कि इनका वतन आजाद हो। चुनाचे इस खयाल के असर मे उसने कई बार उन दो बरिस्टरो को हिकारत की नजरो से देखकर मन ही मन कहा 'टोडी बच्चे'!

जब कभी वह किसीको दबी जबान मे 'टोडी बच्चा' कहता तो दिल मे यह महसूस करके बहुत खुश होता था कि उसने इस नाम का सही जगह इस्तेमाल किया है और यह कि उसमे शरीफ आदमी और टोडी बच्चे मे फर्क करने की 'योग्यता' है।

इस घटना के तीसरे दिन वह गवर्नमेण्ट कालेज के तीन विद्यार्थियो को अपने तांगे मे बैठाकर मजग जा रहा था कि उसने उन तीनो लडको को आपस मे ये बातें करते सुना

नये कानून ने मेरी उम्मीदें बढा दी हैं। अगर साहब एसेम्बली के मेम्बर हो गए तो किसी सरकारी दफ्तर मे नौकरी जरूर मिल जाएगी।

वैसे भी बहुत सी जगहे और निकलेंगी। शायद इसी गडबड मे हमारे हाथ भी कुछ आ जाए।

हा हा, क्यो नही।

वे बेकार ग्रेजुएट जो मारे मारे फिर रहे हैं, उनमे कुछ तो कमी होगी।'

इस बातचीत ने उस्ताद मगू के दिल मे नये कानून का महत्त्व और भी बढा दिया और वह उसको ऐसी चीज समझने लगा, जो बहुत चमकती हो। 'नया कानून'। वह दिन मे कई बार सोचता 'यानी कोई नयी चीज'। और हर बार उसकी नजरो के सामने अपने घोडे का वह नया साज आ जाता जो उसने दो बरस हुए चौधरी खुदाबख्श से बडी अच्छी तरह ठोक बजाकर खरीदा था। उस साज पर जब वह नया था, जगह जगह लोहे की निकल चढी हुई कीलें चमकती थी और जहा जहा

पीतल का काम था वह तो सोने की तरह दमकता था। इस लिहाज से भी 'नये कानून' को चमकता दमकता होना जरूरी था।

पहली अप्रैल तक उस्ताद मगू ने नये विधान के पक्ष और विपक्ष मे बहुत कुछ सुना। पर उसके बारे मे जो खाका वह अपने मन म बना चुका था, उस वह बदल न सका। वह समझता था कि पहली अप्रल का नये कानून के आते ही सब मामला साफ हो जाएगा और उसका विश्वास था कि उसक आने पर जो चीजें नजर आएगी उनम उसकी आखो को जरूर ठण्डक पहुचेगी।

आखिर माच के इकतीस दिन खत्म हो गए और अप्रैल के शुरू होन मे रात क च द खामोश घण्ट बाकी रह गए। मौसम आम दिनो की अनि-स्बत ठण्डा था और हवा मे ताजगी थी।

पहली अप्रल को सुबह सवेरे उस्ताद मगू उठा और अस्तबल मे जाकर उसन तागे मे घोडे को जोता और बाहर निकल गया। उसकी तबियत आज असाधारण रूप से प्रस न थी। वह आज नये कानून को देखन वाला था।

उसन सुबह के सद धुधलके मे कई तग और खुले बाजारो का चक्कर लगाया मगर उसे हर चीज पुरानी नजर आई। आसमान की तरह पुरानी उसकी निगाह आज खास तौर पर नया रग देखना चाहती थी, पर सिवाय उस कलगी के, जो रग बिरगे परा स बनी थी और उसके घाडे के सिर पर जमी हुई थी, बाकी सब चीजें पुरानी नजर आती थी। यह नयी कलगी उसने नय कानून की खुशी म इकतीस माच को चौधरी खुदाबख्श स साढे चौदह आने म खरादी थी।

घोडे की टापो की आवाज, काली सडक और उसके आसपास थाडा-थोडा फासला छोडकर लगाए हुए बिजली के खम्भे, दुकानो के बोड, उसके घोडे के गले म पडे हुए घुघरुआ की झनझनाहट, बाजार मे चलते-फिरते आदमी—इनम स कौन सी चीज नयी थी? जाहिर है कि कोई भी नही। लेकिन उस्ताद मगू निराश नही हुआ।

अभी बहुत सवेरा है। दुकानें भी तो सबकी सब बन्द हैं। इस खयाल न उस तसकीन दी। इसके अलावा, वह यह भी सोचता था, 'हाई

कोट में तो नौ बजे के बाद ही काम शुरु होता है। अब इससे पहले नया कानून क्या नजर आएगा ?'

जब उसका तांगा गवर्नमेण्ट कालेज के दरवाजे के करीब पहुंचा तो कालेज के घडियाल ने बडे घमण्ड से नौ बजाए। जो विद्यार्थी कालेज के बडे दरवाजे से बाहर निकल रहे थे, खुश-पोश थे, पर उस्ताद मंगू को न जाने क्या उनके कपडे मैले मैले से नजर आए। शायद इसका कारण यह था कि उसकी निगाह आज आंखों को चौंधिया देने वाले किसी जलवे का इन्तजार कर रही थी।

तांगे को दायें हाथ मोडकर वह थोडी देर के बाद फिर अनारकली में चला आया। बाजार की आधी दुकानें खुल चुकी थीं और अब लोगों की आमद रफ्त भी बढ गई थी। हलवाई की दुकानों पर ग्राहकों की खूब भीड लगी थी। मनिहारी वालों की नुमायशी चीजें शीशे की अलमारियों में से लोगों को अपनी ओर खींच रही थीं और बिजली के तारों पर कई कबूतर आपस मे लड झगड रहे थे, पर उस्ताद मंगू के लिए इन तमाम चीजों में कोई दिलचस्पी नहीं थी। वह नये कानून को देखना चाहता था, ठीक उसी तरह जिस तरह कि वह अपने घोडे को देख रहा था।

जब उस्ताद मंगू के घर बच्चा पैदा होने वाला था तो उसने चार पांच महीने बडी बेचैनी में गुजारे थे। उसको विश्वास था कि बच्चा किसी न किसी दिन जरूर पैदा होगा। पर वह इन्तजार की घडियां नहीं काट सकता था। वह चाहता था कि अपने बच्चे को सिर्फ एक नजर देख ले। इसके बाद वह पैदा होता रहे। चुनांचे इसी गैर मगलूब इच्छा के तहत उसने कई बार अपनी बीमार बीवी के पेट को दबा दबाकर और उसके ऊपर कान रख रखकर अपने बच्चे के बारे में कुछ जानना चाहा था। पर वह नाकाम रहा था। एक बार तो वह इन्तजार करते करते इतना तंग आ गया था कि अपनी बीवी पर बरस भी पडा था

'तू हर वक्त मुर्दे की तरह पडी रहती है। उठ और जरा चल फिर, तेरे अंगों में थोडी सी ताकत तो आए। यों तख्ता बन रहने से कुछ न होगा। तू समझती है कि इस तरह लेटे लेटे बच्चा जन देगी ?'

उस्ताद मंगू तबियत से बहुत जल्दबाज था। वह हर चीज का

असली रूप देखने के लिए न सिर्फ इच्छुक था, बल्कि उसे खोजता भी रहता था। उसकी बीबी ग्गादेई उसकी इस किस्म की बेकरारिया को देखकर आम तौर पर यह कहा करती थी, 'अभी कुआ खोदा ही नही गया और तुम प्यास से बेहाल हो रहे हो।'

कुछ भी हो, पर उस्ताद मगू नये कानून के इतजार म इतना बेचैन नही था जितना कि उसे अपनी तबियत के लिहाज मे होना चाहिए था। वह आज नये कानून को देखने के लिए घर से निकला था, ठीक उसी तरह, जस वह गाधी या जवाहरलाल के जुलूस को देखने के लिए निकलता था।

नेताजी की महानता का अनुमान उस्ताद मगू हमेशा उनके जुलूस के हगामा और उनके गले म डाली हुई फूलो की मालाओ से किया करता था। अगर राई लीडर गेंद के फूलो स लदा हो तो उस्ताद मगू के नजदीक वह बडा आदमी था और जिस नेता के जुलूस मे भीड की वजह से दो-तीन दगे होते होते रह जाते, वह उसकी नजर मे और भी बडा था। अब नये कानून को वह अपने जेहन के इसी तराजू म तोलना चाहता था।

अनारकली से निकलकर, वह माल रोड की चमकीली सडक पर अपने तागे को धीरे धीरे चला रहा था कि मोटरो की दुकान के पास उसे छावनी की एक सवारी मिल गई। किराया तय करने के बाद उसने अपने घोडे को चाबुक दिखाया और मन मे सोचा, 'चलो यह भी अच्छा हुआ। शायद छावनी स ही नये कानून का कुछ पता चल जाय।'

छावनी पहुचकर उस्ताद मगू ने सवारी को उसकी मजिल पर उतार दिया और जेब म सिगरेट निकालकर बायें हाथ की आखिरी दो उगलियो म दबाकर सुलगाया और पिछली सीट के गद्दे पर बैठ गया।

जब उस्ताद मगू को किसी सवारी की तलाश नही होती थी या उसे किसी बीती हुई घटना पर गौर करना होता तो वह आम तौर पर अगली सीट छोडकर पिछली सीट पर बैठ जाता और बडे इत्मीनान स अपने घोडे की लगाम दायें हाथ के गिर्द लपेट लिया करता था। ऐसे अवसरो पर उसका घोडा थोडा सा हिनहिनाने के बाद बडी धीमी चाल

चलना शुरू कर देता था, मानो उसे कुछ दर के लिए भाग दौड से छुट्टी मिल गई हो।

घोडे की चाल और उस्ताद मगू के दिमाग मे खयालो की आमद बहुत सुस्त थी जिस तरह घोडा धीरे धीरे कदम उठा रहा था उसी तरह उस्ताद मगू के जेहन मे नय कानून के बारे मे नये अनुमान दाखिल हो रहे थे।

वह नये कानून के आने पर म्युनिसिपल कमेटी से तागा के नम्बर मिलने के तरीके पर गौर कर रहा था और इस गौर-तलब बात को नये विधान की रोशनी मे देखने की कोशिश कर रहा था। वह इसी सोच-विचार म डूबा था जब उसे ऐसा लगा जसे किसी सवारी ने उसे बुलाया है। पीछे पलटकर देखने पर उसे सडक के उस पार दूर बिजली के खम्भे के पास एक गोरा खडा नजर आया, जो उसे हाथ के इशारे से बुला रहा था।

जैसा कि कहा जा चुका है उस्ताद मगू को गोरो स बेहद नफरत थी। जब उसने अपनी नई सवारी को गोरे के रूप मे देखा तो उसके मन मे नफरत के भाव जाग उठे। पहले तो उसके जी मे आई कि बिलकुल ध्यान न दे और उसको छोडकर चला जाय, पर बाद म उसको खयाल आया कि इनके पसे छोडना भी बेवकूफी है। कलगी पर जो मुफ्त म साढे चौदह आने खच कर दिए हैं इनकी जेब ही से वसूल करने चाहिए। चलो चलते हैं।

खाली सडक पर बडी सफाई से तागा मोडकर उसने घोडे को चाबुक दिखाया और पलक झपकते ही वह बिजली के खम्भे के पास पहुच गया। घोडे की लगाम खीचकर उसने तागा ठहराया और पिछली सीट पर बैठे बैठे गोरे से पूछा

'साहब बहादुर कहा जाना मागता है?

इस सवाल म गजब का तजिया (व्यग्य भरा) अन्दाज था। साहब बहादुर बहुत समय उसका ऊपर का मूछो भरा होठ नीचे की ओर खिच गया और पास ही गाल की इस तरफ जो मद्धिम सी लकीर नाक के नथुन स ठोडी के ऊपरी सिरे तक चली आ रही थी, एक कम्पकपी के

साथ गहरी हो गई, जैसे किसीने नोकीले चाकू से शीशम की सांवली लकड़ी में धार-सी डाल दी हो। उसका सारा चेहरा हंस रहा था और अपने अन्दर उसने उस गोरे को सीने की आग में जलाकर राख कर डाला था।

जब गोरे ने, जो बिजली के खम्भे की ओट में हवा का रुख बचाकर सिगरेट सुलगा रहा था, मुड़कर तांगे के पायदान की तरफ कदम बढ़ाया तो अचानक उस्ताद मंगू की और उसकी निगाहें चार हुईं और ऐसा लगा कि एकसाथ आमने सामने की बन्दूकों से गोलियां निकलीं और आपस में टकराकर, आग का एक बगूला बनकर, ऊपर को उड़ गईं।

उस्ताद मंगू जो अपने दायें हाथ से लगाम के बल खोलकर तांगे से नीचे उतरने वाला था, अपने सामने खड़े गोरे को यूं देख रहा था जैसे वह उसके वजूद के जर्रे जर्रे को अपनी निगाहों से चबा रहा हो और गोरा कुछ इस तरह अपनी नीली पतलून पर से अनदेखी चीजें झाड़ रहा था जैसे वह उस्ताद मंगू के इस हमले से अपने वजूद के कुछ हिस्से बचा लेने की कोशिश कर रहा हो।

गोरे ने सिगरेट का धुआं निगलते हुए कहा, 'जाना मांगटा या फिर गड़बड़ करेगा?'

'वही है।' ये शब्द उस्ताद मंगू के दिमाग में पैदा हुए और उसकी चौड़ी छाती के अन्दर नाचने लगे। 'वही है' उसने ये शब्द अपने मुंह के अन्दर दोहराये और साथ ही उसे पूरा यकीन हो गया कि गोरा, जो उसके सामने खड़ा था, वही है जिससे पिछले बरस उसकी झड़प हुई थी और उस खाहमखाह के झगड़े में जिसकी वजह गोरे के दिमाग में चढ़ी हुई शराब थी उसे लाचार होकर बहुत-सी बातें सहनी पड़ी थीं। उस्ताद मंगू ने गोरे का दिमाग दुरुस्त कर दिया होता, बल्कि उसके पुर्जे उड़ा दिए होते, पर वह किसी खास कारण से चुप हो गया था। उसको पता था, इस तरह के झगड़ों में अदालत का नजला आम तौर पर कोचवानों पर ही गिरता है।

उस्ताद मंगू ने पिछले बरस की लड़ाई और पहली अप्रैल के नये कानून पर गौर करते हुए गोरे से पूछा, 'कहां जाना मांगटा है?' उस्ताद मंगू के लहजे में चाबुक जैसी तेजी थी।

चलना शुरू कर देता था, मानो उसे कुछ देर के लिए भाग दौड से छुट्टी मिल गई हो।

घोडे की चाल और उस्ताद मगू के दिमाग मे खयालो की आमद बहुत सुस्त थी जिस तरह घोडा धीरे-धीरे कदम उठा रहा था उसी तरह उस्ताद मगू के जेहन मे नये कानून के बारे मे नये अनुमान दाखिल हो रहे थे।

वह नये कानून के आने पर म्यूनिसिपल कमेटी से तागो के नम्बर मिलने के तरीके पर गौर कर रहा था और इस गौर-तलब बात को नये विधान की रोशनी मे देखने की कोशिश कर रहा था। वह इसी सोच-विचार मे डूबा था, जब उसे ऐसा लगा जैसे किसी सवारी ने उसे बुलाया है। पीछे पलटकर देखने पर उसे सडक के उस पार दूर बिजली के खम्भे के पास एक गोरा खडा नजर आया, जो उसे हाथ के इशारे से बुला रहा था।

जैसा कि कहा जा चुका है उस्ताद मगू को गोरो से बेहद नफरत थी। जब उसने अपनी नई सवारी को गोरे के रूप मे देखा तो उसके मन मे नफरत के भाव जाग उठे। पहले तो उसके जी मे आई कि बिलकुल ध्यान न दे और उसको छोडकर चला जाय, पर बाद मे उसको खयाल आया कि इनके पैसे छोडना भी बेवकूफी है। कलगी पर जो मुफ्त मे साढे चौदह आने खर्च कर दिए है इनकी जेब ही से वसूल करने चाहिए। चलो चलते हैं।

खाली सडक पर बडी सफाई से तागा मोडकर उसने घोडे को चाबुक दिखाया और पलक झपकते ही वह बिजली के खम्भे के पास पहुच गया। घोडे की लगाम खीचकर उसने तागा ठहराया और पिछली सीट पर बैठे बैठे गोरे से पूछा

'साहब बहादुर कहा जाना मागता है?'

इस सवाल मे गजब का तजिया (व्यग्य भरा) अदाज था। 'साहब बहादुर' कहते समय उसका ऊपर का मूछो भरा होठ नीचे की ओर खिच गया और पास ही गाल की इस तरफ जो मद्धिम सी लकीर नाक के नथुने से ठोडी के ऊपरी सिरे तक चली आ रही थी, एक कपकपी

साथ गहरी हो गई, जैसे किसीने नोकीले चाकू से शीशम की सावली लकडी म धार-सी डाल दी हो। उसका सारा चेहरा हस रहा था और अपने अदर उसन उस गोरे की सीने की आग म जलाकर राख कर डाला था।

जब गोर ने, जो बिजली के खम्भे की ओट मे हवा का रुख बचाकर सिगरेट सुलगा रहा था, मुडकर ताग के पायदान की तरफ कदम बढाया तो अचानक उस्ताद मगू की ओर उसकी निगाह चार हुई और ऐसा लगा कि एकसाथ आमने सामने की बदूको से गोलिया निकली और आपस म टकराकर, आग का एक बगूला बनकर, ऊपर को उड गई।

उस्ताद मगू, जो अपने दायें हाथ से लगाम के बल खोलकर तागे से नीचे उतरने वाला था, अपने सामने खडे गोरे को यू देख रहा था जैसे वह उसके वजूद के जर्रे जर्रे को अपनी निगाहो से चबा रहा हो और गोरा कुछ इस तरह अपनी नीली पतलून पर से अनदेखी चीजें झाड रहा था जैसे वह उस्ताद मगू के इस हमले से अपने वजूद के कुछ हिस्से बचा लेने की कोशिश कर रहा हो।

गोरे ने सिगरेट का धुआ निगलते हुए कहा, जाना मागटा या फिर गडबड करेगा?'

वही है। ये शब्द उस्ताद मगू के दिमाग म पैदा हुए और उसकी चौडी छाती के अदर नाचने लगे। 'वही है' उसने ये शब्द अपने मुह के अदर दोहराये और साथ ही उसे पूरा यकीन हो गया कि गोरा जो उसके सामने खडा था वही है जिसस पिछले बरस उसकी झडप हुई थी और उस खाहमखाह के झगडे म जिसकी वजह गोरे के दिमाग मे चढी हुई शराब थी, उस लाचार होकर बहुत-सी बातें सहनी पडी थी। उस्ताद मगू ने गोरे का दिमाग दुरुस्त कर दिया होता, बल्कि उसके पुर्जे उडा दिए होते, पर वह किसी खास कारण से चुप हो गया था। उसको पता था, इस तरह के झगडो म अदालत का नजला आम तौर पर कोचवानो पर ही गिरता है।

उस्ताद मगू ने पिछले बरस की लडाई और पहली अप्रैल के नये कानून पर गौर करते हुए गोरे से पूछा, 'कहा जाना मागटा है?' उस्ताद मगू के लहजे म चाबुक जैसी तेजी थी।

गोरे ने जवाब दिया—'हीरा मण्डी।'

'किराया पाच रुपया होगा।' उस्ताद मगू की मूछें थरथराइं।

यह सुनकर गोरा हैरान हो गया। वह चिल्लाया, 'पाच रुपये! क्या टुम ?'

'हा-हा, पाच रुपये।' यह कहते हुए उस्ताद मगू के बाला भरे दाहिने हाथ ने भिचकर एक भारी घूसे का रूप ले लिया। 'क्यो, जाते हो या बेकार बातें बनाओगे,' उस्ताद मगू का लहजा और भी ज्यादा सख्त हो गया।

गोरा पिछले वर्ष की घटना का खयाल करके उस्ताद मगू के सीने की चौडाई नजर दाज कर चुका था। वह सोच रहा था—इसकी खोपडी फिर खजला रही है। हौसला बढाने वाले इस खयाल के तहत वह तागे की ओर अकडकर बढा और अपनी छडी से उसने उस्ताद मगू को तागे से नीचे उतरने का इशारा किया।

बेंत की वह पालिश की हुई पतली सी छडी उस्ताद मगू की मोटी रान के साथ दो-तीन बार छुई। उसने खडे खडे नाटे कद के गोरे का ऊपर से नीचे देखा जैसे वह अपनी निगाहो के भार ही से उसे पीस डालना चाहता हो। फिर उसका घूसा, कमान मे तीर की तरह ऊपर को उठा और पलक झपकते ही गोरे की ठोडी के नीचे जम गया। धक्का देकर उसने गोरे को परे हटाया और नीचे उतरकर उसे धडाधड पीटना शुरू कर दिया।

गोरा हक्का बक्का रह गया और उसने इधर उधर सिमटकर उस्ताद मगू के वजनी घूसो से बचने की कोशिश की और जब देखा कि उस्ताद मगू की हालत पागलो की सी हो गई है और उसकी आखो से अगारे बरस रहे हैं तो उसने जोर जोर से चिल्लाना शुरू किया। उस चीख पुकार ने उस्ताद मगू की बाहो का काम और भी तेज कर दिया। वह गोरे को जी भरके पीट रहा था और साथ साथ यह कहता जाता था

'पहली अप्रैल को भी वही अकड फू पहली अप्रल को भी वही अकड फू अब हमारा राज है बच्चा।'

लोग जमा हो गए और पुलिस के दो सिपाहियो ने बडी मुश्किल से

गोरे को उस्ताद मगू की पकड से छुडाया। उस्ताद मगू उन दो सिपाहियो के बीच खडा था। उसकी चौडी छाती फूली हुई सास की वजह से ऊपर-नीचे हो रही थी। मुह से झाग बह रहा था और अपनी मुस्कराती हुई आखो से हैरतजदा भीड की तरफ देखकर वह हाफती हुई आवाज मे कह रहा था

'वो दिन गुजर गए, जब खलील खा फाख्ता उडाया करते थे। अब नया कानून है मिया, नया कानून !'

और बेचारा गोरा अपने बिगडे हुए चेहरे के साथ, बेवकूफो की तरह, कभी उस्ताद मगू की तरफ देखता था और कभी भीड की तरफ।

उस्ताद मगू को पुलिस के सिपाही थाने मे ले गए। रास्ते मे और थाने के अन्दर कमरे मे वह 'नया कानून, नया कानून' चिल्लाता रहा, पर किसीने एक न सुनी।

'नया कानून, नया कानून क्या बक रहे हो ! कानून वही है—पुराना !' और उसको हवालात में बन्द कर दिया गया।

खुशिया

खुशिया सोच रहा था।

बनवारी से काले तम्बाकू वाला पान लेकर वह उसकी दुकान के साथ उस पत्थर के चबूतरे पर बैठा था जो दिन के वक्त टायरों और मोटरों के मुख्तलिफ पुर्जों से भरा होता है। रात को साढ़े आठ बजे के करीब मोटर के पुर्जे और टायर बेचने वालों की यह दुकान बन्द हो जाती है और यह चबूतरा खुशिया के लिए खाली हो जाता है।

वह काले तम्बाकू वाला पान धीरे धीरे चबा रहा था और सोच रहा था। पान की गाढ़ी तम्बाकू मिली पीक उसके दांतों की रीखों से निकलकर उसके मुह में इधर उधर फिसल रही थी और उसे ऐसा लगता था कि उसके खयाल, दांतों तले पिसकर, उसकी पीक में घुल रहे हैं। शायद यही वजह है कि वह उसे फेंकना नहीं चाहता था।

खुशिया पान की पीक मुह में गुलगुला रहा था और उस घटना के बारे में सोच रहा था, जो उसके साथ अभी अभी घटी थी, यानी आध घण्टे पहले।

वह उस चबूतरे पर रोज की तरह बैठने से पहले खेतवाडी की पांचवीं गली में गया था। मंगलौर से जो नई छोकरी कान्ता आई थी, उसी गली के नुक्कड पर रहती थी। खुशिया से किसीने कहा था कि वह अपना मकान बदल रही है इसीलिए वह इसी बात का पता लगाने के लिए वहां गया था।

कान्ता की खोली का दरवाजा उसने खटखटाया। अन्दर से आवाज आई, कौन है ?'

इसपर खुशिया ने कहा मैं, खुशिया।'

आवाज दूसरे कमरे से आई थी। थोडी देर के बाद दरवाजा खुला। खुशिया अन्दर दाखिल हुआ। जब कान्ता ने दरवाजा अन्दर से बन्द किया

तब खुशिया ने मुडकर देखा। उसकी हैरत की कोई इतहा न रही, जब उसने काता को बिलकुल नगी देखा। बिलकुल नगी ही समझो, क्योंकि वह अपने अगो को सिफ एक तौलिय स छिपाए हुए थी। छिपाए हुए भी तो नही कहा जा सकता क्योकि छिपाने की जितनी चीजें होती हैं वे तो सब की सब, खुशिया की चकित आखो के सामने थी।

'कहो खुशिया कैसे आए? मैं बस अब नहाने ही वाली थी। बैठो-बैठो बाहर वाले से अपने लिए चाय के लिए तो कह आए होते जानते तो हो वह मुआ रामा यहा से भाग गया है।'

खुशिया जिसकी आखो ने कभी औरत को यू अचानक नगा नही देखा था, वहुत घबरा गया। उसकी समझ म न आता था कि क्या कहे। उसकी निगाह, जो एकदम नग्नता से चार हो गई थी अपने आपको कही छिपाना चाहती थी।

उसने जल्दी जल्दी सिफ इतना कहा, 'जाओ जाओ तुम नहा लो।' फिर एकदम उसकी जबान खुल गई, 'पर जब तुम नगी थी तो दरवाजा खोलने की क्या जरूरत थी? अदर से कह दिया होता मैं फिर आ जाता लकिन जाओ तुम नहा लो।

काता मुस्कराई, 'जब तुमने कहा—खुशिया है तो मैंने सोचा क्या हर्ज है अपना खुशिया ही तो है आने दो

C202

कान्ता की यह मुस्कराहट अभी तक खुशिया के दिलो दिमाग म तैर रही थी। इस वक्त भी काता का नगा जिस्म मोम के पुतले की तरह उसकी आखो के सामने खडा था और पिघल पिघलकर उसके अदर जा रहा था।

उसका जिस्म सुदर था। पहली बार खुशिया को मालूम हुआ था कि जिस्म बेचने वाली औरतें भी ऐसा सुडौल बदन रखती हैं। उसको इस बात पर हैरत हुई थी, पर सबसे ज्यादा ताज्जुब उसे इस बात पर हुआ था कि नग धडग वह उसके सामने खडी हो गई और उसको लाज तक न आई—क्या?

इसका जवाब काता ने यह दिया था—जब तुमने कहा, खुशिया

है तो मैंने सोचा, क्या हर्ज है अपना सुगिया ही तो है आन दो।'
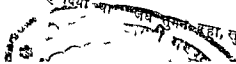
का ता और सुगिया एक ही पेशे म शरीक थे। वह उसका दलाल था, इस लिहाज से वह उसीका था पर यह कोई वजह नहीं थी कि वह उसके सामने नगी हो जाती। कोई खास बात थी। का ता ने जो बात कही थी उसमे सुगिया कोई और ही मतलब कुरेद रहा था।

यह मतलब एक ही वक्त इतना साफ और धुधला था कि सुगिया किसी खास नतीजे पर नही पहुच सका था। उस समय भी, वह का ता के नगे जिस्म को देख रहा था, जो ढोल के ऊपर मढे हुए चमडे की तरह तना हुआ था—उसकी लुढकती हुई निगाहों से बिलकुल बेपरवाह। कई बार अचरज की हालत म भी उसने उसके सावले सलोने बदन पर टोह लेने वाली निगाह गाडी थी पर उसका एक रोआ भी न कपकपाया था। बस, वह ऐसे सावले पत्थर की मूर्ति की तरह खडी रही, जो एहसास-रहित हो।

भई एक मर्द उसके सामने खडा था—मर्द, जिसकी निगाह कपडो म भी औरत के जिस्म तक पहुच जाती है और जो परमात्मा जाने, खयाल-ही-खयाल म जाने कहा कहा पहुच जाता है। लेकिन वह जरा भी न घबराई और उसकी आखें ऐसा समझ लो कि अभी लाण्ड्री से धुलकर आई है उसको थोडी सी लाज तो आनी चाहिए थी। जरा सी सुर्खी तो उसकी आखो मे पैदा होनी चाहिए थी। मान लिया, कस्बी थी, पर कस्बिया यू नगी तो नही खडी हो जाती।

दस बरस उस दलाली करते हो गए थ और इन दस बरसो मे वह पेशा कराने वाली लडकियो के सारे भेदो से वाकिफ हो चुका था। मिसाल के तौर पर, उसे यह मालूम था कि पायधोनी के आखिरी सिरे पर जो छोकरी एक नौजवान लडके को भाई बनाकर रहती है इसलिए 'अछूत कन्या' का रिकार्ड—काहे करना मूरख प्यार प्यार प्यार—अपने टूटे हुए बाजे पर बजाया करती है कि उसे अशोक कुमार से बुरी तरह इश्क है। कई मनचले लौण्डे, अशोककुमार से उसकी मुलाकात कराने का झासा देकर अपना उल्लू सीधा कर चुके थे। उसे यह भी मालूम था कि दादर मे जो पजाबिन रहती है सिर्फ इसलिए कोट पतलून पहनती है

कि उसके यार न उससे कहा था कि तेरी टागें तो बिलकुल उस अंग्रेज ऐक्ट्रेस की तरह हैं, जिसन 'गराको उफ 'खून-तमन्ना' म काम किया था। यह फिल्म उसन कई बार देखी और जब उसके यार ने कहा कि मार्लिन डीट्रिच इसलिए पतलून पहनती है कि उसकी टागें बहुत खूबसूरत हैं और उसने उन टागा का दो लाख का बीमा करा रखा है तो उसन भी पतलून पहननी शुरू कर दी, जो उसके नितम्बो म बहुत फमकर आती थी और उसे यह भी मालूम था कि मजगाव वाली दक्षिणी छोकरी सिफ इस लिए कालेज के खूबसूरत लौण्डो को फासती है कि उसे एक खूबसूरत बच्चे की मा बनने का शौक है। उसको यह भी पता था कि वह कभी अपनी इच्छा पूरी न कर सकगी इसलिए कि बाझ है और उस काली मद्रासिन को बाबत जो हर समय काना मे हीरे की बूटिया पहन रहती थी, उसे यह बात अच्छी तरह मालूम थी कि उसका रग कभी गोरा नही होगा और वह उन दवाओ पर बेकार रुपया बर्बाद कर रही है जो वह आए दिन खरीदती रहती है।

उसको उन सभी छोकरियो के अन्दर-बाहर का हाल मालूम था जो उसके पदे म शामिल थी। मगर उसको यह खबर न थी कि एक दिन कान्ता कुमारी, जिसका असली नाम इतना मुश्किल था कि वह उम्र भर याद नहीं कर सकता था उसके सामन नगी खडी हो जाएगी और उसको जिन्दगी क सबस बड ताज्जुब से दो चार कराएगी।

सोचत सोचन उसके मुह म पान की पीक इस कदर जमा हो गई थी कि अब वह मुश्किल स छालिया क उन नन्हे नन्ह रेजो को चबा सकता था, जो उसक दाता की रीखा म से इधर उधर फिसलकर निकल जाते थे। उसके तग माथे पर पसीने की नन्ही-नन्ही बूदें उभर आई थी जस मलमल म पनीर को धीरे स दबा दिया गया हो। जब-जब वह कान्ता के नग जिस्म को अपनी कल्पना म दखता था, उसकी मर्दानगी को धक्का सा पहुचता था। उसे महसूस होता था जैसे उसका अपमान हुआ है।

एकदम उसन अपने मन म कहा—भई, यह बेइज्जती नही है तो क्या है यानी एक छोकरी नग धडग तुम्हारे सामने खडी हो जाती है और कहती है इसम हज ही क्या है तुम खुशिया ही तो हो खुशिया न

हुआ, साला वह बिल्ला हो गया, जो उसके बिस्तर पर हर समय ऊंघता रहता है और क्या।

अब उसे विश्वास होने लगा कि सचमुच उसका अपमान हुआ है। वह मर्द था और अनजाने ही उसको इस बात की आशा थी कि औरतें, चाहे शरीफ हों चाहे बाजारू, उसको मर्द ही समझेंगी और उसके और अपने बीच वह पर्दा कायम रखेंगी जो एक मुद्दत से चला आ रहा है। वह तो सिर्फ यह पता लगाने के लिए कान्ता के यहां गया था कि वह कब तक मकान बदल रही है और कहां जा रही है। कान्ता के पास उसका जाना बिलकुल बिजनेस से सम्बन्धित था। अगर खुशिया कान्ता के बारे में सोचता कि जब वह उसका दरवाजा खटखटाएगा तो वह अन्दर क्या कर रही होगी तो उसकी कल्पना में ज्यादा से ज्यादा इतनी ही बातें आ सकती थीं

—सिर पर पट्टी बांधे लेटी होगी।

—बिल्ले के बालों से पिस्सू निकाल रही होगी।

—उस बाल-सफा पाउडर से अपनी बगलों के बाल उड़ा रही होगी, जो इतनी बास मारता था कि खुशिया की नाक बर्दाश्त नहीं कर सकती थी।

—पलंग पर अकेली बैठी ताश फैलाए पेशेंस खेलने में मशगूल होगी।

बस इतनी चीजें थीं, जो उसके दिमाग में आतीं। घर में वह किसीको रखती न थी इसलिए इस बात का खयाल ही नहीं आ सकता था। पर *खुशिया ने तो यह सोचा ही न था। वह तो काम से वहां गया था कि अचा*नक कान्ता—यानी कपड़े पहनने वाली कान्ता—मतलब यह कि वह कान्ता, जिसको वह हमेशा कपड़ों में देखा करता था उसके सामने बिलकुल नंगी *खड़ी हो गई—बिलकुल नंगी ही समझो, क्योंकि एक छोटा सा तौलिया सब* कुछ तो छिपा नहीं सकता। खुशिया को यह दृश्य देखकर ऐसा महसूस हुआ था जैसे छिलका उसके हाथ में रह गया है और केले का गूदा फिसलकर उसके सामने आ गिरा है। *नहीं उसे कुछ और ही महसूस हुआ था जैसे*

वह खुद नंगा हो गया है। अगर बात यहीं तक खत्म हो जाती तो कुछ भी न होता। खुशिया अपनी हैरत को किसी न किसी हीले से दूर कर देता। *मगर यहां मुसीबत यह आन पड़ी थी कि उस लौण्डिया ने मुस्करा*

कर कहा था जब तुमने कहा खुशिया है तो मैंने सोचा, अपना खुशिया ही तो है आने दो बस यही बात उसे खाए जा रही थी।

साली मुस्करा रही थी, वह बार बार बडबडाता। जिस तरह कान्ता नंगी थी उसी तरह उसकी मुस्कराहट खुशिया को नंगी नजर आई थी। यह मुस्कराहट ही नहीं, उस कान्ता का जिस्म भी इस हद तक नंगा दिखाई दिया था जैसे उसपर रन्दा फिरा हुआ हो।

उसे बार बार बचपन के वे दिन याद आ रहे थे जब पडोस की एक औरत उससे कहा करती थी, 'खुशिया बेटा जा दौडकर जा, यह बाल्टी पानी से भर ला। जब वह बाल्टी भरकर लाया करता था तो वह धोती से बनाए हुए पर्दे के पीछे से कहा करती थी, 'अन्दर आकर यहा मेरे पास रख दे। मैंने मुह पर साबुन मला हुआ है। मुझे कुछ सुझाई नहीं देता। वह धोती का पर्दा हटाकर बाल्टी उसके पास रख दिया करता था। उस समय साबुन की झाग मे लिपटी हुई नंगी औरत उसे नजर आती थी पर उसके मन मे किसी तरह की उथल पुथल पैदा नहीं होती थी।

'भई मैं उस समय बच्चा था। बिलकुल भोला भाला। बच्चे और मर्द मे बहुत फर्क होता है। बच्चा से कौन पर्दा करता है। मगर अब तो मैं पूरा मर्द हू। मेरी उम्र इस वक्त लगभग अट्ठाईस बरस की है और अट्ठाईस बरस के जवान आदमी के सामने तो कोई बूढ़ी औरत भी नंगी खडी नहीं होती।'

कान्ता ने उसे क्या समझा था? क्या उसमे वे सारी बातें नहीं थी, जो एक नौजवान मर्द मे होती है? इसमे कोई शक नहीं कि वह कान्ता को एकाएक नंग धडंग देखकर बहुत घबरा गया था लेकिन चोर निगाहो से क्या उसने कान्ता की उन चीजों का जायजा नहीं लिया था, जो रोजाना इस्तेमाल के बावजूद असली हालत पर कायम थी। क्या चकित रह जाने के बावजूद, उसके दिमाग मे यह खयाल नहीं आया था कि दस रुपये मे कान्ता बिलकुल महगी नहीं और दशहरे के दिन बैंक का वह बाबू जो दो रुपये की रिआयत न मिलने पर वापस चला गया था, बिलकुल गधा था? और इन सबके ऊपर, क्या एक क्षण के लिए उसके सारे पुट्ठो मे एक अजीब किस्म का तनाव नहीं पैदा हो गया था? और

उसने एक ऐसी अंगड़ाई नहीं लेनी चाही थी, जिससे उसकी हड्डियां तक चटखने लगें ? फिर क्या वजह थी कि मंगलौर की उस सांवली छोकरी ने उसको मर्द न समझा और सिर्फ सिर्फ खुशिया समझकर उसको अपना सब कुछ देखने दिया ?

उसने गुस्से में आकर पान की गाढ़ी पीक थूक दी, जिसने फुटपाथ पर कई बेल बूटे बना दिए। पीक थूककर वह उठा और ट्राम में बैठकर अपने घर चला गया।

घर में उसने नहा-धोकर नई धोती पहनी। जिस बिल्डिंग में वह रहता था उसकी एक दुकान में सैलून था। उसके अन्दर जाकर उसने आइने के सामने अपने बालों में कंघी की। फिर एकाएक कुछ ख्याल आया तो वह कुर्सी पर बैठ गया और बड़ी गम्भीरता से उसने नाई से दाढ़ी मूंडने के लिए कहा। आज चूंकि वह दूसरी बार दाढ़ी मुंडवा रहा था, इसलिए नाई ने कहा, 'अरे भाई खुशिया, भूल गए क्या ? सुबह मैंने ही तो तुम्हारी दाढ़ी मूंडी थी।'

इसपर खुशिया ने बड़ी शान से दाढ़ी पर उल्टा हाथ फेरते हुए कहा, 'खूंटी अच्छी तरह नहीं निकली।'

अच्छी तरह खूंटी निकलवाकर और चेहरे पर पाउडर मलवाकर, वह सैलून से बाहर निकला। सामने टैक्सियों का अड्डा था। बम्बई के खास अन्दाज में उसने शी शी करके एक टैक्सी ड्राइवर को अपनी ओर आकृष्ट किया और उंगली के इशारे से उसे टैक्सी लाने के लिए कहा।

जब वह टैक्सी में बैठ गया तो ड्राइवर ने घूमकर उससे पूछा, 'कहां जाना है साब ?'

इन चार शब्दों ने और खास तौर पर 'साब' शब्द ने खुशिया को सचमुच खुश कर दिया। मुस्कराकर उसने बड़े दोस्ताना लहजे में जवाब दिया, बताएगा। पहले तुम आपेरा हाउस की तरफ चलो—लेमिंग्टन रोड से होते हुए। समझे ?

ड्राइवर ने मोटर की लाल झण्डी का सिर नीचे दबा दिया। टन टन हुई और टैक्सी ने लेमिंग्टन रोड का रुख किया। लेमिंग्टन रोड का जब

आखिरी सिरा आ गया तो खुशिया ने ड्राइवर को हिदायत दी, 'बायें हाथ मोड लो।'

टैक्सी बायें हाथ मुड गई। अभी ड्राइवर ने गियर भी न बदला था कि खुशिया ने कहा, 'यह सामने वाले खम्भे के पास रोक लेना जरा।'

ड्राइवर ने ठीक खम्भे के पास टैक्सी खडी कर दी। खुशिया दरवाजा खोलकर बाहर निकला और एक पान वाले की दुकान की तरफ बढा। यहा से उसने पान लिया और उस आदमी से जो कि दुकान के पास खडा था, चन्द बातें की और उसे अपने साथ टैक्सी पर बैठाकर ड्राइवर से बोला 'सीधे ले चलो।'

देर तक टैक्सी चलती रही। खुशिया ने जिधर इशारा किया, ड्राइवर ने उधर हैण्डल फर दिया। रौनक वाले कई बाजारो से होते हुए टैक्सी एक नीम रोशन गली म दाखिल हुई, जिसम बहुत कम लोग आ जा रहे थे। कुछ लोग सडक पर बिस्तर जमाए लेटे थे, उनमे से कुछ बडे इत्मीनान से चम्पी करा रहे थे। जब टैक्सी उन चम्पी कराने वाला से आगे निकल गई और काठ के एक बगलेनुमा मकान के पास पहुची तो खुशिया ने ड्राइवर को ठहरने के लिए कहा 'बस, अब यहा रुक जाओ।'

टैक्सी ठहर गई तो खुशिया ने उस आदमी से, जिसको वह पान वाले की दुकान से अपने साथ लाया था, धीरे से कहा, 'जाओ, मैं यहा इतजार करता हू।

वह आदमी, बेवकूफो की तरह खुशिया की तरफ देखता हुआ टैक्सी से बाहर निकला और सामने वाले लकडी के मकान मे घुस गया।

खुशिया जमकर टैक्सी के गद्दे पर बठ गया। एक टाग दूसरी टाग पर रखकर उसन जेब से बीडी निकालकर सुलगाई और दो कश लेकर बाहर सडक पर फेंक दी। वह अब बडा बेचैन था इसलिए उसे लगा कि टैक्सी का इजन बन्द नही हुआ। उसके सीने मे चूकि फनफनाहट-सी हो रही थी इसलिए वह समझा कि ड्राइवर ने बिल बढाने के लिए पेट्रोल छोड रखा है। चुनाचे उसन तेजी से कहा, 'यो बेकार इजन चालू रखकर तुम कितन पस और बढा लोगे ?'

ड्राइवर ने घूमकर खुशिया की ओर देखा और कहा, 'सेठ, इंजन तो बन्द है।'

जब खुशिया को अपनी गलती का अहसास हुआ तो उसकी बेचैनी और भी बढ़ गई और उसने कुछ कहने की बजाय होंठ चबाने शुरू कर दिए। फिर एकाएकी सिर पर किश्तीनुमा काली टोपी पहनकर, जो अब तक उसकी बगल में दबी हुई थी, उसने ड्राइवर का कन्धा हिलाया और कहा देखो, अभी छोकरी आएगी। जैसे ही अन्दर आए तुम मोटर चला देना समझे? घबराने की कोई बात नहीं है, मामला ऐसा वैसा नहीं।

इतने में सामने लकड़ी वाले मकान से दो आदमी बाहर निकले। आगे आगे खुशिया का दोस्त था और उसके पीछे पीछे कान्ता, जिसने शोख रंग की साड़ी पहन रखी थी।

खुशिया झट से उस तरफ को सरक गया, जिधर अंधेरा था। खुशिया के दोस्त ने टैक्सी का दरवाजा खोला और कान्ता को अन्दर दाखिल करके दरवाजा बन्द कर दिया। उसी समय कान्ता की हैरत-भरी आवाज सुनायी दी जो चीख से मिलती जुलती थी, 'खुशिया, तुम?'

हां मैं लेकिन तुम्हें रुपये मिल गए हैं न?' खुशिया की मोटी आवाज बुलन्द हुई, 'देखो ड्राइवर जुहू ले चलो।'

ड्राइवर ने सेल्फ दबाया। इंजन फड़फड़ाने लगा। वह बात जो कान्ता ने कही, सुनाई न दे सकी। टैक्सी एक धचके के साथ आगे बढ़ी और खुशिया के दोस्त को सड़क के बीच चकित विस्मित छोड़ उस नीम रोशन गली में गायब हो गई।

इसके बाद फिर किसी ने खुशिया को मोटरों की दुकान के उस पत्थर के चबूतरे पर नहीं देखा।

खोल दो

अमतसर म स्पेशन ट्रेन दोपहर दो बजे चली और आठ घण्टो के बाद मुगलपुरा पहुची। रास्ते म कई आदमी मारे गए बहुत से घायल हुए और कुछ इधर-उधर भटक गए।

सुबह दस बजे कम्प की ठण्डी जमीन पर जब सिराजुद्दीन ने आखें खोली और अपने चारो ओर मद औरता और बच्चा का ठाठें मारता समुदर दखा तो उसके सोचने समझने की शक्तिया और भी क्षीण हो गइ और वह काफी देर तक मटमल आसमान को टकटकी बाधे घूरता रहा। या तो कम्प मे चारा ओर शोर सा मचा हुआ था लेकिन बूढे सिराजुद्दीन के कान जैसे बद थे, उसे कुछ सुनाई नही देता था। कोई उसे देखता तो यही समझता कि वह किसी गहरी सोच मे डूबा हुआ है, लेकिन वास्तव मे ऐसा नही था। असल म उसके सारे होशोहवास शिथिल हो चुके थे बल्कि पूरा शरीर, सारा अस्तित्व शून्य मे लटक गया था।

मटमैले आसमान की ओर बिना किसी उद्देश्य के देखते देखते सिराजुद्दीन की नजरें सूरज से जा टकराईं। तज रोशनी उसके जजर शरीर की नस नस मे उतर गई और वह जाग उठा। और उसके दिमाग मे एक के बाद एक कई तस्वीरें घूम गईं—लूट मार, आग, भाग दौड, स्टेशन, गोलिया, रात और सकीना सिराजुद्दीन एकदम खडा हो गया और उसने पागलो की तरह अपने चारो ओर फैले हुए समुदर को खगालना शुरू कर दिया।

पूरे तीन घण्टे वह 'सकीना सकीना' पुकारता कैम्प की धूल छानता रहा लेकिन कही भी उसकी जवान इकलौती बेटी का पता नहीं चला। चारो ओर एक धाधली सी मची थी। कोई अपना बच्चा ढूढ रहा था, कोई मा, कोई बीवी और कोई बेटी। सिराजुद्दीन थक हारकर एक तरफ बैठ गया और अपने दिमाग पर जोर देकर सोचने लगा कि सकीना उससे

कब और कहा बिछुडी थी। इसी सोच-विचार म उसका दिमाग बार बार सकीना की मा की लाश पर जम जाता, जिसकी सारी अतडिया बाहर निकली हुई थी और फिर इसके आगे वह कुछ न सोच पाता।

सकीना की मा मर चुकी थी। उसने सिराजुद्दीन की आखो के सामने दम तोडा था, लेकिन सकीना कहा थी, जिसके बारे मे सकीना की मा ने मरते समय कहा था, 'मुझे छोडो और सकीना को लेकर जल्दी से यहा स भाग जाओ।'

सकीना उसके साथ ही थी। दोनो नगे पाव भाग रहे थे। फिर सकीना का दुपटटा गिर पडा था और उसे उठान के लिए सिराजुद्दीन ने रुकना चाहा था इसपर सकीना ने चिल्लाकर कहा था, 'अब्बाजी, छोडिए ' लेकिन उसने दुपटटा उठा लिया था, और यह सोचते सोचते उसने अपने कोट की उभरी हुई जेब की तरफ देखा और उसमें हाथ डालकर कपडा निकाला—सकीना का वही दुपटटा था, लेकिन सकीना कहा थी ?

सिराजुद्दीन ने अपने थके हुए दिमाग पर बहुत जोर दिया लेकिन वह किसी भी नतीजे पर न पहुच सका। क्या वह सकीना को अपने साथ स्टेशन तक ले आया था ? क्या वह उसके साथ ही गाडी मे सवार थी ? रास्ते मे जब गाडी रोकी गई थी और बलवाई भीतर घुस आए थे तो क्या वह बेहोश हो गया था, जो वह सकीना को उठा ल गए ?

सिराजुद्दीन के दिमाग म सवाल ही सवाल थे जवाब कोई नही था। उस हमदर्दी की जरूरत थी लेकिन चारो ओर जितने भी इसान फले हुए थे उन सबको हमदर्दी की जरूरत थी। सिराजुद्दीन ने रोना चाहा मगर आखो ने उसकी सहायता नही की—आसू न जाने कहा गायब हो गए थे।

छ दिन के बाद होशो हवास कुछ ठिकाने आए तो सिराजुद्दीन उन लोगो स मिला जा उसकी सहायता करने को तैयार थ। आठ नौजवान थे जिनके पास लारी थी बदूकें थी। सिराजुद्दीन न उन्हे लाख लाख दुआए दी और सकीना का हुलिया बताया गोरा रग है और बहुत ही खूब सूरत है मुझपर नही अपनी मा पर थी उम्र यही सत्रह बरस के

करीब आखें बडी बडी, काले बाल, दाहिने गाल पर मोटा-सा तिल मेरी इकलौती लडकी है, ढूढ लाओ खुदा तुम्हारा भला करेगा।'

रजाकार (स्वयसेवक) नौजवानो न बडी हमदर्दी के साथ बूढे सिराजुद्दीन को विश्वास दिलाया कि अगर उसकी बेटी जिन्दा हुई तो दो चार दिन मे ही उसके पास पहुच जाएगी।

आठो नौजवानो ने कोशिश की, जान हथेली पर रखकर वे अमतसर गए। कई औरतो, कई मर्दो और कई बच्चो को निकाल निकालकर उन्हे सुरक्षित स्थानो पर पहुचाया, लेकिन दस दिन हो गए सकीना उन्ह कही न मिली।

एक दिन वे इसी सेवाकाय के सिलसिले मे लारी पर अमतसर जा रहे थे कि छहरटे के पास सडक के किनारे उन्ह एक लडकी दिखाई दी। लारी की आवाज सुनकर वह बिदकी और उसन सरपट भागना शुरू कर दिया। रजाकारो ने भी तुरन्त लारी रोकी और उतरकर सबके सब उसके पीछे भागे। एक खेत मे उन्होन उस लडकी को जा पकडा। देखा तो बहुत खूबसूरत थी, दाहिने गाल पर एक मोटा सा तिल भी था। एक नौजवान ने उसस कहा, 'घबराओ नही, क्या तुम्हारा नाम सकीना है?'

लडकी का रग पीला पड गया और उसने कोई जवाब न दिया। फिर जब बारी-बारी सारे नौजवानो ने उसे दम दिलासा दिया तो उसकी घबराहट कुछ दूर हो गई और उसने मान लिया कि उसका नाम सकीना है और वह सिराजुद्दीन की बटी है।

आठ रजाकार नौजवाना न हर तरह से सकीना की दिलजोई की। उसे खाना खिलाया, दूध पिलाया और लारी मे बिठा लिया। एक ने अपना कोट उतारकर उसे दे दिया क्योकि दुपट्टा न होने के कारण वह बडी उलझन महसूस कर रही थी और बार बार बाहो मे अपने सीने को ढापने की असफल कोशिश कर रही थी।

कई दिन गुजर गए—सिराजुद्दीन को सकीना की कोई खबर न मिली। वह दिन-भर यहा वहा कम्पो और दफ्तरो के चक्कर काटता रहा

ठण्डा गोश्त

ईशरसिंह न होटल के कमरे मे प्रवेश किया ही था कि कुलवन्त कौर तुरन्त पलग पर से उठ खडी हुई। अपनी तेज-तेज नजरो स उसने घूरकर ईशरसिंह की ओर देखा और वढकर दरवाजे की चटखनी चढा दी। रात के बारह वज चुके थे। चारो ओर बडा रहस्यपूर्ण सन्नाटा छाया हुआ था।

कुलवन्त कौर पलग पर आलथी पालथी मारकर वठ गई। ईशरसिंह जो शायद अपने छिन्न भिन्न विचारो के उलझे हुए धागे खोल रहा था, अभी तक हाथ म करपान लिए एक कोने मे खडा था। कुछ क्षणो तक इसी प्रकार चुप्पी छाई रही। कुलवन्त कौर को थोडी देर के बाद अपना आसन पसन्द न आया और वह दोनो टागें पलग से नीचे लटकाकर उन्हें हिलाने लगी। ईशरसिंह फिर भी कुछ न बोला।

कुलवन्त कौर भरे भरे हाथ पैरो की औरत थी। चौडे चकले कूल्हे थलथलाते गोश्त स भरे हुए। कुछ बहुत ही ज्यादा ऊपर को उठे हुए सीने, तेज आखो ऊपर के होठ पर सुरमई गुबार और ठोडी की बनावट से पता चलता था कि वडी धडल्लेदार औरत है।

ईशरसिंह यद्यपि कोने मे सिर झुकाए चुपचाप खडा था सिर पर कसकर बधी हुई पगडी कुछ ढीली हो रही थी और उसका करपान वाला हाथ भी कुछ कुछ काप रहा था फिर भी उसके नैन नक्श और डीलडौल स पता चलता था कि वह कुलवन्त कौर जैसी औरत के लिए योग्यतर पुरुष था।

कुछ क्षण जब इसी तरह चुप्पी म निकल गए तो कुलवन्त कौर छलक पडी। लेकिन तेज तेज आखो को नचाकर वह केवल इतना कह सकी, ईशरसिंहा!

ईशरसिंह ने गदन उठाकर कुलवन्त कौर की ओर देखा फिर उसकी नजरो की ताब न लाकर मुह दूसरी ओर मोड लिया।

कुलवन्त कौर चिल्लाई, 'ईशरसिहा', फिर तुरन्त ही स्वर को भींचते हुए पलंग पर से उठकर उसकी ओर बढ़ते हुए बोली, 'कहां गायब रहे तुम इतने दिन ?'

ईशरसिंह ने अपने सूखे होठों पर जबान फेरी, 'मुझे मालूम नहीं।

कुलवन्त कौर भिन्ना गई 'यह कोई मा-या जवाब है ?'

ईशरसिंह ने कृपाण एक ओर फेंक दी और पलंग पर लेट गया। ऐसा मालूम होता था कि वह कई दिनों का बीमार है। कुलवन्त कौर ने पलंग की ओर देखा जो अब ईशरसिंह से लबालब भरा हुआ था, उसके मन में सहानुभूति पैदा हो गई, उसके माथे पर हाथ रखकर उसने बड़े प्यार से पूछा, 'जानी, क्या हुआ है तुम्हें ?'

ईशरसिंह छत की ओर देख रहा था। उसने नजरें हटाकर कुलवन्त कौर के चिरपरिचित चेहरे की ओर देखा, 'कुलवन्त', वह बस इतना ही कह पाया।

आवाज में पीड़ा थी। कुलवन्त कौर सारी की सारी सिमटकर अपने ऊपर के होंठ में आ गई। 'हां जानी' कहकर वह उसे हल्के हल्के दांतों से काटने लगी।

ईशरसिंह ने पगड़ी उतार दी। फिर कुलवन्त कौर की ओर सहारा लेने वाली नजरों से देखा। उसके गोश्त-भरे कूल्हे पर जोर से धप्पा मारा और सिर को झटका देकर अपने आपसे कहा, 'यह कुड़ी-या दिमाग ही खराब है।'

झटका देने से उसके केश खुल गए। कुलवन्त कौर उंगलियों से उनमें कंघी करने लगी। ऐसा करते हुए उसने बड़े प्यार से पूछा, 'ईशरसिहा, कहां रहे तुम इतने दिन ?'

'बुरे की मां के घर,' ईशरसिंह ने कुलवन्त कौर को घूरकर देखा और फिर एकाएक उसके उभरे हुए सीने को मसलने लगा, 'कसम वाहे गुरु की बड़ी जानदार औरत हो।'

कुलवन्त कौर ने एक अदा के साथ ईशरसिंह के हाथ झटक दिए और पूछा, 'तुम्हें मेरी कसम है, बताओ, कहां रहे ? शहर गए थे ?'

इशरसिह ने एक ही लपेट म अपने वालो का जूडा बनाते हुए उत्तर दिया, 'नही ।'

कुलवन्त कौर चिढ गई, 'नही, तुम जरूर शहर गए थ, और तुमने बहुत सा रुपया लूटा है, जो मुझसे छुपा रहे हो ।'

'वह अपने बाप की तुख्म न हो जो तुमसे झूठ बोले ।'

कुलवन्त कौर थोडी देर के लिए मौन हो गई, फिर एकदम भडककर बोली, लेकिन मेरी समझ म नहीं आता, उस रात तुम्हे क्या हुआ था ? अच्छे भले मेरे साथ लेटे थ, मुझे तुमने वह सारे गहने पहना रखे थ जो तुम शहर से लूटकर लाए थे, मेरी भप्पियां ले रहे थे, पर न जाने तुम्हे एकदम क्या हुआ, उठे और कपडे पहनकर बाहर निकल गए ।'

ईशरसिंह का चेहरा उतर गया। यह परिवतन देखते ही कुलवन्त कौर ने कहा, देखा कैसे रग पीला पड गया है—इशरसिहा, कसम वाहे गुरु की, जरूर दाल मे कुछ काला है ।'

तेरी जान की कसम, कुछ भी नही ।'

ईशरसिंह की आवाज बेजान थी। कुलवन्त कौर का सन्देह और भी दृढ हो गया। ऊपर का होठ भीचकर उसने एक-एक शब्द पर जोर देते हुए कहा, 'ईशरसिहा क्या बात है ? तुम वह नहीं रहे जो आज से आठ दिन पहले थे।

ईशरसिंह एकदम उठ बैठा जसे किसीने उसपर हमला कर दिया हो। कुलवन्त कौर को अपनी शक्तिशाली बाहो म समेटकर उसने पूरे जोर से उसे झभोडना शुरू कर दिया, जानी, वही हू घुट घुट पा जाफियां, तेरी निकले हड्डा दी गर्मी

कुलवन्त कौर ने कोई हस्तक्षेप न किया लेकिन वह शिकायत करती रही, 'तुम्हे उस रात क्या हो गया था ?

बुरे की मा का वह हो गया था ।

बताओगे नही ?'

कोई बात हो तो बताऊ।'

'मुझे अपने हाथ स जलाओ जो झूठ बोलो ।'

ईशरसिंह ने अपनी बाहें उसकी गदन के गिर्द डाल दी और होठ

उसके हाठो मे गाड दिए। मूछो के बाल कुलवन्त कौर के नथुनो मे घसे तो उस छींक ग्रा गई।

दोनो हसने लगे।

ईशरसिंह ने अपनी फतूही उतार दी और कुलवन्त कौर की ओर वासना भरी नजरो से देखकर कहा, 'आओ जानी, एक बाजी ताश की हो जाए।'

कुलवन्त कौर के ऊपरी होठ पर पसीने की नन्ही-नन्ही बूदें फूट आई। एक अदा के साथ उसने अपनी आखो की पुतलिया घमाई और बोली 'चल दफान हो।'

ईशरसिंह ने उसके भरे हुए कूल्हे पर जोर से चुटकी भरी। कुलवन्त कौर तडपकर एक ओर हट गई, 'न कर ईशरसिंह, मेरे दद होता है।'

ईशरसिंह ने आगे बढकर कुलवन्त कौर का ऊपरी होठ अपने दातो तले दबा लिया और कचकचाने लगा। कुलवन्त कौर बिलकुल पिघल गई। ईशरसिंह ने अपना कुर्ता उतारकर फेंक दिया और कहा, 'लो, फिर हो जाए तुरप चाल'

कुलवन्त कौर का ऊपरी होठ कपकपाने लगा। ईशरसिंह ने दोनो हाथो से कुलवन्त कौर की कमीज का घेरा पकडा और जिस तरह बकरे की खाल उतारते है, कमीज उतारकर एक ओर रख दी। फिर उसने घूर-कर उसके नगे बदन को देखा और जोर से उसके बाजू पर चुटकी भरते हुए कहा, 'कुलवन्त, कसम वाह गुरु की, बडी करारी औरत है तू।'

कुलवन्त कौर अपने बाजू पर उभरते हुए लाल धब्बे को देखते हुए बोली, 'बडा जालिम है तू ईशरसिंह।'

ईशरसिंह अपनी घनी काली मूछो मे मुस्कराया 'होने दे आज जुल्म' और यह कहकर उसने और अधिक जुल्म ढाने शुरू किए। कुलवन्त कौर का ऊपरी होठ दातो तले कचकचाया, कान की लवो को काटा, उभरे हुए सीने को भभोडा, भरे हुए कूल्हो पर आवाज पैदा करने वाले चाटे मारे, गालो के मुह भर भरके चुम्बन लिए। चूस चूस के उसका सारा सीना थूको से लथेड दिया। कुलवन्त कौर तेज आच पर चढी हुई हाण्डी की तरह

उबलने लगा, लेकिन यह सब करने पर भी ईशरसिंह अपने आपमें गर्मी पैदा न कर सका। जितने गुर और जितने दाव उसे याद थे सबके सब उसने पिट जाने वाले पहलवान की तरह आजमा डाले पर कोई भी कार-गर न हुआ। कुलवन्त कौर जिसके बदन के सारे तार तनकर आप ही आप बज रहे थे—आवश्यक छेड़ छाड़ से तंग आकर बोली, 'ईशरसिंह, काफी फेंट चुका, अब पत्ता फेंक।'

यह सुनते ही ईशरसिंह के हाथ में जैसे ताश की सारी गड्डी नीचे फिसल गई। हांफता हुआ वह कुलवन्त कौर के पहलू में लेट गया और उसके माथे पर ठण्डे पसीने के लेप होने लगे।

कुलवंत कौर ने उसे गरमाने की बहुत कोशिश की लेकिन असफल रही। अब तक सब कुछ मुंह से कहे बिना होता रहा था, लेकिन जब कुलवंत कौर के तने हुए अंगों को घोर निराशा हुई तो वह झल्लाकर पलंग से उतर गई। सामने खूंटी पर चादर पड़ी थी, उसे उतारकर उसने जल्दी जल्दी अपने शरीर के गिर्द लपेटा और नथुने फुलाकर बिफरे हुए स्वर में बोली, 'ईशरसिंह वह कौन हरामजादी है, जिसके पास तू इतने दिन रहकर आया है, जिसने तुझे निचोड़ डाला है?'

ईशरसिंह उसी तरह पलंग पर लेटा हांफता रहा। उसने कोई उत्तर नहीं दिया।

कुलवंत कौर क्रोधवश उबलने लगी, 'मैं पूछती हूं, कौन है वह चुड़ैल, कौन है वह लिफ्ती, कौन है वह चोर पत्ता?'

ईशरसिंह ने निढाल स्वर में उत्तर दिया 'कोई भी नहीं कुलवंत, कोई भी नहीं।'

कुलवंत कौर ने अपने भरे हुए कूल्हों पर हाथ रखकर बड़ी दृढ़ता से कहा, ईशरसिंहा आज सच झूठ जानकर रहूंगी—खाओ वाहे गुरजी की कसम—क्या इसकी तह में कोई औरत नहीं?

ईशरसिंह ने कुछ कहना चाहा, लेकिन कुलवंत कौर ने उसके बोलने से पहले एक बार फिर कड़े स्वर में कहा 'कसम खाने से पहले सोच ले कि मैं भी सरदार निहालसिंह की बेटी हूं बोटी बोटी नोच डालूंगी अगर तूने झूठ बोला—ले अब खा वाहे गुरुजी की कसम क्या इसकी तह में

कोई औरत नही ?'

ईशरसिंह ने बडे दु ख के साथ 'हा' मे अपना सिर हिलाया । कुलवत कौर बिलकुल दीवानी हो गई । लपककर कोने म से करपान उठाई । म्यान को केले के छिलके की तरह उतारकर एक वार फेरा और ईशरसिंह पर वार कर दिया ।

दूसरे ही क्षण लहू का फव्वारा छूट पडा । कुलवत कौर की इससे भी तसल्ली न हुई तो उसने जगली बिल्लियो की तरह ईशरसिंह के बाल नोचने शुरू कर दिए । साथ ही साथ वह अपनी अनात सौत को मोटी-मोटी गालिया देती रही । ईशरसिंह ने थोडी देर के बाद क्षीण स्वर मे प्रार्थना की, 'जाने दे कुलवत, अब जाने दे ।'

आवाज पीडा से परिपूर्ण थी । कुलवत कौर पीछे हट गई ।

लहू ईशरसिंह के गले से उड-उडकर उसकी मूछो पर गिर रहा था । उसने अपने कापते हुए होठ खोले और कुलवत कौर की ओर धन्यवाद और उलाहने की मिली-जुली नजरो से देखते हुए बोला, 'मेरी जान, तुमने बहुत जल्दी की, लेकिन जो हुआ, ठीक ही हुआ ।'

कुलवत कौर की ईर्ष्या फिर भडकी, 'मगर वह कौन है तुम्हारी मा ?'

लहू ईशरसिंह की जबान तक पहुच गया । जब उसने उसका स्वाद चखा तो उसके बदन मे झुरझुरी-सी दौड गई ।

'और मैं मैं भैनी-या छ आदमियो को कत्ल कर चुका हू इसी करपान स '

कुलवत कौर के दिमाग मे केवल दूसरी औरत थी, 'मैं पूछती हू, कौन है वह हरामजादी ?'

ईशरसिंह की आखें धुधला रही थी । एक हल्की-सी चमक उनमे पैदा हुई और उसने कुलवत कौर से कहा, 'गाली न दे उस भडवी को ।'

कुलवत चिल्लाई 'मैं पूछती हू, वह है कौन ?'

ईशरसिंह के गले म आवाज रुध गई, 'बताता हू,' कहकर उसने अपनी गर्दन पर हाथ फेरा और उसपर अपना जिदा लहू देखकर मुस्कराया, '*इसान मा-या भी अजीब चीज है ।*'

कुलवत कौर उसके उत्तर की प्रतीक्षा मे थी, 'ईशरसिंह, तू मतलब

की बात कर।

ईशरसिंह की मुस्कराहट उसकी लहू भरी मूछों में और अधिक फैल गई, मतलब ही की बात कर रहा हूं गला चिरा हुआ है मा-या मेरा, अब धीरे धीरे ही सारी बात बताऊंगा।'

और जब वह बात बताने लगा तो उसके माथे पर फिर ठण्डे पसीने के लेप होने लगे, 'कुलवंत ! मेरी जान मैं तुम्हें नहीं बता सकता, मेरे साथ क्या हुआ इंसान कुड़ी-या भी अजीब चीज है शहर में लूट मची तो सब लोगों की तरह मैंने भी उसमें हिस्सा लिया गहने पाते और रुपये पैसे जो भी हाथ लगे, वह मैंने तुम्हें दे दिए लेकिन एक बात तुम्हें न बताई।'

ईशरसिंह के घाव में पीड़ा हुई और वह कराहने लगा। कुलवंत कौर ने उसकी ओर कोई ध्यान न दिया और बड़ी निर्दयता से पूछा, 'कौन-सी बात ?'

ईशरसिंह ने मूछों पर टपकते हुए लहू को फूंक मारकर उड़ाते हुए कहा, 'जिस मकान पर मैंने धावा बोला था उसमें सात उसमें सात आदमी थे छः मैंने कत्ल कर दिए इसी करपान से जिससे तूने मुझे छोड़ इसे सुन एक लड़की थी बहुत सुन्दर उसको उठाकर मैं अपने साथ ले आया।'

कुलवंत कौर चुपचाप सुनती रही। ईशरसिंह ने एक बार फिर फूंक मारकर मूछों पर से लहू उड़ाया, 'कुलवंत जानी, मैं तुमसे क्या कहूं, कितनी सुन्दर थी, मैं उसे भी मार डालता, पर मैंने कहा, नहीं ईशर-सिहां, कुलवंत कौर के तू हर रोज मजे लेता है, यह मेवा भी चख देख।'

कुलवंत कौर ने केवल इतना कहा, 'हूं!'

और मैं उसे कंधे पर डालकर चल दिया रास्ते में क्या कह रहा था मैं ? हां रास्ते में नहर की पटरी के पास थोहड़ की झाड़ियों तले मैंने उसे लिटा दिया पहले सोचा कि फेंटूं लेकिन ख्याल आया कि नहीं 'यह कहते-कहते ईशरसिंह की जबान सूख गई।

कुलवंत कौर ने थूक निगलकर अपना कण्ठ तर किया और पूछा, फिर क्या हुआ ?'

ईशरसिंह के कण्ठ से बड़ी मुश्किल से ये शब्द निकले, 'मैंने पत्ता फेंका लेकिन लेकिन 'उसकी आवाज डूब गई।

कुलवंत कौर ने उसे झंझोड़ा, 'फिर क्या हुआ?'

ईशरसिंह ने अपनी बंद होती हुई आंखें खोलीं और कुलवंत कौर के शरीर की ओर देखा, जिसकी बोटी-बोटी फड़क रही थी 'वह मरी हुई थी लाश थी बिलकुल ठण्डा गोश्त जानी मुझे अपना हाथ दे '

कुलवंत कौर ने अपना हाथ ईशरसिंह के हाथ पर रखा, जो बर्फ से भी ज्यादा ठण्डा था।

काली सलवार

दिल्ली आने से पहले वह अम्बाला छावनी में थी, जहां कई गोरे उसके गाहक थे। उन गोरे ग्राहकों के कारण वह अंग्रेजी के दस-बारह वाक्य सीख गई थी। उन वाक्यों का वह साधारण बोल चाल में इस्तेमाल नहीं करती थी, लेकिन जब वह दिल्ली में आई और उसका कारोबार न चला तो एक दिन उसने अपनी पड़ोसिन तमचा जान से कहा

'दिस लैफ वरी बड यानी यह जिन्दगी बहुत बुरी है जबकि खाने का ही नहीं मिलता।'

अम्बाला छावनी में उसका धंधा बहुत अच्छी तरह चलता था। छावनी के गोरे शराब पीकर उसके पास भी आ जाते थे और वह बीस-तीस रुपये पैदा कर लिया करती थी। ये गोरे उसके देशवासियों के मुकाबले में बहुत अच्छे थे। इसमें संदेह नहीं कि वे ऐसी भाषा बोलते थे जिसका मतलब सुलताना की समझ में नहीं आता था, लेकिन उनकी भाषा से यह अज्ञानता उसके लिए बड़ी हितकर सिद्ध होती थी। अगर वे उससे कुछ रियायत चाहते तो वह सिर हिलाकर कह दिया करती, 'साब हमारी समझ में तुम्हारी बात नहीं आती।'

और, अगर वे जरूरत से ज्यादा छेड़ छाड़ करते तो वह उनको अपनी भाषा में गालियां देना शुरू कर देती थी। आश्चर्य से उसके मुंह की ओर देखते तो वह उनसे कहती

साब, तुम एकदम उल्लू का पट्ठा है। हरामजादा है समझा।' यह कहते हुए वह अपने स्वर में सख्ती पैदा नहीं करती थी बल्कि बड़े प्यार से यह सब कहती थी। गोरे हंस देते और हंसते समय वे सुलताना को बिल्कुल उल्लू के पट्ठे दिखाई देते।

लेकिन यहां दिल्ली में वह जब से आई थी, एक गोरा भी उसके यहां नहीं आया था। तीन महीने उस हिंदुस्तान के इस शहर में रहते हो

गए थे, जहा उसने सुना था कि बडे लाट साहब रहते हैं, जो गर्मियो में शिमले चले जाते हैं। इन तीन महीनो मे केवल छ आदमी उसके पास आए थे—केवल छ, अर्थात् महीने मे दो—और इन छ ग्राहको से उसने खुदा झूठ न बुलवाए तो साढे अठारह रुपये वसूल किए थे।

साढे अठारह रुपये तीन महीनो मे। बीस रुपये मासिक तो उस कोठे का किराया ही था, जिसे मकान मालिक अंग्रेजी भाषा म फ्लैट कहता था। उस फ्लैट में ऐसा पाखाना था जिसम जजीर खींचने से सारी गन्दगी पानी के जोर से एकदम नीचे नल मे गायब हो जाती थी और बडा शोर होता था। शुरू शुरू में तो इस शोर ने उसे बहुत डराया था। पहले दिन जब वह पाखाने म गई तो उसकी कमर मे बडा दर्द हो रहा था। उसने लटकी हुई जजीरो का सहारा ले लिया, जिसके बारे म उसका खयाल था कि उस जैसी औरतो के सहारे के लिए ही लगाई गई थी, लेकिन ज्यो ही उसने जजीर को पकडकर उठना चाहा ऊपर खट खट सी हुई और फिर पानी इस शोर के साथ बाहर निकला कि डर के मारे उसके मुह से चीख निकल गई।

खुदाबख्श दूसरे कमरे मे अपना फोटोग्राफी का सामान ठीक कर रहा था और एक साफ बोतल म हाइड्रोकोनीन डाल रहा था कि उसने सुलताना की चीख सुनी। दौडकर बाहर निकला और सुलताना से पूछा

'क्या हुआ ? यह चीख तुम्हारी थी ?'

सुलताना का दिल धडक रहा था। उसने कहा, 'यह मुआ पाखाना है या क्या है ? बीच मे यह रेलगाडियो की तरह जजीर क्या लटका रखी है ? मेरी कमर म दर्द था, मैंने कहा, चलो इसका सहारा ले लूगी, पर इस मुई जजीर को छेडना था कि वह धमाका हुआ कि मैं तुमसे क्या कहू।

इसपर खुदाबख्श बहुत हसा था और उसने सुलताना को उस पाखाने की बाबत सब कुछ बता दिया था कि वह नये फैशन का पाखाना है, जिसमे जजीर खींचने से सारी गन्दगी नीचे जमीन मे चली जाती है।

खुदाबख्श और सुलताना का आपस म कैसे सम्बन्ध हुआ, यह एक

लम्बी कहानी है। खुदाबख्श रावलपिण्डी का था। मट्रिक पास करने के बाद उसने लारी चलाना सीखा और फिर चार साल तक रावलपिण्डी और कश्मीर के दर्मियान लारी चलाने का काम करता रहा। उसके बाद कश्मीर में उसकी दोस्ती एक औरत से हो गई और वह उसे भगाकर लाहौर ले आया। लाहौर में चूंकि उसे कोई काम न मिला, इसलिए उसने उस औरत को पेशे पर बिठा दिया। दो-तीन साल तक तो यह सिलसिला चलता रहा फिर वह औरत किसी और के साथ भाग गई। खुदाबख्श को पता चला कि वह अम्बाला में है। वह उसकी तलाश में अम्बाला आया।, यहां उसे औरत की बजाय उसे सुलताना मिल गई। सुलताना ने उसको पसंद किया अतएव दोनों में सम्बन्ध हो गया।

खुदाबख्श के आने से सुलताना का कारोबार एकदम चमक उठा। औरत चूंकि अंधविश्वासी थी, इसलिए उसने समझा कि खुदाबख्श बड़ा भाग्यवान है जिसके आने से इतनी उन्नति हो गई, अतएव उसकी दृष्टि में खुदाबख्श का महत्त्व और भी बढ़ गया।

खुदाबख्श आदमी मेहनती था। सारा दिन हाथ पर हाथ रखकर बैठना उसे पसंद नहीं था, इसलिए उसने एक फोटोग्राफर से दोस्ती पैदा कर ली, जो रेलवे स्टेशन के बाहर कमरे में फोटो खींचा करता था। उससे खुदाबख्श ने फोटो खींचना सीखा, फिर सुलताना से साठ रुपये लेकर कैमरा भी खरीद लिया। धीरे धीरे एक पर्दा बनवाया, दो कुर्सियां खरीदीं और फोटो धोने का सारा सामान लेकर उसने अलग से अपना काम शुरू कर दिया।

काम चल निकला और कुछ दिनों के बाद ही उसने अपना अड्डा छावनी में कायम कर लिया। यहां वह गोरों के फोटो खींचता। एक महीने के भीतर भीतर छावनी के बहुत से गोरों से उसका परिचय हो गया, अतएव वह सुलताना को भी वहीं छावनी में ले गया और खुदाबख्श ही के माध्यम से कई गोरे सुलताना के स्थायी ग्राहक बन गए।

सुलताना ने कानों के बुंदे खरीदे। साढ़े पांच तोले की आठ कगनियां भी बनवाईं। दस पन्द्रह अच्छी अच्छी साड़ियां भी खरीद लीं। घर में

फर्नीचर भी आ गया। मतलब यह कि अम्बाला छावनी मे वह काफी खुशहाल थी कि एकाएक न जाने खुदाबख्श के दिल मे क्या समाई कि उसने दिल्ली जाने की ठान ली। सुलताना कैसे इनकार करती जबकि खुदाबख्श को वह अपने लिए बड़ा शुभ मानती थी। उसने खुशी-खुशी दिल्ली जाना मान लिया, बल्कि उसने यह भी सोचा कि इतने बड़े शहर मे, जहा लाट साहब रहते हैं, उसका धधा और भी चलेगा। अपनी सहेलियो से वह दिल्ली की प्रशसा सुन चुकी थी। फिर वहा हजरत निजामुद्दीन औलिया की दरगाह भी थी जिसके प्रति उसके दिल मे बड़ी श्रद्धा थी। अतएव जल्दी-जल्दी घर का भारी सामान बेच बाचकर वह खुदाबख्श के साथ दिल्ली आ गई। यहा पहुचकर खुदाबख्श ने बीस रुपये मासिक पर यह फ्लैट लिया, जिसमे दोनो रहने लगे।

एक ही ढग के नये मकानो की लम्बी सी पक्ति सडक के साथ-साथ चली गई थी—म्युनिसिपल कमेटी ने शहर का यह भाग विशेष रूप से वेश्याओ के लिए मुकर्रर कर दिया था ताकि वे शहर मे जगह जगह अपने अड्डे न बनाए। नीचे दुकानें थी और ऊपर दोमजिला रिहायशी फ्लैट। सारी इमारतें चूकि एक ही डिजाइन की बनी हुई थी, इसलिए शुरू-शुरू मे सुलताना को अपना फ्लैट ढूढने मे बहुत कठिनाई हुई थी, लेकिन फिर जब नीचे के लाण्डरीवाले ने अपना भारी-भरकम बोर्ड ऊपर लटका दिया तो उसे एक पक्की निशानी मिल गई—यहा मैले कपडो की धुलाई की जाती है यह बोर्ड पढते ही वह अपना फ्लैट तलाश कर लिया करती थी। इसी प्रकार उसने और भी बहुत सी निशानिया कायम कर ली थीं। उदाहरणत जहा बड़े-बड़े अक्षरो मे 'कोयले की दुकान' लिखा हुआ था, वहा उसकी सहेली हीराबाई रहती थी, जो कभी-कभी रेडियो घर मे गाने जाती थी। जहा 'शुरफा (सज्जनो) के खाने का आला इतिजाम है' लिखा था, वहा उसकी सहेली मुख्तार रहती थी। निवाड के कारखाने के ऊपर अनवरी रहती थी, जो उसी कारखाने के सेठ के पास 'मुलाजिम' थी। सेठ साहब को चूकि रात के समय अपने कारखाने की देखभाल करनी होती थी, इसलिए वे अनवरी के पास रहते थे। दुकान खोलते ही ग्राहक थोडे ही आते हैं—जब

सुलताना एक महीना तक बेकार रही तो उसने यही सोचकर अपने दिल को तसल्ली दी। जब दो महीने गुजर गए और कोई आदमी उसके कोठे पर न आया तो उसे बडी चिन्ता हुई। उसने खुदाबख्श से कहा

'क्या बात है खुदाबख्श, पूरे दो महीने हो गए हैं हमे यहा आए हुए, किसीने इधर मुह भी नही किया। मानती हू, आजकल बाजार बहुत मन्दा है, पर इतना मन्दा भी तो नही कि महीने मे एक भी शक्ल देखने मे न आए।'

खुदाबख्श को भी यह बात बहुत पहले से खटक रही थी लेकिन वह चुप था। सुलताना ने जब स्वय ही बात छेडी तो उसने कहा 'मैं कई दिनो से इस बारे मे सोच रहा हू। एक ही बात समझ मे आती है कि जग की वजह से लोग बाग दूसरे धधो मे पडकर इधर का रास्ता भूल गए हैं या फिर यह हो सकता है कि '

वह इसके आगे कुछ कहने ही वाला था कि सीढियो पर किसीके चढने की आवाज आई। खुदाबख्श और सुलताना दोनो के कान खडे हो गए। थोडी देर के बाद दरवाजे पर दस्तक हुई। खुदाबख्श ने लपककर दरवाजा खोला, एक आदमी भीतर आया। यह पहला ग्राहक था। इसके बाद पाच और आए अर्थात तीन महीने मे कुल छ, जिनसे सुलताना ने केवल साढे अठारह रुपये वसूल किए।

बीस रुपये मासिक तो फ्लैट के किराये मे चले जाते थे, पानी का टैक्स और बिजली का बिल अलग। इसके अतिरिक्त घर के अन्य खर्च, खाना पीना कपडे-लत्ते दवा दारू और आमदनी कुछ भी नही थी। तीन महीने मे साढे अठारह रुपये आए तो इसे आमदनी तो नही कहा जा सकता। सुलताना परेशान हो गई। साढे पाच तोले की आठ कगनिया, जो उसने अबाले मे बनवाई थी एक एक करके बिक गई। जब आखिरी कगनी की बारी आई तो उसने खुदाबख्श से कहा

'तुम मेरी सुनो और चलो वापस अबाले—यहा क्या धरा है? भई होगा, पर हम तो यह शहर रास नही आया। तुम्हारा काम भी वहा खूब चलता था। चलो वही चलते हैं। जो नुकसान हुआ है उसे अपना सिर-सदका समझो। इस कगनी को बेचकर आओ, मैं सामान वगैरा बाधकर

रखनी हू। आज ही रात की गाडी से यहां न चल देंगे।'

सुदावख्श न कगनी सुलताना के हाथ से ले ली और कहा, 'रहने जाने मन। अबाले नही जाएगे। यही दिल्ली म रहकर कमाएगे। य तुम्हारी चूडिया सबकी सब यहीं वापस आएगी। अल्लाह पर भरोसा रखो, वह बडा कारसाज है। यहा भी कोई न कोई सबब बना ही देगा।

सुलताना चुप हो रही और या आखिरी कगनी भी हाथ म उतर गई। बुच्चे हाथ देखकर उसको बहुत दुख होता था, पर क्या करती। पेट भी तो किसी हीले भरना था।

जब पाच महीने गुजर गए और आमदनी खर्च के मुकाबले मे चौथाई से भी कम रही तो सुलताना की परेशानी और अधिक बढ गई। सुलताना को इसका भी दुख था। इसम कोई शक नहीं कि पडोस म उसकी दो-तीन मिलने वालिया मौजूद थीं, जिनके साथ वह अपना समय काट सकती थी, लेकिन प्रतिदिन उनके यहा जाना और घण्टो बैठे रहना उसको बहुत बुरा लगता था। अतएव धीरे धीरे उसने उन सहेलियो से मिलना-जुलना भी बन्द कर दिया और सारा दिन अपने सुनसान मकान में बैठे रहती। कभी छालिया काटती रहती, कभी अपने पुराने और फटे हुए कपडो को सीती रहती और कभी बाहर बालकनी मे आकर जगले के साथ लगकर खडी हो जाती और सामने रेलवे शेड मे चुपचाप खडे या इधर-उधर शट करते हुए इजनो की ओर निहारती रहती।

सडक के दूसरी ओर मालगोदाम था जो इस कोने से उस कोने तक फैला हुआ था। दाहिने हाथ को लोहे की छत के नीचे बडी बडी गाठें पडी रहती थी और हर प्रकार के माल असबाब के ढेर से लगे रहते थे। बायें हाथ को खुला मैदान था जिसम रेल की अनगिनत पटरिया बिछी हुई थीं। धूप म लोहे की ये पटरिया चमकती तो सुलताना अपने हाथो की ओर देखती जिन पर नीली नीली नाडिया बिलकुल उन पटरियो की तरह उभरी रहती थी। इस लम्बे और खुले मैदान मे हर समय इजन और गाडिया चलती रहती—कभी इधर, कभी उधर। वातावरण मे इजन और गाडियो की छक छक, फक फक गूजती रहती थी। सुबह-सवेरे जब वह उठकर बालकनी म आती तो इधर उधर खडे इजनो के

मुह से गाढा गाढा धुम्रा निकलकर गदले आकाश मे भारी भरकम आदमियो की तरह उठता नजर आता। भाप के बडे-बडे बादल भी शोर मचाते हुए पटरियो से उठते और आख झपकने की देर मे हवा मे घुल-मिल जाते। फिर कभी कभी जब वह गाडी के किसी डिब्बे को, जिसे इजन ने धक्का देकर छोड दिया होता था, अकेले पटरियो पर चलता हुआ देखती तो उसे अपना खयाल आ जाता। वह सोचती कि उसे भी किसीन जिदगी की पटरी पर धक्का देकर छोड दिया है और वह आप ही आप बढी चली जा रही है—न जाने कहा, किधर ? और फिर एक दिन ऐसा आएगा जब वह कहीं रुक जाएगी। किसी ऐसे स्थान पर जो उसको देखा भाला नही होगा। अम्बाला छावनी मे भी उसका घर स्टेशन के पास था, लेकिन वहा कभी उसने इन चीजो को इस नजर से नहीं देखा था। और अब तो कभी कभी वह यह भी सोचने लगती थी कि यह जो सामने रेल की पटरियो का जाल-सा बिछा है और जगह जगह से भाप और धुम्रा उठ रहा है यह एक बहुत बडा चकला है जिसमे गाडी रूपी अनगिनत वेश्याए वास करती है। कई बार सुलताना को ये इजन सेठ मालूम होते जो कभी कभी अम्बाला मे उसके यहा आया करते थे। फिर कभी कभी जब वह किसी इजन को धीरे धीरे गाडियो की पक्ति के पास से गुजरता देखती तो ऐसा लगता कि कोई आदमी चकले के किसी बाजार मे से ऊपर कोठो की ओर देखता हुआ चला जा रहा है।

सुलताना समझती थी कि इस प्रकार के विचार आने का कारण दिमाग की खराबी है, अतएव जब ऐसे विचार बहुत अधिक आने लगे तो उसने बालकनी मे जाना ही छोड दिया। खुदाबख्श से उसने कई बार कहा

देखो मेरे हाल पर रहम करो। यहा घर म रहा करो, मैं सारा दिन यहा बीमारो की तरह पडी रहती हू।'

लेकिन वह हर बार यह कहकर सुलताना की तसल्ली कर देता, 'जानेमन मैं बाहर कुछ कमाने की फिक्र कर रहा हू। अल्लाह ने चाहा तो कुछ दिनो म ही बेडा पार हो जाएगा।

पूरे पाँच महीने हो गए थे, मगर अभी तक न सुलताना का बेड़ा पार हुआ था न खुदाबख्श का। मुहर्रम का महीना सिर पर आ रहा था और सुलताना के पास काले कपड़े बनवाने के लिए फूटी कौड़ी भी न थी। मुख्तार ने लेडी हैमिल्टन की एक नई काट की कमीज बनवाई थी जिसकी आस्तीनें काली जार्जेट की थीं। उसके साथ मैच करने के लिए उसके पास काली साटन की सलवार थी, जो काजल की तरह चमकती थी। अनवरी ने रेशमी जार्जेट की एक बड़ी नफीस साड़ी खरीदी थी। उसने सुलताना को बताया था कि वह इस साड़ी के नीचे सफेद बोस्की का पेटीकोट पहनेगी क्योंकि यह नया फैशन है। इस साड़ी के साथ पहनने के लिए अनवरी काली मखमल का जूता लाई थी, जो बड़ा नाजुक था। सुलताना ने जब ये सारी चीजें देखीं तो उसे इस एहसास से बहुत ही दुःख हुआ कि मुहर्रम मनाने के लिए ऐसा लिबास खरीदने की उसमें सामर्थ्य नहीं है।

अनवरी और मुख्तार के पास यह लिबास देखकर जब वह घर आई तो उसका मन बड़ा खिन्न था। कुछ ऐसा लगता था कि उसके भीतर एक फोड़ा-सा पैदा हो गया है। घर बिलकुल खाली था। खुदाबख्श नियमानुसार बाहर गया हुआ था। काफी देर तक वह दरी पर गावतकिया सिर के नीचे रखे चुपचाप लेटी रही। ऊँचाई के कारण जब गर्दन अकड़-सी गई तो बाहर बालकनी में चली गई ताकि चिंतावर्द्धक विचारों को मन से निकाल सके।

सामने पटरियों पर गाड़ियों के डिब्बे खड़े थे पर इंजन कोई भी न था। शाम का समय था। सड़क पर छिड़काव हो चुका था और ऐसे लोगों का आवागमन शुरू हो गया था जो ताक-झाँक करने के बाद चुपचाप अपने घरों का रास्ता पकड़ते थे। ऐसे ही एक आदमी ने गर्दन उठाकर सुलताना की ओर देखा। सुलताना मुस्करा दी। लेकिन शीघ्र ही उसकी नजरें उसपर से हट गईं क्योंकि अब सामने की पटरियों पर कहीं से एक इंजन निकल आया था। सुलताना बड़े ध्यान से इंजन की ओर देखने लगी और एकाएक ही यह विचार उसके मन में आया कि इंजन ने भी काला लिबास पहन रखा है—यह विचित्र विचार मन से झटकने के लिए उसने

सडक की ओर देखा तो वही आदमी एक बैलगाडी के पास खडा नजर आया जिसने थोडी देर पहले ललचाई हुई नजरो से सुलताना की ओर देखा था। सुलताना ने हाथ से उसे इशारा किया। उस आदमी ने इधर उधर देखकर एक हलके से इशारे से पूछा—किधर से आऊ ? सुलताना ने सीढियो का रास्ता बता दिया। वह आदमी कुछ देर तो वही खडा रहा और फिर बडी फुरती से ऊपर चला आया।

सुलताना ने उसे दरी पर बिठाया। जब वह बैठ गया तो बात चलाने के लिए सुलताना ने पूछा

'आप ऊपर आते हुए डर क्यो रहे थे ?

वह आदमी मुस्कराया, 'तुम्हे कैसे मालूम हुआ ? भला इसमे डरने की क्या बात है ?

'यह मैंने इसलिए पूछा क्योकि आप देर तक वही खडे रहे थे।

यह सुनकर वह फिर मुस्कराया और बोला, 'तुम्हे गलतफहमी हुई है। मैं तुम्हारे ऊपर वाले फ्लैट की तरफ देख रहा था जहा कोई औरत खडी एक मर्द को ठेंगा दिखा रही थी। यह देखकर मुझे बडा मजा आया। फिर बालकनी मे हरा बल्ब जला तो मैं कुछ देर के लिए रुक गया। हरी रोशनी मुझे पसद है। आखो को बहुत अच्छी लगती है।' यह कहकर उसने सुलताना के कमरे मे इधर-उधर देखना शुरू कर दिया। फिर एका एक उठ खडा हुआ।

सुलताना ने पूछा आप जा रहे हैं ?'

उस आदमी ने उत्तर दिया, 'नही, मैं तुम्हारे इस मकान को देखना चाहता हू। चलो मुझे सारे कमरे दिखाओ।'

सुलताना ने उसे तीनो कमरे एक एक करके दिखा दिए। उस आदमी ने बिलकुल खामोशी से उन कमरो का मुआयना किया। जब वे दोनो फिर उसी कमरे मे आ गए जहा पहले बैठे थे तो उस आदमी ने कहा

मेरा नाम शकर है।

सुलताना ने पहली बार गौर से शकर की ओर देखा। वह साधारण शक्ल सूरत का आदमी था, लेकिन उसकी आखें असाधारण रूप से स्वच्छ और निर्मल थी और कभी कभी उनमे एक विचित्र प्रकार की

चमक भी पदा हो जाती थी। गठीला और कसरती बदन था। कनपटियों पर उसके बाल सफेद हो रहे थे। भूरे रंग की गर्म पतलून पहने हुए था। कमीज सफेद थी और उसका कालर गर्दन पर से ऊपर को उठा हुआ था। शंकर कुछ इस प्रकार दरी पर बैठा हुआ था कि मालूम होता था शंकर की बजाय सुलताना ग्राहक है। इस एहसास ने सुलताना को कुछ परेशान कर दिया, अतएव उसने शंकर से कहा, 'फर्माइए '

शंकर बैठा हुआ था। यह सुनकर लेटते हुए बोला, 'मैं क्या फर्माऊं, कुछ तुम ही फर्माओ। बुलाया तुम ही ने है।'

जब सुलताना कुछ न बोली तो वह उठ बैठा, 'मैं समझा, लो अब मुझसे सुनो। जो कुछ तुमने समझा, गलत है। मैं उन लोगों में से नहीं हूं जो कुछ देकर जाते हैं। डाक्टरों की तरह मेरी भी फीस है। जब मुझे बुलाया जाए तो फीस देनी ही पड़ती है।'

सुलताना यह सुनकर चकरा गई, लेकिन फिर भी उसे बेइख्तियार हंसी आ गई। पूछा, 'आप काम क्या करते हैं ?'

शंकर ने उत्तर दिया, 'यही जो तुम लोग करते हो।'

'क्या ?'

'तुम क्या करती हो ?'

'मैं मैं मैं कुछ नहीं करती।'

मैं भी कुछ नहीं करता।'

सुलताना ने भिन्नाकर कहा, 'यह तो कोई बात न हुई—आप कुछ न कुछ तो जरूर करते होंगे।'

शंकर ने बड़े इत्मीनान से उत्तर दिया, 'तुम भी कुछ न कुछ जरूर करती होगी।

'झक मारती हूं।'

मैं भी झक मारता हूं।'

'तो आओ दोनों झक मारें।'

'हाजिर हूं, लेकिन मैं झक मारने के दाम कभी नहीं दिया करता।'

'होश की दवा करो, यह लंगरखाना नहीं है।'

'और मैं भी वालण्टियर नहीं हूं।'

सुलताना यहा रुक गई। उसने पूछा, 'यह वालण्टियर कौन होते हैं ?'

शकर ने उत्तर दिया, 'उल्लू के पट्ठे ।'

'मैं उल्लू की पटठी नही ।'

'मगर वह आदमी खुदाबख्श जो तुम्हार साथ रहता है, जरूर उल्लू का पटठा है ।'

'क्या ?

'इसलिए कि वह कई दिना स एक एसे पहुचे हुए फकीर के पास अपनी किस्मत खुलवान जा रहा है, जिसकी अपनी किस्मत जग लगे ताले की तरह बद है ।

यह कहकर शकर हसा । इसपर सुलताना ने कहा 'तुम हिन्दू हो, इसलिए हमारे बुजुर्गों का मजाक उडात हो ।'

शकर मुस्कराया, 'ऐसी जगहो पर हिन्दू मुस्लिम सवाल पैदा नहीं हुआ करत । बडे बडे पण्डित और मौलवी भी यहा आए ता शरीफ आदमी बन जाए ।'

'जाने क्या ऊटपटाग बातें करत हो बोलो रहोगे ?'

एक शत पर ।'

'शत तुम लगाओगे, सुलताना खीजकर उठ खडी हुई। 'जाओ अपना रास्ता पकडो ।'

शकर आराम स उठा । पतलून की जेबो म अपन दोना हाथ डाले और जात हुए बोला, मैं कभी कभी इस बाजार से गुजरा करता हू । जब भी तुम्हे मेरी जरूरत हो, बुला लेना, बहुत काम का आदमी हू ।'

शकर चला गया और सुलताना काले लिबास को भूलकर दर तक उसके बारे म सोचती रही । उस आदमी की बातो ने उसके दुख को बहुत हल्का कर दिया था । अगर वह अबाले म आया होता, जहा वह खुशहाल थी तो उसने किसी और ही रूप से इस आदमी को देखा होता और बहुत सभव है कि उसे धक्के देकर बाहर निकाल दिया होता लेकिन यहा चूकि वह बहुत उदास रहती थी इसलिए उसे शकर की बातें पसन्द आइ ।

शाम को जब खुदाबख्श आया तो सुलताना ने उससे पूछा, 'तुम आज सारा दिन किधर गायब रहे ?'

खुदाबख्श थकान से चूर चूर हो रहा था। कहने लगा, 'पुराने किले के पास से आ रहा हूं। वहां एक बुजुर्ग कुछ दिनों से ठहरे हुए हैं। रोज उन्हीं के पास से आ रहा हूं, ताकि हमारे दिन फिर जाएं।'

कुछ उन्होंने तुमसे कहा ?'

'नहीं, अभी वह मेहरबान नहीं हुए, पर सुलताना, मैं जो उनकी खिदमत कर रहा हूं, वह बेकार नहीं जाएगी, अल्लाह की मेहरबानी से जल्द ही वारे न्यारे हो जाएंगे।'

सुलताना के दिमाग में मुहर्रम मनाने का ख्याल समाया हुआ था। खुदाबख्श से रोनी आवाज में बोली

'सारा-सारा दिन बाहर गायब रहते हो, मैं यहां पिंजरे में कैद रहती हूं, कहीं आ-जा नहीं सकती। मुहर्रम सिर पर आ गया है, कुछ तुमने उसकी फिक्र भी की कि मुझे काले कपड़े चाहिए। घर में फूटी कौड़ी तक नहीं। कंगनियां थीं सो एक एक करके बिक गई। अब तुम ही बताओ क्या होगा ? यों फकीरों के पीछे कब तक मारे मारे फिरते रहोगे। मुझे तो ऐसा दिखाई देता है कि यहां दिल्ली में खुदा ने भी हम-से मुंह मोड़ लिया है। मेरी सुनो तो अपना काम शुरू कर दो। कुछ तो सहारा हो ही जाएगा।'

खुदाबख्श दरी पर लेट गया और कहने लगा

पर यह काम शुरू करने के लिए भी तो थोड़े बहुत पैसे चाहिए, खुदा के लिए अब ऐसी दुख भरी बातें न करो, मुझसे अब बर्दाश्त नहीं हो सकती। मैंने सचमुच अंबाला छोड़ने में सख्त गलती की, पर जो करता है अल्लाह ही करता है और हमारी भलाई के लिए ही करता है। क्या मालूम कुछ देर और दुख भोगने के बाद हम '

सुलताना ने बात काटते हुए कहा, 'तुम खुदा के लिए कुछ करो। चोरी करो, डाका डालो पर मुझे एक सलवार का कपड़ा जरूर ला दो। मेरे पास सफेद बोस्की की कमीज पड़ी है, मैं उसे रंगवा लूंगी। सफेद नैनूं का एक नया दुपट्टा भी मेरे पास मौजूद है—वही जो तुमने मुझे

दीवाली पर लाकर दिया था। उसे भी कमीज के साथ रगवा लूगी। बस, एक सलवार की कसर है सो तुम किसी न किसी तरह पैदा कर दो दखो तुम्ह मेरी जान की कसम किसी न किसी तरह जरूर ला दो।

खुदाबख्श उठ बैठा।

'अब तुम ख्वाहमख्वाह कसमे दे रही हो—मैं कहा से लाऊगा, मरे पास तो अफीम खाने के लिए भी एक पैसा नही।'

'कुछ भी करो मगर मुझे साढे चार गज की काली साटन ला दो।'

दुआ करो कि आज रात ही अल्लाह दो तीन आदमी भेज दे।'

'लेकिन तुम कुछ नही करोगे, तुम अगर चाहो तो जरूर इतने पैसे पैदा कर सकते हो। जग से पहले यह साटन बारह चौदह आने गज म मिल जाती थी। अब सवा रुपये गज के हिसाब से मिलती है। साढे चार गजा पर कितन रुपय खच हो जाएग?'

'अब तुम कहती हो तो मैं कोई हीला करूगा।' यह कहकर खुदाबख्श उठा, लो अब इन बाता को भूल जाओ। मैं होटल से खाना ले आऊ।'

होटल से खाना आया। दोना ने मिलकर जहर मार किया और सो गए। सुबह हुई, खुदाबख्श पुराने किले वाले फकीर के पास चला गया और सुलताना अकेली रह गयी। कुछ देर लेटी रही, कुछ देर सोती रही और कुछ देर इधर उधर कमरा मे टहलती रही। दोपहर का खाना खाने के बाद उसने सफेद बोस्की की कमीज निकाली और नीचे लाण्डी वाले को रगन के लिए दे आयी। कपडे धोने के साथ साथ वहा रगने का काम भी होता था। यह काम करने के बाद उसन वापस आकर फिल्मो की किताबें पढी, जिनमे उसकी देखी हुई फिल्मो की कहानिया और गीत छपे हुए थे। किताबें पढते पढते वह सो गयी। जब उठी तो चार बज चुके थे, क्याकि धूप आगन म से मोरी के पास पहुच चुकी थी। नहा धो-कर निबटी तो गम चादर ओढकर बालकनी म आ खडी हुई। लगभग एक घण्टा सुलताना बालकनी मे खडी रही। अब शाम हो गई थी। बत्तिया जलन लगी और फिर नीचे सडक पर रौनक बढन लगी और फिर एका-

एक उसे शकर नजर आ गया । तागा और मोटरो से वचता हुआ जब वह मकान के नीचे पहुचा तो कल ही की तरह उसने गदन उठाई और सुलताना की ओर देखकर मुस्करा दिया । न जाने क्यो आप ही आप सुलताना का हाथ उठ गया और उसने शकर को ऊपर आने का इशारा कर दिया ।

जब शकर आ गया तो सुलताना बहुत परेशान हुई कि उससे क्या कहे ? उधर शकर बडा प्रसन्न नजर आ रहा था जैसे अपने ही घर मे आ पहुचा हो । पहले दिन की तरह ही वह बडी बेतकल्लुफी से सिर के नीचे गावतकिया रखकर लेट गया । जब सुलताना ने देर तक कोई बात नही की तो वह स्वय ही बोल पडा, 'तुम मुझे सौ बार बुला सकती हो और सौ बार कह सकती हो कि चले जाओ । मैं एसी बातो पर कभी नाराज नही हुआ करता ।'

सुलताना असमजस म पड गई । बोली, 'नही, बैठो, तुम्हे जाने को कौन कहता है !

शकर मुस्कराया, 'तो मेरी शर्ते तुम्हे मजूर हैं ?'

'कैसी शर्ते ?' सुलताना ने हसकर कहा, 'क्या निकाह कर रहे हो मुझसे ?'

'निकाह और शादी कैसी । न तुम उम्र भर किसीसे निकाह करोगी न मैं । ये रस्म हम लोगो के लिए नही । छोडो इन बातो को, कोई काम की बात करो ।'

बोलो क्या बात करू ?'

'तुम औरत हो, कोई ऐसी बात शुरू करो जिससे दो घडी दिल बहल जाए । इस दुनिया मे सिफ दुकानदारी ही दुकानदारी नही, कुछ और भी है ।'

सुलताना अब दिल ही दिल मे शकर को स्वीकार कर चुकी थी । बोली, 'साफ साफ कहो, तुम मुझसे क्या चाहते हो ?'

'जो दूसरे चाहते है ।' शकर उठकर बैठ गया ।

'तुमम और दूसरा मे फिर फक ही क्या रहा ?'

'तुममे और मुझमे कोई फक नही । उनमे और मुझम जमीन और

आसमान का फर्क है। ऐसी बहुत-सी बातें होती हैं जो पूछनी नही चाहिए, खुद समझना चाहिए।'

सुलताना ने थोडी देर तक शकर की इस बात को समझने की कोशिश की। फिर कहा

'मैं समझ गयी।'

'तो कहो क्या इरादा है?'

तुम जीते मैं हारी—पर मैं कहती हू, आज तक किसीने ऐसी बात कुबूल न की होगी।'

'तुम गलत कहती हो, इसी मुहल्ले मे तुम्हे ऐसी बेवकूफ औरतें भी मिल जाएगी जो कभी यकीन नही करेंगी कि औरत ऐसी जिल्लत कुबूल कर सकती है जो तुम बिना महसूस किए कुबूल करती हो। लेकिन उनके यकीन न करने के बावजूद तुम हजारो की तादाद मे मौजूद हो, तुम्हारा नाम सुलताना है ना?'

'सुलताना ही है।'

शकर उठ खडा हुआ और हसते हुए बोला, 'मेरा नाम शकर है, यह नाम भी अजीब ऊटपटाग होते हैं। चलो आओ अन्दर चलें।'

शकर और सुलताना जब दरी वाले कमरे मे वापस आए तो दोनो हस रहे थे, न जाने किस बात पर। जब शकर जाने लगा तो सुलताना ने कहा, शकर मेरी एक बात मानोगे?'

'पहले बात बताओ।

सुलताना कुछ झेंप गई, तुम कहोगे कि मैं दाम वसूल करना चाहती हू मगर

कहो, कहो, रुक क्यो गई?'

सुलताना ने साहस से काम लेते हुए कहा बात यह है कि मुहर्रम आ रहा है और मेरे पास इतने पैसे नही कि मैं काली सलवार बनवा सकू, यहा के सारे दुखडे तो तुम मुझसे सुन ही चुके हो। कमीज और दुपट्टा मेरे पास मौजूद था जो मैंने आज रगने के लिए दिया है।'

शकर यह सुनकर बोला, तुम चाहती हो कि मैं तुम्हें कुछ रुपये दे

दू जिसम तुम काली तलवार बनवा सको।'

सुलताना न तुरन्त कहा, नहीं, मेरा मतलब यह है कि अगर हो सके तो मुझे एक काली सलवार ला दो।'

शकर मुस्करा दिया, मेरी जेब में तो कभी कभार ही कुछ होता है। फिर भी मैं कोशिश करूंगा। मुहरम की पहली तारीख को तुम्हे यह सलवार मिल जाएगी। तो बस, अब खुश हो गइ ?' फिर एकाएक सुलताना के बुदो की ओर देखकर बोला, 'क्या ये बुदे तुम मुझे दे सकती हो ?'

सुलताना ने हसकर कहा, 'तुम इन्हे लेकर क्या करोगे। चादी के मामूली बुदे हैं। ज्यादा से ज्यादा पाच रुपए के होंगे।'

'मैंने तुमसे बुदे मागे हैं। इनकी कीमत नही पूछी। बोलो, देती हो ?'

'ले लो।' कहकर उसने बुदे उतार दिए। इसके बाद उसे अफसोस भी हुआ लेकिन शकर जा चुका था।

सुलताना को बिलकुल आशा नही थी कि शकर अपना वादा पूरा करेगा, लेकिन आठ दिन के बाद मुहरम की पहली तारीख को सुबह नौ बजे दरवाजे पर दस्तक हुई। सुलताना ने दरवाजा खोला तो शकर खडा था। अखबार मे लिपटा हुआ एक पुलिदा सुलताना को थमाते हुए बोला, 'साटन की काली सलवार है। देख लेना, शायद कुछ लम्बी हो—अब मैं चलता हू।'

शकर सलवार देकर चला गया और दूसरी कोई बात उसने सुलताना से नही की। उसकी पतलून मे सलवटें पडी हुई थी। बाल बिखरे हुए थे। ऐसा मालूम होता था कि अभी-अभी सोकर उठा है और सीधा इधर ही चला आया है।

सुलताना ने कागज खोला। साटन की काली सलवार थी—वैसी ही जैसी वह मुख्तार के पास देख आयी थी। सुलताना बहुत खुश हुई। बुदा और सौदे का जो अफसोस उसे हुआ था, इस सलवार ने और शकर के वादा वफा करने से दूर कर दिया।

दोपहर को वह नीचे लाण्ड्री वाले से अपनी रगी हुई कमीज और दुपट्टा ले आई। तीनो काले कपडे जब उसने पहन लिए तो दरवाजे पर

दस्तक हुई। सुलताना ने दरवाजा खोला तो मुख्तार भीतर दाखिल हुई। उसने सुलताना के तीनों कपड़ों की ओर देखा और बोली, 'कमीज और दोपट्टा तो रंगा हुआ मालूम होता है, पर यह सलवार नई है—कब बनवाई?

सुलताना ने उत्तर दिया, 'आज ही दर्जी लाया है यह कहते हुए उसकी नजरें मुख्तार के कानों पर पड़ी।

ये बुंदे तुमने कहां से लिए?'

आज ही मंगवाए हैं।'

इसके बाद दोनों को थोड़ी देर चुप रहना पड़ा।

बरसात के यही दिन थे। खिड़की के बाहर पीपल के पत्ते इसी तरह नहा रहे थे। सागवान के इसी स्प्रिंगदार पलंग पर, जो अब खिड़की के पास से थोड़ा इधर सरका दिया गया था, एक घाटन लौंडिया रणधीर के साथ चिपटी हुई थी।

खिड़की के बाहर पीपल के नहाए हुए पत्ते रात के दूधियाले अंधेरे में झुमरों की तरह थरथरा रहे थे—और शाम के समय जब दिन भर एक अंग्रेजी अखबार की सब खबरें और विज्ञापन पढ़ने के बाद कुछ सुस्ताने के लिए वह बालकनी में आ खड़ा हुआ था तो उसने घाटन लड़की को, जो साथ वाले रस्सियों के कारखाने में काम करती थी और वर्षा से बचने के लिए इमली के पेड़ के नीचे खड़ी थी, खांस खखारकर अपनी ओर आकर्षित कर लिया था और उसके बाद हाथ के इशारे से ऊपर बुला लिया था।

वह कई दिन से अत्यधिक एकांत से ऊब चला था। युद्ध के कारण बम्बई की लगभग सभी क्रिश्चियन छोकरियां, जो सस्ते दामों में मिल जाया करती थीं, स्त्रियों की अंग्रेजी फौज में भरती हो गई थीं। उनमें से कुछ एक ने फोर्ट के इलाके में डांस स्कूल खोल लिए थे जहां केवल फौजी गोरों को जाने की इजाजत थी। रणधीर बहुत उदास हो गया था।

उसकी उदासी का एक कारण तो यह था कि क्रिश्चियन छोकरियां अप्राप्य हो गई थीं और दूसरा यह कि रणधीर फौजी गोरों की तुलना में कहीं अधिक सभ्य और शिक्षित सुंदर नौजवान था, लेकिन उसपर फोर्ट के लगभग सभी क्लबों के दरवाज़े बंद कर दिए गए थे क्योंकि उसकी चमड़ी सफेद नहीं थी।

युद्ध से पहले रणधीर नागपाड़ा और ताज होटल की कई प्रसिद्ध क्रिश्चियन छोकरियों से शारीरिक सम्बन्ध स्थापित कर चुका था। उसे

अच्छी तरह मालूम था कि इस प्रकार के सबधो के औचित्य स वह निश्चियन लडका के मुकाबले मे कही अधिक जानकारी रखता है जिनस य छोकरिया फैशन के तौर पर रोमास लडाती है और बाद मे किसी बेवकूफ स शादी कर लती है।

रणधीर ने बस यो ही दिल ही दिल म हौजल से बदला लन की खातिर उस घाटन लडकी को इशारे स ऊपर बुला लिया था। हौजल उसके फ्लट के नीचे रहती थी और प्रतिदिन सुबह वर्दी पहनकर अपन कटे हुए बालो पर खाकी रग की टोपी तिरछ कोण म जमाकर बाहर निकलती थी और ऐस बाकपन स चलती थी जसे फुटपाथ पर चलने वाले सभी लोग टाट की तरह उसके कदमा म बिछत चले जाएगे।

रणधीर सोचता था कि आखिर क्यो वह इन निश्चियन छोकरिया की ओर इतना अधिक आकर्षित है। इसम कोई सदेह नही कि व अपन शरीर की प्रत्येक दिखलाई जा सकन वाली वस्तु का प्रदशन करती है। किसी भी प्रकार की झिझक अनुभव किए बिना अपने क्रिया-कलापो का वणन कर दती है। अपने बीत हुए पुरान रोमासो का हाल सुना दती है यह सब ठीक है लेकिन कोई भी स्त्री इन सब विशेषताओ की मालिक हो सकती है।

रणधीर ने जब घाटन लडकी को इशारे से ऊपर बुलाया था तो उसे किसी भी तरह यह विश्वास नही था कि वह उस अपन साथ सुला लगा, लेकिन थाडी ही देर के बाद जब उसने उसके भीगे कपडे देखकर यह ख्याल किया था कि कही ऐसा न हो कि बेचारी को निमोनिया हो जाए, तो रणधीर ने उससे कहा था 'यह कपडे उतार दो सर्दी लग जाएगी।'

वह रणधीर की इस बात का अभिप्राय समझ गइ थी, क्याकि उसकी आखा म शम के लाल डोर तर गए थ लेकिन बाद मे जब रणधीर ने उस अपनी धोती निकालकर दी तो उसन कुछ देर सोचकर अपना लहगा उतार दिया जिसपर का मैल भीगने के कारण और अधिक उभर आया था लहगा उतारकर उसन एक ओर रख दिया और जल्दी स धोती अपनी जाघा पर डाल ली। फिर उसन अपनी तग, भिची भिची चोली उतारने की कोशिश की जिसके दोना किनारा को मिलाकर उसन एक

गाठ दे रखी थी। वह गाठ उसके स्वस्थ वक्षस्थल के न ह परन्तु मलिन गडढे म छुप सी गई थी।

दर तक वह अपने घिस हुए नाखूना की सहायता स चोली की गाठ खोलन की कोशिश करती रही, जो भीगन के कारण बहुत अधिक मजबूत हो गई थी। जब थक हारकर बैठ गई तो उसन मराठी भाषा मे रणधीर स कुछ कहा, जिसका मतलब यह था— मैं क्या करू, नही खुलती।'

रणधीर उसके पास बैठ गया और गाठ खोलने लगा। जब नही खुली तो उसने चोली के दोना सिरो को दोनो हाथो मे पकडकर इस जोर से झटका दिया कि गाठ सरसराकर फिसल गई और इसके साथ ही दो धडकती हुई छातिया एकदम प्रकट हो गइ। क्षण भर के लिए रणधीर ने सोचा कि उसके अपन हाथो ने उस घाटन लडकी के सीन पर नम-नम गुधी हुई मिटटी की निपुण कुम्हार की तरह दो प्यालिया की शक्ल बना दी है।

उसकी स्वस्थ छातियो म वही गुदगुदाहट, वही धडकन, वही गोलाई, वही गम गम ठण्डक थी जो कुम्हार के हाथो म निकले हुए ताजा बरतनो मे होती है।

मटमले रग की जवान छातियो म, जो बिलकुल कवारी थी, एक अदभुत ढग की चमक पैदा हो रही थी। गेहुए रग के नीचे धुधले प्रकाश की एक परत थी जिसने वह अद्भुत चमक पैदा कर दी थी, जो चमक होत हुए भी चमक नहीं रही थी। उसके वक्षस्थल पर यह उभार दो दीपक मालूम होते थे, जो तालाब के गदले पानी पर जल रहे हा।

बरसात के यही दिन थे। खिडकी के बाहर पीपल के पत्ते इसी तरह कपकपा रहे थे। उस घाटन लडकी के दोनो कपडे जो पानी मे तरबतर हो चुके थे, एक गदले ढेर की शक्ल मे फश पर पड थे और वह रणधीर के साथ चिपटी हुई थी। उसके नगे बदन की गर्मी रणधीर के शरीर मे ऐसी हलचल-सी पैदा कर रही थी जो सख्त जाडे के दिनो मे नाइयो के गद लेकिन गम हमामो मे नहाते समय अनुभव हुआ करती है।

रात भर वह रणधीर के साथ चिपटी रही—दोना जैस एक दूसर मे गडडमडड हो गए थे। उन्होने बडी मुश्किल स एक-दो बातें की होंगी, क्योकि जो कुछ भी कहना-सुनना था, सासो, होठो और हाथो से तय हो

रहा था। रणधीर के हाथ सारी रात उसकी छातियों पर हवा के झोंकों की तरह फिरते रहे। छोटी छोटी चूचियां और वह मोटे-मोटे गोल दाने, जो चारों ओर एक काले वृत्त में रूप में फैले हुए थे, उन हवाई झोंकों से जाग उठते और उस घाटन लड़की के पूरे बदन में एक ऐसी सिहरन पैदा हो जाती कि स्वयं रणधीर भी कपकपा उठता।

ऐसी कपकपाहटों से रणधीर का सैंकड़ों बार वास्ता पड़ चुका था। वह इनका स्वाद भी भली प्रकार जानता था। कई लड़कियों के नर्म और सख्त सीनों के साथ अपना सीना मिलाकर वह ऐसी कई रातें बिता चुका था। वह ऐसी लड़कियों के साथ भी रह चुका था जो बिलकुल अल्हड़ थीं और उसके साथ लिपटकर घर की सारी बातें सुना दिया करती थीं, जो किसी गैर के कानों के लिए नहीं होतीं। वह ऐसी लड़कियों से भी शारीरिक सम्बन्ध स्थापित कर चुका था जो सारी मेहनत स्वयं करती थीं और उसे कोई तकलीफ नहीं देती थीं—लेकिन यह घाटन लड़की जो इमली के पेड़ के नीचे भीगी हुई खड़ी थी और जिसे उसने इशारे से ऊपर बुला लिया था, बिलकुल भिन्न प्रकार की लड़की थी।

सारी रात रणधीर को उसके शरीर से एक अद्भुत प्रकार की बू आती रही थी। उस बू को—जो एकसाथ खुशबू भी थी और बदबू भी—वह रात भर पीता रहा। उसकी बगलों से उसकी छातियों से उसके बालों से, उसके पेट से, प्रत्येक स्थान से यह बू, जो बदबू भी थी और खुशबू भी, रणधीर के अंग अंग में बस गई थी। सारी रात वह सोचता रहा था कि यह घाटन लड़की बिलकुल पास होने पर भी किसी प्रकार इतनी पास न होती अगर उसके नंगे शरीर से यह बू न उड़ती यह बू उसके दिल दिमाग की हर सलवट में रेंग रही थी, उसके तमाम पुराने और नये ख्यालों में रम गई थी।

इस बू ने उस लड़की और रणधीर को मानो एक दूसरे में घोल दिया था। दोनों एक दूसरे में समा गए थे, अत्यधिक गहराइयों में उतर गए थे जहां पहुंचकर वह एक विशुद्ध मानवीय तृप्ति में परिणत हो गए थे। ऐसी तृप्ति जो क्षणिक होने पर भी स्थायी थी। जो निरन्तर विकासशील होते हुए भी स्थिर और सुदृढ़ थी। दोनों एक ऐसा स्वप्न बन गए थे

जो आकाश के नीले शून्य में उडते रहने पर भी दिखाई देता रहे।

उस बू को, जो उस घाटन लडकी के प्रत्येक स्रोत से बाहर निकलती थी, रणधीर अच्छी तरह समझता था। परन्तु समझते हुए भी वह उसका विश्लेषण नहीं कर सकता था। जिस तरह कभी मिट्टी पर पानी छिडकने से सोंधी सोंधी बू निकलती है लेकिन नहीं, वह बू कुछ और ही तरह की थी। उसमें लवेण्डर और इत्र का ऐक्य नहीं था, वह बिल्कुल असली थी स्त्री पुरुष के शारीरिक सम्बन्धों की तरह असली और पवित्र।

रणधीर को पसीने की बू से सख्त घृणा थी। नहाने के बाद वह हमेशा बगल वगैरह में पाउडर छिडकता था या ऐसी दवा इस्तेमाल करता था जिससे पसीने की बदबू जाती रहे। परन्तु आश्चर्य है कि उसने कई बार—हां कई बार उस घाटन लडकी की बालों भरी बगलों को चूमा और उसे बिल्कुल घिन नहीं आयी बल्कि अजीब तरह की तृप्ति अनुभव हुई। रणधीर को ऐसा लगता था कि वह उस बू को जानता है, पहचानता है, उसका अर्थ भी समझता है—लेकिन किसी और को नहीं समझा सकता।

बरसात के यही दिन थे यों ही खिडकी के बाहर जब उसने देखा तो पीपल के पत्ते उसी प्रकार नहा रहे थे। हवा में सरसराहटें और फडफडाहटें घुली हुई थी। अंधेरा था, लेकिन उसमें दबी दबी धुंधली सी रोशनी समाई हुई थी जैसे वर्षा की बूंदों के साथ लगकर सितारों का हल्का-हल्का प्रकाश नीचे उतर आया हो—बरसात के यही दिन थे, जब रणधीर के इस कमरे में सागवान का सिर्फ एक ही पलंग था। लेकिन अब उसके साथ सटा हुआ एक और पलंग भी था और कोने में एक नई ड्रेसिंग टेबल भी मौजूद थी। दिन यही बरसात के थे। मौसम भी बिल्कुल वैसा ही था। वर्षा की बूंदों के साथ लगकर सितारों का हल्का हल्का प्रकाश उसी तरह उतर रहा था, लेकिन वातावरण में हिना के इत्र की तेज खुशबू बसी हुई थी।

दूसरा पलंग खाली था। उस पलंग पर, जिसपर रणधीर औंधे मुंह लेटा खिडकी के बाहर पीपल के झूमते हुए पत्तों पर वर्षा की बूंदों का नृत्य

देख रहा था, एक गोरी चिट्टी लड़की अपने नंगे शरीर को चादर में छुपाने का असफल प्रयास करते करते लगभग सो गयी थी। उसकी लाल रेशमी सलवार दूसरे पलंग पर पड़ी थी। जिसके गहरे लाल रंग के नाड़े का एक फुंदना नीचे लटक रहा था। पलंग पर उसके दूसरे उतारे हुए कपड़े भी पड़े थे—सुनहरी फूलों वाला जम्पर, अंगिया, जांघिया और दुपट्टा सबका रंग लाल था गहरा लाल और उन सबमें हिना के इत्र की तेज खुशबू बसी हुई थी।

लड़की के काले बालों में मुकेश के कण धूल की तरह जमे हुए थे। चेहरे पर पाउडर, सुर्खी और मुकेश के उन कणों ने मिल जुलकर एक विचित्र रंग पैदा कर दिया था बेजान सा उड़ा उड़ा रंग और उसके गोरे वक्ष स्थल पर कच्चे रंग की अंगिया ने जगह-जगह लाल लाल धब्बे बना दिए थे।

छातियां दूध की तरह सफेद थीं। उनमें हल्का हल्का नीलापन भी था। बगलों के बाल मुंडे हुए थे, इस कारण वहां सुरमई गुबार सा पैदा हो गया था।

रणधीर इस लड़की की ओर देखकर कई बार सोच चुका था—क्या ऐसे नहीं लगता जैसे मैंने अभी अभी कीलें उखेड़कर इसे लकड़ी के बन्द बक्स में से निकाला हो—किताबों और चीनी के बरतनों की तरह। क्योंकि जिस प्रकार किताबों पर दबाव के चिह्न उभर आते हैं और चीनी के बरतनों पर हल्की हल्की खराशें पड़ जाती हैं ठीक उसी तरह इस लड़की के शरीर पर भी कई निशान थे।

जब रणधीर ने उसकी तंग और चुस्त अंगिया की डोरियां खोली थीं तो उसकी पीठ पर और सामने सीने पर नर्म नर्म गोश्त पर झुर्रियां-सी बनी हुई थीं और कमर के चारों ओर कसकर बांधे हुए नाड़े का निशान भारी और नुकीले जड़ाऊ नेकलेस से उसके सीने पर कई जगह खराशें-सी पड़ गई थीं जैसे नाखनों से बड़े जोर के साथ खुजाया गया हो। बरसात के वही दिन थे। पीपल के नर्म नर्म कोमल पत्तों पर वर्षा की बूंदें गिरने से वैसी ही आवाज पैदा हो रही थी जैसी रणधीर उस दिन सारी रात सुनता रहा था। मौसम बहुत ही सुहावना था। ठण्डी ठण्डी हवा चल

रही थी। लेकिन उसमें हिना के इत्र की तेज खुशबू घुली हुई थी।

रणधीर के हाथ बहुत देर तक उस गोरी चिट्टी लडकी के कच्चे दूध की तरह सफेद वक्षस्थल पर हवा के झोकों की तरह फिरते रहे थे। उसकी उगलियो ने उस गोरे-गोरे बदन में कई चिनगारिया दौडती हुई भी अनुभव की थी। उस कोमल बदन में कई जगहो पर सिमटी हुई कप-कपाहटा का भी उसे पता चला था। जब उसने अपना सीना उसके वक्ष-स्थल के साथ मिलाया तो रणधीर के शरीर के प्रत्येक रोए ने उस लडकी के बदन के छिडे हुए तारो की भी आवाज सुनी थी लेकिन वह आवाज कहा थी? वह पुकार जो उसने घाटन लड़की के शरीर की बू में सूघी थी—वह पुकार जो दूध के प्यासे बच्चो के रोने से कही अधिक मादक होती है। वह पुकार जो स्वप्न वृत्त से निकलकर निश्शब्द हो गई थी।

रणधीर खिडकी के बाहर देख रहा था। उसके बिलकुल पास ही पीपल के नहाए हुए पत्ते झूम रहे थे। वह उनकी मस्ती भरी कपकपाहटो के उस पार कही बहुत दूर देखने की कोशिश कर रहा था, जहा मटमैले बादलो में विचित्र प्रकार की रोशनी घुली हुई दिखाई देती थी, ठीक वैसी ही जैसी उस घाटन लडकी के सीने में उसे नजर आई थी। ऐसी रोशनी जो भेद की बात की तरह मौन किन्तु प्रत्यक्ष थी।

रणधीर के पहलू में एक गोरी चिट्टी लडकी जिसका शरीर दूध और घी में गुधे आटे की तरह मुलायम था, लेटी थी, उसके नीद से मदमाते बदन से हिना के इत्र की खुशबू आ रही थी जो अब थकी थकी-सी मालूम होती थी। रणधीर को यह दम तोडती और उन्माद की सीमा तक पहुची हुई खुशबू बहुत बुरी मालूम हुई। उसमें कुछ खटास थी—एक अजीब किस्म की खटास, जैसी अपचन की डकारो में होती है—उदास—बेरग—बेचैन।

रणधीर ने अपने पहलू में लेटी हुई लडकी की ओर देखा। जिस तरह फटे हुए दूध के बेरग पानी में सफेद मुर्दा फुटकिया तैरने लगती है उसी प्रकार उस लडकी के दूधियाले शरीर पर खराशें और धब्बे तैर रहे थे और वह हिना के इत्र की ऊटपटाग खुशबू वास्तव में रणधीर के दिल दिमाग में वह बू बसी हुई थी, जो उस घाटन लडकी के

शरीर से बिना किसी बाह्य प्रयत्न के अनायास ही निकल रही थी। वह ब जो हिना के इत्र स कहीं हल्की फुल्की और रस मे डूबी हुई थी, जिसम सूघे जाने का प्रयत्न शामिल नहीं था। वह अपने आप ही नाक के रास्ते भीतर घुसकर अपनी सही मजिल पर पहुच जाती थी।

रणधीर न अतिम प्रयास करत हुए उस लडकी के दूधियाले शरीर पर हाथ फेरा लेकिन उसे कोई कपकपाहट महसूस न हुई उसकी नई नवेली पत्नी जो एक फस्टक्लास मजिस्टेट की लडकी थी जिसन बी०ए० तक शिक्षा प्राप्त की थी और जो अपन कालेज के सैकडो लडका के दिल की धडकन थी रणधीर की किसी भी चेतना को न छू सकी। वह हिना की सुगबू मे उस बू की तलाश करता रहा जो इन्ही दिनो म जब कि खिडकी के बाहर पीपल के पत्ते वर्षा मे नहा रह थे उस घाटन लडकी के मैले बदन से आई थी।

धुआँ

वह जब स्कूल जा रहा था तो रास्ते में उसने एक कसाई देखा जिसके सिर पर एक बहुत बड़ा टोकरा था। उसमें दो ताजा जिबह किए हुए बकरे थे। खालें उतरी हुई थीं और उनके नंगे गोश्त में से धुआँ उठ रहा था। जगह जगह पर यह गोश्त, जिसको देखकर मसऊद के ठंडे गालों पर गर्मी की लहरें-सी दौड़ जाती थीं फड़क रहा था—जैसे कभी-कभी उसकी आँख फड़का करती थी।

सवा नौ बजे होंगे मगर झुके हुए बादलों के कारण ऐसा लगता था कि अभी बहुत सवेरा है। पाला जोरों पर नहीं था, लेकिन रास्ता चलते लोगों के मुँह से गर्म गर्म समावारों की टूटियों की तरह गाढ़ा सफेद धुआँ निकल रहा था। हर चीज बोझिल दिखाई देती थी, जैसे बादलों के बोझ तले दबी हुई हो। मौसम कुछ ऐसी अनुभवशीलता लिए हुए था जो रबड़ के जूते पहनकर चलने से पैदा होती है। इसपर भी बाजार में लोगों का आवागमन जारी था और दुकानें खुल रही थीं। आवाजें मद्धम थीं जैसे कानाफूसियाँ हो रही हों। लोग हल्के हल्के कदम उठा रहे थे कि अधिक ऊँची आवाज न निकले।

मसऊद बगल में बस्ता दबाए स्कूल जा रहा था। न जाने आज वह क्यों सुस्त सुस्त सा था लेकिन जब उसने बिना खाल के ताजा जिबह किए हुए बकरों के गोश्त से सफेद सफेद धुआँ उठते देखा तो उसे विचित्र प्रकार के आनन्द का अनुभव हुआ। उस धुएँ ने उसके ठण्डे ठण्डे गालों पर गर्म गर्म लकीरों का एक जाल सा बुन दिया। उस गर्मी ने उसे आनन्द प्रदान किया और वह सोचने लगा कि सर्दियों में ठण्डे हाथों पर बेंत खाने के बाद यदि यह धुआँ मिल जाया करे तो कितना अच्छा हो।

वातावरण में उजलापन नहीं था। प्रकाश था मगर धुँधला धुँधला। कुहर की पतली-सी परत हर वस्तु पर चढ़ी हुई थी, जिससे वातावरण में गदलापन पैदा हो गया था। यह गदलापन आँखों को अच्छा लगता था,

क्योंकि नजर आने वाली वस्तुओं की नोक पलक कुछ मद्धम पड़ गई थी।

मसऊद जब स्कूल पहुंचा तो उसे साथियों से यह मालूम करके बिल्कुल प्रसन्नता नहीं हुई कि स्कूल सक्त्तर साहब के देहान्त के कारण बंद कर दिया गया है। सब लड़के प्रसन्न थे, जिसका प्रमाण यह था कि वे अपने बस्ते एक स्थान पर रखकर स्कूल के अहाते में ऊटपटांग खेलों में व्यस्त थे। कुछ छुट्टी का पता चलते ही घरों को लौट गए। कुछ अभी आ रहे थे। कुछ नोटिस बोर्ड के पास एकत्र थे और बार बार एक ही लिखावट पढ़ रहे थे।

मसऊद ने जब सुना कि सक्त्तर साहब मर गए हैं तो उसे बिल्कुल अफसोस नहीं हुआ। उसका दिल भावनाओं से बिल्कुल खाली था। हां, उसने यह जरूर सोचा कि पिछले वर्ष जब उसके दादा का देहान्त इन्हीं दिनों हुआ था तो उनका जनाजा ले जाने में बड़ी असुविधा हुई थी। इस-लिए कि बारिश शुरू हो गई थी। वह भी जनाजे के साथ गया था और कब्रिस्तान में चिकनी कीचड़ के कारण एक फिसलना था कि खुदी हुई कब्र में गिरते गिरते बचा था। ये सब बातें उसे अच्छी तरह याद थीं। कड़ा जाड़ा, उसके कीचड़ से लथ-पथ कपड़े, लालिमामय नीले हाथ जिन्हें दबाने से सफेद-सफेद धब्बे पड़ जाते थे। नाक जो कि बर्फ की डली मालूम होती थी और फिर घर आकर हाथ-पांव धोने और कपड़े बदलने की मुसीबत—यह सब कुछ उसे अच्छी तरह याद था, अतएव जब उसने सक्त्तर साहब के देहान्त की खबर सुनी तो उसे ये सब बीती हुई बातें याद आ गईं और उसने सोचा कि जब सक्त्तर साहब का जनाजा उठेगा तो बारिश शुरू हो जाएगी और कब्रिस्तान में इतनी कीचड़ हो जाएगी कि कई लोग फिस-लेंगे और उन्हें ऐसी चोटें आएंगी कि बिलबिला उठेंगे।

मसऊद यह खबर सुनकर अपनी कक्षा की ओर मुड़ गया। कमरे में पहुंचकर उसने अपने डेस्क का ताला खोला। दो-तीन किताबें, जिन्हें उसे दूसरे दिन ले जाना था उसमें रखीं और बाकी बस्ता उठाकर घर की ओर चल पड़ा।

रास्ते में उसने फिर वही दो खाल खिंचे हुए बकरे देखे। एक को कसाई ने लटका दिया था। दूसरा तख्ते पर पड़ा था।

जब मसऊद दुकान के सामने से निकल रहा था तो उसके मन में इच्छा उत्पन्न हुई कि गोश्त को, जिसमें से धुआं उठ रहा था, छूकर देखे। अत-एव उसने आगे बढ़कर उंगली से बकरे के उस भाग को छूकर देखा जो अभी तक फड़क रहा था। गोश्त गर्म था। मसऊद की ठण्डी उंगली को यह गर्मी बहुत भली लगी। कसाई दुकान के भीतर छुरियां तेज करने में व्यस्त था अतएव मसऊद ने एक बार फिर गोश्त को छूकर देखा और वहां से चल पड़ा।

घर पहुंचकर उसने जब अपनी मां को मक्सर साहब की मृत्यु की खबर सुनाई तो उसे मालूम हुआ कि उसके अब्बाजी उन्हीं के जनाजे के साथ गए हैं। अब घर में केवल दो व्यक्ति थे। मां और बड़ी बहन। मां रसोईघर में बैठी सब्जी पका रही थी और बड़ी बहन कलसूम पास ही एक कांगड़ी लिए दरबारी की सरगम याद कर रही थी।

गली के दूसरे लड़के चूंकि गवर्नमेण्ट स्कूल में पढ़ते थे, उनपर इस्लामिया स्कूल के मक्सर साहब की मृत्यु का कुछ असर नहीं हुआ था, इसलिए मसऊद ने स्वयं को बिलकुल बेकार महसूस किया। स्कूल का कोई काम भी नहीं था। छठी क्लास में जो कुछ पढ़ाया जाता था, उसको वह घर में अब्बाजी से पढ़ चुका था। खेलने के लिए भी उसके पास कोई चीज नहीं थी। एक मैला कुचैला ताश अलमारी में पड़ा था लेकिन उसमें मसऊद की कोई दिलचस्पी न थी। लूडो और इसी तरह के अन्य खेल जो उसकी बड़ी बहन अपनी सहेलियों के साथ प्रतिदिन खेलती थी, उसकी समझ से बाहर थे। समझ से बाहर यों थे कि मसऊद ने कभी उनको सम-झने की कोशिश ही नहीं की थी। स्वाभाविक रूप से उसे ऐसे खेलों से कोई लगाव न था।

बस्ता अपने स्थान पर रखने और कोट उतारने के बाद वह रसोई-घर में अपनी मां के पास बैठ गया और दरबारी की सरगम सुनता रहा, जिसमें कई बार सा-रे ग म आता था। उसकी मां पालक काट रही थी। पालक काटने के बाद उसने हरे-हरे पत्तों का गीला-गीला ढेर उठाकर हंडिया में डाल दिया। थोड़ी देर के बाद जब पालक को आंच लगी तो उसमें से सफेद सफेद धुआं उठने लगा।

उस धुएं को देखकर मसऊद को बकरे का गोश्त याद आ गया, अतएव उसने अपनी मां से कहा, 'अम्मी जान ! आज मैंने कसाई की दुकान पर दो बकरे देखे खाल उतरी हुई थी और उनमें से धुआं निकल रहा था, बिलकुल वैसा ही जैसा कि सुबह सवेरे मेरे मुंह से निकला करता है।'

'अच्छा !' यह कहकर उसकी मां चूल्हे में से लकड़ियों के कोयले झाड़ने लगी।

'हां और मैंने गोश्त को अपनी उंगली से छूकर देखा तो वह गर्म था।'

'अच्छा !' यह कहकर उसकी मां ने वह बरतन उठाया जिसमें उसने पालक का साग धोया था और वह रसोईघर से बाहर चली गई।

'और वह गोश्त कई जगह से फड़कता भी था।'

'अच्छा !' मसऊद की बड़ी बहन ने दरबारी सरगम याद करनी छोड़ दी और उसकी ओर देखते हुए बोली, 'कैसे फड़कता था ?'

'यों यों, मसऊद ने उंगलियों से फड़कन पैदा करके अपनी बहन को दिखाई।

'फिर क्या हुआ ?'

यह प्रश्न कलसूम ने अपने सरगम भरे दिमाग से कुछ इस प्रकार निकाला कि मसऊद एक क्षण के लिए बिलकुल हतबुद्धि सा हो गया, 'फिर क्या होना था—मैंने ऐसे ही आपसे बात की थी कि कसाई की दुकान पर गोश्त फड़क रहा था। मैंने उंगली से भी छूकर देखा था—गर्म था।'

'गर्म था—अच्छा मसऊद, यह बताओ, तुम मेरा एक काम करोगे ?'

'बताइए।'

'आओ मेरे साथ आओ।'

'नहीं आप पहले बताइए, काम क्या है ?'

'तुम आओ तो सही मेरे साथ।'

'जी नहीं, आप पहले काम बताइए।'

'देखो मेरी कमर में बड़ा दर्द हो रहा है—मैं पलंग पर लेटती हूं, तुम जरा पांव से दबा देना। अच्छे भाई जो हुए ! अल्ला की कसम, बड़ा

दद हो रहा है।' यह कहकर मसऊद की बहन ने अपनी कमर पर मुक्किया मारनी शुरू कर दी।

'यह आपकी कमर को क्या हो जाता है ? जब देखो दद हो रहा है और फिर आप ददवाली भी मुफ्लिस हैं—क्या नहीं अपनी सहलिया से कहतीं।' मसऊद उठ खडा हुआ और तयार हो गया।

'चलिए, लेकिन आपसे कहे देता हू कि दस मिनट से ज्यादा बिलकुल नहीं दबाऊगा।

'शाबाश, शाबाश !' उसकी बहन उठ खडी हुई और सरगमो की कापी सामने ताक में रखकर उस कमरे की ओर बढी जहा मसऊद और वह दोनो सोते थ।

आगन म पहुचकर उसने अपनी दुखती हुई कमर सीधी की और ऊपर आकाश की ओर देखा। मटियाले बादल झुके हुए थ। 'मसऊद, आज जरूर बारिश होगी।' यह कहकर उसने मसऊद की ओर देखा जो भीतर अपनी चारपाई पर जा लेटा था।

जब कलसूम अपने पलग पर औंधे मुह लेट गई तो ममऊद ने उठकर घडी म समय देखा और कहा 'देखिए बाजी, ग्यारह में दस मिनट है, मैं पूरे ग्यारह बजे आपकी कमर दाबना छोड दूगा।'

'बहुत अच्छा, लेकिन तुम अब खुदा के लिए ज्यादा नखरे न बघारो। इधर मेरे पलग पर आकर जल्दी से कमर दबा दो। वना याद रखो, बडे जोर से कान ऐंठूगी। कलसूम ने मसऊद को डाट पिलाई। मसऊद ने अपनी बडी बहन की आज्ञा का पालन किया और दीवार का सहारा लेकर पाव स उसकी कमर दबानी शुरू कर दी। मसऊद के वजन के नीचे कल-सूम की चौडी चकली कमर मे हल्का-सा झुकाव पैदा हो गया। जब उसने दबाना शुरू किया, ठीक उसी तरह जिस तरह मजदूर मिट्टी गूधते हैं, तो कलसूम ने मजा लेने के लिए धीरे धीरे 'हाय हाय' करना शुरू कर दिया।

कलसूम के कूल्हो पर गोश्त अधिक था। जब मसऊद का पाव उस भाग पर पडा तो उसे ऐसा महसूस हुआ मानो वह उस बकरे के गोश्त को दबा रहा हो, जो उसने कसाई की दुकान मे उगली मे छुआ था। इस अनुभव ने कुछ क्षणो के लिए उसके मन मस्तिष्क मे कुछ ऐसे विचार

उत्पन्न कर दिए जिनका न कोई सिर था न पर। वह उनका मतलब न समझ सका और समझता भी कैसे जबकि कोई विचार पूर्ण ही नहीं था।

एक दो बार मसऊद ने यह भी महसूस किया कि उसके पाव के नीचे गोश्त के लोथडा मे हरकत पैदा हो गई है, ठीक वैसी ही हरकत जो उसने बकरे के गम गम गोश्त म देखी थी। उसने वडी बदिली से कमर दबाना शुरू की थी, लेकिन अब उसे इस काम मे आनन्द का अनुभव होने लगा। उसके बोझ के नीचे कलसूम धीरे धीरे कराह रही थी। यह भिचा भिचा सा स्वर जो मसऊद के पैरा की हरकत का साथ दे रहा था, उस अनाम से आनन्द मे वृद्धि कर रहा था।

घडी मे ग्यारह बज गए, लेकिन मसऊद अपनी बहन कलसूम की कमर दबाता रहा। जब कमर अच्छी तरह दबाई जा चुकी तो कलसूम सीधी लेट गई और कहने लगी, 'शाबाश मसऊद, शाबाश! अब लगे हाथो टागें भी दबा दो। बिलकुल इसी तरह, शाबाश मेरे भाई!'

मसऊद ने दीवार का सहारा लेकर कलसूम की जाघो पर अपना पूरा बोझ डाला तो उसके पैरो के नीचे मछलिया सी तडप गईं। कलसूम बडे जोरो से हस पडी और दुहरी हो गई। मसऊद गिरते गिरते बचा लेकिन उसके तलवो मे मछलियो की वह तडप जस स्थायी रूप मे जम-सी गई। उसके मन मे एक प्रबल इच्छा ने सिर उठाया कि वह उसी प्रकार दीवार का सहारा लेकर अपनी बहन की जाघे दबाए। अतएव उसने कहा, 'यह आपने हसना क्या शुरू कर दिया। सीधी लेट जाइए—मैं आपकी टागें दबा दू।

कलसूम सीधी लेट गई। जाघो की मछलिया इधर उधर होने के कारण जो गुदगुदी पैदा हुई थी, उसका असर अभी तक उसके शरीर मे बाकी था ना भई, मेरे गुदगुदी होती है। तुम जगलियो की तरह दबाते हो।'

मसऊद को खयाल आया कि शायद उसने गलत ढग अपनाया था। 'नही अब की बार मैं आपपर पूरा बोझ नही डालूगा—आप इत्मीनान रखिए। अब ऐसी अच्छी तरह दबाऊगा कि आपको कोई तकलीफ नही होगी।'

दीवार का सहारा लेकर मसऊद ने अपने शरीर को तोला और इस प्रकार धीरे-धीरे कलसूम की जांघों पर अपने पैर जमाए कि उसका आधा बोझ कहीं गायब हो गया। धीरे धीरे बड़ी सावधानी से उसने पैर चलाने शुरू किए।

कलसूम की जांघों में अकड़ी हुई मछलियां उसके पैरों के नीचे दब दबकर इधर-उधर फिसलने लगीं। मसऊद ने एक बार स्कूल में तने हुए रस्से पर एक बाजीगर को चलते देखा था। उसने सोचा कि बाजीगर के पैरों के नीचे तना हुआ रस्सा इसी प्रकार फिसलता होगा। इससे पहले भी कई बार उसने अपनी बहन कलसूम की टांगें दबाई थीं, लेकिन वह आनन्द, जो उसे अब आ रहा था, पहले कभी न आया था। बकरे के गरम-गरम गोश्त का उसे बार बार ख्याल आता था। एक दो बार उसने सोचा, कलसूम का अगर जिबह किया जाय तो खाल उतर जाने पर क्या उसके गोश्त में से भी धुआं निकलेगा? लेकिन ऐसी बेहूदा बातें सोचने पर उसने अपने आपको अपराधी सा अनुभव किया और अपने मस्तिष्क को इस प्रकार साफ कर दिया जैसे वह स्लेट को स्पंज से साफ किया करता था।

'बस बस, कलसूम थक गई, 'बस-बस!'

मसऊद को एकदम शरारत सूझी। वह पलंग से नीचे उतरने लगी तो उसने कलसूम के दोनों बगलों में गुदगुदी करना शुरू कर दी। वह हंसी के मारे लोट पोट होने लगी। इतनी शक्ति भी उसमें न रही कि वह मसऊद के हाथों को परे झटक दे, लेकिन जब कोशिश करके उसने मसऊद को लात जमानी चाही तो मसऊद उछलकर जद से बाहर हो गया और स्लीपर पहनकर कमरे से बाहर हो गया।

जब वह आंगन में पहुंचा तो उसने देखा कि हल्की हल्की बूंदाबांदी हो रही थी, बादल और भी झुक आए थे। पानी की नन्ही नन्ही बूंदें किसी प्रकार की आवाज पैदा किए बिना आंगन की ईंटों में धीरे धीरे जज्ब हो रही थीं। मसऊद का बदन बड़ी प्रिय उष्णता का अनुभव कर रहा था। जब हवा का एक ठण्डा झोंका उसके गालों से टकराया और दो तीन नन्हीं नन्हीं बूंदें उसकी नाक पर पड़ीं तो उसके बदन में एक

झुरझुरी सी लहरा उठी। सामने कोठे की दीवार पर एक कबूतर और एक कबूतरी पास पास पर फुलाए बैठे थे। ऐसा मालूम होता था कि दोनों दमपुख्त की हुई हंडिया की तरह गर्म हैं। गुले दाऊदी और नाजबो के हरे हरे पत्ते ऊपर लाल-लाल गमलों में नहा रहे थे। वातावरण में नींदें घुली हुई थीं, ऐसी नींदें जिनमें जागरण अधिक होता है और मनुष्य के इर्द गिर्द नर्म नर्म सपने इस प्रकार लिपट जाते हैं जैसे ऊनी कपड़ा।

मसऊद ऐसी बातें सोचने लगा, जिनका अर्थ उसकी समझ में नहीं आता था। वह उन बातों को छूकर देख सकता था लेकिन उनका अर्थ उसकी पकड़ से बाहर था। फिर भी एक अनाम सा आनन्द उसे इस सोच विचार में आ रहा था।

बारिश में कुछ देर खड़े रहने के कारण जब मसऊद के हाथ बिल्कुल ठण्डे हो गए और दबाने से उनपर सफेद सफेद धब्बे पड़ने लगे तो उसने मुट्ठियां कस लीं और उनको मुंह की भाप से गर्म करना शुरू किया। ऐसा करने से हाथों को कुछ गर्मी तो पहुंची लेकिन वे सजल हो गए। अतएव आग तापने के लिए वह रसोईघर में चला गया। खाना तैयार था। अभी उसने पहला कौर ही उठाया था कि उसका बाप कब्रिस्तान से वापस आ गया। बाप बेटे में कोई बात नहीं हुई। मसऊद की मां तुरन्त उठकर दूसरे कमरे में चली गई और वहां देर तक अपने पति से बातें करती रही।

खाने से निपटकर मसऊद बैठक में चला गया और खिड़की खोलकर फर्श पर लेट गया। बारिश के कारण सर्दी बढ़ गई थी और हवा भी चलने लगी थी, लेकिन मसऊद को यह सर्दी अप्रिय नहीं लग रही थी। तालाब के पानी की तरह यह ऊपर से ठण्डा और भीतर से गर्म थी। मसऊद जब फर्श पर लेटा तो उसके मन में इच्छा उत्पन्न हुई कि वह उस सर्दी के भीतर धंस जाए, जहां उसके शरीर को आनन्ददायक गर्मी पहुंचने लगे। काफी देर तक वह ऐसी नीम गर्म बातों के बारे में सोचता रहा और इस कारण उसके पुट्ठों में हल्की हल्की दुखन पैदा हो गई। एक दो बार उसने अंगड़ाई ली तो उसे मजा आया। उसके शरीर के किसी भाग में, यह उसे मालूम नहीं था कि कहां, कोई चीज अटक सी गई थी। यह

चीज क्या थी, इसका भी मसऊद को कुछ ज्ञान न था। अलबत्ता उस अटवाव ने उसके पूरे शरीर में बेचैनी, एक दबी हुई बेचैनी की स्थिति उत्पन्न कर दी थी। उसका सारा शरीर खिंचकर लम्बा हो जाने का इरादा बन गया था।

दस तक गुदगुदे कालीन पर करवटें बदलने के बाद वह उठा और रसोईघर से होता हुआ आंगन में आ निकला। न कोई रसोईघर में था और न आंगन में। इधर-उधर जितने कमरे थे सबके सब बन्द थे। बारिश अब रुक गई थी। मसऊद ने हाकी और गेंद निकाली और आंगन में खेलना शुरू कर दिया। एक बार जब उसने जोर से हिट लगाई तो गेंद आंगन के दायें हाथ वाले कमरे के दरवाजे पर लगी। भीतर से मसऊद के बाप की आवाज आई, 'कौन ?'

'जी मैं हूं मसऊद।'

भीतर से आवाज आई 'क्या कर रहे हो ?'

'जी खेल रहा हूं।'

'खेलो।'

फिर थोड़ी देर के बाद उसके बाप ने कहा, 'तुम्हारी मां मेरा सिर दबा रही है ज्यादा शोर न मचाना।'

यह सुनकर मसऊद ने गेंद वहीं पड़ी रहने दी और हाकी हाथ में लिए सामने वाले कमरे की ओर चला। उसका एक दरवाजा पूरा भिड़ा हुआ था और दूसरा आधा—मसऊद को एक शरारत सूझी। दबे पांव वह अधभिड़े दरवाजे की ओर बढ़ा और धमाके के साथ दोनों पट खोल दिए। दो चीखें उभरीं और कलसूम और उसकी सहेली विमला ने, जो पास पास लेटी हुई थीं भयभीत होकर झट से लिहाफ ओढ़ लिया।

विमला के ब्लाउज के बटन खुले हुए थे और कलसूम उसके नग्न वक्षस्थल को घूर रही थी।

मसऊद कुछ न समझ सका। उसके दिमाग पर धुआं सा छा गया। वहां से उलटे कदम लौटकर वह जब बैठक की ओर चला तो अकस्मात् उसे अपने भीतर एक अथाह शक्ति का अनुभव हुआ, जिसने कुछ देर के लिए उसकी सोचने-समझने की शक्ति हर ली।

बैठक में खिड़की के पास बैठकर जब मसऊद ने हाकी को दोनों हाथों से पकड़कर घुटने पर रखा तो उसे खयाल आया कि जरा-सा दबाव डालने पर भी हाकी में झुकाव पैदा हो जाएगा और कुछ अधिक जोर लगाने पर तो हैण्डल चटाख से टूट जाएगा। उसने घुटने पर हाकी के हैण्डल में झुकाव तो पैदा कर लिया लेकिन अधिक से अधिक जोर लगाने पर भी वह टूट न सका। देर तक वह हाकी के साथ दंगल करता रहा। जब थककर हार गया तो झुंझलाकर उसने हाकी परे फेंक दी।

मोजेल

त्रिलोचन ने पहली बार, चार वर्षों में पहली बार, रात को आकाश देखा था और वह भी इसलिए कि उसकी तबीयत बहुत घबराई हुई थी और वह केवल खुली हवा में कुछ देर सोचने के लिए अडवानी चेम्बर्ज़ के टेरेस पर चला आया था।

आकाश बिल्कुल साफ था और बहुत बड़े खाकी तम्बू की तरह पूरी बम्बई पर तना हुआ था। जहां तक दृष्टि जा सकती थी, बत्तियां ही बत्तियां नजर आती थीं। त्रिलोचन को ऐसा महसूस होता था कि आकाश से बहुत से तारे भड़कर बिल्डिगों में, जो रात के अंधेरे में बड़े-बड़े पेड़ लगती थीं, अटक गए थे और जुगनुओं की तरह टिमटिमा रहे थे।

त्रिलोचन के लिए यह एक बिल्कुल नया अनुभव, एक नई स्थिति थी—रात को खुले आकाश के नीचे सोना। उसने अनुभव किया कि वह चार वर्ष तक अपने फ्लैट में कैद रहा तथा प्रकृति की एक बहुत बड़ी देन से वंचित। लगभग तीन बजे थे। हवा बड़ी हल्की फुल्की थी। त्रिलोचन पंखे की कृत्रिम हवा का आदी था जो उसके पूरे शरीर को बोझिल कर देती थी। सुबह उठकर वह सदा ऐसा अनुभव करता था, मानो उसे रात भर मारा पीटा गया हो। लेकिन अब सुबह की प्राकृतिक हवा में उसके शरीर का रोम रोम तरोताजगी चूसकर तृप्त हो रहा था। जब वह ऊपर आया था तो उसका दिल बेहद बेचैन था। लेकिन आधे घण्टे में ही जो बेचैनी और घबराहट उसे कष्ट दे रही थी, किसी हद तक दूर हो गयी थी। अब वह स्पष्ट रूप से सोच सकता था।

कृपाल कौर और उसका सारा परिवार मुहल्ले में था, जो कट्टर मुसलमानों का केन्द्र था। यहां कई घरों में आग लग चुकी थी। कई जानें जा चुकी थीं। त्रिलोचन उन सबको वहां से ले आया होता, लेकिन मुसीबत यह थी कि कर्फ्यू लग गया था और वह भी न जाने कितने घण्टों के लिए। शायद अड़तालीस घण्टों के लिए। और त्रिलोचन विवश था।

आसपास सब मुसलमान थे, वे भी बडे भयानक किस्म के मुसलमान। पंजाब से धडाधड खबरें आ रही थी कि वहा सिख मुसलमानो पर बहुत जुल्म ढा रहे हैं। कोई भी हाथ—मुसलमान हाथ—बडी आसानी से नरम व नाजुक कृपाल कौर की कलाई पकडकर उसे मौत के मुह की तरफ ले जा सकता था।

कृपाल की मा अधी थी और बाप अपाहिज। भाई था लेकिन कुछ समय से वह देवलाली मे था और उसे वहा नये नये लिए हुए ठेके की देखभाल करनी थी।

त्रिलोचन को कृपाल के भाई निरजन पर बहुत गुस्सा आता था। उसने, जो रोज अखबार पढता था उपद्रवो की तीव्रता के बारे में एक सप्ताह पहले चेतावनी दे दी थी और स्पष्ट शब्दो मे कह दिया था, निरजन, ये ठेके वेके अभी रहने दो, हम एक बहुत ही नाजुक दौर से गुजर रहे हैं। अगरचे तुम्हारा वहा रहना बहुत जरूरी है लेकिन वहा मत रहो और मेरे यहा आ जाओ। इसमे कोई शक नहीं कि जगह कम है लेकिन मुसीबत के दिनो मे आदमी जैसे तसे गुजारा कर लिया करता है, लेकिन वह न माना। उसका इतना बडा लेक्चर सुनकर केवल अपनी घनी मूछो मे मुस्करा दिया, 'यार, तुम बेकार फिक्र करते हो। मैंने यहा ऐसे कई फिसाद देखे हैं। यह अमृतसर या लाहौर नहीं बौम्बे है बौम्बे। तुम्हे यहा आए सिर्फ चार साल हुए हैं और मैं बारह बरस से यहा रह रहा हू बारह बरस से।

न जाने निरजन बम्बई को क्या समझता था। उसका खयाल था कि यह ऐसा शहर है कि अगर उपद्रव हो भी तो उनका असर अपने आप खत्म हो जाता है, मानो उसके पास छूमतर हो—या वह कहानियो का कोई ऐसा किला हो, जिसपर कोई आपत्ति नहीं आ सकती। लेकिन त्रिलोचन प्रातःकालीन वायु मे साफ देख रहा था कि मुहल्ला बिल्कुल सुरक्षित नहीं। वह तो सुबह के अखबारो मे यह भी पढ़ने को तैयार था कि कृपाल कौर और उसके मा-बाप कत्ल हो चुके हैं।

उसको कृपाल कौर के अपाहिज बाप और उसकी मा की कोई पर-

वाह् नही थी । व मर जाते और कृपाल कौर बच जाती तो त्रिलोचन के लिए अच्छा था । वहा दवलाली म उसका भाइ निरजन भी मारा जाता तो और भी अच्छा था, क्योंकि इस तरह त्रिलोचन के लिए मैदान साफ हो जाता । खासकर निरजन उसके रास्ते मे रोडा ही नही, बहुत बडा पत्थर था । और इसीलिए जब कभी कृपाल कौर म उसके बार म बातें होती तो वह उस निरजनसिह के बजाय अलखनिरजनसिह कहा करता था।

सुबह की हवा धीरे-धीरे बह रही थी और त्रिलोचन का पगडी रहित सिर बडी प्रिय ठण्डक महसूस कर रहा था, लकिन उसम अनका अन्देशे एक दूसरे स टकरा रह थ । कृपाल कौर नयी-नयी उसकी जिन्दगी म आई थी । या तो वह हट्टे कट्टे निरजनसिह की बहन थी, लेकिन बहुत ही नरम, नाजुक और लचकीली थी । वह देहात म पली थी । वहा की कई गर्मिया-सर्दिया दख चुकी थी, फिर भी उसम वह सख्ती और मरदानापन नही था, जो देहात की आम सिख लडकिया म होता है, जिन्ह कडे म कडा परिश्रम करना पडता है।

उसके नैन नक्श कच्चे कच्च थे, मानो अभी अधूर हो । आम देहाती सिख लडकियो की अपक्षा उसका रग गोरा था, मगर कोरे लटठ की तरह, और बदन चिकना था, मसराइज्ड कपडे की तरह । और वह बहुत लजीली थी । त्रिलोचन उसीके गाव का था लेकिन वह अधिक दिन वहा नही रहा था । प्राइमरी स निकलकर जब वह शहर के हाई स्कूल म गया तो बस, फिर वही का होकर रह गया । स्कूल स छुट्टी पाई तो कालेज की पढाई शुरू हो गयी । इस बीच वह कई बार—अनको बार अपने गाव गया, लेकिन उसने कृपाल कौर नाम की किसी लडकी का नाम न सुना । शायद इसलिए कि हर बार वह इस अफरा तफरी म रहता था कि शीघ्र स शीघ्र शहर लौट जाए ।

कालेज का जमाना बहुत पीछे रह गया था । अडवानी चेम्बज के टैरस और कालेज की इमारत मे शायद दस वष का फासला था, और यह फासला त्रिलोचन क जीवन की विचित्र घटनाओ से भरा हुआ था । बर्मा सिगापुर हागकाग, फिर बम्बई, जहा वह चार वष से रह रहा था, इन

चार वर्षो म उसने पहली बार रात को आकाश की शक्ल देखी थी, जो बुरी नही थी—खाकी रग के तम्बू मे हजारो दीये टिमटिमा रहे थे और हवा ठण्डी और हल्की-फुल्की थी।

कृपाल कौर के विषय म सोचते सोचते वह मोजेल के बारे मे सोचने लगा। उस यहूदी लडकी के बारे म, जो अडवानी चेम्बज मे रहती थी। उससे त्रिलोचन का गोडे गोडे[1] इश्क हो गया था। एसा इश्क, जो उसने अपनी पतीस वष की जिन्दगी म कभी नही किया था।

जिस दिन उसने अडवानी चेम्बज म अपने एक ईसाई मित्र की सहायता से दूसरे माले पर फ्लैट लिया, उसी दिन उसकी मुठभेड मोजेल से हुई, जो पहली नजर म उसे खौफ्नाक हद तक दीवानी मालूम हुई थी। कटे हुए भूरे बाल उसके सिर पर बिखरे हुए थे—बेहद बिखरे हुए। होठो पर लिपस्टिक एसे जमी थी, जैसे गाढा खून और वह भी जगह जगह चटखी हुई। वह ढीला-ढाला सफेद चोगा पहने हुए थी, जिसके खुले गिरेबान से उसकी नीली पडी बडी-बडी छातियो का लगभग चौथाई भाग नजर आ रहा था। बाहे जो कि नगी थी, उनपर महीन-महीन बालो की तह जमी हुई थी, जसे वह अभी अभी किसी सैलून से बाल कटवाकर आई हो और उनकी नन्ही नन्ही हवाइया उनपर जम गई हो।

होठ अधिक मोटे नही थे लेकिन गहरे उन्नाबी रग की लिपस्टिक कुछ इस तरीके स लगाई गई थी कि वे मोटे और भसे के गोश्त के टुकडे जैसे मालूम होते थे।

त्रिलोचन का फ्लैट उसके फ्लट के बिल्कुल सामने था। बीच म एक तग गली थी, बहुत ही तग। जब त्रिलोचन अपने फ्लट म घुसने के लिए आगे बढा तो मोजेल बाहर निकली। खडाऊ पहने थी। त्रिलोचन उसकी आवाज सुनकर रुक गया। मोजेल ने अपने बिखरे बालो की चिको म से अपनी बडी बडी आखो से त्रिलोचन की ओर देखा और हसी—त्रिलोचन बौखला गया। जेब स चाबी निकालकर वह जल्दी म दरवाजे की ओर बढा। मोजेल की एक खडाऊ सीमेण्ट के चिकने फश पर फिसली और वह

1 घुटने घटने

उसके ऊपर गा गिरी।

जब त्रिलोचन सभला तो मोजेल उसके ऊपर थी, कुछ इस तरह कि उसका लम्बा चोगा ऊपर चढ़ गया था और उसकी दो नगी, बड़ी तगडी टागें उसके इधर उधर थी और जब त्रिलोचन ने उठने की कोशिश की तो वह बौखलाहट म कुछ इस तरह मोजेल—सारी मोजेल म उलझा, जैसे वह साबुन की तरह उसके सारे बदन पर फिर गया हो।

त्रिलोचन ने हाफते हुए बडे शिष्ट शब्दो म उससे क्षमा मागी। मोजेल ने अपना चोगा ठीक किया और मुस्करा दी, यह खडाऊ एकदम कण्डम चीज है।' और वह उतरी हुई खडाऊ म अपना अगूठा और उसके साथ वाली उगली फसाती हुई कारीडोर से बाहर चली गई।

त्रिलोचन का खयाल था कि मोजेल म दोस्ती पैदा करना शायद मुश्किल हो, लेकिन वह बहुत ही थोडे समय म उससे घुलमिल गई। हा, एक बात थी कि वह बहुत उद्दण्ड और मुहजोर थी और त्रिलोचन की कुछ परवाह नही करती थी। वह उससे खाती थी, उससे पीती, थी उसके साथ सिनेमा जाती थी। सारा-सारा दिन उसके साथ जुहू पर नहाती थी, लेकिन जब वह बाहो और होठो से कुछ आगे बढना चाहता तो वह उसे डाट देती। कुछ इस तरह उसे घुडकती कि उसके सारे मसूबे दाढी और मूछो म चक्कर काटते रह जाते।

त्रिलोचन को पहले किसीके साथ प्रेम नही हुआ था। लाहौर मे, बर्मा मे, सिगापुर म वह लडकिया कुछ समय के लिए खरीद लिया करता था। उसे कभी स्वप्न मे भी खयाल न था कि बम्बई पहुचते ही वह एक बहुत ही अल्हड किस्म की यहूदी लडकी के प्रेम मे गोडे-गोड धस जाएगा। वह उससे कुछ विचित्र प्रकार की विमुखता बरतती थी। उसके कहने पर तुरत सज धजकर सिनेमा जाने के लिए तैयार हो जाती थी, लेकिन जब वे अपनी सीट पर बैठते तो इधर उधर वह निगाह दौडाना शुरू कर देती। यदि कोई उसका परिचित निकल आता तो जोर से हाथ हिलाती और त्रिलोचन से पूछे बिना उसकी बगल में जा बैठती।

होटल म बैठे हैं। त्रिलोचन ने मोजेल के लिए विशेष रूप से उमदा खाने मगवाए हैं, लेकिन उसे अपना कोई पुराना दोस्त दिखाई पड गया है

ग्रौर वह ग्रपना निवाला छोडकर उसके पास जा बैठी है ग्रौर त्रिलोचन की छाती पर मूग दल रही है।

त्रिलोचन कभी-कभी भिन्ना जाता था, क्योंकि वह उस ग्रकेला छोड कर ग्रपने उन पुराने दोस्तों ग्रौर परिचितों के साथ चली जाती थी ग्रौर कई कई दिन तक उससे मुलाकात नहीं करती थी। कभी सिर दर्द का बहाना कभी पेट की खराबी जिसके बारे में त्रिलोचन को ग्रच्छी तरह मालूम था कि वह फौलाद की तरह कडा था ग्रौर कभी खराब नहीं हो सकता था।

जब उससे मुलाकात होती तो वह उससे कहती तुम सिख हो, ये नाजुक बातें तुम्हारी समझ मे नही ग्रा सकती।

यह सुनकर त्रिलोचन जल भुन जाता ग्रौर पूछता 'कौन सी नाजुक बातें—तुम्हारे पुराने यारों की ?

मोजेल दोनो हाथ ग्रपने चौडे चकले कूल्हों पर लटकाकर ग्रपनी तगडी टाँगें चौडी कर देती ग्रौर कहती यह तुम मुझे उनके ताने क्या देते हो। हाए व मेरे यार है ग्रौर मुझे ग्रच्छे लगते है। तुम जलते हो तो जलते रहो।'

त्रिलोचन एक कुशल वकील की तरह पूछता इस तरह तुम्हारी मेरी कैसे निभेगी ?'

मोजेल जोर का कहकहा लगाती तुम सचमुच सिख हो। इडियट तुमसे किसने कहा है कि मेरे साथ निभाग्रो। ग्रगर निभाने की बात है तो जाग्रो ग्रपने देश में, किसी सिखनी से ब्याह कर लो। मेरे साथ तो इसी तरह चलेगा।

त्रिलोचन नरम पड जाता। वास्तव मे मोजेल उसकी बडी कमजोरी बन गई थी। वह हर हालत मे उसके सामीप्य का इच्छुक था। इसमे कोई स देह नही कि मोजेल की वजह से उसकी प्राय बेइज्जती होती थी। मामूली मामूली क्रिश्चियन छोकरों के सामने, जिनकी कोई हस्ती नही थी उसे लज्जित होना पडता था। लेकिन दिल से मजबूर होकर उसने यह सब कुछ सहने का निश्चय कर लिया था।

ग्राम तौर पर तौहीन ग्रौर बेइज्जती की प्रतिक्रिया प्रतिशोध होता

है, लेकिन त्रिलोचन के मामले मे ऐसा नही था। उसने अपने दिल और दिमाग की बहुत-सी आखें मीच ली थी और कानो म रूई ठस ली थी। उसको मोजेल पसन्द थी। पसन्द ही नही, जैसा कि वह अक्सर अपने दोस्तो से कहा करता था, गोडे-गोडे उसके प्रेम मे धस गया था। अब इसके सिवा और कोई चारा नही था कि उसके शरीर का जितना भाग शेष रह गया था, वह भी इस प्रेम की दलदल म चला जाए और क़िस्सा खत्म हो।

दो वष तक वह इसी तरह बेइज्जती का जीवन बिताता रहा लेकिन सुदृढ रहा। आखिर एक दिन, जबकि मोजेल मौज म थी, उसने अपनी भुजाओ म उसे समेटकर पूछा 'मोजेल, क्या तुम मुझसे प्रेम नही करती हो ?'

मोजेल उसकी भुजाओ स निकल गई और कुर्सी पर बैठकर अपने फ्राक का घेरा देखने लगी फिर उसने अपनी मोटी-मोटी यहूदी आखें उठाइ और घनी पलकें झपकाकर कहा, 'मैं सिख से प्रेम नही कर सकती।

त्रिलोचन ने ऐसा महसूस किया कि उसकी पगडी के नीचे किसीने दहकती चिनगारिया रख दी हो। उसके तन बदन म आग लग गई, 'मोजेल, तुम हमेशा मेरा मजाक उडाती हो यह मेरा मजाक नही, मेरे प्रेम का मजाक है।'

मोजेल उठी और उसने अपने भूरे कटे हुए बालो का एक दिलफरेब झटका दिया, तुम शेव करा लो और अपने सिर के बाल खुले छोड दो तो मैं शत लगाती हू कि कई छोकडे तुम्हे आख मारेंगे—तुम सुदर हो।

त्रिलोचन के केशो म और भी चिनगारिया पड गईं। उसने आगे बढकर जोर से मोजेल को अपनी ओर खीचा और उसके उन्नावी होठो मे अपने मूछो भरे होठ गाड दिए।

मोजेल ने एकदम 'फू फ्' की और उससे अपने को छुडा लिया। 'मैं सुबह ही अपने दातो पर ब्रश कर चुकी हू—तुम कष्ट न करो।'

त्रिलोचन चिल्लाया, 'मोजेल !'

मोजेल वैनिटी बैग से छोटा-सा आईना निकालकर अपने होठ देखने लगी जिनपर लगी गाढी लिपस्टिक पर खरोंचें पड गई थी। 'खुदा की

कसम तुम अपनी मूछों और दाढ़ी का सही इस्तेमाल नहीं करते। इनके बाल ऐसे अच्छे हैं कि मेरा नबी ब्ल्यू स्कर्ट अच्छी तरह साफ कर सकते हैं—बस, थोड़ा-सा पट्रोल लगाने की जरूरत होगी।'

त्रिलोचन क्रोध की उस सीमा तक पहुंच चुका था, जहां वह बिलकुल ठण्डा हो गया था। वह आराम से सोफे पर बैठ गया। मोजेल भी आ गई और उसने त्रिलोचन की दाढ़ी खोलनी शुरू कर दी। उसमें जो पिनें लगी थीं वे उसने एक एक करके अपने दांतों में दबा लीं।

त्रिलोचन सुन्दर था। जब उसके दाढ़ी मूछ नहीं उगी थी तो लोग उसे खुले केशों में देखकर धोखा खा जाते थे कि वह कोई कम उम्र की सुन्दर लड़की है। मगर अब बालों के इस ढेर ने उसके नैन नक्श झाड़ियों की तरह अन्दर छिपा लिए थे और इस बात को वह स्वयं भी जानता था। लेकिन वह धार्मिक प्रवृत्ति का एक सुशील युवक था। उसके दिल में धर्म के प्रति सम्मान था। वह नहीं चाहता था कि वह उन चीजों को अपने अस्तित्व से अलग कर दे जिनसे उसके धर्म की पहचान होती थी।

जब दाढ़ी पूरी खुल गई और उसके सीने पर लटकने लगी तो उसने मोजेल से पूछा 'यह तुम क्या कर रही हो?

दांतों में पिनें दबाए वह मुस्कराई, तुम्हारे बाल बहुत मुलायम हैं। मेरा अनुमान गलत था कि इनसे मेरा नबी ब्ल्यू स्कर्ट साफ हो सकेगा। त्रिलोचन! तुम ये मुझे दे दो मैं इन्हें गूंथकर अपने लिए एक फर्स्ट क्लास बटुआ बनवाऊंगी।

अब त्रिलोचन की दाढ़ी में फिर चिनगारियां भड़कने लगीं। वह बड़े गम्भीर स्वर में मोजेल से बोला, मैंने आज तक कभी तुम्हारे मजहब का मजाक नहीं उड़ाया, तुम क्यों उड़ाती हो? देखो, किसी की धार्मिक भावना से खेलना अच्छा नहीं होता। मैं यह कभी बर्दाश्त न करता सिर्फ इसलिए करता रहा कि मुझे तुमसे अथाह प्रेम है। क्या तुम्हें इसका पता नहीं?'

मोजेल ने त्रिलोचन की दाढ़ी से खेलना बन्द कर दिया और बोली, मुझे मालूम है।

फिर? त्रिलोचन ने अपनी दाढ़ी के बाल बड़ी सफाई से तह किए

और मोजेल के दांतों से पिनें निकाल लीं। तुम अच्छी तरह जानती हो कि मेरा प्रेम बकवास नहीं—मैं तुमसे शादी करना चाहता हूं।'

'मुझे मालूम है।' बालों को एक हल्का सा झटका देकर वह उठी और दीवार में लटकी हुई तस्वीर की तरफ देखने लगी। मैं भी लगभग यही फैसला कर चुकी हूं कि तुमसे शादी करूंगी।'

त्रिलोचन उछल पड़ा, सच ?'

मोजेल के उन्नाबी होंठ बड़ी मोटी मुस्कराहट के साथ खुले और उसके सफेद मजबूत दांत एक क्षण के लिए चमके। हां।'

त्रिलोचन ने अपनी आधी लिपटी दाढ़ी ही से उसको अपने सीने के साथ भींच लिया। 'तो तो, कब ?'

मोजेल अलग हट गई। जब तुम अपने ये बाल कटवा दोगे।

त्रिलोचन उस समय जो हो सो हो बन गया। उसने कुछ न सोचा और कह दिया, 'मैं कल ही कटवा दूंगा।'

मोजेल फर्श पर टप डांस करने लगी। 'तुम बकवास करते हो त्रिलोचन! तुममें इतनी हिम्मत नहीं है।'

उसने त्रिलोचन के दिमाग से मजहब के रहे-सहे खयाल को बाहर निकाल फेंका। 'तुम देख लोगी।'

'देख लूंगी।' और वह तेजी से आगे बढ़ी। त्रिलोचन की मूछों को चूमा और 'फू फू करती बाहर निकल गई।

त्रिलोचन ने रात भर क्या सोचा और वह किन किन यातनाओं से गुजरा इसकी चर्चा व्यर्थ है। इसलिए दूसरे दिन उसने फोर्ट में अपने केश कटवा दिए और दाढ़ी भी मुंडवा दी। यह सब कुछ होता रहा और वह आंखें मींचे रहा। जब सारा मामला साफ हो गया तो उसकी आंखें खुलीं और वह देर तक अपनी शक्ल शीशे में देखता रहा, जिसपर बम्बई की सुन्दर से सुन्दर लड़की भी कुछ देर के लिए ध्यान देने पर मजबूर हो जाती।

इस समय भी त्रिलोचन वही एक विचित्र ठण्डक महसूस करने लगा, जो सैलून से बाहर निकलकर उसको लगी थी। उसने टैरेस पर तेज-तेज चलना शुरू कर दिया, जहां टंकियों और नलों की भरमार थी।

वह चाहता था कि उस कहानी का शेष भाग उसके दिमाग मे न आए, लेकिन वह आए बिना न रहा।

बाल कटवाकर वह पहले दिन घर से बाहर नही निकला। उसने अपने नौकर के हाथ दूसरे दिन एक चिट लिखकर मोजेल को भेजी कि उसकी तबीयत खराब है, थोडी देर के लिए आ जाए। मोजेल आई। त्रिलोचन को बालो के बगैर देखकर पहले वह क्षण भर ठिठकी, फिर 'माई डार्लिंग त्रिलोचन!' कहकर उसके साथ लिपट गई और उसका सारा चेहरा उन्नाबी कर दिया। उसने त्रिलोचन के साफ और मुलायम गालो पर हाथ फेरा उसके छोटे अग्रेजी किस्म के कटे हुए बालो मे अपनी उगलियो से कघी की और अरबी भाषा मे नारे लगाती रही। उसने इतना शोर मचाया कि उसकी नाक से पानी बहने लगा। मोजेल ने जब इसे महसूस किया तो उसने अपनी स्कर्ट का घेरा उठाया और उसे पोछना शुरू कर दिया। त्रिलोचन शरमा गया। उसने जब स्कर्ट नीची की तो उसने डपटते हुए कहा, 'नीचे कुछ पहन तो लिया करो।' मोजेल पर इसका कुछ असर न हुआ। बासी और जगह जगह से उखडी हुई लिपस्टिक लगे होठो से मुस्कराकर उसने केवल इतना ही कहा, 'मुझे बडी घबराहट होती है—ऐसे ही चलता है।'

त्रिलोचन को वह पहला दिन याद आ गया, जब वह और मोजेल दोनो टकरा गए थे और आपस मे कुछ अजीब तरह गडडमडड हो गए थे। मुस्कराकर उसने मोजेल को अपने सीने से लगाया। 'शादी कल होगी?'

'जरूर।' मोजेल ने त्रिलोचन की मुलायम ठोडी पर अपने हाथ की पुश्त फेरी।

तय यह हुआ कि शादी पूना मे हो। क्योकि सिविल मैरिज थी, इसलिए उनको दस-पन्द्रह दिन का नोटिस देना था। अदालती कारवाई थी, इसलिए उचित समझा गया कि पूना बेहतर है, पास है और त्रिलोचन के वहा कई मित्र भी हैं। दूसरे दिन उन्हे प्रोग्राम के अनुसार पूना रवाना हो जाना था। मोजेल फोर्ट मे एक स्टोर मे सेल्सगर्ल थी, उससे कुछ दूरी पर टक्सी स्टैण्ड था। बस, वही उसको मोजेल ने इतजार करने के लिए

कहा था। निश्चित समय पर त्रिलोचन वहां पहुंच गया। डेढ़ घण्टा इन्तजार करता रहा, लेकिन वह न आई। दूसरे रोज उसे मालूम हुआ कि वह अपने एक पुराने मित्र के साथ जिसने नई-नई मोटर खरीदी थी, देवलाली चली गई थी और अनिश्चित समय तक वहीं रहेगी।

त्रिलोचन पर क्या गुजरी, यह एक बड़ी लम्बी कहानी है। सार इसका यह है कि उसने जी कड़ा कर लिया और उसको भूल गया। इतने में उसकी मुलाकात कृपालकौर से हो गई और वह उससे प्रेम करने लगा, और कुछ ही समय में उसने अनुभव किया कि मोजेल बहुत वाहियात लड़की थी, जिसके दिल के साथ पत्थर लगे हुए थे, जो चिड़े के समान एक जगह से दूसरी जगह फुदकता रहता था। उसे इस बात से बड़ा संतोष हुआ कि वह मोजेल से शादी करने की गलती न कर बैठा।

लेकिन इसपर भी कभी कभी मोजेल की याद एक चुटकी की तरह उसके दिल को पकड़ लेती थी और फिर छोड़कर कुदक्कड़े लगाती गायब हो जाती थी, वह बेशरम थी बेलिहाज थी। उसे किसीकी भावनाओं का खयाल नहीं था, फिर भी वह त्रिलोचन को पसंद थी। इसलिए वह कभी कभी उसके बारे में सोचने पर मजबूर हो जाता था कि वह देवलाली में इतने दिनों से क्या कर रही है? उसी आदमी के साथ है जिसने नई-नई कार खरीदी थी या उसे छोड़कर किसी दूसरे के पास चली गई है? उसको इस विचार से दुख होता था कि वह उसके बजाय किसी दूसरे के पास थी, यद्यपि उसको मोजेल की प्रकृति का पूरा पूरा ज्ञान था।

वह उसपर सैंकड़ों नहीं, हजारों रुपये खर्च कर चुका था। लेकिन अपनी इच्छा से, वरना मोजेल महंगी नहीं थी। उसको बहुत सस्ती किस्म की चीजें पसन्द आती थीं। एक बार त्रिलोचन ने उसे सोने के टाप्स देने का इरादा किया जो उसे बहुत पसन्द थे, लेकिन उसी दुकान में मोजेल झूठे भड़कीले और बहुत सस्ते आवेजों पर मर मिटी और सोने के टाप्स छोड़कर त्रिलोचन से मिन्नतें करने लगी कि वह उन्हें खरीद दे।

त्रिलोचन अब तक न समझ सका कि मोजेल किस प्रकार की लड़की है। किस मिट्टी की बनी है। वह घण्टों उसके साथ लेटी रहती थी

उसको चूमन की इजाजत देनी थी। वह सारा का नारा साबुन की तरह उसके शरीर पर फिर जाना था, लेकिन इससे आगे वह उसको एक इंच बढन नही दती थी। उसको चिढान के लिए इतना कह देती थी, 'तुम सिख हो, मुझे तुमसे घृणा है।'

त्रिलोचन अच्छी तरह जानता था कि मोजेल को उसस घृणा नही थी। यदि एसा होता तो वह उससे कभी न मिलती। सहनशक्ति उसम तनिक भी नही थी। वह कभी दो वष उसके साथ न गुजारती। दो टूक फैसला कर देती। अण्डरवीयर उसको नापसद थे, इसलिए कि उनस उसको उलझन होती थी। त्रिलोचन ने कई बार उसको इनकी अनिवार्यता के बार म बताया था शरम हया का वास्ता दिया था, लेकिन उसन यह चीज कभी न पहनी।

त्रिलोचन जब उससे शरम-हया की बात करता तो वह चिढ जाती थी। 'यह हया क्या बया बकवास है ?—अगर तुम्हे उसका कुछ खयाल है तो आख ब द कर लिया करो। तुम मुझे यह बताओ कौन सा ऐसा लिबास है जिसमे आदमी नगा नही हो सकता, या जिसम से तुम्हारी नजरें पार नही हो सकती, मुझसे ऐसी बकवास मत किया करो, तुम सिख हो—मुझे मालूम है कि तुम पतलून के नीचे एक सिली-सा अण्डरवीयर पहनते हो, जो निकर से मिलता जुलता होता है। यह भी तुम्हारी दाढी और सिर के बालो की तरह तुम्हारे मजहब मे शामिल है—शरम आनी चाहिए तुम्ह, इतने बडे हो गए हो और अब तक यही समझते हो कि तुम्हारा मजहब अण्डरवीयर म छिपा बठा है।

त्रिलोचन को शुरू-शुरू में ऐसी बातें सुनकर क्रोध आया था लेकिन बाद मे सोचन-विचारने पर वह कभी कभी लुढक जाता और सोचता कि मोजेल की बातें शायद गलत नहीं हैं। और जब उसने अपन केशो और दाढी का सफाया करा दिया तो उसे सचमुच ऐसा लगा कि वह बेकार इतने दिन बालो का बोझ उठाए उठाए फिरा जिसका कुछ मतलब ही नही था।

पानी की टकी के पास पहुचकर त्रिलोचन रुक गया। मोजेल को एक मोटी गाली देकर उसन उसके बारे मे सोचना ब द कर दिया। कृपाल

और एक पवित्र लडकी थी, जिससे उसको प्रेम हो गया था, और जो खतरे में थी। वह ऐसे मुहल्ले में थी, जिसमें कट्टर किस्म के मुसलमान रहते थे और वहां दो-तीन वारदातें भी हो चुकी थीं—लेकिन मुसीबत यह थी कि उस मुहल्ले में अड़तालीस घण्टे का कर्फ्यू था। मगर कर्फ्यू की कौन परवाह करता है? उस चाल के मुसलमान ही अगर चाहते तो अन्दर ही अन्दर कृपाल कौर और उसकी मां तथा उसके बाप का बडी आसानी से सफाया कर सकते थे।

त्रिलोचन सोचता-सोचता पानी के मोटे नल पर बैठ गया। उसके सिर के बाल अब काफी लम्बे हो गए थे। उसका विश्वास था कि वे एक वर्ष के अन्दर अन्दर पूरे केशों में बदल जायेंगे। उसकी दाढ़ी तेजी से बढ़ रही थी, किन्तु वह उसे बढ़ाना नहीं चाहता था। फोर्ट में एक बारबर था, वह इस सफाई से उसे तराशता था कि तराशी हुई दिखाई नहीं देती थी।

उसने अपने नरम और मुलायम बालों में उंगलियां फेरीं और एक ठण्डी सांस ली। उठने का इरादा कर ही रहा था कि उसे खड़ाऊं की कर्कश आवाज सुनाई दी। उसने सोचा, कौन हो सकता है? बिल्डिंग में कई यहूदी औरतें थीं जो सबकी सब घर में खड़ाऊं पहनती थीं। आवाज और करीब आती गई। एकाएक उसने दूसरी टंकी के पास मोजेल को देखा, जो यहूदियों के विशेष ढंग का ढीला ढाला कुर्ता पहन बडे जोर की अंगडाई ले रही थी—इस जोर की कि त्रिलोचन को महसूस हुआ कि उसके आसपास की हवा चटख जाएगी।

त्रिलोचन पानी के नल पर से उठा। उसने सोचा यह एकाएक कहां से टपक पडी—और इस समय छत पर क्या करने आई है? मोजेल ने एक और अंगडाई ली—अब त्रिलोचन की हड्डियां चटखने लगीं।

ढीले ढीले कुर्ते में उसकी मजबूत छातियां धडकीं—त्रिलोचन की आंखों के सामने कई गोल गोल और चपटे चपटे नील उभर आए। वह जोर से खांसा। मोजेल ने पलटकर उसकी ओर देखा। कुछ विशेष प्रतिक्रिया नहीं हुई। वह खड़ाऊं घसीटती उसके पास आई और उसकी नन्ही मुन्नी दाढ़ी देखने लगी 'तुम फिर सिख बन गए त्रिलोचन?'

ाढी के बाल त्रिलोचन को चुभन लगे।

मोजेल ने आगे बढ़कर उसकी ठोढी के साथ अपने हाथ की पुश्त रगडी और मुस्कराकर कहा, 'अब यह ब्रुश इस योग्य है कि मेरी नेवी ब्लू स्कर्ट साफ कर सके। मगर वह तो वहीं देवलाली में रह गई है।

त्रिलोचन चुप रहा।

मोजेल ने उसकी बाह की चुटकी ली। 'बोलते क्या नहीं सरदार साहब ?

त्रिलोचन अपनी पुरानी मूर्खताओं को दोहराना नहीं चाहता था, फिर भी उसने सुबह के धुधले अंधेरे में देखा कि मोजेल में कोई खास परिवर्तन नहीं हुआ था, सिर्फ वह कुछ कमजोर नजर आती थी।

त्रिलोचन ने उससे पूछा 'बीमार रही हो ?

'नहीं। मोजेल ने अपने कटे हुए बालों को एक हल्का सा झटका दिया।

पहले से कमजोर दिखाई देती हो।

'मैं डाईटिंग कर रही हू।' मोजेल पानी के मोटे नल पर बैठ गई और खडाऊ फर्श के साथ बजाने लगी। 'तुम, मतलब यह कि अब फिर नये सिरे से सिख बन रहे हो ?'

त्रिलोचन ने एक प्रकार की ढिठाई से कहा, 'हा।'

मुबारक हो।' मोजेल ने एक खडाऊ पैर से उतार ली और पानी के नल पर बजाने लगी। 'किसी और लडकी से प्रेम करना शुरू कर दिया है ?

त्रिलोचन ने धीमे से कहा, हा।'

'मुबारक हो—इसी बिल्डिंग की है कोई ?'

'नहीं।'

यह बहुत बुरी बात है।' मोजेल खडाऊ अपनी उगलियो में उडसकर उठी। 'आदमी को हमेशा अपने पडोसियो का खयाल रखना चाहिए।

त्रिलोचन चुप रहा। मोजेल ने उसकी दाढी को अपनी पाचो उगलियो से छेडा। क्या उसी लडकी ने तुम्हें ये बाल बढ़ाने की राय दी है ?'

'नहीं।'

त्रिलोचन बडी उलझन मे था, जैसे कघा करते करते उसकी दाढी के बाल आपस मे उलझ गये हो। जब उसने नही कहा तो उसके कहने मे तीखापन था।

मोजेल के होठो पर लिपस्टिक बासी गोश्त की तरह मालूम होती थी। वह मुस्कराई तो त्रिलोचन को ऐसा लगा कि उसके गाव म झटके की दुकान पर कसाई ने छुरी से गोश्त के दो टुकडे कर दिए हो।

मुस्कराने के बाद वह हसी। 'तुम अब यह दाढी मुडा डालो तो किसी-को भी कसम ले लो, मैं तुमसे शादी कर लूगी।'

त्रिलोचन के जी मे आई कि उससे कह दे कि वह एक बडी शरीफ, सुशील और लजीली कवारी लडकी से प्रेम कर रहा है और उससे ही शादी करेगा। मोजेल उसके मुकाबले मे निलज्ज है बदसूरत, बेवफा और कपटी है। लेकिन वह इस तरह का ओछा आदमी नही था। उसने मोजेल से केवल इतना ही कहा, मोजेल, मैं अपनी शादी का फसला कर चुका हू। मेरे गाव की एक सीधी सादी लडकी है, जो मजहब की पाब द है। उसीके लिए मैंने बाल बढाने का फसला कर लिया है।

मोजेल सोच विचार की आदी नही थी लेकिन उसने कुछ देर सोचा और खडाऊ पर आधे दायरे म घमकर त्रिलोचन स कहा अगर वह मजहब की पाबन्द है तो वह तुम्हे कसे स्वीकार करेगी ? क्या उसे मालूम नही कि तुम एक बार अपने बाल कटवा चुके हो ?

'उसको अभी मालूम नही—दाढी मैंने तुम्हारे देवलाली जाने के बाद ही बढानी शुरू कर दी थी, केवल प्रायश्चित्त के रूप में। उसके बाद मेरी कृपाल कौर स मुलाकात हुई। लेकिन मैं पगडी इस तरह से बाधता हू कि सौ मे से एक ही आदमी मुश्किल स जान सकता है कि मेरे केश कटे हुए हैं। लेकिन अब ये बहुत जल्दी ठीक हो जाएग। त्रिलोचन ने अपने मुलायम बालो म उगलिया से कघी करना शुरू की। यह बहुत अच्छा है—लेकिन ये कम्बख्त मच्छर यहा भी मौजूद हैं। देखो, किस जोर स काटा है!'

त्रिलोचन ने दूसरी ओर देखना शुरू कर दिया। मोजेल ने उस जगह, जहा मच्छर ने काटा था, उगली से थूक लगाया और कुर्ता छोडकर सीधी

गई हो गई। क्‍या हो रही है तुम्हारी शादी?'

'अभी कुछ पता नहीं।' यह कहकर त्रिलोचन गम्भीर हो गया।

कुछ देर तक चुप्पी रही फिर मोजल ने उसकी गम्भीरता का अनुमान लगाकर बड़ी गम्भीरता से पूछा, 'त्रिलोचन, तुम क्या सोच रहे हो?'

त्रिलोचन को उस समय किसी हमदर्द की जरूरत थी—चाहे वह मोजल ही क्यों न हो। इसलिए उसने उसको सारा किस्सा सुना दिया। मोजल हँसी, 'तुम अव्वल दर्जे के इडियट हो। जाओ, उसको ले आओ, ऐसी क्या मुश्किल है?'

'मुश्किल! मोजल, तुम इस मामले की नजाकत को कभी नहीं समझ सकोगी—किसी भी मामले की नजाकत को समझने के लिए तुम बहुत ही छिछली लड़की हो। यही वजह है कि मेरे और तुम्हारे सम्बन्ध टूट गए, जिनका मुझे सारी उम्र अफसोस रहेगा।'

मोजल ने जोर से अपनी खड़ाऊं पानी के नल के साथ मारी, 'अफसोस बी डैम्ड सिली, इडियट! तुम यह सोचो कि तुम्हारी उसको क्या नाम है उसका... उस मुहल्ले से बचा लाना कैसे हो... और तुम बैठ गए हो सम्बन्धों का रोना रोने... तुम्हारे मेरे सम्बन्ध कभी बने नहीं रह सकते थे... तुम एक सिली किस्म के आदमी हो... और बहुत डरपोक! मुझे निडर आदमी चाहिए... लेकिन छोड़ो इन बातों को... चलो आओ तुम्हारी उसको ले आएं।

उसने त्रिलोचन की बांह पकड़ ली। त्रिलोचन ने घबराहट में उससे पूछा, 'कहां से?'

'वहीं से, जहां वह है। मैं उस मुहल्ले की एक-एक ईंट को जानती हूं—चलो आओ मेरे साथ।

मगर सुनो तो—कर्फ्यू है।'

'मोजल के लिए नहीं—चलो आओ।'

वह त्रिलोचन को खींचती उस दरवाजे तक ले गई, जो नीचे सीढ़ियों की ओर खुलता था। दरवाजा खोलकर वह उतरने वाली थी कि रुक गई और त्रिलोचन की दाढ़ी की ओर देखने लगी।

त्रिलोचन ने पूछा 'क्या बात है?'

मोजेल न कहा 'यह तुम्हारी दाढी लेकिन खैर, ठीक है। इतनी बडी नही है—नगे सिर चलोगे तो कोई नही समझेगा कि तुम सिख हो।'

'नग सिर ? त्रिलोचन ने कुछ बौखलाकर कहा मैं नग मिर नही जाऊगा।

मौजेल न वडी भोली सूरत बनाकर पूछा, 'क्या ?'

त्रिलोचन न अपने बालो की एक लट ठीक की और बोला, तुम समझती नहीं हो। मेरा वहा पगडी के बिना जाना ठीक नही।

क्या ठीक नही ?'

तुम समझती क्या नही हो कि उसने अभी तक मुझे नगे सिर नही देखा—वह यही समझती है कि मेर केश है। मैं उसे यह भेद नही जानने दना चाहता।

मोजेल न जोर स अपनी खडाऊ दरवाजे की दहलीज पर मारी, 'तुम सचमुच अव्वल दर्जे के ईडियट हो गधे कही के ! उसकी जिदगी का सवाल है—क्या नाम है तुम्हारी उस कौर का, जिमसे तुम प्रेम करते हो ?'

त्रिलोचन न उसे समझान की कोशिश की, मोजेल, वह वडी धार्मिक प्रवत्ति की लडकी है—अगर उसने मुझे नगे सिर दख लिया तो मुझमे नफरत करन लगगी।

मोजेल चिढ गइ। ओह तुम्हारा प्रेम बी डेम्ड—मैं पूछती हू, क्या सारे सिख तुम्हारी तरह के बेवकूफ होते हैं ?—उसकी जान खतरे मे है और तुम कहत हो कि पगडी जरूर पहनोगे और शायद अपना अण्डर-वीयर भी जो निकर स मिलता जुलता है।'

त्रिलोचन न कहा, वह तो मैं हर वक्त पहन रहता हू।

बहुत अच्छा करत हो लेकिन अब तुम यह सोचो कि मामला उस मुहल्ल का है जहा मिया भाई ही मिया भाई रहते हैं और वह भी बडे-बडे दादा। तुम पगडी पहनकर गए तो वहीं कत्ल कर दिए जाओगे।

त्रिलोचन न सक्षिप्त सा उत्तर दिया, 'मुझे उसकी परवाह नही। अगर मैं तुम्हारे साथ वहा जाऊगा तो पगडी पहनकर जाऊगा। मैं अपन प्रेम को खतरे म डालना नही चाहता।

मोजेल भुंझला गई। उसमें इस जोर से उफान आया कि उसकी छातियां आपस में भिड़भिड़ा गईं। 'गधे कहीं के ! तुम्हारा प्रेम ही कहां रहेगा जब तुम न रहोगे। तुम्हारी वह क्या नाम है उस लड़की का जब वह न रहेगी, उसका परिवार तक न रहेगा। तुम सिख हो खुदा की कसम तुम सिख हो और बड़े इडियट हो।'

त्रिलोचन भिन्ना गया। 'बकवास न करो।'

मोजेल जोर से हंसी और उसने अपनी नरम रोयेंदार बांह उसके गले में डाल दी और थोड़ा सा झूलकर बोली, 'डार्लिंग, चलो जैसी तुम्हारी मर्जी। आओ पगड़ी पहन आओ मैं नीचे बाजार में खड़ी हूं।'

यह कहकर वह नीचे जाने लगी। त्रिलोचन ने उसे रोका 'तुम कपड़े नहीं पहनोगी?'

मोजेल ने अपने सिर को झटका दिया। 'नहीं चलेगा इसी तरह।' यह कहकर वह खट-खट करती नीचे उतर गई। त्रिलोचन निचली मंजिल की सीढ़ियों पर भी उसकी खटाउओं की आवाज सुनता रहा। फिर उसने अपने लम्बे बाल उंगलियों से पीछे की तरफ समेटे और नीचे उतरकर अपने फ्लैट में चला गया। जल्दी जल्दी उसने कपड़े बदले। पगड़ी बंधी-बंधाई रखी थी, उसे अच्छी तरह सिर पर जमाया और फ्लैट के दरवाजे में कुंजी घुमाकर नीचे उतर गया।

बाहर फुटपाथ पर मोजेल अपनी तगड़ी टांगें चौड़ी किए सिगरेट पी रही थी बिलकुल पुरुषों की तरह। जब त्रिलोचन उसके पास पहुंचा तो उसने शरारत से मुंह भरकर धुआं उसके मुंह पर दे मारा। त्रिलोचन ने गुस्से में कहा, 'तुम बहुत जलील हो।'

मोजेल मुस्कराई। 'यह तुमने कोई नई बात नहीं कही इससे पहले मुझे और भी कई लोग जलील कह चुके हैं।' फिर उसने त्रिलोचन की पगड़ी की ओर देखा। 'यह पगड़ी तुमने सचमुच अच्छी तरह बांधी है। ऐसा मालूम होता है तुम्हारे केश हैं।'

बाजार बिलकुल सुनसान था केवल हवा चल रही थी और वह भी बहुत धीरे धीरे जैसे वह भी कर्फ्यू से डरती हो। बत्तियां जल रही थीं, लेकिन उनका प्रकाश बीमार-सा मालूम होता था। आम तौर पर इस समय

ट्रेनें चलनी शुरू हो जाती थीं और लोगों का आवागमन भी शुरू हो जाता था। अच्छी खासी चहल पहल हो जाती थी, लेकिन अब ऐसा मालूम होता था कि सड़क पर से न कोई आदमी गुजरा है और न गुजरेगा।

मोजेल आगे आगे थी। फुटपाथ के पत्थरों पर उसकी खड़ाऊं खट-खट कर रही थी। यह आवाज उस निस्तब्ध वातावरण में एक बहुत बड़ा शोर थी। त्रिलोचन दिल ही दिल में मोजेल को बुरा भला कह रहा था कि दो मिनट में और कुछ नहीं तो अपनी बेहूदा खड़ाऊं उतारकर कोई और चीज पहन सकती थी। उसने चाहा कि मोजेल से कहे, खड़ाऊं उतार दो और नंगे पांव चलो मगर उसे विश्वास था कि वह कभी नहीं मानेगी, इसलिए चुप रहा।

त्रिलोचन बहुत डरा हुआ था, कोई पत्ता भी खड़कता तो उसका दिल धक से रह जाता, लेकिन मोजेल सिगरेट का धुआं उड़ाती बिलकुल निडरता से चली जा रही थी, मानो बड़ी बेफिक्री से चहलकदमी कर रही हो।

चौक में पहुंचे तो पुलिस मैन की आवाज गरजी, 'ऐ, किधर जा रहा है?'

त्रिलोचन डर गया। मोजेल आगे बढ़ी और पुलिस मैन के पास पहुंच गई और अपने बालों को एक हल्का सा झटका देकर कहा 'ओह तुम, हमको पहचाना नहीं? तुमने... मोजेल...' फिर उसने एक गली की तरफ इशारा किया, 'उधर उस बाजू हमारा बहन रहता है, उसकी तबीयत खराब है... डाक्टर लेकर जा रहा है।'

सिपाही उसे पहचानने की कोशिश कर रहा था कि उसने न जाने कहां से सिगरेट की डिबिया निकाली और एक सिगरेट निकालकर उसको दिया। 'लो, पियो।' सिपाही ने सिगरेट ले लिया। मोजेल ने अपने मुंह से सुलगा हुआ सिगरेट निकाला और उससे कहा 'हीयर इज लाइट।'

सिपाही ने सिगरेट का कश लिया, मोजेल ने दाईं आंख उसको और बाईं आंख त्रिलोचन को मारी और खट खट करती उस गली की ओर चल दी, जिसमें से गुजरकर उन्हें मुहल्ले में जाना था।

त्रिलोचन चुप था, लेकिन वह महसूस कर रहा था कि मोजेल कर्फ्यू की अवज्ञा करके एक विचित्र प्रकार की प्रसन्नता का अनुभव कर रही है।

छातिया मे एक टहोका दिया। 'ऐश कर साली, ऐश कर।' फिर उसने परात उठाई और यह जा, वह जा।

त्रिलोचन बडबडाया 'हरामजादे ने कैसी जलील हरकत की!' मोजेल ने अपनी छातिया पर हाथ फेरा। 'कोई जलील हरकत नहीं, सब चलता है। आओ।'

और वह तेज-तेज चलने लगी। त्रिलोचन ने भी कदम तेज कर दिए।

वह गली पार करके वे दोनो उस मुहल्ले मे पहुच गए, जहा कृपाल कौर रहती थी। मोजेल ने पूछा 'किस गली मे जाना है?'

त्रिलोचन ने धीरे से कहा, 'तीसरी गली मे, नुक्कड वाली बिल्डिंग।'

मोजेल ने उसी ओर चलना शुरू कर दिया। उस ओर बिलकुल निस्तब्धता थी। आसपास इतनी घनी आबादी थी लेकिन किसी बच्चे तक के रोने की आवाज सुनाई नहीं देती थी।

जब वे उस गली के पास पहुचे तो कुछ गडबड दिखाई दी। एक आदमी बडी तेजी से इस किनारे वाली बिल्डिंग मे घुस गया। इस बिल्डिंग से थोडी देर के बाद तीन आदमी निकले। फुटपाथ पर उन्होने इधर उधर देखा और बडी फुर्ती से दूसरी बिल्डिंग मे चले गए। मोजेल ठिठक गई। उसने त्रिलोचन को इशारा किया कि अधेरे मे हो जाए फिर उसने धीमे से कहा 'त्रिलोचन डियर, यह पगडी उतार दो।'

त्रिलोचन ने जवाब दिया 'मै यह किसी सूरत मे भी नहीं उतार सकता।'

मोजेल झुझला गई। 'तुम्हारी मर्जी लेकिन तुम देखते नहीं सामने क्या हो रहा है?'

सामने जो कुछ हो रहा था, दोनो की आखो के सामने था—साफ गडबड हो रही थी और बडी रहस्यमय ढग की। बायें हाथ की बिल्डिंग से जब दो आदमी अपनी पीठ पर बोरिया उठाए निकले तो मोजेल सारी की सारी काप गई। उनमे से कुछ गाढी गाढी तरल चीज टपक रही थी। मोजेल अपने होठ काटने लगी। शायद वह कुछ सोच रही थी। जब वे दोनो आदमी गली के दूसरे सिरे पर पहुचकर गायब हो गए तो उसने त्रिलोचन से कहा, देखो ऐसा करो—मै भागकर नुक्कड वाली बिल्डिंग मे

जाती हूं, तुम मेरे पीछे आना बड़ी तेजी से, जैसे तुम मेरा पीछा कर रहे हो समझे ? मगर यह सब एकदम जल्दी जल्दी में हो।'

मोजेल ने त्रिलोचन के जवाब की प्रतीक्षा न की और नुक्कड़ वाली बिल्डिंग की ओर खड़ाऊं खटखटाती हुई तेजी से भागी। त्रिलोचन भी उसके पीछे दौड़ा। कुछ ही क्षणों में वे बिल्डिंग के अन्दर थे। सीढ़ियों के पास त्रिलोचन हांफ रहा था, मगर मोजेल बिलकुल ठीक ठाक थी। उसने त्रिलोचन से पूछा 'कौन सा माला ?'

त्रिलोचन ने अपने सूखे होंठ पर जीभ फेरी। 'दूसरा।'

'चलो।'

यह कहकर वह खट-खट सीढ़ियां चढ़ने लगी। त्रिलोचन उसके पीछे हो लिया। सीढ़ियों पर खून के बड़े बड़े धब्बे पड़े हुए थे। उनको देख देखकर उसका खून सूख रहा था।

दूसरे माले पर पहुंचे तो कारीडोर में कुछ दूर जाकर त्रिलोचन ने धीमे से एक दरवाजे को खटखटाया। मोजेल दूर सीढ़ियों के पास खड़ी रही।

त्रिलोचन ने एक बार फिर दरवाजा खटखटाया और उसके साथ मुंह लगाकर आवाज दी, 'महंगासिंह जी, महंगासिंह जी !'

अन्दर से बारीक सी आवाज आई, 'कौन !'

'त्रिलोचन।'

दरवाजा धीरे से खुला। त्रिलोचन ने मोजेल को इशारा किया। वह लपककर आई। दोनों अन्दर चले गए। मोजेल ने अपनी बगल में एक दुबली पतली लड़की को देखा जो बहुत ही भयभीत थी। मोजेल ने उसे एक क्षण के लिए ध्यान से देखा। पतले पतले नक्श थे। नाक बहुत ही प्यारी थी लेकिन जुकाम से ग्रस्त। मोजेल ने उसे अपने चौड़े चकले सीने से लगाया और अपने ढीले ढाले कुर्ते का पल्ला उठाकर उसकी नाक पोंछी।

त्रिलोचन लाल पड़ गया।

मोजेल ने कृपाल कौर से बड़े स्नेह से कहा 'डरो नहीं, त्रिलोचन तुम्हें लेने आया है।'

कृपाल कौर ने त्रिलोचन की ओर अपनी सहमी हुई आंखों से देखा और मोजेल से अलग हो गई।

त्रिलोचन ने उससे कहा, 'सरदार साहब से कहो कि जल्दी तैयार हो जाएं और माताजी से भी—लेकिन जल्दी करो।'

इतने में ऊपर की मंजिल से जोर जोर की आवाजें आने लगीं, जैसे कोई चीख चिल्ला रहा हो और धींगा मुश्ती हो रही हो।

कृपाल कौर के मुंह से हल्की सी चीख निकल गई। 'उसे पकड़ लिया उन्होंने!'

त्रिलोचन ने पूछा, किसे?'

कृपाल कौर उत्तर देने ही वाली थी कि मोजेल ने उसको बांह से पकड़ा और घसीटकर एक कोने में ले गई। 'पकड़ लिया तो अच्छा हुआ। तुम ये कपड़े उतार दो।'

कृपाल कौर अभी कुछ सोचने भी न पाई थी कि मोजेल ने पलक झपकने में उसकी कमीज उतारकर एक तरफ रख दी। कृपाल कौर ने अपनी बांहों में अपने नंगे शरीर को छिपा लिया तथा और भयभीत हो गई। त्रिलोचन ने मुंह दूसरी ओर फेर लिया। मोजेल ने अपना ढीला-ढाला कुर्ता उतारकर उसे पहना दिया, और स्वयं नंग धड़ंग हो गई। फिर जल्दी जल्दी उसने कृपाल कौर का नाड़ा ढीला किया और उसकी सलवार उतारकर त्रिलोचन से बोला, 'जाओ, इसे ले जाओ—लेकिन ठहरो!'

यह कहकर उसने कृपाल कौर के बाल खोल दिए और उससे कहा, 'जाओ—जल्दी निकल जाओ।

त्रिलोचन ने उससे कहा, 'आओ।' लेकिन फिर तुरंत ही रुक गया। पलटकर उसने मोजेल की ओर देखा, जो धुले हुए दीदे की तरह नंगी खड़ी थी। उसकी बांहों पर महीन महीन बाल सरदी के कारण जागे हुए थे।

तुम जाते क्यों नहीं?' मोजेल के स्वर में चिड़चिड़ापन था।

त्रिलोचन ने धीमे से कहा, 'इसके मां बाप भी तो हैं।'

'जहन्नुम में जाएं वे—तुम इसे ले जाओ।'

और तुम?'

मैं आ जाऊंगी।'

एकदम ऊपर की मजिल से कई आदमी धडाधड नीचे उतर आये और फिर दरवाजे पर आकर उन्होने उसे कूटना शुरू कर दिया, जैसे वे उसे तोड ही डालेंगे।

कृपाल कौर की अधी मा और उसका अपाहिज बाप दूसरे कमरे म पड़े कराह रहे थे।

मोजेल ने कुछ सोचा और बालो को एक हल्का सा झटका देकर त्रिलोचन से कहा, 'सुनो अब सिर्फ एक ही तरकीब मेरी समझ म आती है। मैं दरवाजा खोलती हू '

कृपाल कौर के सूखे कण्ठ से चीख निकलते निकलते रह गई, 'दरवाजा !'

मोजेल त्रिलोचन की ओर मुह किए कहती रही, 'मैं दरवाजा खोल कर बाहर निकलती हू—तुम मेरे पीछे भागना। मैं ऊपर चढ जाऊगी और तुम भी ऊपर चले आना। ये लोग जो दरवाजा तोड रहे है सब कुछ भूल जाएगे और हमारे पीछे चले आएगे।'

त्रिलोचन ने पूछा, 'फिर ?'

मोजेल ने कहा, 'यह तुम्हारी—क्या नाम है इसका—मौका पाकर निकल जाए। इस वेश म इसे कोई कुछ नही कहेगा।'

त्रिलोचन ने जल्दी जल्दी कृपाल को सारी बात समझा दी। मोजेल जोर से चिल्लाई। दरवाजा खोला और धडाम से बाहर लोगो पर जा गिरी। सब बौखला गए। उठकर वह ऊपर सीढियो की ओर लपकी। त्रिलोचन उसके पीछे भागा। सब एक ओर हट गए।

मोजेल अधाधुध सीढिया चढ रही थी—खडाऊ उसके पैरो में थी। वे लोग, जो दरवाजा तोडने की कोशिश कर रहे थे, सभलकर उनके पीछे दौडे। एकाएक मोजेल का पाव फिसल गया और ऊपर के जीने से वह कुछ इस तरह लुढकी कि हर पथरीले जीने से टकराती, लोहे के जगले से उलझती नीचे आ गिरी—पथरीले फर्श पर।

त्रिलोचन एकदम नीचे उतरा। झुककर उसने देखा तो उसके नाक से खून बह रहा था, मुह से खून बह रहा था कानो से खून निकल रहा

था। वे जो दरवाजा तोडने आए थे, इद गिद जमा हो गए। किसीने भी नही पूछा कि क्या हुआ है। सब चुप थे और मोजेल के नगे शरीर को देख रह थे, जिसपर जगह जगह खराशें पडी थी।

त्रिलोचन न उसकी बाह हिलाई और आवाज दी, मोजेल मोजेल!'

मोजेल न अपनी बडी बडी यहूदी आखें खोली, जो बीर बहूटी की तरह लाल हो रही थीं और मुस्कराई। त्रिलोचन ने अपनी पगडी उतारी और खोलकर उसका नगा शरीर ढक दिया। मोजेल फिर मुस्कराई और आख मारकर मुह से खन के बुलबुले छोडती हुई त्रिलोचन से बोली 'जाओ देखो मेरा अण्डरवीयर वहा है कि नही। मेरा मतलब है कि वह '

त्रिलोचन उसका मतलब समभ गया, लेकिन उसन उठना न चाहा। इसपर मोजेल न क्रोध से कहा, 'तुम सचमुच सिख हो जाओ, देखकर आओ।'

त्रिलोचन उठकर कृपाल कौर के फ्लैट की ओर चला गया। मोजेल ने अपनी धुधली आखो से अपने आसपास खडे लोगो की ओर देखा और कहा, 'यह मिया भाई है लकिन बहुत दादा किस्म का मैं इसे सिख कहा करती हू।'

त्रिलोचन वापस आ गया। उसने आखो ही आखो म मोजेल को बता दिया कि कृपाल कौर जा चुकी है। मोजेल ने सतोष की सास ली—लकिन ऐसा करने से बहुत-सा खून उसके मुह से बह निकला और 'डम्इट ' यह कहकर उसने अपनी रोयेंदार कलाई से अपना मुह पाछा और त्रिलोचन की ओर दखकर बोली, 'आल राइट डार्लिंग—बाई बाई।'

त्रिलोचन ने कुछ कहना चाहा, लेकिन शब्द उसके कण्ठ म ही अटक गए।

मोजेल न अपने शरीर से त्रिलोचन की पगडी हटाई। 'ले जाओ इसको, अपने इस मजहब को।' और उसकी बाह उसकी मजबूत छातियो पर निर्जीव होकर गिर पडी।

बाबू गोपीनाथ

बाबू गोपीनाथ से मेरी मुलाकात सन चालीस में हुई। उन दिनों मैं बम्बई के एक साप्ताहिक पत्र का सम्पादन किया करता था। दफ्तर में अब्दुरहीम सैण्डो एक नाटे कद के आदमी के साथ दाखिल हुआ। मैं उस वक्त लीडर लिख रहा था। सैण्डो ने अपने खास अन्दाज में ऊँची आवाज में मुझे आदाब किया और अपने साथी से परिचय कराया, 'मण्टो साहब, बाबू गोपीनाथ से मिलिए।'

मैंने उठकर उनसे हाथ मिलाया। सैण्डो ने अपनी आदत के अनुसार मेरी तारीफों के पुल बाँधने शुरू कर दिए। 'बाबू गोपीनाथ, तुम हिन्दुस्तान के नम्बर वन राइटर से हाथ मिला रहे हो। लिखता है तो धड़न-तख्ता हो जाता है लोगों का। ऐसी ऐसी कण्टीन्यूटी मिलाता है कि तबीयत साफ हो जाती है। पिछले दिनों वह क्या चुटकला लिखा था आपने, मण्टो साहब? मिस खुर्शीद ने कार खरीदी, अल्लाह बड़ा कारसाज है! क्यों बाबू गोपीनाथ? है न एण्टी की पण्टी पो?'

अब्दुरहीम सैण्डो के बातें करने का अन्दाज बिलकुल निराला था। कण्टीन्यूटी, धड़न तख्ता और एण्टी की पण्टी पो ऐसे शब्द उसकी अपनी उपज थे जिनको वह अपनी बातचीत में बड़ी बेतकल्लुफी के साथ इस्तेमाल करता था। मेरा परिचय कराने के बाद वह बाबू गोपीनाथ की ओर मुड़ा, जो बहुत प्रभावित नजर आ रहा था। 'आप हैं बाबू गोपीनाथ, बड़े खानाखराब। लाहौर से झख मारते मारते बम्बई तशरीफ लाए हैं। साथ कश्मीर की एक कबूतरी है।'

बाबू गोपीनाथ मुस्कराया।

अब्दुरहीम सैण्डो ने इतने परिचय को नाकाफी समझकर कहा, 'नम्बर वन का बेवकूफ अगर कोई हो सकता है तो वह आप हैं। लोग इन्हें मस्का लगाकर रुपया बटोरते हैं। मैं सिर्फ बातें करके इनसे हर रोज पोलसन बटर के दो पैकेट वसूल करता हूँ। बस, मण्टो साहब, यह समझ लीजिए

कि बडे ऐंटी फिलोजिस्टीन किस्म के आदमी है। आप आज शामको इनके फ्लैट पर जरूर तशरीफ लाइए।'

बाबू गोपीनाथ, जो खुदा मालूम क्या सोच रहा था, चौंककर बोला, 'हा हा, जरूर तशरीफ लाइए मण्टो साहब।' फिर सैण्डो स बोला, 'क्या सैण्डो क्या आप कुछ उसका शगल करते ह ?'

अ दुरहीम सैण्डो न जार से कहकहा लगाया। 'अजी हर किस्म का शगल करत है। तो मण्टो साहब आज शाम का जरूर आइएगा। मैने भी पीनी शुरु कर दी है इसलिए कि मुफ्त मिलती है।'

सैण्डो ने मुझे फ्लैट का पता लिखा दिया, जहा मैं अपने वादे के मुताबिक शाम को छ बजे के करीब पहुच गया। तीन कमरो का साफ-सुथरा फ्लैट था, जिसमे बिलकुल नया फर्नीचर सजा हुआ था। सैण्डो और बाबू गोपीनाथ के अलावा बैठक मे दो मद और दो औरतें मौजूद थी जिनस सैण्डो ने मुझे मिलाया।

एक था गफ्फार साइ, तहमद पहन पजाब का ठेठ साईं। गले मे मोटे-मोटे दानो की माला। सैण्डो ने उसके बारे मे कहा, 'आप बाबू गोपीनाथ के लीगल एडवाइजर है, मेरा मतलब समझ जाइए आप। हर आदमी जिसकी नाक बहती हो, जिसके मुह से राल टपकती हो, पजाब मे खदा को पहुचा हुआ फकीर बन जाता है। ये भी बस पहुचे हुए है या पहुचने वाले है। लाहौर से बाबू गापीनाथ के साथ आए हैं क्योकि इन्ह वहा कोई और बेवकूफ मिलन की उम्मीद नही थी। यहा आप बाबू साहब से क्रैवन ए के सिगरेट और स्काच ह्विस्की के पेग पीकर दुआ करते रहते हैं कि अजाम नक हो।

गफ्फार साइ यह सुनकर मुस्कराता रहा।

दूसर मद का नाम था गुलाम अली। लम्बा-तडगा जवान, कसरती बदन, मुह पर चेचक के दाग। उसके बार मे सैण्डो ने कहा, यह मेरा शागिद है। अपने उस्ताद के नक्शे कदम (पदचिह्ना) पर चल रहा है। लाहौर की एक नामी रण्डी की कुआरी लडकी इसपर आशिक हो गई थी। बडी-बडी कण्टी यूटनिया मिलाई गई इसका फासने के लिए, मगर इसने कहा, 'डू आर डाई। मैं लगोट का पक्का रहूगा।' एक तकिये म

पीते हुए बाबू गोपीनाथ से मुलाकात हो गई। बस, उस दिन से इनके साथ चिपटा हुआ है। हर रोज क्रेवन ए का डिब्बा और खाना पीना मुकर्रर है।'

यह सुनकर गुलाम अली भी मुस्कराता रहा।

गोल चेहरे वाली एक सुर्ख सफेद स्वस्थ औरत थी। कमरे में दाखिल होते ही मैं समझ गया था कि यह वही कश्मीर की कबूतरी है जिसके बारे में सैण्डो ने दफ्तर में जिक्र किया था। बहुत साफ सुथरी औरत थी। बाल छोटे थे। ऐसा लगता था कटे हुए है मगर असल में ऐसा नहीं था। आँखें शफ्फाफ और चमकीली थीं। चेहरे-मोहरे से प्रकट होता था कि बड़ी अल्हड़ और नातजुर्बेकार है। सैण्डो ने उससे मिलाते हुए कहा, 'जीनत बेगम। बाबू साहब इसे प्यार से जेनो कहते हैं। एक बड़ी खुर्राट नायिका, कश्मीर से यह सेब तोड़कर लाहौर ले आई। बाबू गोपीनाथ को अपनी सी० आई० डी० से पता चला और एक रात ले उड़े। मुकदमेबाजी हुई करीब दो महीने तक पुलिस ऐश करती रही आखिर बाबू साहब ने मुकदमा जीत लिया और इसे यहां ले आए—धड़न तख्ता।"

अब गहरे सांवले रंग की औरत बाकी रह गई थी जो खामोश बैठी सिगरेट पी रही थी। आँखें सुर्ख थीं, जिनसे काफी बेहयाई टपक रही थी। बाबू गोपीनाथ ने उसकी तरफ इशारा किया और सैण्डो से कहा इसके बारे में भी कुछ हो जाए।'

सैण्डो ने उस औरत की रान पर हाथ मारा और कहा, जनाब! यह है टीन पट्टी फिल फिल फूटी, मिसेज अब्दुर्रहीम सैण्डो उर्फ सरदार बेगम। आप भी लाहौर की पैदावार है। सन छत्तीस में मुझसे इश्क हुआ दो बरस में ही मेरा धड़न-तख्ता करके रख दिया। मैं लाहौर छोड़कर भागा। बाबू गोपीनाथ ने इसे यहां बुलवा लिया ताकि मेरा दिल लगा रहे। इसको भी एक डिब्बा क्रेवन ए का राशन मिलता है। हर रोज शाम को ढाई रुपये का मारफिया का इंजेक्शन लेती है। रंग काला है मगर वैसे बड़ी टिट फार टैट किस्म की औरत है।'

सरदार ने एक अदा से सिर्फ इतना कहा, 'बकवास न कर।' इस अदा में पेशेवर औरतों की बनावट थी।

सबम मिलाने के बाद सैण्डो ने आदत के अनुसार मेरी तारीफ़ों के पुल बाँधने शुरू कर दिए। मैंने कहा, 'छोटो यार, आओ कुछ और बातें करें।

सैण्डो चिल्लाया 'ब्वाय, ह्विस्की एण्ड सोडा। बाबू गोपीनाथ, लगाओ हवा एक रुपये को।'

बाबू गोपीनाथ ने जेब में हाथ डालकर सौ सौ के नोटों का एक पुलिंदा निकाला और एक नोट सैण्डो के हवाले कर दिया। सैण्डो ने नोट लेकर उसकी तरफ़ गौर से देखा और खड़खड़ाकर कहा, 'ओ गॉड ओ मेरे रब्बुल आलमीन! वह दिन कब आएगा जब मैं भी या नोट निकाला करूँगा। जाओ भई गुलाम अली, दो बोतलें जानीवाकर स्ट्रिल गोइंग स्ट्राँग ले आओ।

बोतलें आईं तो सबने पीनी शुरू की। यह शगल दो-तीन घण्टे तक जारी रहा। इस दौरान सबसे ज्यादा बातें हस्बे मामूल अब्दुर्रहीम सैण्डो ने की। पहला गिलास एक ही साँस में खत्म करके वह चिल्लाया, धड़न तख्ता, मण्टो साहब ह्विस्की हो तो ऐसी! गले से उतरकर पेट में इन्कलाब जिन्दाबाद' लिखती चली गई। जियो बाबू गोपीनाथ जियो!'

बाबू गोपीनाथ बेचारा खामोश रहा। कभी कभी वह सैण्डो की हाँ में हाँ मिला देता था। मैंने सोचा इस व्यक्ति की अपनी कोई राय नहीं। दूसरा जो भी कह दे मान लेता है। उसके अंधविश्वास का सबूत गफ्फार साइं मौजूद था। उसे वह, बकौल मण्टो, अपना लीगल एडवाइजर बनाकर लाया था। सैण्डो का इससे दरअसल यह मतलब था कि बाबू गोपीनाथ को उससे श्रद्धा थी। यों भी मुझे बातचीत के दौरान मालूम हुआ कि लाहौर में उसका वक्त फ़कीरों और दरवेशों की सोहबत में कटता था। एक चीज मैंने खास तौर पर नोट की कि वह कुछ खोया-खोया सा था, जैसे कुछ सोच रहा हो। अतएव मैंने उससे एक बार कहा 'बाबू गोपीनाथ, क्या सोच रहे हैं आप?'

वह चौंक पड़ा। 'जी, मैं? मैं कुछ नहीं।' यह कहकर वह मुस्कराया और जीनत की तरफ़ एक आशिकाना निगाह डाली। इन हसीनों के बारे में सोच रहा हूँ। और हमें क्या सोच होगी।'

सैण्डो न कहा यह बड़े खानाखराब है मण्टो साहब बड़े खाना-खराब। लाहौर की कोई एसी तवायफ नही जिसके साथ बाबू साहब की कण्टी यूटनी न रह चुकी हो '

बाबू गोपीनाथ न यह सुनकर बड़ी भाडी विनम्रता के साथ कहा 'अब कमर म वह दम नहीं रहा मण्टा साहब।

इसके बाद वाहियात सी बातचीत शुरू हो गई। लाहौर की सब रण्डिया के घरान गिने गए—कौन डेरेदार थी, कौन नटनी थी कौन किसकी नोची थी। नथनी उतारे पर बाबू गोपीनाथ न क्या दिया था वगर वगरा। यह बातचीत सरदार, सण्डो गफ्फार साइ और गुलाम अली के बीच होती रही—ठेठ लाहौर के कोठा की भाषा म। मतलब ता मैं समझता रहा मगर कुछ मुहावरे मेरी समझ म न आए।

जीनत बिलकुल खामोश बठी रही। कभी कभी किसी बात पर मुस्करा देती। मुझे एसा महसूस हुआ कि उस इस बातचीत से कोई दिलचस्पी नही थी। हल्की व्हिस्की का एक गिलास भी उसने पिया बगैर किसी दिलचस्पी के। सिगरट भी पीती थी तो मालूम होता था, उस तम्बाकू और उसके धुएँ म कोई रुचि नहीं है। लकिन मजे की बात यह ह कि सबसे ज्यादा सिगरेट उसीने पिए। बाबू गोपीनाथ स उस मुहब्बत थी, इसका पता मुझे किसी बात स न मिला। इतना जाहिर था बाबू गोपीनाथ का उसका काफी खयाल था, क्योंकि जीनत के आराम के लिए हर सामान मौजूद था। लेकिन एक बात मुझे महसूस हुई कि इन दोना मे कुछ अजीब सा खिचाव था। मरा मतलब है कि वे दोना एक दूसरे स कुछ करीब होन के बजाय कुछ हटे हुए स मालूम होत थ।

आठ बज के करीब सरदार डाक्टर मजीद के यहा चली गई क्योंकि उस मारफिया का इजेक्शन लेना था। गफ्फार साइ तीन पग पीन क बाद अपनी तस्बीह (माला) उठाकर कालीन पर सा गया। गुलाम अली का होटल स खाना लेन का भेज दिया गया। सण्डा न अपनी दिलचस्प बक-बास जब कुछ समय के लिए बन्द की ता बाबू गोपीनाथ ने, जा अब नश म था जीनत की तरफ वही आशिकाना निगाह डालकर कहा, मण्टो साहब, मेरी जीनत क बारे म आपका क्या खयाल है ?

मैंने सोचा, क्या कहूं। जीनत की तरफ देखा तो वह झेंप गई। मैंने ऐसे ही कह दिया 'बड़ा नेक खयाल है।' बाबू गोपीनाथ खुश हो गया। 'मण्टो साहब, है भी बड़ी नेक। खुदा की कसम न जेवर का शौक है, न किसी और चीज का। मैंने कई बार कहा जान मन, मकान बनवा दूं?' जवाब क्या दिया, मालूम है आपको?—क्या करूंगी मकान लेकर, मेरा और कौन है? मण्टो साहब मोटर कितने में आ जाएगी?'

मैंने कहा मुझे मालूम नहीं।

बाबू गोपीनाथ ने आश्चर्य से कहा क्या बात करते हैं मण्टो साहब! आपको और कारों की कीमत मालूम न हो! कल चलिए मेरे साथ, जेनो के लिए एक मोटर लेंगे। मैंने अब देखा है कि बम्बई में मोटर होनी ही चाहिए।'

जीनत के चेहरे पर कोई प्रतिक्रिया नहीं हुई।

बाबू गोपीनाथ का नशा थोड़ी देर के बाद बहुत तेज हो गया। बहुत ज्यादा जज्बाती होकर उसने मुझसे कहा, 'मण्टो साहब, आप बड़े लायक आदमी हैं। मैं तो बिल्कुल गधा हूं। आप मुझे बताइए, मैं आपकी क्या खिदमत कर सकता हूं? कल बातों-बातों में सण्डो ने आपका जिक्र किया। मैंने उसी वक्त टैक्सी मंगवाई और उससे कहा मुझे ले चलो मण्टो साहब के पास। मुझसे कोई गुस्ताखी हो गई हो तो माफ कर दीजिएगा। बहुत गुनहगार आदमी हूं। ह्विस्की मंगवाऊं आपके लिए और?'

मैंने कहा नहीं-नहीं, बहुत पी चुके हैं।' वह और ज्यादा जज्बाती हो गया और पीजिए मण्टो साहब! यह कहकर जेब से सौ सौ के नोटों का पुलिंदा निकाला और एक और नोट अलग करने लगा लेकिन मैंने सब नोट उसके हाथ से ले लिए और वापस उसकी जेब में ठूंस दिए। 'सौ रुपये का एक नोट आपने गुलाम अली को दिया था, उसका क्या हुआ?'

मुझे दरअसल कुछ हमदर्दी सी हो गई थी बाबू गोपीनाथ से। कितने आदमी उस गरीब के साथ जोंक की तरह चिमटे हुए थे। मेरा ख्याल था कि बाबू गोपीनाथ बिल्कुल गधा है लेकिन वह मेरा इशारा समझ गया और मुस्कराकर कहने लगा, 'मण्टो साहब उस नोट में जो कुछ बाकी बचा, वह या तो गुलाम अली की जेब में से गिर पड़ेगा, या '

बाबू गोपीनाथ ने अभी वाक्य पूरा भी नहीं किया था कि गुलाम अली ने कमरे में दाखिल होकर बड़े दुःख से यह खबर दी कि होटल में किसी हरामजादे ने उसकी जेब में से सारे रुपये निकाल लिए। बाबू गोपीनाथ मेरी तरफ देखकर मुस्कराया और फिर सौ रुपये का एक नोट जेब से निकाला और गुलाम अली को देकर कहा 'जल्दी खाना ले आओ।'

पांच छः मुलाकातों के बाद मुझे बाबू गोपीनाथ के सही व्यक्तित्व का ज्ञान हुआ। पूरी तरह तो खैर इंसान किसीको भी नहीं जान सकता, लेकिन मुझे उसके बहुत से हालात मालूम हो गए, जो बेहद दिलचस्प थे। पहले तो मैं यह कहना चाहता हूं कि मेरा यह खयाल कि वह पहले दर्जे का चुगद है गलत साबित हुआ। उसको इस बात का पूरा एहसास था कि सण्डो, गफ्फार साईं, गुलाम अली और सरदार वगैरा जो उसके मुसाहिब और यार बने हुए थे मतलबी इंसान हैं। वह उनसे झिड़कियां, गालियां सब सुनता था, लेकिन गुस्सा प्रकट नहीं करता था। उसने मुझसे कहा मण्टो साहब, मैंने आज तक किसीकी सलाह रद्द नहीं की। जब भी कोई मुझे सलाह देता है मैं कहता हूं सुब्हान अल्लाह! वे मुझे बेवकूफ समझते हैं लेकिन मैं उन्हें अक्लमन्द समझता हूं, इसलिए कि उनमें कम से कम इतनी अक्ल तो है जो मुझमें ऐसी बेवकूफी का निशारा कर लिया, जिससे उनका उल्लू सीधा हो सकता है। बात दरअसल यह है कि मैं शुरू से फकीरों और कंजरों की सोहबत में रहा हूं। मुझे उनसे कुछ मुहब्बत-सी हो गई है। मैं उनके बगैर नहीं रह सकता। मैंने सोच रखा है, जब मेरी दौलत खत्म हो जाएगी तो किसी तकिये में जा बैठूंगा। रण्डी का कोठा और पीर का मजार बस, ये दो जगहें ऐसी हैं जहां मेरे दिल को सुकून मिलता है। रण्डी का कोठा तो छूट जाएगा, इसलिए कि जेब खाली होने वाली है, लेकिन हिन्दुस्तान में हजारों पीर हैं किसी एक के मजार पर चला जाऊंगा।

मैंने उससे पूछा रण्डी के कोठे और तकिये आपको क्यों पसन्द हैं?

कुछ देर सोचकर उसने जवाब दिया, इसलिए कि इन दोनों जगहों पर फर्श से लेकर छत तक धोखा ही धोखा होता है। जो आदमी खुद

को धोखा देना चाहता है, उसके लिए इनसे अच्छी जगह और क्या हो सकती है?'

मैंने एक और सवाल किया 'आपको तवायफों का गाना सुनने का शौक है। क्या आप संगीत की समझ रखते हैं?'

उसने जवाब दिया, 'बिल्कुल नहीं और यह अच्छा ही है क्योंकि मैं कनसुरी से कनसुरी तवायफ के यहां जाकर भी अपना सर हिला सकता हूं। मण्टो साहब, मुझे गाने में कोई दिलचस्पी नहीं, लेकिन जेब में से दस या सौ रुपये का नोट निकालकर गाने वाली को दिखाने में बहुत मजा आता है। नोट निकाला और उसको दिखाया वह उसे लेने के लिए एक अदा से उठी, पास आई तो नोट जुराब में उड़स लिया। उसने झुककर उसे बाहर निकाला तो हम खुश हो गए। ऐसी बहुत सी फिजूल फिजूल-सी बातें हैं जो हम एसे तमाशबीनों को पसन्द हैं, वरना कौन नहीं जानता कि रण्डी के कोठे पर मां बाप अपनी औलाद से पेशा कराते हैं और मक-बरों तथा तकियों में आदमी अपने खुदा से।

बाबू गोपीनाथ का शजरा या वंशावली तो मैं नहीं जानता, लेकिन इतना मालूम हुआ कि वह एक बहुत बड़े कंजूस बनिये का बेटा है। बाप के मरने पर उसे दस लाख रुपये की जायदाद मिली जो उसने अपनी इच्छानुसार उड़ाना शुरू कर दी। बम्बई आते वक्त वह अपने साथ पचास हजार रुपये लाया था। उस जमाने में सब चीजें सस्ती थीं, लेकिन फिर भी हर रोज सौ सवा सौ रुपये खर्च हो जाते थे।

जेनो के लिए उसने फिएट कार खरीदी। याद नहीं रहा, लेकिन शायद तीन हजार में आई थी। एक ड्राइवर रखा, लेकिन वह भी लफंगे टाइप का। बाबू गोपीनाथ को कुछ ऐसे ही आदमी पसन्द थे। हमारी मुलाकातों का सिलसिला बढ़ गया। बाबू गोपीनाथ से मुझे तो सिर्फ दिलचस्पी थी लेकिन उसे मुझमें श्रद्धा सी हो गई थी। यही कारण था कि दूसरों के मुकाबले में वह मेरा बहुत ज्यादा आदर करता था।

एक रोज शाम के करीब जब मैं फ्लैट पर गया तो मुझे वहां शफीक को देखकर बड़ी हैरानी हुई। अगर मैं मुहम्मद शफीक तूसी कहूं तो लोग समझ लेंगे कि मेरा मतलब किस आदमी से है। यों तो शफीक काफी

मशहूर आदमी है—कुछ अपनी सबसे अलग गायकी के कारण और कुछ अपनी चुटकलेबाज तबीयत की बदौलत। लेकिन उसकी जिन्दगी का एक हिस्सा अधिकतर लोगों को मालूम नहीं है। बहुत कम लोग जानते हैं कि तीन सगी बहनों को एक के बाद एक तीन-तीन, चार चार साल के वक्फे के बाद रखैल बनाने से पहले उसका सम्बन्ध उनकी मां से भी था। यह भी बहुत कम लोगों को मालूम है कि उसकी अपनी पहली बीवी जो शादी के थोड़े अरसे बाद ही मर गई थी, इसलिए पसन्द थी कि उसमें तवायफों के से नाज-नखरे नहीं थे। लेकिन यह तो खैर हर आदमी जो शफीक तूसी से थोड़ी बहुत वाकफियत रखता है, जानता है कि चालीस बरस की उम्र में यह उस जमाने की उम्र है सैकड़ों तवायफों ने उसे रखा। अच्छे से अच्छा कपड़ा पहना, उमदा से उमदा खाना खाया नफीस से नफीस मोटर रखी लेकिन अपने गिरह से कभी किसी तवायफ पर एक दमड़ी खर्च नहीं की।

औरतों के लिए खास तौर पर जो पेशेवर हों, उसकी चुटकुलेबाज तबीयत में जिसमें मीरासियों जैसे मजाक की झलक थी, बड़ा आकर्षण था। वह कोशिश किए बगैर उन्हें अपनी तरफ खींच लेता था।

मैंने जब उसे हंस हंसकर जीनत से बातें करते देखा तो मुझे इस-लिए हैरानी न हुई क्योंकि मैं जानता था कि वह ऐसा क्यों कर रहा है मैंने सिर्फ यह सोचा कि वह अचानक यहां पहुंच कैसे गया। एक सैण्डो उसे जानता था, मगर उनकी बोलचाल तो इससे एक जमाने से बन्द थी। लेकिन बाद में मुझे मालूम हुआ कि सैण्डो ही उसे वहां लाया था। उन दोनों में सुलह सफाई हो गई थी।

बाबू गोपीनाथ एक तरफ बैठा हुक्का पी रहा था। मैंने शायद इससे पहले जिक्र नहीं किया कि वह सिगरेट बिलकुल नहीं पीता था। मुहम्मद शफीक तूसी मीरासियों के लतीफे सुना रहा था जिसमें जीनत कुछ कम और सरदार बहुत ज्यादा दिलचस्पी ले रही थी। शफीक ने मुझे देखा और कहा 'ओह बिस्मिल्लाह बिस्मिल्लाह! क्या आपका गुजर भी इस वादी में होता है?'

सैण्डो ने कहा 'तशरीफ लाइए इजराइल (यमदूत) साहब यहां

घडन-तख्ना।'

मैं उसका मतलब समझ गया।

थोडी देर गप्पबाजी होती रही। मैंने नोट किया कि जीनत और मुहम्मद शफीक तूसी की निगाह् आपस मे टकराकर कुछ और भी कह रही हैं। जीनत इस कला मे बिलकुल कोरी थी, लेकिन शफीक की निपुणता जीनत की कमियो को छिपाती रही। सरदार दोनो की निगाहबाजी को कुछ इस अन्दाज मे देख रहे थी, जैसे खलीफे अखाडे के बाहर बठकर अपने पट्ठो के दाव पच देखते हैं।

इस दौरान मे मैं भी जीनत से काफी बेतकल्लुफ हो गया था। वह मुझे भाई कहती थी, जिसपर मुझे एतराज नही था। अच्छी मिलनसार तबीयत की औरत थी—कम बोलने वाली सीधी सादी, साफ सुथरी।

शफीक से उसकी निगाहबाजी मुझे पसद नही आई। एक तो उसमे भोडापन था, इसके अलावा कुछ यो कहिए कि इस बात का भी उसमे दखल था कि वह मुझे भाई कहती थी। शफीक और सैण्डो उठकर बाहर गए तो मैंने शायद बडी निदयता से उससे डाट डपट की जिससे उसकी आखो मे मोटे मोटे आसू आ गए और वह रोती हुई दूसरे कमरे मे चली गई। बाबू गोपीनाथ भी, जो एक कोने मे बैठा हुआ हुक्का पी रहा था, उठकर तजी से उसके पीछे चला गया। सरदार ने आखो ही आखो मे उससे कुछ कहा, लेकिन मैं उसका मतलब न समझा। थोडी देर बाद बाबू गोपीनाथ कमरे से बाहर निकला और 'आइए मण्टो साहब' कहकर मुझे अपने साथ अन्दर ले गया।

जीनत पलग पर बठी थी। मैं अन्दर दाखिल हुआ तो वह दोनो हाथो से मुह ढापकर लेट गई। मैं और बाबू गोपीनाथ दोनो पलग के पास कुर्सियो पर बैठ गए। बाबू गोपीनाथ ने बडी गभीरता से कहना शुरू किया, 'मण्टो साहब, मुझे इस औरत से बहुत मुहब्बत है। दो बरस से यह मेरे पास है, मैं हजरत गौस आजम जीलानी की कसम खाकर कहता हू कि इसने मुझे कभी शिकायत का मौका नहीं दिया। इसकी दूसरी बहनें, मेरा मतलब है, इस पेशे की दूसरी औरतें दोनो हाथो से मुझे लूटकर खाती रही, मगर इसने कभी एक पैसा ज्यादा मुझसे नही लिया। मैं

अगर किसी दूसरी औरत के यहा हफ्ता पडा रहा तो इस गरीब ने अपना काई जेवर गिरवी रखकर गुजारा किया। मैं जैसाकि आपस एक बार कह चुका हू बहुत जल्द इस दुनिया स किनाराकश होन वाला हू, मरी दौलत अब कुछ दिना की महमान है। मै नही चाहता कि इसकी जिन्दगी खराब हो। मैंन लाहौर म इसको बहुत समझाया कि तुम दूसरी तवायफो की तरफ देखो। जो कुछ व करती है सीखा। मैं आज दौलतमन्द हू कल मुझ भिखारी होना है। तुम लागो की जिन्दगी म सिफ एक दौलतमन्द काफी नहा। मरे बाद तुम किसी और को नही फासोगी तो काम नही चलगा। लेकिन मण्टो साहब इसन मरी एक न सुनी। सारा दिन शरीफजादिया की तरह घर म बठी रहती। मैंन गफ्फार साइ स मशवरा किया। उसने कहा 'बम्बइ ल जाओ। इसे मालूम था कि उसने ऐसा क्यो कहा। बम्बई म उसकी दो जानन वाली तवायफे एक्ट्रेसें बनी हुई हैं। मैंन भी सोचा बम्बई ठीक है। दो महीन हो गए है इसे यहा लाए हुए। सरदार को लाहौर स बुलाया है कि इसको सब गुर सिखाए। गफ्फर साइ स भी यह बहुत कुछ सीख सकती है। यहा मुझ कोई नही जानता। इसको यह खयाल था कि इसस मरी बइज्जती होगी। मैंन कहा तुम छोडो इसको। बम्बई बहुत बडा शहर है। लाखो रईस ह। मैंने तुम्ह मोटर ले दी है काई अच्छा आदमी तलाश कर लो। मण्टो साहब मैं खुदा की कसम खाकर कहता हू मरी यह दिली ख्वाहिश है कि यह अपने पैरो पर खडी हो। अच्छी तरह होशियार हो जाए। मै इसक नाम आज ही बक म दस हजार रुपया जमा करन को तयार हू मगर मुझ मालूम है दस दिन के अन्दर अन्दर यह बाहर बठी होगी और सरदार एक एक पाई अपनी जब म डाल लगी। आप भी इस समझाइए कि चालाक बनन की कोशिश कर। जब स मोटर खरीदी है सरदार इस हर रोज शाम को अपोलो बन्दर ल जाती है, लकिन अभी तक कामयाबी नही हुइ। सण्डो आज बडी मुश्किलो स मुहम्मद शरीफ को यहा लाया। आपका क्या खयाल है उसके बारे म? मैंन अपना खयाल जाहिर करना उचित न समझा लकिन बाबू गोपीनाथ न स्वय ही कहा अच्छा खाता पीता आदमी मालूम होता है। क्यो जेना जानी पसन्द है तुम्ह?

जेनो सामोश रही।

बाबू गोपीनाथ से जब मुझे जीनत को बम्बई लाने का कारण और उद्देश्य मालूम हुआ तो मेरा दिमाग चकरा गया। मुझे यकीन न आया कि ऐसा भी हो सकता है, लेकिन बाद में अपनी आंखों देखे हाल ने मेरी हैरत दूर कर दी। बाबू गोपीनाथ की दिली तमन्ना थी कि जीनत बम्बई में किसी अच्छे मालदार आदमी की रखैल बन जाए या ऐसे तरीके सीख जाए, जिनसे वह विभिन्न व्यक्तियों से रुपया प्राप्त करते रहने में सफल हो सके।

जीनत से अगर सिर्फ छुटकारा ही हासिल करना होता तो यह कोई मुश्किल चीज नहीं थी। बाबू गोपीनाथ एक ही दिन में ऐसा कर सकता था। चूंकि उसकी नीयत नेक थी इसलिए उसने जीनत की जिंदगी बनाने के लिए हर सम्भव प्रयत्न किया। उसको एक्ट्रेस बनाने के लिए उसने कई जाली डायरेक्टरों की दावतें कीं, घर में टेलीफोन लगवा दिया, लेकिन ऊंट किसी करवट न बैठा।

मुहम्मद शफीक तूसी लगभग डेढ़ महीने तक आता रहा। कई रातें भी उसने जीनत के साथ गुजारीं, लेकिन वह ऐसा आदमी नहीं था, जो किसी औरत का सहारा बन सके। बाबू गोपीनाथ ने एक रोज अफसोस और रंज के साथ कहा, 'शफीक साहब तो खालीखुली जंटलमैन ही निकले। ठस्सा देखिए, लेकिन बेचारी जीनत से चार चादरें छः तकिये के गिलाफ और दो सौ रुपये नकद हथियाकर ले गए। सुना है, आजकल एक लड़की अलमास से इश्क लड़ा रहे हैं।'

यह सही था। अलमास नजीर जान पटियाले वाली की सबसे छोटी और आखिरी लड़की थी। इससे पहले तीन बहनें शफीक की रखैल रह चुकी थीं। दो सौ रुपये जो उसने जीनत से लिए थे, मुझे मालूम है अलमास पर खर्च हुए थे। बहनों के साथ लड़-झगड़कर अलमास ने जहर खा लिया था।

मुहम्मद शफीक तूसी ने जब आना जाना बंद कर दिया तो जीनत ने कई बार मुझे टेलीफोन किया और कहा कि उसे ढूंढकर मेरे पास लाइए। मैंने उसे तलाश किया, लेकिन किसीको भी उसका पता नहीं था

कि वह कहा रहता है। एक दिन अचानक रेडियो स्टेशन पर मुलाकात हो गई। सरन परगानी की हालत म था। जब मैंने उमस कहा कि तुम्हे जीनत बुलाती है तो उसन जवाब दिया— मुझे यह पैगाम और जरिय स भी मिल चुका है। अफसोस है आजकल मुझ बिलकुल फुमत नही। जीनत बहुत अच्छी औरत है लकिन अफसास है कि वह बटन शरीफ है। एसी औरता स जो बीविया जमी लगें मुझ काई दिलचस्पी नहा।

शफीक म जब निराशा हुई ता जीनत न सरदार क साथ फिर अपालो बन्दर जाना शुरू किया। पन्द्रह दिना म बडी मुश्किल स कई गैलन पट्रोल फूकने क बाद सरदार न दो आदमी फास उनस जीनत को चार सौ रुपय मिले। बाबू गोपीनाथ न समझा कि हालात अच्छे है क्याकि उनम स एक न जो रेशमी कपडा की मिल का मालिक था जीनत स कहा कि मैं तुमस शादी करूगा। एक महीना गुजर गया लकिन वह आदमी फिर जीनत के पास न आया।

एक रोज मैं जाने किस काम स हानबी रोड पर जा रहा था कि मुझे फुटपाथ के पास जीनत की मोटर खडी नजर आई। पिछली सीट पर मुहम्मद यासीन बैठा था नगीना होटल का मालिक। मैंने उससे पूछा यह मोटर तुमने कहा स ली?

यासीन मुस्कराया, तुम जानते हो मोटर वाली को?

मैंने कहा 'जानता हू।

तो बस समझ लो कि मेरे पास कसे आई। अच्छी लडकी है यार। यासीन न मुझ आख मारी। मैं मुस्करा दिया। उसक चौथ राज बाबू गोपीनाथ टैक्सी पर मेर दफ्तर म आया। उसस मुझ मालूम हुआ कि जीनत म यासीन की मुलाकात कस हुई। एक शाम का अपालो बन्दर म एक आदमी लेकर सरदार और जीनत नगीना होटल गई। वह आदमी तो किसी बात पर झगडकर चला गया लकिन होटल क मालिक स जीनत की दोस्ती हो गई।

बाबू गोपीनाथ सतुष्ट था क्याकि दस-पन्द्रह रोज की दोस्ती क दौरान यासीन ने जीनत का छ बहुत ही उम्दा और कीमती साडिया ले दी थी। बाबू गोपीनाथ अब यह सोच रहा था कि कुछ दिन और गुजर

जाए, जीनत और यासीन की दोस्ती और मजबूत हो जाए तो लाहौर वापस चला जाए मगर ऐसा न हुआ। नगीना होटल में एक क्रिश्चियन औरत ने एक कमरा किराये पर लिया, उसकी जवान लडकी से यासीन की आँख लड़ गई चुनांचे जीनत बेचारी होटल में बैठी रही और यासीन उसकी मोटर में सुबह शाम उस लडकी को घुमाता रहता। बाबू गोपीनाथ को इसका पता चला तो बड़ा दुख हुआ। उसने मुझसे कहा 'मण्टो साहब! ये कैसे लोग हैं! भई, दिल उचाट हो गया है तो साफ कह दो। लेकिन जीनत भी अजीब है। अच्छी तरह मालूम है कि क्या हो रहा है, मगर मुँह से इतना भी नहीं कहती—मियाँ, अगर तुम्हें उस क्रिश्चियन छोकरी से इश्क लड़ाना है तो अपनी मोटर का बन्दोबस्त करो, मेरी मोटर क्या इस्तेमाल करते हो? मैं क्या करूँ मण्टो साहब! बड़ी शरीफ और नेक औरत है। कुछ समझ में नहीं आता। थोड़ी-सी चालाक तो बनना ही चाहिए।'

यासीन से सम्बन्ध समाप्त होने के बाद जीनत ने कोई सदमा महसूस न किया।

बहुत दिनों तक कोई और नई बात न हुई।

एक दिन टेलीफोन किया तो मालूम हुआ कि गोपीनाथ गुलाम अली और गफ्फार साईं के साथ लाहौर चला गया है, रुपये का बन्दोबस्त करने क्योंकि पचास हजार खत्म हो चुके थे। जाते वक्त वह जीनत से कह गया था कि उसे लाहौर में ज्यादा दिन लगेंगे, क्योंकि उसे कुछ मकान बेचने पड़ेंगे।

सरदार को मारफिया के टीकों की जरूरत थी, सैण्डो को पैसों की। दोनों ने मिलकर कोशिश की। हर रोज दो-तीन आदमी फाँसकर ले आते। जीनत से कहा गया कि बाबू गोपीनाथ वापस नहीं आएगा, इसलिए उसे अपनी फिक्र करनी चाहिए। सौ सवा सौ रुपये रोज के हो जाते, जिनमें से आधे जीनत को मिलते, बाकी सैण्डो और सरदार दबा लेते।

मैंने एक दिन जीनत से कहा, 'यह तुम क्या कर रही हो?' उसने बड़े अल्हड़पन से कहा, 'मुझे कुछ नहीं मालूम भाईजान! ये लोग जो कुछ

कहते हैं, मान लेती हूँ।' जी चाहा, पास बैठकर दर तक समझाऊँ कि जो कुछ तुम पर रही हो ठीक नहीं है। सण्डो और सरदार अपना उल्लू सीधा करने के लिए तुम्हें बच भी डालेंगे, मगर मैंने कुछ न कहा। जीनत उकता दने की हद तक बसमझ नउमग और बजान औरत थी। उसे कमबख्त को अपनी जिन्दगी की कुछ कद्र-कीमत मालूम ही नहीं थी। जिस्म बेचती मगर उसमें बेचने वाला का कोई अन्दाज तो होता ! मुझे बहुत कोफ्त होती थी उस देखकर। सिगरेट से, शराब से, खाने से, घर से, टेलीफोन से, यहाँ तक कि उस सोफे से भी जिसपर वह अक्सर लेटी रहती थी उसे कोई दिलचस्पी नहीं थी।

बाबू गोपीनाथ पूरे एक महीने बाद लौटा। माहिम गया तो वहाँ फ्लैट में कोई और ही था। सैण्डो और सरदार के मशविरे से जीनत ने बांदरा में एक बंगले का ऊपरी हिस्सा किराये पर ले लिया था। बाबू गोपीनाथ मेरे पास आया तो मैंने उसे पूरा पता बता दिया। उसने मुझसे जीनत के बारे में पूछा। जो कुछ मुझे मालूम था, मैंने कह दिया लेकिन यह न कहा कि सैण्डो और सरदार उससे पेशा करा रहे हैं।

बाबू गोपीनाथ इस बार दस हजार रुपये अपने साथ लाया था जो उसने बड़ी मुश्किलों से हासिल किए थे। गुलाम अली और गफ्फार साईं को वह लाहौर ही छोड़ आया था। टैक्सी नीचे खड़ी थी। बाबू गोपीनाथ ने अनुरोध किया कि मैं भी उसके साथ चलूँ।

लगभग एक घण्टे में हम बांदरा पहुँच गए। पाली हिल पर टैक्सी चढ़ रही थी कि सामने तंग सड़क पर सण्डो दिखाई दिया। बाबू गोपीनाथ ने जोर से पुकारा 'सण्डो !'

सैण्डो ने जब बाबू गोपीनाथ को देखा तो उसके मुँह से सिर्फ इतना निकला 'धड़न तख्ता !'

बाबू गोपीनाथ ने उससे कहा 'आओ टैक्सी में बैठ जाओ और साथ चलो।'

लेकिन सण्डो ने कहा, 'टैक्सी एक तरफ खड़ी कीजिए। मुझे आपसे कुछ प्राइवेट बातें करनी हैं।

टैक्सी एक तरफ खड़ी की गई। बाबू गोपीनाथ बाहर निकला तो

सण्डो उसे कुछ दूर ले गया। देर तक उनमे बातें होती रही। जब खत्म हुई तो बाबू गोपीनाथ अकेला टैक्सी की तरफ आया। ड्राइवर से उसने कहा, 'वापस ले चलो।'

बाबू गोपीनाथ खुश था। हम दादर के पास पहुचे तो उसने कहा, 'मण्टो साहब, जेनो की शादी होने वाली है।'

मैंने हैरत से पूछा, 'किससे?'

बाबू गोपीनाथ ने जवाब दिया, हैदराबाद सिंध का एक दौलतमन्द जमीदार है। खुदा करे, दोनो खुश रहे। यह भी अच्छा है जो मैं ठीक वक्त पर आ पहुचा। जो रुपये मेरे पास हैं, उनसे जेनो का दहेज बन जाएगा। क्या ख्याल है आपका?

मेरे दिमाग मे उस वक्त कोई ख्याल नही था। मैं सोच रहा था कि यह हैदराबाद सिंध का दौलतमन्द जमीदार कौन है? सण्डो और सरदार की कोई जालसाजी तो नही? लेकिन बाद मे इसकी तसदीक हो गई कि वह वास्तव मे हैदराबाद का खुशहाल जमीदार था जो हैदराबाद सिंध के एक म्यूजिक टीचर की मारफत जीनत से मिला था, यह म्यूजिक टीचर जीनत को गाना सिखाने की बेकार कोशिश किया करता था। एक रोज वह अपने सरपरस्त गुलाम हुसैन (यह हैदराबाद सिंध के रईस का नाम था) को साथ लेकर आया। जीनत ने खूब खातिर की और गुलाम हुसैन की फरमाइश पर उसने गालिब की गजल

नुक्ताचीं है गमे दिल उसको सुनाए न बने

गाकर सुनाई। गुलाम हुसैन उसपर मर मिटा। इसका जिक्र म्यूजिक टीचर ने जीनत से किया। सरदार और सैण्डो ने मिलकर मामला पक्का कर दिया, और शादी तय हो गई।

बाबू गोपीनाथ खुश था। एक बार सैण्डो के दोस्त की हैसियत से वह जीनत के यहा गया। गुलाम हुसैन से उसकी मुलाकात हुई तो उससे मिलकर बाबू गोपीनाथ की खुशी दूनी हो गई। मुझसे उसने कहा 'मण्टो साहब, खूबसूरत, जवान और बडा लायक आदमी है वह। मैंने यहा आते हुए दातागंज बख्श के हुजूर जाकर दुआ मागी थी, जो कुबूल हुई। भगवान करे, दोनो खुश रहें।'

बाबू गोपीनाथ ने बड़े खुलूस और तवज्जह से जीनत की शादी का इंतजाम किया। दो हजार के जेवर और दो हजार के कपड़े बनवाए और पांच हजार नक्द दिए।

मुहम्मद शफ़ीक तूसी, मुहम्मद यासीन प्रोप्राइटर नगीना होटल, सैण्डो म्यजिक टीचर मैं और गोपीनाथ शादी में शामिल थे। दुलहन की तरफ से सण्डो वकील था। निकाह हुआ तो सैण्डो ने धीरे से कहा 'धड़नतख्ता!' गुलाम हुसैन सर्ज का नीला सूट पहने हुए था। सबने उसको मुबारकबाद दी, जो उसने खुशी खुशी कुबूल की। काफी खूबसूरत आदमी था। बाबू गोपीनाथ उसके मुकाबले में छोटी सी बटेर मालूम होता था।

शादी की दावत में खाने पीने का जो भी सामान होता है, उसका प्रबन्ध बाबू गोपीनाथ ने किया था। दावत से जब लोग फारिग हुए तो बाबू गोपीनाथ ने सबके हाथ धुलवाए। मैं जब हाथ धोने के लिए आया तो उसने मुझसे बच्चों के से अंदाज में कहा, 'मण्टो साहब, जरा अन्दर जाइए, और देखिए जीनत दुलहन के लिबास में कैसी लगती है।'

मैं पर्दा हटाकर अन्दर दाखिल हुआ। जीनत सुर्ख जरबफ्त का सलवार कुरता पहने हुई थी दुपट्टा भी उसी रंग का था, जिसपर गोट लगी थी। चेहरे पर हल्का हल्का मेकअप था हालांकि मुझे होंठों पर लिपस्टिक की सुर्खी बहुत बुरी मालूम होती है, लेकिन जीनत के होंठ सजे हुए थे। उसने शरमाकर मुझे आदाब किया तो वह बहुत प्यारी लगी। जब मैंने दूसरे कोने में एक मसहरी देखी जिसपर फूल ही फूल थे तो मुझे अनायास हंसी आ गई। मैंने जीनत से कहा, 'यह क्या मसखरापन है!'

जीनत ने मेरी तरफ बिलकुल मासूम कबूतरी की तरह देखा, 'आप मजाक करते हैं भाईजान!' उसने कहा और उसकी आंखों में आंसू डबडबा आए।

मुझे अभी अपनी गलती का एहसास भी न हुआ था कि बाबू गोपीनाथ अन्दर दाखिल हुआ। बड़े प्यार के साथ उसने अपने रूमाल से जीनत के आंसू पोंछे, और बड़े दुःख के साथ मुझसे कहा 'मण्टो साहब, मैं समझा था कि आप बड़े समझदार और लायक आदमी हैं, जीनत का मजाक उड़ाने से पहले आपने कुछ सोच लिया होता।

बाबू गोपीनाथ के स्वर मे वह श्रद्धा, जो उसमे मेरे प्रति थी, घायल नजर आई , लेकिन इससे पहले कि मैं उमसे माफी मागू, उसने जीनत के सिर पर हाथ फेरा और बडे खुलूस के साथ कहा, 'खुदा तुम्हे खुश रखे।'

यह कहकर बाबू गोपीनाथ ने भीगी हुई आखो से मेरी तरफ देखा, उनमे निन्दा थी, बहुत ही दु ख भरी निन्दा, और वह चला गया।

टोबा टेकसिंह

बटवारे के दो तीन साल बाद पाकिस्तान और हिन्दुस्तान की सरकारों को खयाल आया कि साधारण कैदियों की तरह पागलों की अदला बदली भी होनी चाहिए, अर्थात् जो मुसलमान पागल हिन्दुस्तान के पागलखाना में हैं, उन्हें पाकिस्तान पहुंचा दिया जाए और जो हिन्दू और सिख पाकिस्तान के पागलखानों में हैं, उन्हें हिन्दुस्तान के हवाले कर दिया जाए।

मालूम नहीं, यह बात उचित थी या अनुचित। जो हो समझदारों के फैसले के अनुसार ऊंचे स्तर पर कान्फ्रेंसें हुईं और अन्त में एक दिन पागलों की अदला बदली के लिए मुकर्रर हो गया। अच्छी तरह छानबीन की गई। वे मुसलमान पागल, जिनके संरक्षक हिन्दुस्तान में थे वहीं रहने दिए गए और जो शेष थे, उनको सीमा की ओर रवाना कर दिया गया। यहां पाकिस्तान से, क्योंकि करीब करीब सब हिन्दू सिख जा चुके थे इस लिए किसीको रखने रखाने का सवाल पैदा न हुआ। जितने हिन्दू सिख पागल थे सबके सब पुलिस के संरक्षण में सीमा पर पहुंचा दिए गए।

उधर की खबर नहीं, लेकिन इधर लाहौर के पागलखाने में इस तबादले की खबर पहुंची तो बड़ी मजेदार बातें होने लगीं। एक मुसलमान पागल से, जो बारह साल तक प्रतिदिन नियमपूर्वक 'जमींदार' पढ़ता रहा था, जब उसके एक दोस्त ने पूछा, 'मौलवी साब, यह पाकिस्तान क्या होता है?' तो उसने बड़े चिन्तन के बाद जवाब दिया, 'हिन्दुस्तान में एक ऐसी जगह है, जहां उस्तरे बनते हैं।'

यह जवाब सुनकर उसका दोस्त चुप हो गया।

इसी तरह एक सिख पागल ने दूसरे सिख पागल से पूछा, 'सरदार जी, हमें हिन्दुस्तान क्यों भेजा जा रहा है? हमें तो वहां की बोली नहीं आती।'

दूसरा मुस्कराया, 'मुझे तो हिन्दुस्तान की बोली आती है, हिन्दुस्तानी बड़े शैतानी आकड़ आकड़ फिरते हैं'

एक दिन नहाते नहाते एक मुसलमान पागल ने 'पाकिस्तान जिन्दा-बाद' का नारा इतने जोर से लगाया कि फश पर फिसलकर गिर पडा और बेहोश हो गया। कुछ पागल ऐसे भी थे जो पागल नहीं थे। इनमें ऐसे खूनियो की सख्या अधिक थी, जिनके सबधियो ने अफसरो को रिश्वत दे दिलाकर उन्हें पागलखाने भिजवा दिया था ताकि वे फासी के फदे मे बच जाए।

वे कुछ कुछ समझते थे कि हिन्दुस्तान का बटवारा क्या हुआ है और यह पाकिस्तान क्या है, लेकिन सभी घटनाओ का उन्हें भी कुछ पता न था। अखबारों से कुछ पता नहीं चलता था और पहरेदार सिपाही अनपढ, उजडड थे। उनकी बातचीत से भी वे कोई अर्थ नहीं निकाल सकते थे। उनको केवल इतना पता था कि एक आदमी मुहम्मद अली जिन्ना है जिसको कायदे आजम कहते हैं—उसने मुसलमानो के लिए एक अलग देश बनाया है, जिसका नाम पाकिस्तान है। यह कहा है और इसकी उपयोगिता क्या है, इसके सम्बन्ध मे वे कुछ नहीं जानते थे। यही कारण था कि पागलखाने मे वे सब पागल, जिनका दिमाग पूरी तरह से खराब नही था, इस असमजस मे थे कि वे पाकिस्तान मे थे या हिन्दुस्तान मे। अगर हिन्दुस्तान में हैं तो पाकिस्तान कहा है और अगर वे पाकिस्तान में है तो तो यह कैसे हो सकता है कि वे कुछ समय पहले यहीं रहते हुए भी हिन्दुस्तान मे थे? एक पागल तो पाकिस्तान और हिन्दुस्तान तथा हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के चक्कर मे ऐसा पडा कि और ज्यादा पागल हो गया। झाड़ू देते देते एक दिन एक पेड पर चढ गया और एक टहनी पर बैठकर दो घण्टे तक लगातार भाषण देता रहा, जो पाकिस्तान और हिन्दुस्तान के नाजुक मसले पर था। सिपाहियो ने उसे नीचे उतरने के लिए कहा तो वह और ऊपर चढ गया। डराया धमकाया गया तो उसने कहा, मैं न हिन्दुस्तान मे रहना चाहता हू न पाकिस्तान मे। मैं इस पेड पर ही रहूगा।

बडी मुश्किलो के बाद जब उसका दौरा ठण्डा पडा तो वह नीचे उतरा और अपने हिन्दू सिख मित्रो से गले मिल मिलकर रोने लगा। इस विचार से उसका दिल भर आता था कि वे उसे छोडकर हिन्दुस्तान चले जाएगे।

एक एम० एस सी० पास रेडियो इंजीनियर में, जो मुसलमान था और दूसरे पागलों से बिल्कुल अलग थलग बाग की एक खास रविश पर दिन भर चुपचाप टहलता रहता था, यह तब्दीली आई कि उसने अपने तमाम कपड़े उतारकर दफादार के हवाले कर दिए और नंग धडंग सारे बाग में घूमना शुरू कर दिया।

चिनयोट के एक मुसलमान पागल ने, जो मुस्लिम लीग का सक्रिय कार्यकर्ता रह चुका था और जो दिन में पंद्रह सोलह बार नहाया करता था, एकाएक यह आदत छोड दी। उसका नाम मुहम्मद अली था, इसलिए एक दिन उसने अपने जंगले में घोषणा कर दी कि वह कायदे-आजम मुहम्मद अली जिन्ना है। उसकी देखादेखी एक सिख पागल मास्टर तारासिंह बन गया था। संभव था कि उस जंगले में खून खराबा हो जाता लेकिन उन्हें खतरनाक पागल करार देकर अलग अलग स्थानों में बन्द कर दिया गया।

लाहौर का एक नौजवान हिन्दू वकील था जो प्रेम में असफल होकर पागल हो गया था—जब उसने सुना कि अमृतसर हिन्दुस्तान में चला गया है तो उसे बहुत दुःख हुआ। उसी शहर की एक हिन्दू लडकी से उसको प्रेम हो गया था। यद्यपि उसने उस वकील को ठुकरा दिया था, लेकिन पागलपन की हालत में भी वह उसे नहीं भुला सका था। इस-लिए वह उन सब हिन्दू और मुस्लिम लीडरों को गालियां देता था, जिन्होंने मिल मिलाकर हिन्दुस्तान के दो टुकडे कर दिए थे। प्रेमिका हिन्दुस्तानी बन गई थी और वह पाकिस्तानी।

जब अदला-बदली की बात शुरू हुई तो वकील को पागलों ने सम-झाया कि वह दुखी न हो, उसको हिन्दुस्तान भेज दिया जाएगा—उस हिन्दुस्तान में जहां उसकी प्रेमिका रहती है। लेकिन वह लाहौर छोडना नहीं चाहता था, इसलिए कि उसका खयाल था कि अमृतसर में उसकी प्रक्टिस नहीं चलेगी। यूरोपियन वार्ड में दो ऐंग्लो इण्डियन पागल थे। उनको जब मालूम हुआ कि हिन्दुस्तान को आजाद करके अंग्रेज चले गए हैं तो उनको बडा दुःख हुआ। वे छिप छिपकर घण्टों आपस में इस गंभीर समस्या पर बातचीत करते रहते कि पागलखाने में अब उनकी

हैसियत किस तरह की होगी, यूरोपियन वार्ड रहेगा या उड़ा दिया जाएगा? ब्रेकफास्ट मिला करेगा या नहीं? क्या उन्हें डबलरोटी के बजाय ब्लडी इण्डियन चपाती तो जहर मार नहीं करनी पड़ेगी?

एक सिख था जिसको पागलखाने में दाखिल हुए पन्द्रह साल हो चुके थे। हर समय उसके मुंह से ये विचित्र शब्द सुनने में आते थे, 'ओ पड़ दी गिड़गिड़ दी ऐंक्स दी बेध्याना दी, मूंग दी दाल आव दी लालटेन।' वह दिन को सोता था न रात को। पहरेदारों का कहना था कि पन्द्रह वर्ष के इस लम्बे समय में वह एक क्षण के लिए भी न सोया था। लेटता भी नहीं था। हां, कभी कभी दीवार के साथ टेक लगा लेता था। हर समय खड़े रहने से उसके पांव सूज गए थे। पिण्डलियां भी फूल गई थीं। लेकिन उस शारीरिक कष्ट के बावजूद वह लेटकर आराम नहीं करता था। हिन्दुस्तान, पाकिस्तान और पागलों की अदला बदली के बारे में जब कभी पागलखाने में बातचीत होती थी तो वह बड़े ध्यान से सुनता था। कोई उससे पूछता कि उसका क्या ख्याल है तो वह बड़ी गम्भीरता से जवाब देता 'ओ पड़ दी गिड़गिड़ दी, ऐंक्स दी बेध्याना दी, मूंग दी दाल आव दी पाकिस्तान गवर्नमेण्ट।

लेकिन बाद में 'आव दी पाकिस्तान गवर्नमेण्ट' की जगह 'आव दी टोबा टेकसिंह' ने ले ली और उसने दूसरे पागलों से पूछना शुरू किया कि टोबा टेकसिंह कहां है, जहां का वह रहने वाला है? लेकिन किसीको भी मालूम नहीं था कि वह पाकिस्तान में है या हिन्दुस्तान में। जो बताने की कोशिश करते थे खुद इस चक्कर में फंस जाते थे कि स्यालकोट पहले हिन्दुस्तान में होता था, पर अब सुना है कि पाकिस्तान में है। क्या पता है कि लाहौर जो अब पाकिस्तान में है कल हिन्दुस्तान में चला जाए या सारा हिन्दुस्तान ही पाकिस्तान बन जाए! और यह भी कौन छाती पर हाथ रखकर कह सकता था कि हिन्दुस्तान और पाकिस्तान दोनों किसी दिन सिरे से ही गायब न हो जाएंगे।

इस सिख पागल के केश झड़ते रहने पर अब बहुत थोड़े से रह गए थे। चूंकि वह बहुत कम नहाता था इसलिए दाढ़ी और सिर के बाल आपस में जम गए थे, जिसके कारण उसकी शक्ल बड़ी भयानक हो गई थी।

लेकिन आदमी बडा अहानिकारक था। पन्द्रह वर्षों म उसने किसीसे झगडा-फिसाद नही किया था। पागलखाने के जो पुराने नौकर थे वे उसके बारे म इतना जानत थे कि टोबा टेकसिंह म उसकी काफी जमीनें थी। अच्छा खाता पीता जमीदार था कि अचानक ही दिमाग उलट गया। उसके सबधी लोहे की मोटी मोटी जजीरो मे उसे बाधकर लाए और पागलखाने मे दाखिल करा गए।

महीने मे एक बार मुलाकात को वे लोग आते थे और उसकी राजी-खुशी मालूम करके चले जाते थे। एक समय तक यह सिलसिला चलता रहा, लेकिन जब पाकिस्तान हिन्दुस्तान की गडबड शुरू हो गई तो उनका आना बन्द हो गया।

उसका नाम बिशनसिंह था, मगर सब उसे टोबा टेकसिंह कहते थे। उसे यह बिलकुल मालूम न था कि दिन कौन सा है, महीना कौन सा है या कितने साल बीत चुके हैं। लेकिन हर महीने जब उसके सम्बन्धी उससे मिलने आते थे तो उसे अपने आप पता चल जाता था। अतएव वह दफा-दार से कहता कि उसके मुलाकाती आ रहे हैं। उस दिन वह अच्छी तरह नहाता, बदन पर खूब साबुन घिसता और सिर मे तेल लगाकर कघा करता। अपने कपडे, जो वह कभी इस्तेमाल नही करता था निकलवा कर पहनता और या सज सवरकर मिलने वालो के पास जाता। वे उससे कुछ पूछते तो वह चुप रहता या कभी कभी 'ओ पड दी गिडगिड दी, ऐंक्स दी बेध्याना दी, मूग दी दाल आव दी लालटेन' कह देता।

उसकी एक लडकी थी, जो हर महीने एक अगुल बढती बढती पन्द्रह वर्ष मे जवान हो गई थी। बिशनसिंह उसे पहचानता ही न था। जब वह बच्ची थी तब भी अपने बाप को देखकर रोती थी, जब जवान हुई, तब भी आखो से आसू बहते थे।

पाकिस्तान और हिन्दुस्तान का किस्सा शुरू हुआ तो उसने दूसरे पागलो से पूछना शुरू किया कि टोबा टेकसिंह कहा है। जब सतोष-जनक उत्तर न मिला तो उसकी चिन्ता दिनो दिन बढती गई। अब मुला-काती भी नही आते थे। पहले तो उसे अपने आप पता चल जाता था कि मिलने वाले आ रहे हैं पर अब जैसे उसके दिल की आवाज भी बन्द हो

गई थी, जो उसे उनके आने की खबर दे दिया करती थी ।

उसकी बडी इच्छा थी कि वे लोग आएं, जो उसके प्रति प्रेम प्रदर्शित करते थे और उसके लिए फल मिठाइया और कपडे लाते थे । वह अगर उनसे पूछता कि टोबा टेकसिंह कहा तो है वे सचमुच बता देते कि पाकिस्तान म है या हिंदुस्तान मे, क्योंकि उनका खयाल था कि वे टोबा टेकसिंह म ही आते थे, जहा उसकी जमीनें है ।

पागनखाने म एक पागल ऐसा भी था, जो अपनेका खुदा कहता था । उससे एक दिन जब विशनसिंह ने पूछा कि टोबा टेकसिंह पाकिस्तान मे है या हिंदुस्तान मे, तो उसने अपनी आदत के मुताबिक एक कहकहा लगाया और कहा, 'वह न पाकिस्तान मे है और न हिंदुस्तान मे, इसलिए कि हमने अभी तक हुक्म ही नही दिया ।'

विशनसिंह ने उस खुदा से कई बार बडी मिन्नत-खुशामद से कहा कि वह हुक्म दे दे, ताकि झझट खत्म हो, मगर वह बहुत व्यस्त था, क्योकि उस और भी बहुत-से हुक्म देने थे । एक दिन तग आकर वह उसपर बरस पडा, ओ पड दी गिडगिड दी, ऍक्स दी बेध्याना दी, मूग दी दाल आव वाह गुरुजी दा खालसा एण्ड वाह गुरुजी दी फतह—जो बोले सो निहाल सत सिरी अकाल !'

उसका शायद यह मतलब था कि तुम मुसलमानो के खुदा हो, सिखो के खुदा होते तो जरूर मेरी सुनते ।

अदला बदली से कुछ दिन पहले टोबा टेकसिंह का एक मुसलमान, जो उसका दोस्त था, मुलाकात के लिए आया । पहले वह कभी नही आया था । जब विशनसिंह ने उसे देखा तो एक तरफ हट गया और वापस जाने लगा, लेकिन सिपाहियो ने उसे रोका, 'तुमसे मिलने आया है—तुम्हारा दोस्त फजलदीन है ।

विशनसिंह ने फजलदीन को एक नजर से देखा और कुछ बडबडाने लगा । फजलदीन ने आगे बढकर उसके कधे पर हाथ रख दिया । मैं बहुत दिनो से सोच रहा था कि तुमसे मिलू लेकिन फुरसत ही न मिली । तुम्हारे सब आदमी राजी-खुशी हिंदुस्तान पहुच गए हैं । मुझसे जितनी मदद हो सकती थी की, लेकिन तुम्हारी बेटी रूपकौर '

वह कहते-कहते रुक गया। बिशनसिंह कुछ याद करने लगा। 'बेटी रूपकौर!'

फजलदीन ने रुक रुककर कहा, 'हां हां वह भी ठीकठाक है उनके साथ ही चली गई थी।'

बिशनसिंह चुप रहा। फजलदीन ने कहना शुरू किया, 'उन्होंने मुझसे कहा था कि तुम्हारी राजी खुशी पूछता रहूं। अब मैंने सुना है कि तुम हिन्दुस्तान जा रहे हो—भाई बलबीरसिंह और भाई रधावासिंह से मेरा सलाम कहना, और बहन अमतकौर से भी। भाई बलबीरसिंह से कहना—फजलदीन राजी-खुशी है। दो भूरी भसें जो वे छोड़ गए थे, उनमे से एक ने कट्टा दिया है दूसरी के कट्टी हुई थी, पर वह चौदह दिन की होकर मर गई और मेरे लायक जो खिदमत हो, कहना। मैं हर वक्त तैयार हूं। और ये तुम्हारे लिए थोड़े से मरुण्डे लाया हूं।'

बिशनसिंह ने मरुण्डो की पोटली लेकर पास खड़े सिपाही के हवाले कर दी और फजलदीन से पूछा, 'टोबा टेकसिंह कहां है?'

फजलदीन ने आश्चर्य से कहा, 'कहां है? वहीं है, जहां था।'

बिशनसिंह ने फिर पूछा, 'पाकिस्तान में या हिन्दुस्तान में?'

'हिन्दुस्तान में नहीं-नहीं, पाकिस्तान में।' फजलदीन बौखला-सा गया। बिशनसिंह बड़बड़ाता हुआ चला गया ओ पड़ दी गिड़गिड़ दी ऐंक्स दी बेध्याना दी मूंग दी दाल आव दी पाकिस्तान एण्ड हिंदुस्तान आव दी दुर फिट मुंह!'

अदला बदली की तैयारियां पूरी तरह हो चुकी थीं। इधर से उधर और उधर से इधर आने वाले पागलों की सूचियां पहुंच गई थीं और अदला-बदली की तारीख निश्चित हो चुकी थी। कड़ाके का जाड़ा पड़ रहा था जब लाहौर के पागलखाने से हिन्दू सिख पागलों से भरी लारियां पुलिस के संरक्षक दस्ते के साथ रवाना हुई। उनसे सम्बन्धित अफसर भी उनके साथ थे। वाघा की सीमा पर दोनों ओर के सुपरिण्टण्डेण्ट एक-दूसरे से मिले और प्रारम्भिक कार्रवाई खत्म होने के बाद अदला-बदली शुरू हो गई जो रात भर चलती रही।

पागलों को लारियों से निकालना और उनको दूसरे अफसरों के हवाले

करना बडा कठिन काम था। कुछ तो बाहर निकलते ही नहीं थे, जो निकलने को तैयार होते, उनको सभालना मुश्किल होता, क्योंकि वे इधर-उधर भाग उठते थे। जो नगे थे, उनको कपडे पहनाए जाते तो वे फाड-कर अपने तन से अलग कर देते। कोई गालियां बक रहा है, कोई गा रहा है। आपस मे लड झगड रहे हैं और रो रहे हैं, बिलख रहे हैं। कान पडी आवाज सुनाई नहीं देती थी। पागल स्त्रियों का शोरगुल अलग था, और सर्दी इतने कडाके की थी कि दांत बज रहे थे।

अधिकतर पागल इस अदला-बदली के पक्ष मे नहीं थे, क्योंकि उनकी समझ म नहीं आता था कि उन्हें अपनी जगह से उखाडकर कहां फेंका जा रहा है। थोडे से वे, जो कुछ सोच समझ सकते थे, पाकिस्तान जिन्दा-बाद और 'पाकिस्तान मुर्दाबाद' के नारे लगा रहे थे। दो तीन बार झगडा होते होते बचा, क्योंकि कुछ एक मुसलमानों और सिखों को ये नारे सुनकर तैश आ गया था।

जब बिशनसिंह की बारी आई और जब उसे दूसरी ओर भेजने के सम्बन्ध म अधिकारी लिखत पढत करने लगे तो उसने पूछा, टोबा टेक-सिंह कहां है—पाकिस्तान म या हिन्दुस्तान म ?'

सम्बन्धित अधिकारी सुनकर हंसा और बोला, 'पाकिस्तान मे।'

यह सुनकर बिशनसिंह उछलकर एक तरफ हटा और दौडकर अपने शेष साथियों के पास पहुच गया। पाकिस्तानी सिपाहियों ने उसे पकड लिया। और दूसरी तरफ ले जाने लगे लेकिन उसने चलने से इनकार कर दिया 'टोबा टेकसिंह यहां है और वह जोर-जोर से चिल्लाने लगा, 'ओ पड दी गिडगिड दी, ऍक्स दी बेध्याना दी, मूग दी दाल आव टोबा टेकसिंह एण्ड पाकिस्तान।'

उसे बहुत समझाया गया, 'देखो, टोबा टेकसिंह अब हिन्दुस्तान मे चला गया है अगर नहीं गया है तो उसे तुरन्त ही वहां भेज दिया जाएगा, लेकिन वह न माना। जब उसे जबरदस्ती दूसरी ओर ले जाने की कोशिशें की गईं तो वह बीच मे एक स्थान पर इस प्रकार अपनी सूजी हुई टांगों पर खडा हो गया, जैसे अब कोई ताकत उसे वहां से नहीं हिला सकेगी।

आदमी चूंकि अहानिकारक था, इसलिए उसके साथ जबरदस्ती नहीं

मम्मी

उसका नाम मिसेज स्टेला जैक्सन था, मगर सब उसे मम्मी कहते थे। दर्मियान कद की अधेड़ उम्र की स्त्री थी। उसका पति जैक्सन प्रथम महायुद्ध में मारा गया था। उसकी पेंशन स्टेला को लगभग दस वर्ष से मिल रही थी।

वह पूना में कब आई, कब से वहां थी, इसके बारे में मुझे कुछ मालूम नहीं। दरअसल मैंने उसके बारे में कुछ जानने की कभी कोशिश ही नहीं की। वह इतनी दिलचस्प स्त्री थी कि उससे मिलकर सिवाय उसके व्यक्तित्व के और किसी चीज से दिलचस्पी नहीं रहती थी। उससे कौन सम्बन्धित है, यह जानने की आवश्यकता ही महसूस न होती थी, क्योंकि वह पूना के जर्रे-जर्रे से परिचित थी। हो सकता है कि यह एक हद तक अतिशयोक्ति हो, लेकिन मेरे लिए पूना वही पूना है। उसके वही जर्रे, उसके तमाम जर्रे हैं, जिनके साथ मेरी कुछ यादें जुड़ी हुई हैं—और मम्मी का विचित्र व्यक्तित्व उनमें से हर एक में विद्यमान है।

उससे मेरी पहली मुलाकात पूना में ही हुई मैं बहुत ही सुस्त किस्म का आदमी हूं। यों घुमक्कड़ी की बड़ी बड़ी उमंगें मेरे दिल में मौजूद हैं और अगर आप मेरी बातें सुनें तो आपको लगेगा कि मैं कंचनजंघा या हिमालय की इसी तरह की किसी अन्य चोटी को सर करने के लिए निकल जाने वाला हूं। ऐसा हो सकता है, लेकिन इससे भी अधिक संभावना इस बात की है कि वह चोटी सर करके मैं वहीं का हो रहूं।

खुदा जाने कितने बरसों से बम्बई में था। आप इससे अंदाजा लगा सकते हैं कि जब मैं पूना गया तो बीवी मेरे साथ थी। एक लड़का होकर उसको मरे करीब करीब चार बरस हो गए थे। इस बीच में ठहरिए, मैं हिसाब लगा लूं आप यह समझ लीजिए कि आठ बरस से बम्बई में था, लेकिन उस बीच में मुझे वहां का विक्टोरिया गार्डन और म्यूजियम देखने की भी फुरसत नहीं मिली थी। यह तो केवल संयोग की बात थी कि मैं एक-

मैंने चड्ढे को काफी समय के बाद देखा था। वह मेरा बेतकल्लुफ दोस्त था। 'ओए मण्टो के घोडे !' के जवाब मे मैंने भी कुछ इसी किस्म का नारा लगाया होता, लेकिन उस स्त्री को उसके साथ देखकर मेरी बेतकल्लुफी भिरिया भिरिया हो गई।

मैंने अपना तागा रुकवा लिया। चड्ढे ने भी अपने कोचवान को ठहरने के लिए कहा। फिर उसने उस स्त्री से अग्रेजी मे कहा, 'मम्मी, जस्ट ए मिनट !'

तागे से कूदकर वह मेरी ओर अपना हाथ बढाते हुए चिल्लाया, 'तुम ! तुम यहा कैसे आए ?' फिर अपना बढा हुआ हाथ बडी बेतकल्लुफी से मेरी पुरतकल्लुफ बीवी से मिलाते हुए कहा, 'भाभीजान, आपने कमाल कर दिया। इस गुलमुहम्मद को आखिर आप खीचकर यहा ले ही आईं !'

मैंने उससे पूछा, 'तुम जा कहा रहे हो ?'

चड्ढे ने ऊंचे स्वर मे कहा, 'एक काम से जा रहा हू—तुम ऐसा करो सीधे ' वह एकदम पलटकर मेरे तागे वाले से मुखातिब हुआ, 'देखो, साहब को हमारे घर ले जाओ, किराया विराया मत लेना इनसे।' उधर से तुरत ही निपटकर उसने निश्चित सा होकर मुझसे कहा, 'तुम जाओ, नौकर वहा होगा, बाकी तुम देख लेना।'

और वह फुदककर अपने तागे मे उस बूढी मेम के साथ जा बैठा जिसको उसने मम्मी कहा था। इससे मुझे एक प्रकार का सन्तोष हुआ था, बल्कि यो कहिए कि जो बोझ एकदम उन दोनों को साथ-साथ देखकर मेरे सीने पर आ पडा था, काफी हद तक हल्का हो गया था।

उसका तागा चल पडा। मैंने अपने तागे वाले से कुछ न कहा। तीन या चार फर्लांग चलकर वह एक डाक बगले की तरह की इमारत के पास रुका और नीचे उतरकर बोला, 'चलिए साहब '

मैंने पूछा, 'कहा ?'

उसने जवाब दिया, 'चड्ढा साहब का मकान यही है।'

'ओह !' मैंने प्रश्नवाचक दृष्टि से अपनी बीवी की ओर देखा। उसके तवरा ने मुझे बताया कि वह चड्ढे के मकान मे रहने के हक मे

दम पूना जाने के लिए तयार हो गया। जिस फिल्म कम्पनी में नौकर था, उसके मालिक से एक मामूली सी बात पर मनमुटाव हो गया और मैंने सोचा कि यह कटुता दूर करने के लिए पूना हो आऊ। वह भी इसलिए कि वह पास था और मेरे कुछ मित्र वहा रहते थे।

मुझे प्रभातनगर जाना था, जहा मेरा फिल्मो का एक पुराना साथी रहता था। स्टेशन से बाहर निकलने पर मालूम हुआ कि वह जगह काफी दूर है, लेकिन तब तक हम तागा ले चुके थे।

सुस्त रफ्तार से चलने वाली चीजो से मेरी तबीयत बहुत घबराती है, लेकिन मैं अपने दिल की रंजिश को दूर करने के लिए यहा आया था, इसलिए मुझे प्रभातनगर जाने की बहुत जल्दी थी। तागा बहुत ही वाहियात किस्म का था, अलीगढ के इक्का से भी ज्यादा वाहियात जिनमें हर समय गिरने का खतरा बना रहता है। घोडा आगे चलता है, और सवारिया पीछे। एक दो गज से अटे बाजारो और सडको को पार करते करते मेरी तबीयत घबरा गई। मैंने अपनी बीवी से मशविरा किया और पूछा कि ऐसी हालत में क्या करना चाहिए। उसने कहा कि धूप तेज है। मैंने जो और तागे देखे हैं, वे भी इसी तरह के हैं। अगर इसे छोड दिया तो पैदल चलना होगा जो जाहिर है कि इस सवारी से ज्यादा तकलीफदेह है। बात ठीक थी। धूप सचमुच बहुत तेज थी। घोडा एक फर्लांग आगे बढा होगा कि पास से वैसा ही वाहियात किस्म का तागा गुजरा। मैंने सरसरी तौर पर उधर देखा तभी एकदम कोई चिल्लाया, ओए मण्टो के घोडे[1]

मैं चौक पडा। चड्ढा था, एक घिसी हुई मेम के साथ। दोनो साथ साथ जुडकर बैठे थे। मेरी पहली प्रतिक्रिया बडी दुखद थी कि चड्ढे की सौन्दर्यप्रियता कहा गई जो ऐसी लगामी[1] के साथ बैठा है। उम्र का ठीक अन्दाज तो मैंने उस समय नहीं किया था मगर उस स्त्री की झुर्रिया पाउडर और रूज की तहो में से भी साफ दिखाई देती थी। इतना गाढा मेकअप था कि देखने से आखो को कष्ट होता था।

---

1 बूढा घोडा लाल लगाम —मुहावरा।

मैंने चडढे को काफी समय के बाद देखा था। वह मेरा बेतकल्लुफ दोस्त था। 'ओए मण्टो के घोडे !' के जवाब मे मैंने भी कुछ इसी किस्म का नारा लगाया होता, लेकिन उस स्त्री को उसके साथ देखकर मेरी बेतकल्लुफी भिरिया भिरिया हो गई।

मैंने अपना तागा रुकवा लिया। चड्ढे ने भी अपने कोचवान को ठहरने के लिए कहा। फिर उसने उस स्त्री से अग्रेजी मे कहा, 'मम्मी, जस्ट ए मिनट !'

तागे से कूदकर वह मेरी ओर अपना हाथ बढाते हुए चिल्लाया, 'तुम ! तुम यहा कैसे आए ?' फिर अपना बढा हुआ हाथ बडी बेतकल्लुफी से मेरी पुरतकल्लुफ बीवी से मिलाते हुए कहा, 'भाभीजान, आपने कमाल कर दिया। इस गुलमुहम्मद को आखिर आप खीचकर यहा ले ही आई !''

मैंने उससे पूछा, 'तुम जा कहा रहे हो ?'

चडढे ने ऊचे स्वर मे कहा, 'एक काम से जा रहा हू—तुम ऐसा करो सीधे ' वह एकदम पलटकर मेरे तागे वाले से मुखातिब हुआ, 'देखो, साहब को हमारे घर ले जाओ, किराया विराया मत लेना इनसे।' उधर से तुरत ही निपटकर उसने निश्चित सा होकर मुझसे कहा, 'तुम जाओ, नौकर वहा होगा, बाकी तुम देख लेना।'

और वह फुदककर अपने तागे मे उस बूढी मेम के साथ जा बैठा, जिसको उसने मम्मी कहा था। इससे मुझे एक प्रकार का सतोष हुआ था, बल्कि या कहिए कि जो बोझ एकदम उन दोनो को साथ साथ देखकर मेरे सीने पर आ पडा था, काफी हद तक हल्का हो गया था।

उसका तागा चल पडा। मैंने अपने तागे वाले से कुछ न कहा। तीन या चार फर्लांग चलकर वह एक डाक बगले की तरह की इमारत के पास रुका और नीचे उतरकर बोला, चलिए साहब '

मैंने पूछा, कहा ?'

उसने जवाब दिया, 'चडढा साहब का मकान यही है।'

'ओह !' मैंने प्रश्नवाचक दृष्टि से अपनी बीवी की ओर देखा। उसके तवरो ने मुझे बताया कि वह चडढे के मकान मे रहने के हक मे

नहीं थी। सच पूछिए तो वह पूना जाने के ही हक में नहीं थी। उसको यकीन था कि मुझको वहां पीने पिलाने वाले दोस्त मिल जाएंगे। मन संताप दूर करने का बहाना पहले से ही मौजूद है, इसलिए दिन रात उडेगी। मैं तांगे से उतर गया। छोटा सा अटैची केस था, वह मैंने उठाया और अपनी बीवी से कहा 'चलो!'

वह शायद मेरे तेवरों से भांप गई थी कि हर हालत में उसे मेरा फैसला मानना होगा, इसलिए उसने कोई हील हुज्जत न की और चुपचाप मेरे साथ चल पड़ी।

बहुत मामूली किस्म का मकान था। ऐसा मालूम होता था कि मिलिटरी वालों ने टेम्परेरी तौर पर एक छोटा सा बंगला बनाया था। कुछ दिन उसे इस्तेमाल किया और फिर छोड़कर चलते बने। चूने और कीच का काम बड़ा कच्चा था। जगह जगह से पलस्तर उखड़ा हुआ था और घर के भीतर का भाग वैसा ही था, जैसाकि एक लापरवाह कुंआरे का हो सकता है जो फिल्मों का हीरो हो और ऐसी कम्पनी में नौकर हो, जहां महीने की तनख्वाह हर तीसरे महीने मिलती हो और वह भी कई किस्तों में।

मुझे इस बात का पूरा एहसास था कि वह स्त्री, जो बीवी हो, ऐसे गंदे वातावरण में निश्चय ही परेशानी और घुटन महसूस करेगी। लेकिन मैंने सोचा था कि चड्ढा आ जाए तो उसके साथ ही प्रभात नगर चलेंगे। वहां जो मेरा फिल्मों का पुराना साथी रहता था, उसकी बीवी और बाल-बच्चे भी थे। वहां के वातावरण में मेरी बीवी जैसे तैसे दो तीन दिन काट सकती थी।

नौकर भी अजीब बेफिक्रा आदमी था। जब हम उस घर में पहुंचे तो सब दरवाजे खुले थे और वह मौजूद नहीं था। जब वह आया तो उसने हमारी मौजूदगी की ओर कोई ध्यान न दिया, जैसे हम बरसों से वहीं बैठे थे और इसी तरह बैठे रहने का इरादा किए हुए थे।

जब वह कमरे में प्रवेश कर हमें देखे बिना पास से गुजर गया तो मैंने समझा कि कोई मामूली एक्टर है, जो चड्ढा के साथ रहता है, लेकिन जब मैंने उससे नौकर के बारे में पूछताछ की तो मालूम हुआ कि

वही हजरत चड्ढा साहब के चहेते नौकर थे ।

मुझे और मेरी बीवी दोनो को प्यास लग रही थी । उससे पानी लाने को कहा तो वह गिलास ढूढने लगा । बडी देर के बाद उसने एक टूटा हुआ जग अलमारी के नीचे से निकाला और बडबडाया, 'रात एक दजन गिलास साहब ने मगवाए थे, मालूम नही किधर गए ।'

मैंने उसके हाथ मे पकडे हुए जग की ओर इशारा किया, 'क्या आप इसमे तल लेने जा रहे हैं ?'

'तेल लेने जाना' बम्बई का एक खास मुहावरा है । मेरी बीवी इसका मतलब न समझी, मगर हस पडी । नौकर बौखला गया, 'नही साहब मैं तलाश कर रहा था कि गिलास कहा है ।'

मेरी बीवी ने उसको पानी लाने स मना कर दिया । उसने वह टूटा हुआ जग वापस अलमारी के नीचे इस तरह से रखा कि जैसे वही उसकी जगह थी, अगर उसे कही और रख दिया तो सारी व्यवस्था अस्त व्यस्त हो जाएगी । इसके बाद वह या कमरे से बाहर निकला, जैसे उसे मालूम था कि हमारे मुह मे कितने दात हैं ।

मैं पलग पर बैठा था जो शायद चड्ढा का था । इससे कुछ दूर हटकर दो आरामकुर्सिया थी । उनमे से एक पर मेरी बीवी बैठी पहलू बदल रही थी । काफी देर तक हम दोनो खामोश रह । इतने मे चड्ढा आ गया । वह अकेला था । उसको इस बात का बिलकुल एहसास नही था कि हम उसके मेहमान है और इस लिहाज से उसे हमारी खातिरदारी करनी चाहिए । कमरे मे दाखिल होते ही उसने मुझसे कहा वेट इज वेट । तो तुम आ गए ओल्ड ब्वाय ! चलो, जरा स्टूडियो तक हो आए । तुम साथ होगे तो एडवास मिलने मे आसानी हो जाएगी आज शाम को । मेरी बीवी पर उसकी नजर पडी तो वह रुक गया और खिलखिलाकर हसने लगा । 'भाभीजान, कही आपने इस मौलवी तो नही बना दिया ?' फिर और जोर से हसा, 'मौलवियो की ऐसी तैसी ! उठो मण्टो, भाभीजान यहा बैठती हैं, हम अभी आ जाएगे ।'

मेरी बीवी जल-भुनकर पहले कोयला थी तो अब बिलकुल राख हो गई थी । मैं उठा और चड्ढा के साथ हो लिया । मुझे मालूम था कि थोडी

देर तक क्रोधित होकर वह सो जाएगी। अतएव वही हुआ। स्टूडियो पास ही था। अफरा नफरी मे मेहनाजी के सिर चढकर चड्ढा न दो सौ रुपये वसूल कर लिए और पौन घण्टे म जब हम वापस आए तो देखा कि वह बडे मजे से आरामकुर्सी पर सो रही थी। हमने उसे परेशान करना उचित न समझा और दूसरे कमरे मे चले गए, जो कबाडखाने से मिलता जुलता था। इसमे जो चीजें थी, वे अजीब तरीके से टूटी हुई थी, जो सब मिलकर एक पूर्णता का दृश्य प्रस्तुत कर रही थी।

हर चीज पर गर्द जमी थी और उस जमी हुई गर्द म भी एक प्रकार का अपनापन था, जैसे उसकी मौजूदगी उस कमरे म जरूरी हो। चड्ढा न तुरत ही अपने नौकर को ढूढ निकाला और उसे सौ रुपये का नोट देकर कहा 'चीन के शहजादे ! दो बोतलें थर्ड क्लास रम की ले आओ मेरा मतलब है, 'थ्री एक्स रम की और आधा दजन गिलास।'

मुझे बाद मे मालूम हुआ कि उसका नौकर सिर्फ चीन का ही नही, दुनिया के हर बडे देश का शहजादा था। चड्ढे की जबान पर जिस देश का नाम आ जाता, वह उसीका शहजादा बन जाता था। उस समय का चीन का शहजादा सौ का नोट उगलियो स खडखडाता चला गया।

चड्ढा न टूटे हुए स्प्रिंगो वाले पलग पर बैठकर अपने होठ थ्री एक्स रम के स्वागत मे चटखारते हुए कहा, 'वेट इज वेट—आफ्टर आल, तुम इधर आ ही निकले।' फिर एकदम चिंतित होकर बोला 'यार भाभी का क्या होगा ? वह तो घबरा जाएगी।'

चड्ढा बिना बीवी के था, मगर उसको दूसरो की बीवियो का बहुत खयाल रहता था। वह उनका इतना सम्मान करता था, मानो सारी उम्र कुवारा रहना चाहता था। वह कहा करता था, 'यह हीनता भाव है, जिसन मुझे अब तक इस नेमत से महरूम रखा है। जब शादी का सवाल आता है तो फौरन तैयार हो जाता हू लेकिन बाद म यह सोचकर कि मैं बीवी के काबिल नही हू सारी तैयारी 'कोल्ड स्टोरेज' मे डाल देता हू।

रम बहुत जल्दी आ गई, गिलास भी। चड्ढा ने छ मगवाए थे और चीन का शहजादा तीन लाया था, बाकी तीन रास्ते म टूट गए थे। चड्ढे

न उनकी कोई परवाह न की और भगवान को धन्यवाद दिया कि बोतल सलामत रही। एक बोतल जल्दी जल्दी खोलकर उसने कोरे गिलासों मे रम डाली और कहा, 'तुम्हारे पूना आने की खुशी म।'

हम दोनो न लम्बे लम्बे घूट भरे और गिलास खाली कर दिए।

दूसरा दौर शुरू करके चड्ढा उठा और कमरे मे देखकर आया कि मेरी बीवी अभी तक सो रही है। उसको बहुत तरस आया। कहने लगा, 'मैं शोर करता हू, उनकी नीद खुल जाएगी—फिर ऐसा करेंगे ठहरो पहले मैं चाय मगवाता हू।' यह कहकर उसन रम का एक छोटा सा घूट लिया और नौकर को आवाज दी, जमीका के शहजादे।'

जमीका का शहजादा तुरत आ गया। चड्ढे ने उससे कहा, 'देखो, मम्मी से कहो, एकदम फस्ट क्लास चाय तैयार करके भेज दे।'

नौकर चला गया। चड्ढे न अपना गिलास खाली किया और शरीफाना पेग डालकर कहा, 'मैं इस वक्त ज्यादा नही पीऊगा। पहले चार पग मुझे बहुत जज्बाती बना दते हैं। मुझे भाभी को छोडने तुम्हारे साथ प्रभातनगर जाना है।'

आधे घण्टे के बाद चाय आ गई। बहुत साफ बरतन थ और बडे सलीके से ट्रे मे रखे हुए थे। चड्ढे ने टीकोजी उठाकर चाय की खुशबू सूघी और प्रसन्नता प्रकट करता हुआ बोला, 'मम्मी इज ए ज्यूल ' फिर उसन इथोपिया के शहजादे पर बरसना शुरू कर दिया। उसने इतना शोर मचाया कि मेरे कान बिलबिला उठे। इसके बाद उसने ट्रे उठाई और मुझसे कहा, 'आओ।'

मेरी बीवी जाग रही थी। चड्ढा ने ट्रे बडी सफाई से टूटी हुई तिपाई पर रखी और बडे अदब स कहा, 'हाजिर है बेगम साहबा।' मेरी बीवी को यह मजाक पसन्द न आया, लेकिन चाय का सामान चूकि साफ-सुथरा था, इसलिए उसने इनकार न किया और दो प्यालिया पी ली। इनसे उसको कुछ ताजगी मिली। इसके बाद हम दोनो की ओर मुडकर उसने रहस्यपूर्ण स्वर मे कहा, 'आप अपनी चाय तो पहले ही पी चुके हैं।'

मैंने जवाब न दिया, मगर चड्ढे ने झुककर बडी ईमानदारी दर्शाते हुए कहा, 'जी हा, यह गलती हमस हो चुकी है, लेकिन हमे यकीन था

कि आप जरूर माफ कर देंगी।'

मेरी बीवी मुस्कराई तो वह खिलखिलाकर हसा, 'हम दोनों बहुत ऊची नस्ल के सूअर हैं, जिनपर हर हराम की चीज हलाल है। चलिए, अब हम आपको मस्जिद तक छोड आए।'

मेरी बीवी को फिर चड्ढा का यह मजाक पसन्द न आया। वास्तव म उसको चड्ढा ही स घृणा थी या या कहिए कि उसे मेरे हर दोस्त स घृणा थी, और चड्ढा उनम सबसे ज्यादा खलता था, क्योंकि कभी कभी वह तकल्लुफी की हदें भी फाद जाता था। लेकिन चड्ढे को इसकी कोई परवाह नही थी। मेरा खयाल है कि उसने कभी इसके बारे म सोचा ही नही था। वह ऐसी बेकार की बातो मे दिमाग खर्च करना एक ऐसा 'इन डोर गेम' समझता था, जो लडो स कही अधिक बेमानी होती है। उसने मेरी बीवी के बिगडे तेवरो को बडी खुश खुश नजरो से देखा और नौकर को आवाज दी, 'ओ कब्रिस्तान के शहजादे! एक अदद तागा लाओ— रोल्ज रायस किस्म का।

कब्रिस्तान का शहजादा चला गया और साथ ही चड्ढा भी। वह शायद दूसरे कमरे मे गया था। एकान्त मिला तो मैंने अपनी बीवी को समझाया कि क्बाब होने की कोई जरूरत नहीं। आदमी की जिन्दगी म ऐसे क्षण आ ही जाया करते है जिनका कभी खयाल तक नही आता। उनसे गुजरने का सबसे अच्छा तरीका यही है कि उनको गुजर जान दिया जाए। लेकिन नियमानुसार उसने मेरी इस सीख पर कोई ध्यान नही दिया और बडबडाती रही। इतने म कब्रिस्तान का शहजादा रोल्ज रायस किस्म का तागा लेकर आ गया और हम प्रभातनगर के लिए चल पडे।

बहुत ही अच्छा हुआ कि मेरा फिल्मों का पुराना साथी घर मे मौजूद नहीं था उसकी बीवी थी। चड्ढे ने मेरी बीवी उसके सुपुर्द की और कहा, 'खरबूजा खरबूजे को देखकर रग पकडता है। बीवी बीवी को देखकर रग पकडती है, यह हम अभी आकर देखेगे। फिर वह मुझसे बोला, चलो मण्टो स्टूडियो मे तुम्हारे दोस्त को पकडें।'

चड्ढा कुछ ऐसी अफरा तफरी मचा दिया करता था कि दूसरों को सोचने समझने का बहुत कम मौका मिलता था। उसने मेरी बाह पकडी

और बाहर ले गया और मेरी बीवी सोचती ही रह गई। तांगे में सवार होकर अब चड्ढे ने कुछ सोचने के ढंग में कहा, 'यह तो हो गया, अब क्या प्रोग्राम है ?' फिर खिलखिलाकर हंसा, 'मम्मी ग्रेट मम्मी !'

मैं उससे पूछने ही वाला था कि यह मम्मी किस चिड़ीमार की औलाद है कि चड्ढे ने बातों का ऐसा सिलसिला शुरू कर दिया कि मेरा प्रश्न बेमौत मर गया।

तांगा वापस उस डाकबंगलेनुमा कोठी पर पहुंचा, जिसका नाम सईदा काटेज था, लेकिन चड्ढा उसको 'रजीदा काटेज' कहा करता था क्योंकि उसमें रहने वाले सबके सब रजीदा रहते हैं। हालांकि यह गलत था, जैसा कि मुझे बाद में मालूम हुआ।

उस काटेज में काफी आदमी रहते थे हालांकि ऊपरी ढंग से देखने में यह जगह बिलकुल गैरआबाद मालूम होती थी। सबके सब उसी फिल्म कम्पनी के नौकर थे, जो महीने की तनख्वाह हर तीन महीने बाद देती थी और वह भी कई किस्तों में। एक एक करके जब वहां के निवासियों से मेरा परिचय हुआ तो पता चला कि सबके सब असिस्टेण्ट डायरेक्टर थे कोई चीफ असिस्टेण्ट डायरेक्टर, कोई उसका सहायक और कोई उस सहायक का सहायक। हर दूसरा किसी पहले का सहायक था और अपनी निजी फिल्म कम्पनी की नींव डालने के लिए पैसा इकट्ठा कर रहा था। अपने पहनावे और हाव-भाव से हर कोई हीरो मालूम होता था। कण्ट्रोल का जमाना था, लेकिन किसीके पास राशन कार्ड नहीं था। वे चीजें भी, जो थोड़ी सी तकलीफ के बाद आसानी से कम कीमत पर मिल सकती थीं, ये लोग ब्लैक मार्केट से खरीदते थे। पिक्चर जरूर देखते थे, रेस का जमाना होता तो रेस खेलते थे, नहीं तो सट्टा। जीतते कभी कभार ही थे, लेकिन हारते हर रोज थे।

सईदा काटेज की आबादी बहुत घनी थी। चूंकि जगह कम थी, इसलिए मोटर गैरेज भी रहने के काम में लाया जाता था। उसमें एक फैमिली रहती थी। शीरीं नाम की एक स्त्री थी, जिसका पति शायद एकरूपता तोड़ने के लिए असिस्टेण्ट डायरेक्टर नहीं था। वह उसी फिल्म कम्पनी में नौकर था, लेकिन मोटर ड्राइवर था। मालूम नहीं वह कब आता था और

मच जाता था क्योंकि मैंने उस शरीफ आदमी को वहां कभी नहीं देखा। शीरी का एक छोटा-सा लड़का भी था जिसको गर्दिश काटेज के सभी निवासी फुरसत के समय प्यार करते। शीरी, जो काफी सुन्दर थी, अपना अधिकतर समय घर में गुजारती थी।

काटेज का सम्मानित भाग चड्ढा और उसके दो साथियों के पास था। ये दोनों भी एक्टर थे लेकिन हीरो नहीं थे। एक सईद था, जिसका फिल्मी नाम रजीतकुमार था। चड्ढा कहा करता था कि सईद काटेज उसी गधे के नाम से प्रसिद्ध है, अन्यथा उसका नाम 'रजीदा काटेज' ही था। वह काफी सुन्दर और कम गो था। चड्ढा कभी-कभी उसे कछुआ कहा करता था क्योंकि वह हर काम बहुत धीरे-धीरे करता था।

दूसरे एक्टर का नाम मालूम नहीं था, लेकिन सब उसे गरीबनवाज कहते थे। वह हैदराबाद के एक खाते-पीते घराने से सम्बन्ध रखता था और एक्टिंग के शौक में यहां चला आया था। तनख्वाह ढाई सौ रुपये माहवार मुकर्रर थी, लेकिन उसे नौकर हुए एक बरस हो गया था, और इस बीच उसने केवल एक बार ढाई सौ रुपये एडवांस के रूप में लिए थे—वह भी चड्ढा के लिए जिसे एक पठान की अदायगी करनी थी। ऊट-पटांग किस्म की भाषा में फिल्मी कहानियां लिखना उसका शगल था, और कभी-कभी वह शायरी भी कर लिया करता था। काटेज का हर आदमी उसका ऋणी था।

शकील और अकील दो भाई थे। दोनों किसी असिस्टैण्ट डायरेक्टर के असिस्टैण्ट थे और सबकी तरह अपनी फिल्म कम्पनी बनाने के लिए पैसे जुटाने के चक्कर में थे।

तीन बड़े यानी चड्ढा, सईद और गरीबनवाज शीरी का बहुत खयाल रखते थे, लेकिन तीनों कभी इकट्ठे गैरेज में नहीं जाते थे। हालचाल पूछने का उनका कोई समय भी निश्चित न था। तीनों जब काटेज के बड़े कमरे में इकट्ठे होते तो उनमें से एक उठकर गैरज में चला जाता और कुछ देर वहां बैठकर शीरी से घरेलू मामलों पर बातचीत करता रहता। बाकी दो अपने अपने काम में

जो असिस्टैण्ट किस्म   ेरी   थे।

कभी उसको बाजार से सौदा सटटा ला दिया, कभी लाण्ड्री मे उसके कपडे धुलने दे आए और कभी उसके रोते बच्चे को बहला दिया। उनमे से 'रजीदा कोई भी न था, सबके सब प्रसन्न थे। अपनी कठिन परिस्थितियो की चर्चा भी करते तो बडे उल्लास से। इसमे कोई सन्देह नही कि उनकी जिन्दगी बडी दिलचस्प थी।

हम काटज के गेट मे दाखिल होने जा रहे थे कि गरीबनवाज साहब बाहर आ रहे थे। चडढे ने उनकी ओर ध्यान से देखा और अपनी जेब मे हाथ डालकर नोट निकाले। बिना गिन उसने कुछ गरीबनवाज को दे दिए और कहा 'चार बोतलें स्काच की चाहिए, कमी आप पूरी कर दीजिएगा, बेशी हो तो मुझे वापस मिल जाए।'

गरीबनवाज के हैदराबादी होठो पर गहरी सावली मुस्कराहट आ गई। चडढा खिलखिलाकर हसा और मेरी ओर देखकर उसने गरीबनवाज से कहा, यह मिस्टर मण्टो है लेकिन इनसे तफसीली मुलाकात की इजाजत इस वक्त नहीं मिल सकती। यह रम पिए है। शाम को स्काच आ जाए तो लेकिन आप जाइए।

गरीबनवाज चला गया। हम अन्दर दाखिल हुए। चडढे ने एक जोर की जम्हाई ली और रम की बोतल उठाई, जो आधी से ज्यादा खाली थी। उसने रोशनी मे उसकी मात्रा का सरसरी तौर पर अनुमान लगाया और नौकर को आवाज दी, कजाकिस्तान के शहजादे।' जब वह न आया तो उसने अपने गिलास म एक बडा पेग डालते हुए कहा 'ज्यादा पी गया हू कम्बख्त।'

गिलास खत्म करते हुए वह कुछ चिन्तित हो गया, 'यार, भाभी को तुम ख्वाहमख्वाह यहा लाए। खुदा कसम, मुझे अपने सीने पर एक बोझ सा महसूस हो रहा है। फिर स्वय ही उसने अपने को धैर्य बधाया, 'लेकिन मेरा खयाल है कि वे बोर नही होगी वहा।'

मैंने कहा, 'हा, वहा रहकर वह मेरे कत्ल का जल्दी इरादा नही कर सकती।' यह कहकर मैंने अपने गिलास मे रम डाली, जिसका स्वाद बुझे हुए गुड जैसा था।

जिस कबाडखाने म हम बैठे थे, उसमे सलाखो वाली दो खिडकिया

वनक्तरे ने जवाब में कुछ कहना चाहा, लेकिन चड्ढे ने मेरी बाह पकड़कर कहना शुरू कर दिया, 'मण्टो—खुदा की कसम, क्या चीज है! सुना करते थे कि एक चीज प्लटीनम ब्लौण्ड भी होती है, मगर देखने का मौका कब मिला—बाल है, जैसे चादी के महीन-महीन तार ग्रेट खुदा की कसम मण्टो, बहुत ग्रेट मम्मी जिन्दाबाद!' फिर उसने क्रोधित नजरो से वनक्तरे की ओर देखा और कड़ककर कहा, 'वनकुतरे के बच्चे नारा क्यो नही लगाता मम्मी जिन्दाबाद!'

चड्ढे और वनक्तरे दोनो ने मिलकर 'मम्मी जिन्दाबाद!' के कई नारे लगाए। इसके बाद वनक्तरे ने चड्ढे के सवालो का फिर जवाब देना चाहा, लेकिन उसने उसे चुप करा दिया, 'छोड़ो यार मैं जज्बाती हो गया हू—इस वक्त यह सोच रहा हू कि आम तौर पर माशूकों के बाल काले होते हैं, जिन्हें काली घटा कहा जाता रहा है मगर यहा कुछ और ही मामला हो गया है। फिर वह मुझसे सम्बोधित हुआ, मण्टो, बड़ी गड़बड़ हो गई है, उसके बाल चादी के तारो जैसे है—चादी का रग भी नही कहा जा सकता—मालूम नही, प्लेटीनम का रग कैसा होता है, क्योकि मैंने अभी तक यह धातु देखी नही कुछ अजीब-सा ही रग है—फौलाद और चादी दोनो मिला दिए जाए '

वनक्तरे ने दूसरा पेग खत्म करते हुए कहा, 'और उसमे थोड़ी-सी थ्री एक्स रम मिक्स कर दी जाए।'

चड्ढे ने भिन्नाकर उसे एक बहुत ही मोटी गाली दी। ' बकवास न कर!' फिर उसने बड़ी दयनीय नजरो से मेरी ओर देखा। 'यार मैं सचमुच जज्बाती हो गया हू हा वह रग खुदा की कसम, लाजवाब रग है यह तुमने देखा है वह, जो मछलियो के पेट पर होता है नही-नही, हर जगह होता है—पोमफ्रेट मछली उसके वे क्या होते हैं? नहीं नहीं, सापो के वे नन्हे नन्हे खपरे हा, खपरे बस, उनका रग खपरे यह शब्द मुझे एक हिन्दुस्तोड़े ने बताया था इतनी खूबसूरत चीज और ऐसा भाड़ा नाम पजाबी मे हम इन्हे चाने कहते हैं। इस शब्द मे चिनचिनाहट है वही, बिलकुल वही, जो उसके बालो मे है। लटें नन्ही-नन्ही सपोलिया मालूम होती हैं, जो लोट लगा रही हो ।' वह

थी, जिनसे बाहर का खाली खाली सा भाग नजर आता था। इधर स किसी ने चड्ढे का नाम लेकर जोर स पुकारा। मैं च‚क पडा और देखा कि म्यूजिक डायरेक्टर वनकतरे हैं। कुछ समझ म नहीं आता था कि वह किस नस्ल का है। मगोल है हब्शी है आय है या क्या बला है। कभी कभी उसके किसी नखशिख को देखकर आदमी किसी परिणाम पर पहुचन ही वाला होता था कि उसके बदले मे कोई ऐसा चिह्न नजर आ जाता कि तुरत ही नये सिरे से विचारकरना पड जाता। वैस वह मराठा था, लेकिन शिवाजी की तीखी नाक के बजाय उसके चेहरे पर बड आश्चयजनक ढग से मुडी हुई चपटी नाक थी जो उसके विचारानुसार उन सुरो के लिए बहुत जरूरी थी, जिनका सीधा सम्ब ध नाक से होता है। उसने मुझे देखा तो चिल्लाया 'मण्टो—मण्टो सेठ!

चडढे ने उससे ज्यादा ऊची आवाज मे कहा, 'सेठ की ऐसी तैसी—चल, अदर आ!

वह तुरत अदर आ गया। अपनी जेब से उसन हसते हुए रम की एक बोतल निकाली और तिपाई पर रख दी मैं साला उधर मम्मी के पास गया। वह बोला—तुम्हारा फरेण्ड आए ला मैं बोला—साला यह फरण्ड कौन होन को सकता साला मालूम न था साला मण्टो है!

चडढे न वनकतरे के कद्दू ऐस सिर पर एक धौल जमाई 'अब चुप कर साले तू रम ले आया बस ठीक है।' वनकतरे न अपना सिर सहलाया और मरा खाली गिलास उठाकर अपन लिए पेग बनाया, 'मण्टो यह साला आज मिलत ही कहन लगा—आज पीन को जी चाहता है मैं एक दम कडका सोचा, क्या करू'

चडढे न एक और धप्पा उसके सिर पर जमाया, बैठ ब जस तूने सच मुच ही कुछ सोचा होगा।

'सोचा नही तो साला यह इतनी बटी बाटली कहा से आया—तर बाप न दिया?' वनकतर न एक ही घूट म रम खत्म कर दी। चडढे न उसकी बात सुनी अनसुनी कर दी और उसन पूछा, तू यह ता बता कि मम्मी क्या बोली?—बोली थी कि मोजेल कब आएगी? अर हा वह प्लटीनम ब्लौण्ड।

वनक्तरे ने जवाब म कुछ कहना चाहा लेकिन चडढे ने मेरी बाह पकडकर कहना शुरू कर दिया, 'मण्टो—खुदा की कसम, क्या चीज है ! सुना करते थे कि एक चीज प्लेटीनम ब्लौण्ड भी होती है, मगर देखने का मौका कल मिला—बाल हैं, जैसे चादी के महीन महीन तार ग्रेट खुदा की कसम मण्टो, बहुत ग्रेट मम्मी जिन्दाबाद !' फिर उसने क्रोधित नजरो से वनक्तरे की ओर देखा और कडककर कहा, 'वनकुतरे के बच्चे नारा क्यो नही लगाता मम्मी जिन्दाबाद !'

चडढे और वनकतरे दोनो ने मिलकर 'मम्मी जिन्दाबाद !' के कई नारे लगाए। इसके बाद वनक्तरे ने चडढे के सवालो का फिर जवाब देना चाहा, लेकिन उसने उसे चुप करा दिया, 'छोडो यार मैं जज्बाती हो गया हू—इस वक्त यह सोच रहा हू कि आम तौर पर माशूका के बाल काले होते हैं, जिन्हें काली घटा कहा जाता रहा है मगर यहा कुछ और ही मामला हो गया है।' फिर वह मुझसे सम्बोधित हुआ, मण्टो, बडी गडबड हो गई है, उसके बाल चादी के तारो जैसे हैं—चादी का रग भी नही कहा जा सकता—मालूम नही, प्लेटीनम का रग कैसा होता है, क्यो कि मैंने अभी तक यह धातु देखी नही कुछ अजीब-सा ही रग है—फौलाद और चादी दोनो मिला दिए जाए '

वनकतरे ने दूसरा पेग खत्म करते हुए कहा, 'और उसमे थोडी सी थ्री एक्स रम मिक्स कर दी जाए।'

चडढे ने भिन्नाकर उसे एक बहुत ही मोटी गाली दी। ' बकवास न कर !' फिर उसने बडी दयनीय नजरो से मेरी ओर देखा। यार मैं सचमुच जज्बाती हो गया हू हा वह रग खुदा की कसम, लाजवाब रग है वह तुमने देखा है वह, जो मछलियो के पेट पर होता है नही-नहा, हर जगह होता है—पोमफ्रेट मछली उसके वे क्या होते हैं ? नही-नही सापो के व नन्हे नन्हे खपरे हा, खपरे बस, उनका रग खपरे यह शब्द मुझे एक हिन्दुस्तोडे ने बताया था इतनी खूबसूरत चीज और ऐसा भोडा नाम पजाबी मे हम इन्हे चाने कहते हैं। इस शब्द म चिनचिनाहट है वही, बिलकुल वही, जो उसके बालो मे है। लटें नन्ही-नन्ही सपोलिया मालूम होती हैं, जो लोट लगा रही हो ।' वह

एकदम उठा। 'सवालियों की ऐसी तसी ! मैं अज्ञानी हो गया हू।'

वनक्तर ने बड़े भोलेपन से पूछा, यह क्या होता है ?'

'मण्टीमटल' चड्ढे ने जवाब दिया, 'लेकिन तू क्या समझेगा सालाजी बाजीराव और नाना फड़नवीस की औलाद !'

वनक्तर ने अपने लिए एक और पग बनाया और मुझसे सबोधित होकर कहा यह साला चड्ढा समझता है कि मैं इगलिश नहीं समझता हू। मैट्रीक्यूलेट हू साला मेरा बाप मुझसे बहुत मोहब्बत करता था उसने ।'

चड्ढे ने चिढ़कर कहा, 'उसने तुझे तानसेन बना दिया और तेरी नाक मरोड़ दी ताकि निखाड़े सुर आसानी से तेरी नाक से निकल सकें। बचपन में ही उसने तुझे ध्रुपद गाना सिखा दिया था और दूध पीने के लिए तू मियां की टोडी में रोया करता था और पेशाब करते वक्त अड़ाना में, और तूने पहली बात पटदीप में की थी और तेरा बाप जगत उस्ताद था बजू बावर के भी कान काटता था और तू आज उसके कान काटता है इसलिए तेरा नाम कनकुतर है।' इतना कहकर वह मेरी ओर मुड़ा, मण्टो यह साला जब भी पीता है, अपने बाप की तारीफ शुरू कर देता है। वह इससे मोहब्बत करता था तो मुझपर उसने क्या एहसान किया और उसने इस मटीक्यूलेट बना दिया तो इसका यह मतलब नहीं कि मैं अपनी बी० ए० की डिग्री फाड़कर फेंक दू।'

वनक्तर ने इस बौछार पर आपत्ति प्रकट करनी चाही, मगर चड्ढे ने उसे वहीं दबा दिया, 'चुप रह मैं कह चुका हू कि मैं सेण्टीमण्टल हो गया हू हा, वे रग पोमफ्रेट मछली के नहीं नहीं साप के नन्हे नन्हे सपरे उस इलीका रग मम्मी ने खुदा जाने अपनी बीन पर कौन सा राग बजाकर उसे नागिन को बाहर निकाला है।'

वनक्तर सोचने लगा। पेटी मगाओ, मैं बजाता हू।

चड्ढा खिलखिलाकर हसने लगा, बैठ वे मट्रीक्यूलेट के चाकुलेट !' उसने रम की बोतल में से बची हुई रम को अपने गिलास में उडेल लिया और मुझसे कहा, 'मण्टो, अगर वह प्लेटीनम ब्लोण्ड न पटी तो चड्ढा हिमालय पहाड़ की किसी चोटी पर धूनी रमाकर बैठ जाएगा। और

उसने गिलास खाली कर दिया ।

कनवतर ने अपनी लाई हुई बोतल खोलनी शुरू की ।' मण्डा, मुलगी[1] एकदम चांगली[2] है ।

मैंने कहा 'देख लेंगे ।'

'आज ही आज रात मैं एक पार्टी दे रहा हूँ । यह बहुत ही अच्छा हुआ कि तुम आ गए और श्री एक सौ आठ मेहताजी ने तुम्हारी वजह से एड वांस दे दिया नहीं तो बड़ी मुश्किल हो जाती आज रात आज की रात ' चड्ढे ने बड़े भाड़े सुरों में गाना शुरू कर दिया, 'आज की रात साजे दर्द न छेड़ ।'

बेचारा कनवतर उसकी इस ज्यादती पर एक बार फिर आपत्ति करने ही वाला था कि तभी गरीबनवाज और रजीतकुमार आ गए । दोनों के पास स्काच की दो दो बोतलें थीं । वे उन्होंने मेज पर रख दीं ।

रजीतकुमार से मेरे अच्छे-खासे सम्बन्ध थे, लेकिन बेतकल्लुफी नहीं थी, इसलिए हम दोनों ने थोड़ी सी 'आप कब आए ?' 'आज ही आया ऐसी रस्मी बातें कीं और गिलास टकराकर पीने लग गए ।

चड्ढा वाकई बहुत जज्बाती हो गया था । हर बात में उस प्लेटीनम ब्लोण्ड का जिक्र ले आता था । रजीतकुमार दूसरी बोतल का चौथाई हिस्सा चढ़ा गया था । गरीबनवाज ने स्काच के तीन पग पिए थे । नशे के मामले में उन सबकी हालत अब तक एक जैसी थी । मैं चूंकि ज्यादा पीने का आदी हूँ, इसलिए मैं ज्यों का त्यों बैठा था । उनकी बातचीत से मैंने अन्दाजा लगाया कि वे चारों उस नई लड़की पर बहुत बुरी तरह मर मिटे थे, जो मम्मी ने कहीं से पैदा की थी । इस अमूल्य मोती का नाम फिलिस था । पूना में कोई हेयर ड्रेसिंग सलून था, जहां वह नौकरी करती थी । उसके साथ आम तौर पर एक हिजड़ा सा लड़का रहा करता था । लड़की की उम्र चौदह-पन्द्रह वर्ष के करीब थी । गरीबनवाज तो यहां तक उस पर गर्म था कि वह हैदराबाद में अपने हिस्से की जायदाद बेचकर भी उसके दांव पर लगाने के लिए तैयार था । चड्ढे के पास तुरुप का केवल

---

1 लड़की 2 अच्छी

एक पत्ता ना, अपनी सुन्दरता। वनक्नर का विचार था कि उसकी पेटी सुन वह परी जरूर शीशे मे उतर आएगी, और रजीनकुमार जोर जबर दस्ती को ही कारगर समझता था लेकिन सब अन्त म यही सोचते थे कि देखिए, मम्मी किसपर कृपा करती है। इससे मालूम होता था कि उस प्लेटीनम नौण्ड फिलिस को वह स्त्री, जिसे मैंने चड्ढे क साथ तांगे म देखा था, किसीके भी हवाले कर सकती थी।

फिलिम की बातें करन करत चड्ढे न अचानक अपनी घडी देखी और मुझसे कहा, 'जहन्नुम मे जाए यह छोकरी, चलो यार भाभी वहा कबाब हो रही होगी—लेकिन मुसीबत यह है कि मै वहा भी कही सेण्टी-मेण्टल न हो जाऊ खैर, तुम मुझे सभाल लेना।' अपने गिलास की कुछ आखिरी बूदें अपने कण्ठ म टपकाकर उसने नौकर को आवाज दी, 'ममिया के मुल्क मिस्र के शहजादे।'

ममियो क मुल्क मिस्र का शहजादा इस तरह आखें मलता वहा आया, जैसे उसे सदियों के बाद खोदकर बाहर निकाला गया हो। चड्ढे ने उसके मुह पर रम के छीटे मारे और कहा 'दो अदद तागे लाओ जो मिस्र के रथ मालूम हो।

तागे आ गए। हम सब उनपर लदकर प्रभातनगर के लिए चल पडे। मेरा पुराना फिल्मी का साथी हरीश घर पर मौजूद था। इतनी दूर स्थित स्थान पर रहने क बावजूद उसने मेरी बीवी की खातिरदारी मे कोई कसर नही उठा रखी थी। चड्ढे ने आख के इशारे से उसे सारा मामला समझा दिया था अतएव वह बहुत हितकर साबित हुआ। मेरी बीवी ने अपना व्यक्त नही किया। उसका समय वहा कुछ अच्छा ही बीता था। हरीश न जो स्त्रियों की प्रकृति का अच्छा जानकार था बडी मजेदार बातें की और अन्त म मेरी बीवी स प्रार्थना की कि वह उसकी शूटिंग देखने चले जो उस दिन होन वाली थी। मेरी बीवी ने पूछा, 'कोई गाना फिल्मा रहे है आप ?

हरीश न जवाब दिया जी नहीं, वह कल का प्रोग्राम है—मेरा खयाल है, आप कल चलिएगा।

हरीश की बीवी शूटिंग देख देखकर और दिखा दिखाकर तग आई

हुई थी। उसने तुरन्त मेरी बीवी से कहा, 'हां कल ठीक रहेगा।' फिर मक्की ग्रोर देखकर बोली, 'ग्राज इन्हें सफर की थकान भी है।'

हम सबने सन्तोष की सांस ली। हरीश ने फिर कुछ देर तक मजेदार बातें कीं, अन्त में मुझसे कहा, 'चलो यार, तुम चलो मेरे साथ,' फिर मेरे तीन साथियों की ग्रोर देखा, 'इनको छोड़ो सेठ साहब तुम्हारी कहानी सुनना चाहते हैं।'

मैंने बीवी की ग्रोर देखा ग्रौर हरीश से कहा, 'इनसे इजाजत ले लो।'

मेरी भोली भाली बीवी जाल में फंस चुकी थी। उसने हरीश से कहा, 'मैंने बम्बई से चलते वक्त इनसे कहा भी था कि अपना डाक्यूमेण्ट केस साथ ले चलिए लेकिन इन्होंने कहा, कोई जरूरत नहीं। अब ये कहानी क्या सुनाएंगे?'

हरीश ने कहा, 'जबानी सुना देगा।' फिर उसने मेरी ग्रोर यों देखा, जैसे कह रहा हो कि जल्दी हां कहो।

मैंने धीमे से कहा 'हां, ऐसा हो सकता है।'

चड्ढे ने उस ड्रामे में अन्तिम टच दिया, 'तो भई हम चलते हैं।' ग्रौर वे तीनों सलाम-नमस्ते करके चले गए। थोड़ी देर के बाद मैं ग्रौर हरीश निकले। प्रभातनगर के बाहर तांगा खड़े थे। चड्ढे ने हमें देखा ग्रौर जोर का नारा लगाया, 'राजा हरीशचन्द्र की जय!'

शाम को हमारी महफिल जमी मम्मी के घर।

यह भी एक काटेज थी—शक्ल सूरत ग्रौर बनावट में सईद काटेज जैसी, मगर बहुत साफ सुथरी जिससे मम्मी के सलीके का पता चलता था। फर्नीचर मामूली था लेकिन जो चीज जहां थी सजी हुई थी। मैंने सोचा था कि मम्मी का घर कोई वेश्यालय होगा, लेकिन उस घर की किसी चीज में भी नजरों को ऐसा सन्देह नहीं होता था। वह वैसा ही शरीफाना था, जैसा कि एक मध्यम वर्ग के ईसाई का होता है। लेकिन मम्मी की उम्र के मुकाबले में वह कुछ जवान-जवान-सा दिखाई देता था। उसपर वह मेकअप नहीं था जो मैंने मम्मी की झुर्रियों वाले चेहरे पर देखा था। जब मम्मी ड्राइंग रूम में ग्राई तो मैंने सोचा कि इर्द गिर्द की

जितनी चीज़ें हैं, वे ग्राज की नहीं बहुत वर्षों की हैं केवल मम्मी ग्राग निकलकर बूढ़ी हो गई है ग्रौर वे वसी की वैसी पड़ी रही हैं—उनकी जो उम्र थी, वह वही की वही रही है लेकिन जब मैंने उसके गहर ग्रौर शोख मेकग्रप की ग्रोर देखा तो मेरे दिल म न जाने क्या, यह इच्छा पदा हुई कि वह भी ग्रपने इद गिद के वातावरण की तरह पूरी तरह जवान बन जाए।

चड्ढे ने उससे मेरा परिचय कराया जो बहुत सक्षिप्त था ग्रौर फिर सक्षेप म ही उसन मुझम मम्मी के बारे म यह कहा, 'यह मम्मी है दी ग्रेट मम्मी ।'

मम्मी ग्रपनी प्रशसा सुनकर मुस्करा दी ग्रौर मरी तरफ देखकर उसने चड्ढे से ग्रग्रेजी मे कहा, तुमने जो चाय मगवाई थी वह बहुत जल्दी मे बनी थी वह शायद इन्हे पसन्द न ग्राइ हो। फिर उसने मेरी ग्रार मुड़कर कहा मिस्टर मण्टो मैं बहुत शर्मिन्दा हू। ग्रसल मे सारा कुसूर तुम्हारे दोस्त चड्ढे का है, जो मेरा बेहद बिगड़ा हुग्रा लड़का है।'

मैंने उचित शब्दो मे चाय की प्रशसा का ग्रौर उसको धन्यवाद दिया। मम्मी ने मुझे बेकार की तारीफ न करने के लिए कहा ग्रौर फिर चड्ढे से बोली, रात का खाना तैयार है यह मैंने इसलिए किया कि तुम एन वक्त के वक्त मेरे सिर पर सवार हो जाग्रोगे ।'

चड्ढे ने मम्मी को गले से लगा लिया, यू ग्रार ए ज्यूल मम्मी ' यह खाना ग्रब हम खाएगे।'

मम्मी ने चौंककर पूछा, 'क्या ? नहीं हरगिज नहीं।' चड्ढे ने उसे बताया मिसेज मण्टो को हम प्रभातनगर छोड़ ग्राए हैं।

मम्मी चिल्लाई 'खुदा तुम्हे गारत करे यह तुमने क्या किया !' चड्ढा खिलखिलाकर हसा, 'ग्राज पार्टी जो होने वाली थी।

वह तो मैंने मिस्टर मण्टो की दावत ही ग्रपने दिल म कैंसिल कर दी थी। मम्मी ने ग्रपना सिगरेट सुलगाया।

चड्ढे का दिल डूब गया। खुदा ग्रब तुम्हे गारत करे ग्रौर यह सब प्लान हमने इस पार्टी के लिए बनाया था। वह कुर्सी पर रजीदा सा होकर बैठ गया ग्रौर कमरे के कण कण म सम्बोधन कर कहने लगा 'लो,

सार मपन मलियामेट हो गए प्लेटीनम ब्लोण्ड ग्रौधे साप के न ट्-न्ह् नपरा जैसे रग वाली । एकदम उठकर उसने मम्मी को बाहो से पकड लिया, कमिन की थी—ग्रान दिल मे कौंसिल की थी ना लो, उस पर माद (मही का चिह्न) बना देता हू।' ग्रौर उसन मम्मी के दिल की जगह पर उगली से बहुत बडा माद बना दिया ग्रौर ऊची ग्रावाज म पुकारा 'हुर्रे!'

मम्मी सर्म्बधित लोगो को सूचना भेज चुकी थी कि पार्टी कसिल हो चुकी है। लेकिन मैंन महमूस किया कि वह चडढे का दिल तोडना नही चाहती थी। इसलिए उमन बडे लाड म उसके गाल थपथपाए ग्रौर कहा 'तुम फिक्र न करो, मैं ग्रभी इतजाम करती हू।'

वह इतजाम करन बाहर चली गई। चडढे न खुशी का एक ग्रौर नारा लगाया ग्रौर वनकतर स कहा, 'जनरल वनकतर, जाग्रो, हेडक्वा-टर स सारी तोपें ले ग्राग्रो।'

वनकतर ने सैल्यूट किया ग्रौर ग्राज्ञा पालन के लिए चला गया। सईद काटज बिल्कुल पास थी। दस मिनट के ग्रन्दर ग्रन्दर वह बोतलें लेकर वापस ग्रा गया। उसके साथ चडढे का नौकर था। चड्ढे न उसको देखा तो उनका स्वागत किया, 'ग्राग्रो, ग्राग्रो, मेरे कोहकाफ के शहजाद वह वह साद के खपरा जस रग के वालो वाली छोकरी ग्रा रही है तुम भी किस्मत ग्राजमाई कर लेना।'

रजीतकुमार ग्रौर गरीबनवाज को चडढे का इस प्रकार का निमत्रण ग्रच्छा न लगा। दोनो न मुझसे कहा कि यह चडढे की बहुत बेहूदगी है। इस बहूदगी को उन्होन बहुत महसूस किया था। चड्ढा नियमानुसार ग्रपनी हाकता रहा ग्रौर वे चुपचाप एक कोने म बठे धीरे धीरे रम पीकर एक दूसर से ग्रपन सुख दुख की बातें करत रह।

मैं मम्मी के सम्बन्ध म सोचता रहा। ड्राइगरूम म गरीबनवाज, रजीतकुमार ग्रौर चडढा बठे थे। ऐसा लगता था कि ये छोटे छोट बच्चे बैठे है ग्रौर इनकी मा बाहर खिलौन लेन गई है। य सब इतजार मे हैं। चड्ढा सन्तुष्ट है कि सबसे ग्रच्छा खिलौना उस मिलेगा, इसलिए कि वह ग्रपनी मा का चहेता है। बाकी दो का दुख चूकि एक जैसा था, इसलिए

वे एक दूसरे के हितैषी बन गए थे शगत्र इस वातावरण मे दूध मालूम होती थी और वह प्लटीनम ब्लौण्ड उसकी कल्पना दिमाग मे एक छोटी सी गुडिया के रूप मे आती थी हर वातावरण का अपना एक विशेष सगीत होता है। उस समय जो सगीत मेरे दिल के कानो तक पहुच रहा था, उसमे कोई सुर उत्तेजक नही था। हर चीज मा और उसके बच्चो के परस्पर सम्बन्धो की तरह स्पष्ट थी।

मैंने जब उसको ताग मे चड्ढे के साथ देखा था तो मुझे धक्का सा लगा था। मुझे अफसोस हुआ कि मेरे दिल मे उन दोनो के सबध म बुरे विचार पैदा हुए, लेकिन यह चीज मुझे बार-बार सता रही थी कि वह इतना गहरा मेकअप क्यो करती है जो उसकी झुरियो की तौहीन है। उस ममता का अपमान है, जो उसके दिल मे चड्ढा गरीबनवाज और बनक्तर के लिए मौजूद है और खुदा जाने और किस किसके लिए

बातो बातो मे मैंने चड्ढे से पूछा, यार, यह तो बताओ कि तुम्हारी मम्मी इतना शोख मेकअप क्यो करती है ?

'इसलिए कि दुनिया हर शोख चीज को पसन्द करती है—तुम्हारे और मेरे जैसे उल्लू इस दुनिया मे बहुत कम बसते है, जो मद्धिम सुर और मद्धिम रग पसन्द करते हैं। जो जवानी को बचपन के रूप मे नही देखना चाहते और और जो बुढापे पर जवानी की टीपटाप पसन्द नही करते हम जो खुद को कलाकार कहते हैं उल्लू के पट्ठे हैं मैं तुम्हे एक दिलचस्प घटना सुनाता हू बैसाखी का मेला था तुम्हारे अमृतसर म राम बाग के उस बाजार मे, जहा टकइया (वेश्याएं) रहती थी—जाट गुजर रहे थे एक तन्दुरुस्त जवान ने खालिस दूध और मक्खन पर पले जवान ने, जिसकी नई जूती उसकी लाठी पर बाजीगरी कर रही थी ऊपर एक कोठे की ओर देखा, जहा एक टकइ की तेल मे भीगी हुई जुल्फ उसके माथे पर बडे बदसूरत ढग म जमी हुई थी। उसने अपने साथी की पसलियो मे टहोका देकर कहा 'ओए लहनासिया वेख, ओए ऊपर वेख, असी ते पिण्ड विच मझाई । अन्तिम शब्द चड्ढा ने न जाने क्या गोल कर दिया। हालाकि वह किसी प्रकार की शिष्टता का कायल नही था।

फिर वह खिलखिलाकर हसने लगा और मेरे गिलास म रम डालकर बोला, "उस जाट के लिए वह तुडल ही उस वक्त कोहकाफ की परी थी और उसके गाव की सुदर और स्वस्थ मुटियारें बेडौल भसें हम सब चुगद हैं दर्मियाने दर्जे के इसलिए कि इस दुनिया मे कोई चीज अव्वल दर्जे की नही तीसर दर्जे की है या र्दमियान दर्जे की लेकिन लेकिन फिलिस खासुलखास दर्जे की चीज है वह माप के खपरो ।'

वनक्तर न अपना गिलास उठाकर चडढे के सिर पर उडेल दिया। 'खपर खपरे तुम्हारा भेजा फिर गया है।'

चडढे न माथे पर म रम की टपकती वदें चाटनी शुरू कर दी और वनक्तरे से कहा, 'ले अब सुना तरा बाप साला तुमस कितनी मोहब्बत करता था मेरा दिमाग अब काफी ठण्डा हो गया है।

वनक्तरे बहुत गम्भीर होकर मुझम बोला, बाई गाड वह मुझसे बहुत मोहब्बत करता था मैं फिफ्टीन ईयर का था कि उमन मरी शादी बना दी।'

चडढा जोर से हसा, 'तुम्ह कार्टून बना दिया उस साले ने भगवान उस स्वग मे भी केसरियल की पटी द कि वहा भी उस बजा बजाकर वह तुम्हारी शादी के लिए कोई खूबसूरत हूर ढूढ़ता रह। और तुम्हारी खबसूरत बीवी की ऐसी तैसी इस वक्त फिलिस की बात करो उसस ज्यादा और कोई खूबसूरत नही हो सकता।' चडढे न गरीबनवाज और रजीतकुमार की ओर देखा, जो कोने मे बैठे फिलिस के सौन्दय पर अपनी राय एक दूसर पर प्रकट करन वाले थ। 'गन पाउडर प्लाट के बानियो सुन लो, तुम्हारी कोई साजिश कामयाब नही हो सकती—मैदान चडढे के हाथ मे रहेगा क्या वेल्ज के शहजाद ?'

वेल्ज का शहजादा रम की खाली होती हुई बोतल की तरफ हसरत भरी नजरो से देख रहा था। चड्ढे ने कहकहा लगाया और उसको आधा गिलास भरकर दे दिया। 'गरीबनवाज और रजीतकुमार एक दूसरे से फिलिस के बारे मे घुल मिलकर बातें तो कर रहे थे, लेकिन अपन दिमाग मे उसको प्राप्त करने के लिए प्रोग्राम अलग अलग बना रहे थे। यह उनकी बातचीत के ढग मे प्रकट होता था।

ड्राइगरूम मे अब बिजली के बल्ब जल रहे थ, क्योकि शाम गहरी हो
चली थी। चड्ढा मुझे बम्बई की फिल्म इण्डस्ट्री के ताजे समाचार सुना
रहा था कि बाहर बरामद म मम्मी की तेज आवाज सुनाई दी। चड्ढे
ने नारा लगाया और बाहर चला गया। गरीबनवाज ने रजीतकुमार की
ओर अर्थपूर्ण नजरो से देखा। फिर दोनो दरवाजे की ओर देखने लगे।

मम्मी चहकती हुई अन्दर दाखिल हुई। उसके साथ चार पाच ऐंग्लो-
इण्डियन लडकिया थी। विभिन्न प्रकार क 'नख शिख और कद काठ की—
पोली, डोली, किटी एल्मा और थैलिमा और वह हिजडा सा लडका
उसे सिसी कहकर पुकारता था। फिलिस सबसे पीछे आई और वह
भी चड्ढे के साथ। उसकी एक बाह प्लेटीनम ब्लोण्ड की पतली कमर
के पीछे लगी थी। मैंने गरीबनवाज और रजीतकुमार की प्रतिक्रिया नोट
की। उनको चड्ढे की यह दिखावटी विजयी हरकत पसन्द न आइ थी।

लडकियो के भीतर आते ही शोर मच गया। एकदम इतनी अग्रेजी
बरसी कि वाक्तरे मैट्रीक्यूलेशन परीक्षा मे कई बार फेल हुआ। लेकिन
उसने कोई परवाह न की और बराबर बोलता रहा। जब किसीने उसका
नोटिस न लिया तो वह एलिमा की बडी बहन थैलिमा के साथ एक सोफे
पर अलग बैठ गया और पूछन लगा कि उसने हिन्दुस्तानी डास के और
कितने नये तोड सीखे है-—वह इधर 'धा नी ता कत ता थई थई' की बन,
टू, थ्री बना बनाकर उसके तोडे बना रहा था उधर चड्ढा बाकी लड-
कियो के झुरमुट म अग्नी के नगे नगे मजाक सुना रहा था, जो उस
हजारो की सख्या म जबानी याद थे। मम्मी सोडे की बोतलें और खाने-
पीने का सामान मगवा रही थी। रजीत कुमार सिगरेट के कश लगाकर
टकटकी बाधे फिलिस की ओर देख रहा था और गरीबनवाज मम्मी से
बार-बार कहता था कि रुपये कम हो तो वह उसमे ले ले।

स्काच खुली और पहला दौर शुरु हुआ। फिलिस को जब शामिल
होने के लिए कहा गया तो उसने अपने प्लेटीनमी बालो का एक हल्का-
सा झटका देकर मना कर दिया कि वह ह्विस्की नहीं पिया करती।
सबने मिन्नत-खुशामद की, लेकिन वह न मानी। चड्ढे न इसपर
दुख प्रकट किया तो मम्मी ने एक हलका-सा पैग तैयार करके गिलास

को फिलिम के होठो से लगाते हुए बडे दुलार से कहा, 'बहादुर लडकी बनो और पी जाओ।'

फिलिम इनकार न कर सकी। चड्ढा खुश हो गया और उसने इसी खुशी मे बीस पच्चीस और नगे मजाक सुना दिए। सब मजे लेते रहे। मैंने सोचा, आदमी ने नग्नता से तग आकर वस्त्र पहनने शुरू किए होंगे। यही कारण है कि अब वह वस्त्रो से उकताकर कभी कभी नग्नता की ओर दौडने लगता है। शिष्टता की प्रतिक्रिया निस्सन्देह अशिष्टता है। इस पलायन का एक दिलचस्प पहलू भी है। आदमी को इससे एक निरतर एकरसता के कष्ट से कुछ क्षणो के लिए मुक्ति मिल जाती है।

मैंने मम्मी की ओर देखा, जो उन जवान लडकियो मे घुलमिलकर चड्ढे के नगे नग मजाक सुनकर हस रही थी और कहकहे लगा रही थी। उसके चेहरे पर बडी वाहियात मेकअप था। उसके नीचे उसकी झुर्रिया साफ नजर आ रही थीं। मगर वह भी उल्लसित थी मैंने सोचा, आखिर लोग क्या पलायन को बुरा समझते हैं वह पलायन, जो मेरी आखो के सामने था। उसका बाह्य रूप यद्यपि सुन्दर न था, लेकिन भीतर बहुत सुदर था उसपर कोई बनाव श्रृगार न था। कोई गाजा, कोई उबटना नही था। पाली थी, वह एक कोने मे रजीतकुमार के साथ खडी अपने नये फ्राक के बारे मे बातचीत कर रही थी और उसे बता रही थी कि सिर्फ अपनी होशियारी से उसने बडे सस्ते दामो पर उम्दा चीज तैयार करा ली है। दो टुकडे थे, जो बिलकुल बेकार मालूम पडते थे, मगर अब वे एक सुदर पोशाक मे बदल गए थे। और रजीतकुमार बडी गम्भीरता के साथ उसको दो नये ड्रेस बनवा देने का वायदा कर रहा था, हालाकि उसे फिल्म कम्पनी से इतने रुपये इकट्ठे मिलने की कोई आशा न थी। डाली थी, वह गरीबनवाज से कुछ कर्ज मागने की कोशिश कर रही थी और उसको विश्वास दिला रही थी कि दफ्तर से तनख्वाह मिलने पर वह यह कर्ज जरूर अदा कर देगी। गरीबनवाज को पूरी तरह मालूम था कि वह यह रुपया नियमानुसार कभी वापस नही देगी, लेकिन वह उसके वायदे पर एतबार किए जा रहा था। थलिमा वनकतरे से ताण्डव नाच के बडे मुश्किल तोडे सीखने की कोशिश कर रही थी। वाकतरे को मालूम था

कि सारी उम्र उसके पैर कभी उसके भाव अदा नहीं कर सकेंगे, लेकिन वह उसको बताए जा रहा था। थलिमा भी अच्छी तरह जानती थी कि वह बेकार अपना और वनवतरे का समय बरबाद कर रही है मगर वह बड़ी लगन और तन्मयता से पाठ याद कर रही थी। एलिमा और विटी दोनों पिए जा रही थी और आपस मे किसी ऐसे आदमी की बातचीत कर रही थी, जिसने पिछली रेस मे खुदा जाने कब का बदला लेने के लिए गलत टिप दी थी। और चड्ढा फिलिस के कपरे ऐसे रग के बालो को पिघले हुए सोने के रग की स्काच मे मिला मिलाकर पी रहा था। फिलिस का हिजड़ा-सा दोस्त बार-बार जेब से कघी निकालता था और अपने बाल सवारता था। मम्मी कभी इससे बात करती थी, कभी उससे, कभी सोडा खुलवाती, कभी टूटे हुए गिलास के टुकडे उठवाती उसकी नजर सबपर थी, उस बिल्ली की तरह जो देखने मे तो अपनी आखें बन्द किए सुस्ता रही होती है, लेकिन उसको मालूम होता है कि उसके पाचो बच्चे कहा कहा है और क्या-क्या शरारत कर रहे हैं।

इस दिलचस्प चित्र म कौन सा रग, कौन सी रेखा गलत थी? मम्मी का वह भड़कीला और शोख मेकअप भी ऐसा मालूम होता था कि उस चित्र का एक आवश्यक अग है।

गालिब कहता है

कैदे हयात ओ बन्दे-गम[1] अस्ल मे दोनों एक हैं,
मौत से पहले आदमी गम से निजात[2] पाए क्यो?

कैदे हयात और बन्दे-गम जब वास्तव मे एक ही हैं तो यह क्या जरूरी है कि आदमी मौत से पहले थोडी देर के लिए निजात हासिल करने की कोशिश न करे? इस निजात के लिए कौन यमराज का इन्तजार करे क्यो आदमी थोडे-से क्षणो के लिए आत्मप्रवचना के दिलचस्प खेल मे भाग न ले?

मम्मी हर किसीकी प्रशसा करना जानती थी। उसके सीने म ऐसा दिल था, जिसम उन सबके लिए ममता था। मैंने सोचा, शायद इसलिए

1 जीवनरूपी कैद तथा गम की पकड 2 मुक्ति

उसने अपने चेहरे पर रग मल लिया है कि लोगो को उसकी वास्तविकता का ज्ञान न हो उसमे शायद इतनी शारीरिक शक्ति नही थी कि वह हर किसीकी मा बन सकती और इसीलिए उसने अपनी ममता और स्नेह के लिए कुछ व्यक्ति चुन लिए थे और शेष सारी दुनिया को छोड दिया था।

मम्मी को मालूम नही था कि चड्ढा एक तगडा पेग फिलिस को पिला चुका था। चोरी छिप नही, सबके सामने, मगर मम्मी उस समय बावर्चीखाने मे पोटैटो चिप्स तल रही थी अब फिलिस नशे मे थी, और जिस तरह उसके पालिश किए हुए फौलाद के रग के बाल धीरे धीरे लहराते थे, उसी तरह वह स्वय भी लहरा रही थी।

रात के बारह बज चुके थे। बनकतरे थलिमा को तोडे सिखा सिखाकर थक जाने के बाद अब बता रहा था कि उसका बाप माला उससे बहुत मोहब्बत करता था। बचपन ही मे उसने उसकी शादी बना दी थी। उसकी वाइफ बहुत ब्यूटीफुल है और गरीबनवाज डोली को कर्ज देकर भूल भी चुका था। रजीतकुमार पोली को अपने साथ कही बाहर ले गया था। एलिमा और किटी दोनो दुनिया-भर की बातें करके अब थक गई थी और आराम करना चाहती थी—तिपाई के इर्द गिर्द फिलिस, उसका हिजडा-सा दोस्त और मम्मी बैठे थे। चड्ढा अब जज्बाती नही था। फिलिस उसकी बगल मे बैठी थी, जिसने पहली बार शराब का सुरूर चखा था—उसको प्राप्त करने का सकल्प उसकी आखो मे साफ मौजूद था। मम्मी इससे गाफिल नही थी।

थोडी देर बाद फिलिस का हिजडा-सा दोस्त उठकर सोफे पर जा लेटा और अपने बालो मे कघी करते-करते सो गया। गरीबनवाज और डोली उठकर कही चले गए। एलिमा और किटी ने आपस मे किसी मारग्रेट के बारे मे बातें करते हुए मम्मी से विदा ली और चली गइ बनकतरे ने आखिरी बार अपनी बीवी की खूबसूरती की प्रशसा की और फिलिस की ओर ललचाई नजरो से देखा, फिर थैलिमा की ओर जो उसके पास बठी थी, और फिर वह उसकी बाह पकडकर चाद दिखाने के लिए बाहर मैदान मे ले गया।

एकदम जाने क्या हुआ कि चड्ढे और मम्मी मे गरमागरम बातें शुरू

हो गई। चड्ढे की जबान लटपटा रही थी। वह एक कुपुत्र की तरह मम्मी से बदजबानी करने लगा। फिलिस ने एक हद तक बीच बचाव करने की कोशिश की, लेकिन चड्ढा हवा के घोड़े पर सवार था। वह फिलिस को अपने साथ सईदा कॉटेज में ले जाना चाहता था और मम्मी इसके खिलाफ थी। वह उसको बहुत देर तक समझाती रही कि वह इस इरादे से बाज आए लेकिन वह इसके लिए तैयार न होता था और बार-बार मम्मी से कह रहा था, 'तुम पागल हो गई हो बूढ़ी दलाला फिलिस मेरी है पूछ लो इससे।

मम्मी ने बहुत देर तक उसकी गालियां सुनीं, अन्त में बड़े समझाने वाले ढंग में उसने कहा, 'चड्ढा, माई सन तुम क्यों नहीं समझते शी इज यंग शी इज वेरी यंग।'

उसकी आवाज में कपकपाहट थी, एक प्रार्थना थी एक ताड़ना थी, एक बड़ी भयानक तसवीर थी, लेकिन चड्ढा बिल्कुल न समझा। उस समय उसके सम्मुख केवल फिलिस और उसकी प्राप्ति थी। मैंने फिलिस की ओर देखा और पहली बार इस बात को महसूस किया कि वह सचमुच बहुत छोटी उम्र की थी, मुश्किल से पंद्रह वर्ष की उसका सफेद चेहरा, चांदी रंग के बादलों में घिरा हुआ चंपा की पहली बूंद की तरह कपकपा रहा था।

चड्ढे ने उसे बांह से पकड़कर अपनी ओर खींचा और फिल्मों के हीरो के ढंग से अपनी छाती से लगाकर भींच लिया। मम्मी एकदम लाल होकर चिल्लाई, 'चड्ढा छोड़ दो फॉर गॉड सेक छोड़ दो इसे!'

जब चड्ढे ने अपने चौड़े सीने से फिलिस को अलग न किया तो मम्मी ने उसके मुंह पर एक जोरदार चांटा मारा और चिल्लाई, 'गेट आउट गेट आउट!'

चड्ढा भौंचक्का रह गया। फिलिस को अलग करके उसने धक्का दिया और मम्मी की ओर आग बरसाने वाली नजरों से देखता हुआ बाहर चला गया। मैं भी उठकर विदा ली और चड्ढे के पीछे पीछे चल दिया।

सईदा कॉटेज पहुंचकर मैंने देखा कि वह पतलून कमीज और बूट समेत पलंग पर औंधे मुंह पड़ा था। मैंने उससे कोई बात न की और दूसरे

कमरे म जाकर बडी मज पर सो गया।

सुवह देर स उठा। घडी म दस वज रह थे। चड्ढा सुवह ही सुवह उठकर बाहर चला गया था। कहा, यह किसीको मालूम नही था, लेकिन जब मैं गुसलखाने स बाहर निकल रहा था तो मैंने उसकी आवाज सुनी जो गैरेज स बाहर आ रही थी। मैं रुक गया। वह किसीस कह रहा था, 'वह लाजवाब औरत है खुदा की कसम, बडी लाजवाब औरत है दुआ करो कि उसकी उम्र को पहुचकर तुम भी वैसी ही ग्रेट हो जाओ।'

उसके स्वर मे एक विचित्र प्रकार की कटुता थी। पता नहीं उसका रुख उसकी अपनी ओर था या उस व्यक्ति की ओर जिसस वह सम्बोधित था। मैंने अधिक देर तक वहा रुके रहना ठीक न समझा और अन्दर चला गया। आधे घट तक मैंने उसका इतजार किया। जब वह न आया तो मैं प्रभातनगर चला गया।

मेरी बीवी का मिजाज ठीक था—हरीश घर मे नही था। हरीश की बीवी न उसके बारे मे पूछा तो मैंने कह दिया, 'वह अभी स्टूडियो मे सो रहा है।

पूना मे काफी तफरीह हो गई थी, इसलिए मैंने हरीश की बीवी मे जान की इजाजत मागी। शिष्टाचार के नाते उसन हमे रुकन का कहा, लेकिन मैं सईदा काटज म ही फैसला करके चला था कि रात की घटना मेरी मानसिक जुगाली के लिए बहुत काफी है।

हम चल दिए। रास्ते म मम्मी मे बातें हुईं। जो कुछ हुआ था मैंन बीवी को सब कुछ बता दिया। उसका कहना था कि फिलिस उसकी कोई रिश्तेदार हागी या वह उस किसी अच्छी असामी को पेश करना चाहती होगी तभी उसन चड्ढे स लडाई की मैं चुप रहा। न समथन किया, न विरोध।

कई दिन गुजरने पर चड्ढे का पत्र आया, जिसमे उस रात की घटना का सरसरी सा जिक्र था और उसने अपने बारे मे यह कहा था, मैं उस दिन जानवर बन गया था—लानत हो मुझपर।'

तीन महीने बाद मुझे एक जरूरी काम से पूना जाना पडा। सीधा सईदा काटेज पहुचा। चड्ढा मौजूद नहीं था। गरीबनवाज से उस समय

मुलाकात हुई, जब वह गरेज से निकलकर शीरी के नन्हे बच्चे को प्यार कर रहा था। वह बड़े तपाक से मिला। थोड़ी दर बाद रजीतकुमार आ गया, कछुए की चाल चलता और चुपचाप बैठ गया। मैं अगर उससे कुछ पूछता था तो वह बड़े सक्षेप म उत्तर द दता था। उसस बातो-बातो म मालूम हुआ कि चड्ढा उस रात के बाद मम्मी के पास नही गया और न कभी वह यहा आई है। फिलिस को उसने दूसर दिन ही अपने मा बाप के पास भिजवा दिया था। वह उस हिजडा जैसे लडके के साथ घर से भागकर आई हुई थी। रजीतकुमार का विश्वास था कि अगर वह कुछ दिन और पूना मे रहती तो वह जरूर उस ले उडता। गरीबनवाज का ऐसा कोई दावा नही था। केवल इतना अफसोस था कि वह चली गई।

चड्ढे के बारे में यह पता चला कि दो-तीन दिन स उसकी तबीयत ठीक नही है, बुखार रहता है लेकिन वह किसी डाक्टर स राय नही लेता—सारा दिन इधर उधर घूमता रहता है। गरीबनवाज न जब मुझे य बातें बताना शुरू की तो रजीतकुमार उठकर चला गया। मैंने सलाखो वाली कोठरी म स देखा उसका रुख गैरेज की ओर था।

मैं गरीबनवाज स गैरेज वाली शीरी के सम्बन्ध स कुछ पूछताछ करन के बारे म सोच ही रहा था कि वनकटरे बडा घबराया हुआ कमरे म दाखिल हुआ। उसस मालूम हुआ कि चड्ढे को तज बुखार था। वह उस ताग मे यहा ला रहा था कि वह रास्त म बेहोश हो गया। मैं और गरीबनवाज बाहर दौडे। तांग वाला बडी मुश्किल से चड्ढे को सभाले हुए था। हम सबन मिलकर उस उठाया और कमरे म पहुचाकर बिस्तर पर लिटा दिया। मैंन उसके माथ पर हाथ रखकर देखा, सचमुच बहुत तज बुखार था। एक सौ छ डिग्री स कम न होगा।

मैंने गरीबनवाज स कहा, 'फौरन डाक्टर को बुलाना चाहिए।' उसन वनकटरे स मशविरा किया और अभी आता हू कहकर बाहर चला गया। जब वापस आया तो उसके साथ मम्मी थी, जो हाफ रही थी। अन्दर घुसत ही उसन चड्ढे की ओर देखा और लगभग चीखकर पूछा, 'क्या हुआ मेरे बेटे को ?'

वनकटरे ने जब उस बताया कि चड्ढा कई दिन स बीमार था तो

मम्मी ने बडे दुख और क्रोध से कहा, 'तुम कैसे लोग हो—मुझे खबर क्यो न की ?' फिर उसने गरीबनवाज, मुझे और वनक्तरे को विभिन्न हिदायतें दी—एक को चड्ढे के पाव सहलाने की, दूसरे को बरफ लाने की और तीसरे को पखा करने की। चड्ढे की हालत देखकर उसकी अपनी हालत बिगड गई थी, लेकिन उसने धैर्य से काम लिया और डाक्टर बुलाने चली गई।

मालूम नही, रजीतकुमार को गैरेज मे कैसे पता चला। वह मम्मी के जाने के तुरत बाद घबराया हुआ आया। उसके पूछने पर वनक्तरे ने चड्ढे के बेहोश होने की घटना का वर्णन कर दिया और यह भी बता दिया कि मम्मी डाक्टर के पास गई है। यह सुनकर रजीतकुमार की बेचैनी किसी हद तक दूर हो गई।

मैंने देखा कि वे तीनो बहुत सतुष्ट थे, मानो चड्ढे के स्वास्थ्य की सारी जिम्मेदारी मम्मी ने अपने ऊपर ले ली हो।

उसकी हिदायत के अनुसार चड्ढे के पाव सहलाए जा रहे थे सिर पर बरफ की पट्टिया रखी जा रही थी। मम्मी जब डाक्टर लेकर आई तो वह कुछ-कुछ होश मे आ चुका था। डाक्टर ने मुआयने मे काफी देर लगाई। उसके चेहरे से मालूम होता था कि चड्ढे की जिन्दगी खतरे मे है। मुआयने के बाद डाक्टर ने मम्मी को इशारा किया और वे कमरे से बाहर चले गए—मैंने सलाखो वाली खिडकी मे से देखा, गरज के टाट का परदा हिल रहा था।

थोडी देर बाद मम्मी आई। गरीबनवाज, वनक्तरे और रजीतकुमार से उसने एक एक करके कहा कि घबराने की कोई बात नही। चड्ढा अब आखें खोलकर सुन रहा था। मम्मी को उसने आश्चर्य की दृष्टि से नही देखा था, लेकिन वह उलझन सी जरूर महसूस कर रहा था। कुछ क्षणो के बाद जब वह समझ गया कि मम्मी क्यो और कैसे आई है, तो उसने मम्मी का हाथ अपने हाथ मे ले लिया और दबाकर कहा, 'मम्मी, यू आर ग्रेट!'

मम्मी उसके पास पलग पर बैठ गई। वह ममता की साक्षात मूर्ति थी। उसने चड्ढे के तपते हुए माथे पर हाथ फेरकर मुस्कराते हुए केवल

इतना कहा, 'मेरे बेटे मेरे गरीब बट !

चड्ढे की आखो मे आसू आ गए, लेकिन तुरन्त ही उसने उन्हें सोखने की कोशिश की और कहा, 'नहीं, तुम्हारा बेटा अव्वल दर्जे का स्काउण्ड्रल है जाओ, अपने मन पति का पिस्तौल लाओ और उसकी छाती पर दाग दो।'

मम्मी न चड्ढे के गाल पर जोर से तमाचा मारा, 'बकार की बातें न करो। फिर वह चुस्त चालाक नर्स की तरह उठी और हम सबकी ओर मुडकर कहा 'लडको, चड्ढा बीमार है और इसको हास्पीटल ले जाना है—समझे ?'

सब समझ गए। गरीबनवाज ने तुरन्त टैक्सी का बन्दोबस्त कर लिया। चड्ढे को उठाकर उसमे डाला गया। वह बहुत कहता रहा कि ऐसी कौन सी आफत आ गई है जो मुझे अस्पताल के सुपुर्द किया जा रहा है, लेकिन मम्मी यही कहती रही कि बात कुछ भी नही, अस्पताल में जरा आराम रहता है। चड्ढा बहुत जिद्दी था, लेकिन इस समय वह मम्मी की किसी बात से इन्कार नहीं कर सकता था।

चड्ढा अस्पताल मे दाखिल हो गया। मम्मी ने अकेले मे मुझे बताया कि मर्ज बहुत खतरनाक है—यानी प्लेग। यह सुनकर मेरे होश उड गए। स्वय मम्मी बहुत परेशान थी लेकिन उसको आशा थी कि यह बला टल जाएगी और चड्ढा बहुत जल्द स्वस्थ हो जाएगा।

इलाज होता रहा। प्राइवेट अस्पताल था। डाक्टरो न चड्ढे का इलाज बहुत ध्यान स किया लेकिन कई पेचीदगिया पदा हो गइ। उसकी त्वचा जगह-जगह स फटने लगी और बुखार बढ़ता गया। अन्त मे डाक्टरो ने यह राय दी कि उसे बम्बई ले जाया जाए, लेकिन मम्मी न मानी। उसने चड्ढे को उसी हालत म उठाया और अपने घर ले गई।

मैं ज्यादा दिन पूना म नहीं रुक सकता था। वापस बम्बइ आया तो मैंने टेलीफोन के जरिये कई बार उसका हाल मालूम किया। मेरा खयाल था कि वह किसी प्रकार भी जीवित न बच सकेगा, लेकिन मुझे मालूम हुआ कि धीरे धीरे उसकी हालत सभल रही है। एक मुकदमे के सिलसिले में मुझे लाहौर जाना पडा। वहा स पन्द्रह दिन के बाद लौटा तो मेरी

बीवी ने चड्ढे का एक पत्र दिया, जिसमें केवल यह लिखा था—'महामाया मम्मी ने अपने सपूत को मौत के मुँह से बचा लिया है।'

इन थोड़े से शब्दों में बहुत कुछ था... भावनाओं का एक पूरा समुद्र था। मैंने अपनी बीवी से इसका जिक्र बड़ी भावुकता से किया तो उसने प्रभावित होकर केवल इतना कहा, 'ऐसी औरतें अक्सर लिटमनगुजार होती हैं।'

मैंने चड्ढे को दो-तीन पत्र लिखे, जिनका जवाब न आया। बाद में मालूम हुआ कि मम्मी ने उसको जलवायु बदलने के लिए अपनी एक सहेली के पास लोनावाला भिजवा दिया था। चड्ढा मुश्किल से वहाँ एक सप्ताह रहा और उकताकर चला आया। जिस दिन वह पूना पहुँचा, संयोग से मैं वहीं था। प्लेग के जबरदस्त हमले के कारण वह बहुत कमजोर हो गया था, लेकिन उसका गुलगपाड़ा करने वाला स्वभाव आज भी वैसा ही था। अपनी बीमारी का जिक्र उसने इस प्रकार किया, जैसे आदमी साइकिल की मामूली घटना का करता है। अब जबकि वह बच गया था, अपनी खतरनाक बीमारी के बारे में विस्तार से बात करना बेकार समझता था।

सईदा काटेज में चड्ढे की अनुपस्थिति के दिनों में छोटे-छोटे परिवर्तन हुए थे। शरीफ और नवील कहीं और उठ गए थे क्योंकि उन्हें अपनी निजी फिल्म कम्पनी कायम करने के लिए सईदा काटेज का वातावरण अनुकूल नहीं लगता था। उनकी जगह एक बंगाली म्यूजिक डायरेक्टर आ गया था। उसका नाम सेन था। उसके साथ लाहौर से भागा हुआ एक लड़का रामसिंह रहता था। सईदा काटेज में रहने वाले सबके सब लोग उससे काम लेते थे। तबीयत का बहुत शरीफ और मक्खन था। चड्ढे के पास वह उस समय आया था जब वह मम्मी के कहने पर लोनावाला जा रहा था। उसने गरीबनवाज और रजीतकुमार से कह दिया था कि उसे सईदा काटेज में रख लिया जाए। सेन के कमरे में चूँकि जगह खाली थी, इसलिए उसने वहीं अपना डेरा जमा लिया था।

रजीतकुमार को कम्पनी की नई फिल्म में बतौर हीरो चुन लिया गया था और उसके साथ वादा किया गया था कि अगर फिल्म सफल हुई तो

उसका दूसरी फिल्म डायरेक्ट करने का मौका दिया जाएगा। चड्ढा अपनी दो बरस की पेंडिंग तनख्वाह में से डेढ़ हजार रुपया एक साथ प्राप्त करने में सफल हो गया था, इसलिए उसने रजीनकुमार से कहा था, 'मेरी जान, अगर कुछ वसूल करना चाहते हो तो मेरी तरह प्लग में मुबतला हो जाओ हीरो और डायरेक्टर बनने से तो मेरा ख्याल है, यह कहीं अच्छा है।'

गरीबनवाज कुछ ही दिन पहले हैदराबाद होकर आया था, इसलिए सईदा काटेज किंचित सम्पन्न थी। मैंने देखा, गरेज के बाहर अलगनी पर ऐसी कमीजें और सलवारें लटक रही थी, जिनका कपड़ा अच्छा और कीमती था। शीरी के बच्चे के पास नये खिलौने थे।

मुझे पूना में पन्द्रह दिन रहना पड़ा। मेरा पुराना फिल्मों का साथी अब नई फिल्म की हीरोइन की मुहब्बत में मुबतला होने की कोशिश कर रहा था, लेकिन डरता था क्योंकि यह हीरोइन पजाबी थी और उसका पति बड़ी बड़ी मूछों वाला हट्टा कट्टा मुस्टण्डा था। चड्ढे ने सलाह दी थी, कुछ परवाह न करो, उस साले की जिस पजाबी एक्ट्रेस का पति बड़ी बड़ी मूछों वाला पहलवान हो, वह इश्क के मैदान में जरूर चारों खाने चित गिरा करता है। बस, इतना करो कि सौ रुपये फी गाली के हिसाब से मुझसे दस बीस हेवी वेट किस्म की गालियां सीख लो। ये तुम्हारी खास मुश्किलों में बहुत काम आया करेंगी।'

हरीश एक बोतल फी गाली के हिसाब से छः गालियां पजाब के खास लहजे में याद कर चुका था लेकिन अभी तक उसे अपने इश्क के रास्ते में कोई ऐसी खास मुश्किल पेश नहीं आई थी जो वह उनके प्रभाव को परख सकता।

मम्मी के घर नियमानुसार महफिलें जमती थी। पोली डाली, पिटी, एलिमा, थैलिमा आदि सब आती थी। वनकतरे पूर्ववत थैलिमा को कथकली और ताण्डव नाच की ता थई और था नो ना कत वत टू थी बना बनाकर बताता था और वह उसे सीखने की पूरी कोशिश करती थी। गरीबनवाज उसी तरह कर्ज दे रहा था, और रजीनकुमार, जिसका अब कम्पनी की नई फिल्म में हीरो का चास मिल रहा था, उनमें से किसी

भी एक को बाहर खुली हवा मे ले जाता था—चडढे के नगे नगे मजाक सुनकर उसी तरह कहकहे लगते थे—एक सिर्फ वह नही थी वह, जिसके बालो के रग के लिए सही उपमा ढूढने मे चडढे न काफी समय लगाया था। लेकिन इन महफिलो मे चड्ढे ने काफी समय लगाया था। लेकिन इन महफिलो मे चडढे की निगाह उसे ढूढती नही थी। फिर भी कभी कभी जब चड्ढे की नजरें मम्मी की नजरो से टकराकर झुक जाती थी तो मैं अनुभव करता था कि उसको अपनी उस रात की दीवानगी का अफसोस है। ऐसा अफसोस, जिसकी याद से उसको तकलीफ होती है। अतएव चौथे पेग के बाद किसी समय इस तरह का एक वाक्य उसकी जबान से निकल जाता, 'चडढा, यू आर ए डेम्ड ब्रूट !'

यह सुनकर मम्मी होठो ही होठो मे मुस्करा देती, जैसे वह उस मुस्कराहट की मिठास म लपेट-लपटकर कह रही हो—'डाण्ट टाक राट !'

वनकतर से पहले ही की तरह उसकी चख चख चलती थी। नशे मे आकर जब भी वह अपने बाप की प्रशसा मे या अपनी बीवी की खूबसूरती के सम्बन्ध म कुछ कहने लगता तो वह उसकी बात बहुत बडे गण्डासे स काट डालता। वह बेचारा चुप हो जाता और अपना मट्रीक्युलेशन का सर्टिफिकेट तह करके जेब मे डाल लेता।

मम्मी वही मम्मी थी पोली की मम्मी, डोली की मम्मी, चड्ढे की मम्मी, रजीतकुमार की मम्मी। सोडे की बोतलो, खाने पीने की चीजो और महफिल जमाने के दूसरे साजो-सामान के प्रबन्ध में वह वैसी ही स्नेहपूर्ण दिलचस्पी से हिस्सा लेती थी। उसके चेहरे का मेकअप वैसा ही वाहियात होता था। उसके कपडे उसी तरह भडकीले थे। सुर्खी की तहो से उसकी झुर्रिया उसी तरह झाकती थी, लेकिन अब मुझे ये पवित्र दिखाई देती थी। इतनी पवित्र कि प्लेग के कीडे उन तक नही पहुच सकते थे। डरकर, सिमटकर वे भाग गए थे चडढे के शरीर से भी निकल भागे थे, क्योकि उसपर उन झुर्रियो की छत्रच्छाया थी—उन पवित्र झुर्रियो की, जो हर समय बहुत ही वाहियात रगो मे लिथडी रहती थी।

वनक्तरे की खूबसूरत बीवी का जब गर्भपात हुआ था तो मम्मी की ही तत्कालीन सहायता से उसकी जान बची थी। थैलिमा जब हिन्दुस्तानी

नाच सीखने के शौक म एक मारवाडी व्यवक के हत्थे चढ़ गई और उसके सौद म एक दिन जब उस मालूम हुआ कि उसन एक खतरनाक राग खरीद लिया है तो मम्मी न उसको बहुत डाटा था और उससे कोई सम्बन्ध न रखन का दृढ सकल्प कर लिया था लकिन फिर उसकी आखा म आसू देखकर उसका दिल पसीज गया था। उसन उसी दिन शाम को अपन बेटो को सारी बात सुना दी थी और उनस प्रार्थना की थी कि व धनिया का इलाज कराए। किटी को एक पजल (पहेली) हल करन के सिलसिले मे पाच सौ रुपय का इनाम मिला था तो मम्मी न उस मजबूर किया था कि कम स कम आधे रुपय गरीबनवाज को दे द, क्योकि उस गरीब का हाथ तग है। उसन किटी से कहा था, 'तुम इस समय इस द दो—बाद म लेती रहना। और मुझसे उसने मेरे पन्द्रह दिन के वास मे कई बार मेरी मिसज के बारे मे पूछा था और चिन्ता व्यक्त की थी कि पहले बच्चे की मृत्यु का इतने वष हो गए हैं, दूसरा बच्चा क्यो नही हुआ। रजीन-कुमार के साथ वह अधिक घुल मिलकर बात नही करती थी। ऐसा मालूम होता था कि उसकी दिखावटी तबीयत उसको अच्छी नहीं लगती थी। मेरे सामन भी एक-दो बार इसकी चर्चा कर चुकी थी। म्यूजिक डायरेक्टर सेन म वह घृणा करती थी। चड्ढा उसको अपने साथ लाता था तो वह उसस कहती थी, 'ऐसे जलील आदमी को यहा मत लाया करो।' चड्ढा उससे पूछता तो वह बडी गम्भीरता म उत्तर देती, 'मुझे यह आदमी ऊपरा ऊपरा सा मालूम होता है—जचता नही मेरी नजरो मे।' यह सुन कर चड्ढा हस देता था।

मम्मी की महफिलो की स्नेहपूर्ण गर्मी लिए मैं वापस बम्बई चला गया। इन महफिलो म शराब की मस्ती थी सेक्स था लेकिन कोई उत्तेजना नही था। हर चीज गभवती स्त्री के पेट की तरह स्पष्ट थी। उसी तरह उभरी हुई, देखन म उसी तरह की भद्दी और असमजस म डालने वाली लेकिन वास्तव मे बडी सही निष्ट और अपनी जगह पर कायम।

दूसर दिन सुबह के अखबारो म पढा कि सईदा काटेज म बगाली म्यूजिक डायरेक्टर सेन मारा गया है। उसकी हत्या करनेवाला कोई रामसिंह है, जिसकी आयु चौदह पन्द्रह वष के लगभग बताई जाती है।

मैंने तुरन्त पूना टेलीफोन किया, लेकिन फोन पर कोई न मिल सका।

एक हफ्ते के बाद चड्ढा का खत आया, जिसमें उस हत्याकाण्ड का पूरा विवरण था। रात को सब सोए हुए थे कि अचानक चड्ढे के पलंग पर कोई गिरा। वह हड़बड़ाकर उठा। बिजली जलाई तो देखा, सेन है, खून में लथपथ। चड्ढा अभी अच्छी तरह अपने होश-हवास सम्भालने भी न पाया था कि दरवाजे में रामसिंह दिखाई दिया। उसके हाथ में छुरी थी। तुरन्त ही गरीबनवाज और रजीतकुमार भी आ गए। सारी सईदा कॉटेज जग गई। रजीतकुमार और गरीबनवाज ने रामसिंह को पकड़ लिया और छुरी उसके हाथ से छीन ली। चड्ढा ने सेन को अपने पलंग पर लिटाया और उससे घावों के बारे में कुछ पूछने ही वाला था कि उसने आखिरी हिचकी ली और ठण्डा हो गया।

रामसिंह गरीबनवाज और रजीतकुमार की जकड़ में था, मगर वे दोनों काँप रहे थे। सेन मर गया तो रामसिंह ने चड्ढा से पूछा, 'पापाजी, मर गया?'

चड्ढा ने हाँ में उत्तर दिया, तो रामसिंह ने रजीतकुमार और गरीबनवाज से कहा, 'मुझे छोड़ दीजिए, मैं भागूँगा नहीं।'

चड्ढा की समझ में नहीं आता था कि वह क्या करे। उसने तुरन्त नौकर भेजकर मम्मी को बुलवाया। मम्मी आई तो सब निश्चिन्त हो गए कि मामला सुलझ जाएगा। उसने रामसिंह को छुड़वा दिया और थोड़ी देर के बाद अपने साथ थाने ले गई और उसका बयान दर्ज करा दिया। इसके बाद चड्ढा और उसके साथी कई दिन तक बड़े परेशान रहे। पुलिस की पूछताछ, बयान, फिर अदालत में मुकदमे की पेशी। मम्मी इस बीच बहुत दौड़धूप करती रही थी। चड्ढा का विश्वास था कि रामसिंह बरी हो जाएगा और ऐसा ही हुआ। अदालत ने उसे साफ बरी कर दिया। अदालत में उसका वही बयान था जो उसने थाने में दिया था। मम्मी ने उससे कहा था, 'बेटा, घबराओ नहीं, जो कुछ हुआ है, सच-सच बता दो।' और उसने सारी बातें ज्यों की त्यों बयान कर दी थीं कि सेन ने उसे प्लेबैक सिंगर बना देने का लालच दिया था। स्वयं उसे भी संगीत से बहुत लगाव था और सेन बड़ा अच्छा गाने वाला था। वह इस चक्कर

में आकर उसकी हैवानी इच्छाएं पूरी करता रहा लेकिन उसको इससे बहुत घृणा थी। उसका दिल बार-बार उसे लानत मलामत करता था। अत में वह इतना तग आ गया था कि उसने सेन से कह भी दिया था कि उसने फिर उसे मजबूर किया तो वह उसे जान से मार डालेगा। अत एव घटना की रात को यही हुआ।

अदालत में उसने यही बयान दिया। मम्मी मौजूद थी। आखो ही आखो में वह रामसिंह को दिलासा दे रही थी कि घबराओ नहीं, जो सच है, कह दो, सच की हमेशा जीत होती है। इसमें कोई शक नहीं कि तुम्हारे हाथो ने खून किया है लेकिन एक बड़ी मनहूस चीज का, एक हैवान का, एक अमानुष का।

रामसिंह ने बड़ी सादगी और बड़े भोलेपन से सारी घटनाओं का वर्णन किया। मजिस्ट्रेट इतना प्रभावित हुआ कि उसने रामसिंह को बरी कर दिया।

चड्ढे ने कहा, 'इस झूठे जमाने में यह सच की एक अनोखी विजय है, और इसका श्रेय मेरी बूढ़ी मम्मी को है।'

चड्ढा ने मुझे उस जलसे में बुलाया था जो रामसिंह की रिहाई की खुशी में सईदा काटेज वालों ने किया था लेकिन मैं व्यस्तता के कारण उसमें शामिल न हो सका।

शकील और अकील दोनों सईदा काटेज में वापस आ गए थे। बाहर का वातावरण भी उनकी निजी फिल्म कम्पनी की नींव डालने के लिए रास नहीं आया था।

अब वे फिर अपनी पुरानी फिल्म कम्पनी में किसी असिस्टैण्ट के असिस्टैण्ट हो गए थे। उन दोनों के पास उस पूजी में से कुछ सैकड़े बाकी बचे हुए थे, जो उन्होंने निजी फिल्म कम्पनी की नींव डालने के लिए जुटाई थी। चड्ढे के मशविरे पर उन्होंने यह सब रुपया जलसे को सफल बनाने के लिए दे दिया। चड्ढा ने हमसे कहा था, 'अब मैं चार पेग पीकर दुआ करूंगा कि वह तुम्हारी निजी फिल्म कम्पनी फौरन खड़ी कर दे।'

चड्ढा का कहना था कि इस जलसे से बनकतर ने शराब पीकर अपनी आदत के खिलाफ अपने बाप की प्रशंसा न की और न ही अपनी

खूबसूरत बीवी का जिक्र किया। गरीबनवाज ने किटी की तत्कालीन आवश्यकता को पूरा करने के लिए दो सौ रुपये कर्ज दिए और रजीनकुमार से उसने कहा, 'तुम इन बेचारी लडकियो को यो ही झासे न दिया करो हो सकता है कि तुम्हारी नीयत साफ हो, लेकिन लेन के मामले मे इनकी नीयत इतनी साफ नही होती—कुछ न कुछ द दिया करो।'

मम्मी ने उस जलसे मे रामसिंह को बहुत प्यार किया और सबको मशविरा दिया कि उसे घर वापस जाने के लिए कहा जाए। अतएव वही फैसला हुआ और दूसरे दिन गरीबनवाज ने उसके टिकट का प्रबंध कर दिया। शीरी ने सफर के लिए उसको खाना पकाकर दिया। स्टेशन पर सब उसे छोडने गए। ट्रेन चली तो वे दूर तक हाथ हिलाते रहे।

ये छोटी छोटी बातें मुझे जलसे के दस दिन बाद मालूम हुई, जब मुझे एक जरूरी काम से पूना जाना पडा। सईदा काटेज मे कोई परिवतन नही हुआ था। ऐसा मालूम होता था कि वह ऐसा पडाव है, जिसका रग-रूप हजारो काफिलो के ठहरने से भी नही बदलता। वह कुछ ऐसी जगह थी, जो अपनी रिक्तता को स्वय ही भर लेती थी। मैं जिस दिन वहा पहुचा शीरनी बट रही थी। शीरी के एक और लडका हुआ था। बनकतरे के हाथ मे ग्लक्सो का डिब्बा था। उन दिनो यह बडी मुश्किल से प्राप्त होता था। अपने बच्चे के लिए उसने कही से दो प्राप्त किए थे। उनमे से एक वह शीरी के नवजात शिशु के लिए ले आया था। चड्ढा ने आखिरी दो लडडू उसके मुह मे ठूसे और कहा, 'तू ग्लैक्सो का डिब्बा ले आया बडा कमाल किया है तूने अपने साले बाप और अपनी साली बीवी की, देखना हरगिज कोई बात न करना।'

बनकतरे ने बडे भोलेपन के साथ कहा, 'साले, मैं अब कोई पियेला हू ? वह तो दारू बोला करती है बैंस बाई गाड, मेरी बीवी बडी हैण्डसम है।'

चड्ढे ने इतनी जोर का कहकहा लगाया कि बनकतरे को और कुछ कहने का अवसर न मिला। उसके बाद चड्ढा, गरीबनवाज और रजीत कुमार मेरी ओर मुडे और उस कहानी की बातें शुरू हो गइ जो मैं अपने पुराने फिल्मो के साथी के जरिये से वहा के एक प्रोडयूसर के लिए लिख

रहा था। फिर कुछ देर शौरी के नवजात लडके का नाम रखा जाता रहा। सैकडा नाम रखे गए, लेकिन चडढे को कोई पसन्द न आया। अंत मे मैंने कहा कि जन्मस्थान अर्थात सईदा काटेज के नाम पर लडके का नाम मसऊद होना चाहिए। चडढ को पसन्द नही था, लेकिन अस्थायी रूप से उसने स्वीकार कर लिया।

इस बीच मे मैंने अनुभव किया कि चडढा, गरीबनवाज और रजीत कुमार तीनो की तबीयत कुछ बुझी बुझी सी थी। मैंने सोचा शायद इसका कारण पतझड का मौसम हो, जब आदमी अकारण ही थकावट सी महसूस करने लगता है। शौरी का नया बच्चा भी इस शिथिलता का कारण हो सकता था, लेकिन यह कोई ठोस कारण मालूम नही होता था। सन के कत्ल की ट्रेजडी ? मालूम नही, क्या कारण था लेकिन मैंने पूरी तरह महसूस किया कि वे सब उदास थे ऊपर से हसते बोलते थे, लेकिन भीतर ही भीतर घुट रहे थे।

मैं प्रभातनगर म अपने पुराने फिल्मी के साथी के घर म कहानी लिखता रहा। यह व्यस्तता पूरे सात दिन तक जारी रही। मुझे बार बार ख्याल आता था कि इस बीच म चड्ढे ने कोई बाधा क्यो नहीं डाली। वनवतर भी वही गायब था। रजीतकुमार स मेरे कोई खास सम्बन्ध नहीं थे जो वह मरे पास इतनी दूर आता। गरीबनवाज के बारे म मैंने सोचा था कि शायद हैदराबाद चला गया हो। और मेरा पुराना फिल्मी का साथी अपनी नई फिल्म की हीराइन स, उसके घर म उसके बडी बडी मूछो वाले पति की मौजूदगी म, इश्क लडाने का दृढ निश्चय कर रहा था।

मैं अपनी कहानी मे एक बडे दिलचस्प हिस्से की पटकथा तैयार कर रहा था कि चडढा आ टपका और कमरे म घुसते ही उसने मुझसे पूछा, इस बकवास का तुमने कुछ वसूल किया है ?'

उसका इशारा मेरी कहानी की ओर था, जिसके पारिश्रमिक की दूसरी किस्त मैंने दो दिन पहले वसूल की थी। 'हा दो हजार परसो लिया है।'

'कहा है ?' यह कहते हुए चड्ढा मेरे कोट की ओर बढा।

'मेरी जेब मे।'

चड्ढे न मेरी जेब मे हाथ डाला। सौ सौ के चार नोट निकले और मुझसे कहा, 'आज शाम को मम्मी के यहा पहुच जाना—एक पार्टी है।'

मैं उस पार्टी के बारे मे उससे कुछ पूछने ही वाला था कि वह चला गया। वह शिथिलता और उदासीनता, जो मैंने कुछ दिन पहले उसमे महसूस की थी, वैसी की वैसी थी। वह कुछ बचैन भी था। मैंने उसके बारे मे सोचना चाहा, लेकिन दिमाग तैयार न हुआ। वह कहानी के दिलचस्प हिस्से की पटकथा में बुरी तरह फसा हुआ था।

अपने पुराने फिल्मो के साथी की बीवी से अपनी बीवी की बातें करके शाम को साढे पाच बजे के करीब मैं वहा से चलकर सात बजे सईदा काटेज पहुचा। गैरेज के बाहर अलगनी पर गीले गीले पोतडे लटक रहे थे और नल के पास अकील और शकील शीरी के बडे लडके के साथ खेल रहे थे। गैरेज के टाट का परदा हटा हुआ था और शीरी उनसे शायद बातें कर रही थी। मुझे देखकर वे चुप हो गए। मैंने चड्ढे के बारे में पूछा तो अकील ने कहा कि वह मम्मी के घर मिल जाएगा।

मैं वहा पहुचा तो देखा, एक शोर मचा हुआ था। सब नाच रहे थे। गरीबनवाज पोलो के साथ, रजीतकुमार किटी और एलिमा के साथ और बनकतरे थैलिमा के साथ। वह उसको कथाकली की मुद्राए बता रहा था। चडढा मम्मी को गोद मे उठाए इधर उधर कूद रहा था। सब नशे मे थे। एक तूफान मचा हुआ था। मैं अन्दर पहुचा तो सबसे पहले चडढे ने नारा लगाया। इसके बाद देशी-विदेशी आवाजो का एक गोला-सा फटा, जिसकी गूज देर तक कानो मे सरसराती रही। मम्मी बडे तपाक से मिली—ऐसे तपाक से जो बेतकल्लुफी की हद तक बढा हुआ था। मेरा हाथ उसने अपने हाथ मे लेकर कहा, 'किस मी डीयर।' लेकिन उसने स्वय ही मेरा एक गाल चूम लिया और घसीटकर नाचने वालो के झुरमुट मे ले गई। चड्ढा ने एकदम पुकारा, 'बन्द करो—अब शराब का दौर चलेगा!' फिर उसने नौकर को आवाज दी, 'स्काटलैण्ड के शहजादे! ह्विस्की की नई बोतल लाओ!' स्काटलण्ड का शहजादा नई बोतल ले आया। नशे मे धुत् था, खोलने लगा तो हाथ से गिरी और चकनाचूर हो गई। मम्मी

ने उसका डाटना चाहा तो चड्ढे ने रोक दिया, 'एक तो बोतल टूटी है मम्मी, जाने दो, यहा दिल टूटे हुए हैं।'

महफिल एकदम सूनी हो गई, लेकिन तुरन्त ही चड्ढे न उस उदासीनता को अपने कहकहो म छिन्न भिन्न कर दिया। नई बोतल आई। हर गिलास म बडा तगडा पेग डाला गया। इसके बाद चड्ढे ने उखडा उखडा-सा भाषण करना शुरू किया, 'लेडीज एण्ड जेण्टलमैन आप सब जहन्नुम मे जाए मण्टो हमारे बीच मौजूद है, जो अपने आपको बहुत बडा कहानीकार समझता है। मानव स्वभाव की, वह क्या कहते हैं, गहरी से गहरी गहराइया म उतर जाता है मगर मैं कहता हू कि बकवास है कुए मे उतरने वाले कुए म उतरने वाले ' उसने इधर उधर देखा 'अफसोस है कि यहा कोई हिन्दुस्तुड नही, एक हैदराबादी है जो का को गा कहता है और जिससे दस बरस पीछे मुलाकात हुई तो कहेगा कि परसो आपम मिला था—लानत हो उसके निजाम हैदराबाद पर, जिसके पास कई लाख टन सोना है, करोडा जवाहरात हैं लेकिन एक मम्मी नही हा वह कुए म उतरने वाले मैंने क्या कहा था कि सब बकवास है? पजाबी मे जिन्हे टोवें कहते हैं वे गोता लगाने वाले, वे इसके मुकाबले मे मानव-स्वभाव को कई दर्जे अच्छा समझते हैं। इसलिए मैं कहता हू '

सबने जिन्दाबाद का नारा लगाया। चड्ढा चिल्लाया, यह सब साजिश है—इस मण्टो की साजिश है नही तो मैंने हर हिटलर की तरह मुर्दाबाद के नारे का इशारा किया था तुम सब मुर्दाबाद लेकिन पहले मैं मैं।' वह जज्बाती हो गया। '*मैं जिसने उस रात उस* साप के खपरों ऐसे रग वाले बाला की एक लडकी के लिए अपनी मम्मी को नाराज कर दिया था। मैं खुद को—न जाने कहा का डान जुआन समझता था लेकिन नही, उसको पाना *कोई मुश्किल काम नहीं था। मुझे* अपनी जवानी की कसम, एक ही चुम्बन मे उस प्लैटीनम ब्लौण्ड के क्वारेपन का सारा रस मैं अपने इन मोटे मोटे होठों से चूस सकता था *लेकिन यह एक अनुचित काम था* वह कम उम्र थी। इतनी कम उम्र, इतनी कमजोर, इतनी करेक्टरलेस इतनी ' उसने मेरी ओर एक

प्रश्नवाचक दृष्टि से देखा। 'बताओ यार उसे उर्दू फारसी या अरबी मे क्या कहेंगे कैरेक्टरलेस लेडीज एण्ड जेंटलमन वह इतनी छोटी, इतनी कमजोर और इतनी मासूम थी कि उस रात पाप म शामिल होकर या तो वह सारी उम्र पछताती रहती या उसे बिलकुल भूल जाती उन थोड़े क्षणो के आनन्द की याद के सहारे जीने का सलीका उसको बिलकुल न आता मुझे इसका दुख होता—अच्छा हुआ कि मम्मी न उसी समय मेरा हुक्का पानी बन्द कर दिया मैं अब अपनी बकवास बन्द करता हूँ। मने असल म एक बहुत लम्बा चौड़ा लेक्चर करने का इरादा किया था लेकिन मुझम कुछ बोला नही जाता मैं एक पेग और पीना हूँ।'

उसने एक पेग और पिया। लेक्चर के बीच म सब चुप थे। उसके बाद भी चुप रहे। मम्मी न मालूम क्या सोच रही थी। गाजे और सुर्खी की तहो के नीचे झुर्रियां भी ऐसी दिखाई देती थी कि वे भी किसी गहरी चिन्ता मे डूबी हुई हैं। बोलन के बाद चड्ढा जस खाली सा हो गया। इधर उधर घूम रहा था, जैसे कोई चीज खान के लिए ऐसा कोना ढूढ रहा हो जो उसके मस्तिष्क म अच्छी तरह सुरक्षित रह। मैंन उम एक बार पूछा, क्या बात है चड्ढा ?

उसन कहकहा लगाकर जवाब दिया 'कुछ नही बात यह है कि आज ह्विस्की मेरे दिमाग के चूतड़ो पर जमाकर लात नही मार रही। उसका कहकहा खोखला था।

बनक्तरे ने थलिमा को उठाकर मुझे अपने पास बिठा लिया और इधर-उधर की बातें करने के बाद अपन बाप की प्रशसा शुरू कर दी कि वह बड़ा गुनी आदमी था। ऐसा हारमोनियम बजाना था कि लोग अवाक रह जाते थ। फिर उसने अपनी बीवी की खूबसूरती का जिक्र किया और बताया कि बचपन म ही उसके बाप ने यह लडकी चुनकर उसस ब्याह दी थी। बगाली म्यूजिक डायरेक्टर सेन की बात चली तो उसने कहा, मिस्टर मण्टो, वह एकदम हलकट आदमी था कहता था, मैं खान साहब अब्दुल करीम का चेला हूँ झूठ, बिलकुल झूठ वह तो बगाल के किसी भड़ुवे का चेला था।'

घड़ी ने दो बजाए। चड्ढे ने किटी को धक्का देकर एक ओर गिराया

श्रौर वटकर वनक्तरे के मद्दू जैम सिर पर घप्पा मारकर कहा, 'बकवास बद कर थ उठ और कुछ गा लेकिन खबरदार, अगर तून कोई पक्का राग गाया।'

वनक्तरे न तुरत गाना शुरू कर दिया। आवाज अच्छी नही थी। मुर्कियां की बारीकियां उसके गले स निकलती थीं, लेकिन जो कुछ गाता था, पूरी तन्मयता से गाता था। मालकोश म उसन दो तीन फिल्मी गाने सुनाए, जिनसे वातावरण बहुत उदास हो गया। मम्मी और चड्ढा एक-दूसरे की ओर देखते थे और नजरें किसी और तरफ हटा लेते थे गरीबनवाज इतना प्रभावित हुआ कि उसकी आखो म आसू आ गए। चड्ढे ने जोर का कहकहा लगाया और कहा, 'हैदराबाद वालो की आख का मसाना बहुत कमजोर होता है—मौके बेमौके टपकने लगता है।'

गरीबनवाज न अपने आसू पोछे और एलिमा के साथ नाचना शुरू कर दिया। वनक्तरे ने ग्रामोफोन के तवे पर रिकार्ड रखकर सुई लगा दी। घिसी हुई ट्यून बजने लगी। चड्ढे ने मम्मी को फिर गोद मे उठा लिया और कूद कूदकर शोर मचाने लगा। उसका गला बैठ गया था, उन मीरासियो की तरह, जो शादी ब्याह के मौके पर ऊचे सुरो मे गा गाकर अपनी आवाज का नाश मार लेते हैं।

उस उछल-कूद और चीख दहाड म चार बज गए। मम्मी एकदम चुप हो गई। फिर उसने चड्ढे की ओर मुडकर कहा 'बस अब खतम!'

चड्ढे न बोतल स मुह लगाया और उस खाली करके एक ओर फेंक दिया और मुझसे कहा, 'चलो मण्टो, चलें।'

मैंने उठकर मम्मी से इजाजत लेनी चाही कि चड्ढे ने मुझे अपनी ओर खीच लिया, 'आज कोई विदाई नही लेगा।'

हम दोनो बाहर निकल रहे थे कि मैंने वनक्तरे के रोने की आवाज सुनी। मैंने चड्ढे स कहा, 'ठहरो, देखें क्या बात है।' मगर वह मुझे धकेलकर आगे ले गया। उस साले की आखो का मसाना भी कमजोर है।'

मम्मी के घर से सईदा काटेज बिलकुल निकट थी। रास्त मे चड्ढे ने कोई बात न की। सोने से पहले मैंने उससे इस विचित्र पार्टी के बारे में

जानना चाहा तो उसने कहा, 'मुझे नींद आ रही है।' और वह बिस्तर पर लेट गया।

सुबह उठकर मैं गुसलखाने में गया। बाहर निकला तो देखा कि गरीबनवाज गैरेज के टाट के साथ लगा खड़ा है और रो रहा है। मुझे देखकर वह आंसू पोंछता वहां से हट गया। मैंने पास जाकर उससे रोने का कारण पूछा तो उसने कहा, 'मम्मी चली गई।'

'कहां?'

मालूम नहीं।' यह कहकर गरीबनवाज सड़क की ओर चला गया।

चड्ढा बिस्तर पर लेटा था। ऐसा मालूम होता था कि वह एक क्षण के लिए भी नहीं सोया था। मैंने उससे मम्मी के बारे में पूछा तो उसने मुस्कराकर कहा, 'चली गई, सुबह की गाड़ी से उसे पूना छोड़ना था।'

मैंने पूछा, लेकिन क्यों?

चड्ढे के स्वर में कटुता आ गई 'हुकूमत को उसकी अदाएं पसन्द नहीं थीं—उसका रंग ढंग पसन्द नहीं था। उसके घर की महफिलें उसकी नजरों में आपत्तिजनक थीं। इसलिए कि पुलिस उसके स्नेह और ममता को भ्रष्टाचार के रूप में लेना चाहती थी वे उसे मां कहकर उससे एक दलाल का काम लेना चाहते थे एक समय से उसके एक केस की छानबीन हो रही थी। आखिर सरकार पुलिस की छानबीन से सहमत हो गई और उसको 'तड़ी पार' कर दिया। इस शहर से निकाल दिया वह अगर वेश्या थी, या दलाला थी—उसकी मौजूदगी अगर समाज के लिए हानिकारक थी तो उसका खात्मा कर देना चाहिए था पूना की गंदगी में यह क्यों कहा गया कि तुम यहां से चली जाओ और जहां चाहो ढेर हो सकती हो? चड्ढे ने बड़े जोर से कहकहा लगाया और थोड़ी देर चुप रहा। फिर उसने बड़े भावुक स्वर में कहा मुझे दुख है मण्टो कि उस गन्दगी के साथ ऐसी पवित्रता चली गई है जिसने उस रात मेरी एक बड़ी गलत और गन्दी तरंग को मेरे दिलोदिमाग से निकाल दिया था—लेकिन मुझे अफसोस नहीं होना चाहिए—वह पूना से चली गई—मुझ जैसे जवानों में ऐसी गलत और गन्दी तरंगें वहां भी पैदा होंगी, जहां वह अपना घर बनाएगी मैं अपनी मम्मी उनके सुपुर्द करता हूं जिन्दाबाद मम्मी

जिन्दाबाद चलो, गरीबनवाज को ढूंढें। रो रोकर उसने अपना बुरा हाल कर लिया होगा हैदराबादियों की आंखों का मसाना बहुत कमजोर होता है—मौके-बेमौके टपकने लगता है।'

मैंने देखा, चड्ढा की आंखों में आंसू इस तरह तैर रहे थे, जिस तरह वधितों की लाशें।

नगी आवाजें

भोलू और गामा दो भाई थे। बेहद मेहनती। भोलू कलईगर था। सुबह धौंकनी सिर पर रखकर निकलता और दिन भर शहर की गलियो मे, 'वतन कलई करा लो' की आवाजें लगाता रहता था। शाम को घर लौटता तो उसकी तहमद की टेंट मे तीन चार रुपये की रेजगारी जरूर होती।

गामा खाचा लगाता था। उसको भी दिन-भर छावडी सिर पर उठाए घूमना पडता था। तीन चार रुपये वह भी कमा लेता था, पर उसे शराब की लत थी। शाम को खाना खाने से पहले दीने के भटियारखाने मे रौनक हो जाती। सबको मालूम था कि वह पीता है और इसीके सहारे जीता है।

भोलू ने गामा को, जो उससे दो साल बडा था, बहुत समझाया कि देखो, यह शराब की लत बहुत बुरी है, शादीशुदा हो, बेकार पैसा बरबाद करते हो यही जो तुम रोज एक पाव शराब पर खर्च करते हो, बचाकर रखो तो भाभी ठाठ से रहा करे, नगी बुच्ची अच्छी लगती है तुम्हे अपनी घरवाली? गामा इस कान सुनता उस कान उडा देता। भोलू जब थक हार गया, तो उसने कहना-सुनना ही छोड दिया।

दोनो शरणार्थी थे। एक बडी बिल्डिग के साथ नौकरो के क्वाटर थे। इनपर, जहा औरो ने कब्जा जमा रखा था, वहा इन दोनो भाइयो ने भी एक क्वाटर को, जो दूसरी मजिल पर था, अपने रहने के लिए कब्जे मे कर रखा था।

सर्दिया आराम से कट गइ। गर्मिया आईं तो गामा को बहुत तकलीफ हुई। भोलू तो ऊपर कोठे पर खाट बिछाकर सो जाता, पर गामा क्या करता? बीवी थी और ऊपर पर्दे का कोई बन्दोबस्त ही न था। एक गामा ही को यह तकलीफ न थी, उन क्वाटरो मे जो भी शादीशुदा था, इसी मुसीबत मे फसा था।

कल्लन को एक बात सूझी। उसने कोठे पर कोन म, अपनी और अपनी बीवी की चारपाई के इद गिद, टाट तान दिया। इस तरह पर्दे का इन्तजाम हो गया। कल्लन की देखा देखी दूसरा ने भी इस तरकीब स काम लिया। भोलू ने भाई की मदद की और कुछ ही दिनो मे बास वगरा लगाकर, टाट और कम्बल जोडकर, पर्दे का इ तजाम कर दिया। या हवा तो रुक जाती थी, पर नीचे क्वाटर के नरक से हर हालत मे यह जगह अच्छी थी।

ऊपर कोठे पर सोन से भोलू की तबीयत मे एक अजीब बदलाव आ गया। वह शादी-ब्याह का बिलकुल कायल नही था। उसने मन म ठान रखी थी कि यह जजाल कभी नही पालेगा। जब कभी गामा उसके ब्याह की बात छेडता तो वह कहा करता, ना भाई, मैं यह जजाल नही पालना चाहता। अपन शरीर पर जाके नही लगवाना चाहता। लेकिन जब गमिया आई और उसने ऊपर खाट बिछाकर सोना शुरू किया तो दस प द्रह दिन ही म उसके विचार बदल गए। एक शाम को दीने के भटियारखान म उसने अपन भाई से कहा, 'मेरी शादी कर दो, नही तो मैं पागल हो जाऊगा।

गामा ने जब यह सुना तो उसने कहा, यह क्या मजाक सूझा है तुम्हें?'

भोलू बहुत गम्भीर हो गया। बोला, 'तुम्ह नही मालूम प द्रह रातें हो गई हैं मुझे जागत हुए।'

क्यो, क्या हुआ?' गामा ने पूछा।

'कुछ नही यार दायें-बायें जिधर नजर डालो, कुछ न कुछ हो रहा होता है अजीब-अजीब आवाजें आती हैं। नीद क्या आएगी खाक'

गामा जोर से अपनी घनी मूछा म हसा।

भोलू शरमा गया। फिर बोला, 'वह जो कल्लन है, उसने तो हद ही कर दी है साला रात भर बकवास करता रहता है साली उसकी बीवी की जबान तालू स नही लगती बच्चे पडे रो रहे हैं पर वह '

गामा हमेशा की तरह नशे म था। भोलू चला गया तो उसने दीन क भटियारखाने म अपन सब यार-दोस्तो को चहक चहककर बताया कि उसके भाई को आजकल नीद नही आती। इसकी वजह जब उसन अपन

खास अन्दाज में बयान की तो सुनने वालों के पेट में हंसते हंसते बल पड़ गए। जब वे लोग भोलू से मिले तो उन्होंने उसका खूब मजाक उड़ाया। कोई उससे पूछता 'हां भाई, कल्लन अपनी जोरू से क्या बातें करता है?' कोई कहता, 'यार, मुफ्त में मजे लेते हो सारी रात फिल्म देखते रहते हो सौ फीसदी बोलती गाती।' कुछ ने उससे गन्दे गन्दे मजाक किए। भोलू बेतरह चिढ़ गया।

दूसरे दिन उसने गामा को उस वक्त पकड़ा, जब वह नशे में नहीं था और बोला, 'तुमने तो यार मेरा मजाक बना दिया है। देखो, जो कुछ मैंने तुमसे कहा है, झूठ नहीं है। मैं भी इन्सान हूं। खुदा की कसम, मुझे नींद नहीं आती। आज भी बीस दिन हो गए हैं मुझे जागते हुए तुम मेरी शादी का बन्दोबस्त कर दो, नहीं तो, कसम खुदा की, कसम पंज-तन पाक की, मेरा खाना खराब हो जाएगा। भाभी के पास मेरा पांच सौ रुपया जमा है जल्दी कर दो बन्दोबस्त!'

गामा ने मूंछ मरोड़कर पहले कुछ सोचा, फिर कहा, 'अच्छा, हो जाएगा बन्दोबस्त। तुम्हारी भाभी से आज ही बात करता हूं कि वह अपनी मिलने-जुलने वालियों में पूछताछ करे।'

डेढ़ महीने के अन्दर अन्दर बात पक्की हो गई। समद कलईगर की लड़की आयशा गामा की बीवी को बहुत पसन्द आई। खूबसूरत थी घर का कामकाज जानती थी। वैसे समद भी भला आदमी था। मुहल्ले वाले उसकी इज्जत करते थे। भोलू मेहनती था, तन्दुरुस्त था। जून के महीने में ही शादी की तारीख पक्की हो गई। समद ने बहुत कहा कि वह इतनी गर्मियों में लड़की नहीं ब्याहेगा, पर गामा ने जब बहुत जोर दिया, तब वह मान गया।

शादी से चार दिन पहले भोलू ने अपनी दुलहन के लिए ऊपर कोठे पर टाट के पर्दे का बन्दोबस्त किया। बांस बड़ी मजबूती से चारपाइयों के पायों से बांधे। टाट खूब कसकर लगाया। चारपाइयों पर नये खेस बिछाए। नई सुराही मुण्डेर पर रखी। शीशे का गिलास बाजार से खरीद लाया। सब काम उसने बड़े शौक से किए।

रात को जब वह टाट के पर्दे में घिरकर सोया तो उसको अजीब-सा

लगा। वह खुली हवा में सोने का आदी था, पर अब उसको बिलकुल उलटी आदत डालनी थी। यही वजह थी कि शादी से चार दिन पहले ही उसने यों सोना शुरू कर दिया था। पहली रात जब वह लेटा और उसने अपनी बीवी के बारे में सोचा तो वह पसीने से तरबतर हो गया। उसके कानों में वे आवाजें गूंजने लगीं, जो उसे सोने नहीं देती थीं और उसके दिमाग में तरह तरह के परेशान खयाल दौड़ाती थीं।

क्या हम भी ऐसी ही आवाजें पैदा करेंगे? क्या आसपास के लोग हमारी आवाजें भी सुनेंगे? क्या वे मेरी तरह, रातें जाग जागकर काटेंगे? किसीने अगर झांककर देख लिया तो क्या होगा?'

भोलू पहले से भी ज्यादा परेशान हो गया। हर वक्त उसको यही बात सताती रहती कि टाट का पर्दा भी कोई पर्दा है। फिर चारों तरफ लोग बिखरे पड़े हैं। रात के सन्नाटे में हल्की-सी कानाफूसी भी दूसरे कानों तक पहुंच जाती है। लोग कैसे यह नंगी जिंदगी जीते हैं? एक कोठा है, इस चारपाई पर बीवी लेटी है, उस चारपाई पर शौहर पड़ा है। सैंकड़ों आंखें कान आसपास खुले हैं। नजर न आने पर भी आदमी सबकुछ देख लेता। हलकी सी आहट पूरी तसवीर बनकर सामने आ जाती है यह टाट का पर्दा क्या है? सूरज निकलता है तो उसकी रोशनी सारी चीजों पर से पर्दा हटा देती है। वह सामने कल्लन अपनी बीवी की छातियां दबा रहा है। वह कोने में उसका भाई गामा लेटा है। तहमद खुलकर एक ओर जा पड़ा है। उधर ईदू हलवाई की कुंआरी बेटी शादा का पेट छिदरे टाट से भाव झांककर देख रहा है।

शादी का दिन आया तो भोलू का जी चाहा, वह कहीं भाग जाए। पर कहां जाता? अब तो वह जकड़ा जा चुका था। गायब हो जाता तो समद जरूर खुदकुशी कर लेता। उसकी लड़की पर जाने क्या बीतती! जो तूफान मचता, वह अलग।

'अच्छा! जो होता है होने दो—मेरे और साथी भी तो हैं। धीरे-धीरे आदत हो जाएगी मुझे भी—भोलू ने अपने आपको ढाढस दिया और नई-नवेली दुलहन को डोली पर ले आया।

क्वार्टरों में चहल-पहल पैदा हो गई। लोगों ने भोलू और गामा को

खूब बधाइया दी। भोलू के जो खास दोस्त थे, उन्होंने उसको छेड़ा और पहली रात के लिए कई सफल गुर बताए। भोलू चुपचाप सुनता रहा। उसकी भाभी ने ऊपर कोठे पर टाट के पर्दे के नीचे बिस्तर का बन्दोबस्त कर दिया। गामा ने मोतिए के चार बडे बडे हार तकिये के पास रख दिए। एक दोस्त उसके लिए जलेबियां वाला दूध ले आया।

देर तक वह नीचे क्वाटर मे अपनी दुलहन के पास बैठा रहा। वह बेचारी शर्म के मारे, सिर झुकाए, घूघट काढे, सिमटी हुई थी। सख्त गर्मी थी। भोलू का नया कुर्ता उसके जिस्म के साथ पसीने से चिपका हुआ था। वह पखा झल रहा था, पर हवा जैसे बिलकुल गायब हो गई थी। भोलू ने पहले सोचा था कि वह ऊपर कोठे पर नही जाएगा, नीचे क्वाटर मे ही रात काटेगा, पर जब गर्मी असह्य हो गई, तब वह उठा और उसने दुलहन से चलने के लिए कहा।

रात आधी से ज्यादा बीत चुकी थी। सारे क्वाटर खामोशी मे लिपटे हुए थे। भोलू को इस बात का सतोष था कि सब लोग सो रहे होंगे। कोई उसको नही देखेगा। चुपचाप, दबे पाव, वह अपने टाट के पर्दे के पीछे, अपनी दुलहन समेत घुस जाएगा और सुबह मुह अधेरे ही नीचे उतर आएगा।

जब वह कोठे पर पहुचा तो बिलकुल सन्नाटा था। दुलहन ने शरमाये हुए कदम उठाए तो पायल के रुपहले घुघरू बजने लगे। एकदम भोलू ने महसूस किया कि चारो तरफ जो नीद बिखरी हुई थी, वह जैसे चौंककर जाग पडी है। चारपाइयो पर लोग करवटें बदलने लगे। खासने-खखारने की आवाजें इधर उधर उभरने लगी। भोलू ने घबराकर अपनी बीवी का हाथ पकड़ा और तेजी से टाट की ओट मे चला गया। दबी दबी एक हसी की आवाज उसके कानो के साथ टकराई। उसकी घबराहट बढ गई। बीवी से बात की, तो पास ही खुसुर फुसुर शुरू हो गई। दूर कोने मे, जहा कल्लन की जगह थी, चारपाई की चर चू चर चू होने लगी। वह धीमी पडी तो गामा की लोहे की चारपाई बोलने लगी।

इद्दू हलवाई की कुआरी लडकी शादा ने दो-तीन बार उठकर पानी पिया। घडे के साथ उसका गिलास टकराता तो एक छनाका सा पैदा

होता। परे कसाई के लडके की चारपाई से बार बार माचिस जलाने का आवाज आती थी।

भोलू अपनी दुल्हन से कोई बात न कर सका। उसे डर था कि आस पास के खुले हुए कान फौरन उसकी बात निगल जाएंगे और सारी चार पाइयां 'चर चूं चर-चूं' करने लगेंगी। दम साधे वह चुपचाप लेटा रहा। कभी कभी सहमी हुई निगाह से अपनी जोरू की तरफ देख लेता, जो गठरी सी बनी दूसरी चारपाई पर पडी थी। कुछ देर वह जागती रही, फिर सो गई।

भोलू ने चाहा कि वह भी सो जाए, पर उसे नींद न आई। थोडी थोडी देर के बाद उसके कानों में आवाजें आती थीं, आवाजें, जो फौरन तसवीरें बनकर उसकी आंखों के सामने से गुजर जाती थीं।

उसके मन में बडी उमंगें थीं, बडा जोश था। जब उसने शादी का इरादा किया था तो वे सारे मजे जिनसे वह अपरिचित था, उसके दिल दिमाग में चक्कर लगाते रहते थे। उसे एक गर्मी महसूस होती थी—बडी सुख गर्मी। मगर अब जैसे 'पहली रात' से उसे कोई दिलचस्पी ही न थी। उसने रात में कई बार यह दिलचस्पी पैदा करने की कोशिश की, लेकिन आवाजें—वे तसवीरें खींचने वाली आवाजें—सब कुछ अस्त-व्यस्त कर देतीं। वह अपने आपको नंगा महसूस करता, बिलकुल नंगा जिसको चारों ओर से लोग आंखें फाड-फाडकर देख रहे हों और हंस रहे हों।

सुबह चार बजे के करीब वह उठा। बाहर निकलकर उसने ठण्डे पानी का एक गिलास पिया। कुछ सोचा, वह झिझक जो उसके मन में बैठ गई थी, उसको किसी हद तक दूर किया। अब ठण्डी हवा चल रही थी जो काफी तेज थी। भोलू की निगाहें कोने की तरफ घूमीं। बल्तन का घिसा हुआ टाट हिल रहा था। वह अपनी बीवी के पास बिलकुल नंग धडंग लेटा था। भोलू को बडी घिन लगी। साथ ही गुस्सा भी आया कि हवा ऐसे कोठों पर क्या चलती है? चलती है तो टाटों को क्यों छेडती है? जी में आया कि कोठे पर जितने टाट हैं, सब नोच डाले और नंगा होकर नाचने लगे।

भोलू नीचे उतर आया। जब काम पर निकला तो कई दोस्त मिले।

सबने उससे सुहागरात का हाल पूछा। फूजे दर्जी ने उसको दूर ही से आवाज दी 'क्या उस्ताद भोलू, कैसे रहे? कहीं हमारे नाम पर बट्टा तो नहीं लगा दिया?'

छागे टीनसाज ने उससे बड़े भेद भरे स्वर में कहा 'देखो अगर कुछ गड़बड़ है तो बता दो एक बड़ा अच्छा नुस्खा मेरे पास है।

वाले ने उसके कन्धे पर जोर का हाथ मारा और पूछा, 'कहो पहलवान, कैसा रहा दंगल?'

भोलू चुप रहा।

सुबह उसकी बीवी मायके चली गई। पांच छः दिन के बाद लौटी तो भोलू को फिर उसी मुसीबत का सामना करना पड़ा। कोठे पर सोने वाले जम उसकी बीवी के आने का इंतजार कर रहे थे। कुछ रातें खामोश रही थीं, लेकिन जब वे ऊपर सोए तो फिर वही खुसुर फुसुर, वही 'चर-चूं चर चूं', वही खासना-खखारना, वही घड़े के साथ गिलास के टकराने की छनाके, करवटों पर करवटें, दबी दबी हंसी। भोलू सारी रात अपनी चारपाई पर लेटा आसमान की ओर देखता रहा। कभी कभी एक ठण्डी आह भरकर अपनी दुलहन को देख लेता और मन में कुढ़ता 'मुझे क्या हो गया है?', 'मुझे क्या हो गया है?' 'यह मुझे क्या हो गया है?'

सात रातों तक यही होता रहा। आखिर तंग आकर भोलू ने अपनी दुलहन को मायके भेज दिया। बीस पच्चीस दिन बीत गए तो गामा ने भोलू से कहा, 'तुम अजीब आदमी हो। नई नई शादी, और बीवी को मायके भेज दिया। इतने दिन हो गए उसे गए हुए, तुम अकेले सोते कैसे हो?'

भोलू ने सिर्फ इतना कहा 'ठीक है।'

गामा ने पूछा, 'ठीक क्या है? जो बात है, बताओ। क्या तुम्हें पसन्द नहीं आई आयशा?'

'यह बात नहीं है।'

'यह बात नहीं है तो और क्या बात है?'

भोलू बात गोल कर गया। पर थोड़े ही दिनों बाद उसके भाई ने फिर बात छेड़ी। भोलू उठकर क्वाटर के बाहर चला गया। बाहर एक

चारपाई पडी थी, उसपर बैठ गया । भीतर से उसकी भाभी की आवाज सुनाई दी । वह गामा से कह रही थी, 'तुम जो कहते हो ना कि भोलू को आयशा पसन्द नही आई यह गलत है ।

गामा की आवाज आई, ' तो और क्या बात है ? भोलू को उससे कोई दिलचस्पी ही नही ।'

'दिलचस्पी क्या हो ?'

'क्यो ?

गामा की बीवी ने इसका जो जवाब दिया, भोलू न सुन सका, लेकिन इसके बावजूद उसको ऐसा लगा, मानो उसकी सारी हस्ती किसीने ओखली मे डालकर कूट दी हो ।

गामा एकदम जोर से बोला, 'नही, नही ! यह तुमसे किसने कहा ?

गामा की बीवी बोली 'आयशा ने अपनी किसी सहेली से कहा बात उडते-उडते मुझ तक पहुच गई ।

बडे दुख भरे स्वर मे गामा ने कहा, 'यह तो बहुत बुरा हुआ !'

भोलू के दिल मे छुरी-सी उतर गई । उसका दिमागी सतुलन बिगड गया । वह उठा और कोठे पर चढकर जितने टाट लगे थे, उन्हे उसने उखाडना शुरू कर दिया । 'खट-खट फट फट' सुनकर लोग ऊपर जमा हो गए । उन्होने उसको रोकने की कोशिश की तो वह लडने लगा । बात बढ गई । कल्लन ने बास उठाकर उसके सिर पर दे मारा । भोलू चकराकर गिरा और बेहोश हो गया । जब उसे होश आया, तो उसका दिमाग चल चुका था ।

अब वह बिलकुल नग धडग बाजारो मे घूमता फिरता है । कही टाट देखता है तो उसको उतारकर टुकडे टुकडे कर देता है ।

हतक

दिन भर की थकी मादी वह अभी अपने बिस्तर पर लेटी थी और लेटते ही सो गई थी। म्युनिसिपल कमेटी का सफाई-दारोगा, जिसे वह 'सेठ' के नाम से पुकारा करती थी, अभी अभी उसकी हड्डिया पसलिया झभोडकर, शराब के नशे मे चूर, वापस घर को चला गया था। वह रात को यही ठहर जाता, पर उसे अपनी धर्मपत्नी का बहुत खयाल था, जो उससे बेहद 'प्रेम' करती थी।

वे रुपये, जो उसने अपने शारीरिक परिश्रम के बदले मे, उस दारोगा से वसूल किए थे, उसकी चुस्त और थूक भरी चोली के नीचे से ऊपर को उभरे हुए थे। कभी कभी सास के उतार चढाव से चादी के ये सिक्के खनखनाने लगते और उनकी खनखनाहट उसके दिल की बेसुरी धडकनो मे घुल मिल जाती। ऐसा मालूम होता था कि उन सिक्को की चादी पिघलकर उसके दिल के खून मे टपक रही है।

उसका सीना अन्दर से तप रहा था। यह गर्मी, कुछ तो उस ब्राण्डी की वजह से थी, जिसका अद्धा दारोगा अपने साथ लाया था और कुछ उस 'ब्योडे का नतीजा' थी, जिसको, सोडा खत्म होने पर, दोनो ने पानी मिलाकर पिया था।

वह सागौन के लम्बे चौडे पलग पर औंधे मुह लेटी हुई थी। उसकी बाहें, जो कन्धो तक नगी थी, पतग की उस काप की तरह फैली हुई थी, जो ओस मे भीग जाने के कारण पतले कागज से अलग हो जाए। दायें बाजू की बगल मे झुर्रियां भरा मास उभरा हुआ था, जो बार-बार मुडने की वजह से नीली काली रगत का हो गया था। लगता था, जैसे नुची हुई मुर्गी की खाल का एक टुकडा वहा पर रख दिया गया है।

कमरा बहुत छोटा था, जिसमे अनगिनत चीजें बतरतीबी के साथ बिखरी हुई थी। तीन चार सूखी सडी चप्पलें पलग के नीचे पडी थी, जिनके ऊपर मुह रखकर, एक खाज मारा कुत्ता सो रहा था और नीद मे

किसी अनजान चीज को मुह चिढा रहा था। उस कुत्ते के बाल खुजली के कारण जगह जगह से उडे हुए थे। दूर स अगर कोई कुत्ते को देखता तो समझता कि पर पोछन वाला पुराना टाट दोहरा कर जमीन पर रखा हुआ है।

उस तरफ छोटी सी दीवारगीर पर, सिंगार का समान रखा था—गालो पर लगान की सुर्खी, लाल रग की लिपस्टिक, पाउडर, कघी और लोहे की पिन, जिन्ह शायद वह अपने जूडे म लगाया करती थी। पास ही एक लम्बी खूटी के साथ तोते का पिंजरा लटक रहा था, जिसमे तोता गदन को अपनी पीठ के बालो मे छिपाए सो रहा था। पिंजरा कच्चे अमरूद के टुकडो और गले हुए सन्तरे के छिलको से भरा हुआ था। उन बदबूदार टुकडो पर छोटे-छोटे काले रग के मच्छर या पतग उड रहे थे।

पलग के पास ही एक बेंत की कुर्सी पडी थी, जिसकी पीठ लगातार सिर टेकने की वजह स बेहद मैली हो रही थी। कुर्सी के दायें हाथ को एक सुन्दर तिपाई थी जिसपर 'हिज मास्टस वायस' का पोर्टेबल ग्रामोफोन पडा था। उस ग्रामोफोन पर मढे हुए काले कपडे की बहुत बुरी हालत थी। सुइया तिपाई के अलावा कमरे के हर कोने मे बिखरी पडी थी। उस ग्रामोफोन के ठीक ऊपर दीवार पर चार फ्रेम लटक रहे थे, जिनमे अलग अलग व्यक्तियो की तस्वीरें जडी थी।

इन तस्वीरो स जरा इधर हटकर, यानी दरवाजे मे दाखिल होते ही, बाई तरफ की दीवार के कोने मे, चौखटे म जडा, गणेशजी का, बडे ही भडकीले रग का चित्र था, जो ताजा और सूखे फूलो से लदा हुआ था। लगता था, यह चित्र कपडे के किसी थान से उतारकर फ्रेम कराया गया था। उस चित्र के साथ, छोटे-से ताक पर, जोकि बहुद चिकना हो रहा था, तेल की एक प्याली धरी थी, जो दीये को जलाने के लिए वहा रखी गई थी। पास ही दीया पडा था, जिसकी लौ हवा बन्द होने की वजह से, माथे के तिलक की तरह सीधी खडी थी। उस दीवारगीर पर धूप बत्ती की छोटी बडी मरोडिया भी पडी थी।

जब वह बोहनी करती थी तो दूर से गणेशजी की उस मूर्ति से रुपये छुआकर और फिर अपने माथे के साथ लगाकर, उन्ह अपनी चोली म रख

लिया करती थी। उसकी छातिया चूकि काफी उभरी हुई थी, इसलिए वह जितने रुपये भी अपनी चोली म रखती, सुरक्षित पडे रहते। अलबत्ता कभी कभी जब माधो पूने से छुट्टी लेकर आता तो उसे अपन कुछ रुपये पलग के पाए के नीचे उस छोट-से गड्ढे मे छिपान पडत थे, जो उसने खास तौर पर इसी काम के लिए खोद रखा था। माधो से रुपये बचाए रखने का यह तरीका सुगधी को रामलाल दलाल ने बताया था।

उसने जब यह सुना था कि माधो पूने से आकर सुगधी पर धावे बोलता है तो कहा था, उस साले को तून कब से यार बनाया है? यह बडी अनोखी आशिकी माशूकी है। साला एक पसा अपनी जेब से निकालता नही और तरे साथ मजे उडाता है। मजे अलग रह, तुमसे कुछ ल भी मरता है सुगधी, मुझे कुछ दाल मे काला नजर आता है। उस साले म कोई बात्त जरूर है, जो वह तुझे पा गया है सात साल से यह धधा कर रहा हू। मैं तुम छोकरिया की सारी कमजोरिया जानता हू।'

यह कहकर रामलाल दलाल न, जो बम्बई शहर के विभिन्न भागो म दस रुपये स लेकर सौ रुपय लेने वाली एक सौ बीस छोकरियो का धधा करता था, सुगधी को बताया, 'साली, अपना धन यो बरबाद न कर तरे तन पर स य कपडे भी उतारकर ले जाएगा वह तेरी मा का यार! इस पलग के पाये के नीचे छोटा सा गडढा खोदकर, उसम सार पसे दबा दिया कर और जब वह यहा आया कर तो उसम कहा कर— तेरी जान की कसम माधो, आज सुबह स एक धेले का मुह नहीं देखा। बाहर वाले से कहकर एक 'कोप चाय और अफलातून बिस्कुट तो मगा। भूख मे मेरे पेट मे चूहे दौड रहे हैं।—समझी? समय बहुत खराब आ गया है मेरी जान इस साली काग्रेस न शराब बद करके बाजार बिलकुल मदा कर दिया है पर तुझे तो कहीं न कहीं से पीन को मिल जाती है। भगवान कसम, जब तेरे यहा कभी रात की खाली की हुई बोतल देखता हू और दारू की बास सूघता हू तो जी चाहता है, तेरी जून म चला जाऊ।'

सुगधी को अपन जिस्म मे सबसे ज्यादा अपना सीना पसद था। एक बार जमुना न उससे कहा था, 'नीचे से इन बम के गोलो को बाधकर रखा

कर। अगिया पट्ना करेगी तो इनकी सरताई ठीक रहेगी।'

सुगंधी यह सुनकर हंस दी थी, 'जमुना, तू सबको अपने सरीखा समझती है। दस रुपये मे लाग तरी बोटिया तोडकर चले जात है तो तू समझती है कि सबके साथ ऐसा ही होता होगा कोई मुआ लगाए तो ऐसी वैसी जगह हाथ अरे हा, कल की बात तुझे सुनाऊ। रामलाल रात के दो बजे एक पजाबी को लाया। रात का तीस रुपया तय हुआ। जब सोने लगे तो मैंने बत्ती बुझा दी। अरे वह तो डरने लगा। सुनती हो जमुना! तेरी कसम, अधेरा होते ही उसका सारा ठाठ हवा हो गया। वह डर गया। मैंने कहा, चलो, चलो! देर क्यो करते हो? तीन बजने वाले हैं अभी दिन चढ आएगा। बोला, रोशनी करो! रोशनी करो! मैंने कहा, यह रोशनी क्या हुआ? बोला लाइट लाइट। उसकी भिंची हुई आवाज सुनकर मुझसे हसी न रुकी। मैंने कहा, भई मैं तो लाइट न करूगी। और यह कहकर मैंने उसकी मास भरी रान मे चुटकी ली। वह तडपकर उठ बैठा और लाइट आन कर दी। मैंने झट से चादर ओढ ली और कहा, तुझे शर्म नहीं आती मरदुए! वह पलग पर आया तो मैं उठी और लपककर लाइट बुझा दी। वह फिर घबराने लगा तेरी कसम, बडे मजे मे रात कटी। कभी अधेरा कभी उजाला, कभी उजाला, कभी अधेरा। ट्राम की खडखडाहट हुई तो पतलून वतलून पहनकर वह उठ भागा साले ने तीस रुपये सट्टे मे जीते होंगे, जो यू मुफ्त दे गया जमुना, तू बिल्कुल अल्हड है। बडे बडे गुर याद हैं मुझे इन लोगो को ठीक करने के लिए।'

सुगंधी को सचमुच बहुत-से गुर याद थे, जो उसने अपनी एक दो सहेलियो को बताए भी थे। आम तौर पर वह यह गुर सबको बताया करती थी 'अगर आदमी भला हो ज्यादा बातें न करने वाला हो, तो उससे खूब शरारतें करो, अनगिनत बातें करो, उसे छेडो, सताओ, उसके गुदगुदी करो, उससे खेलो अगर दाढी रखता हो तो उसमे उगलियो से कघी करते-करते दो चार बाल भी नोच लो, पेट बडा हो तो थप थपाओ उसको इतनी मोहलत ही न दो कि अपनी मर्जी के मुताबिक

कुछ करने पाए वह खुश खुश चला जाएगा और तुम भी बची रहोगी ऐसे मर्द जो गुपचुप रहते हैं, बड़े खतरनाक होते हैं बहन, हड्डी पसली तोड़ देते है, अगर उनका दाव चल जाए।'

सुगन्धी उतनी चालाक नहीं थी, जितनी वह खुद को जाहिर करती थी। उसके गाहक बहुत कम थे। वह एक बहुत ही भावुक लड़की थी। यही वजह है कि वे सारे गुर, जो उसे याद थे, उसके दिमाग से फिसलकर उसके पेट में आ जाते थे जिसपर एक बच्चा हो जाने के कारण कई लकीरें पड़ गई थीं। इन लकीरों को पहली बार देखकर उसे ऐसा लगा था कि उसके खाज मारे कुत्ते ने अपने पंजे से ये निशान बना दिए हैं। जब कोई कुतिया बड़ी उपेक्षा से उसके पालतू कुत्ते के पास से गुजर जाती थी तो वह शर्मिन्दगी दूर करने के लिए जमीन पर अपने पंजों से इसी तरह के निशान बनाया करता था।

सुगन्धी दिमाग में ज्यादा रहती थी, लेकिन जैसे ही कोई नर्म-नाजुक बात, कोई कोमल बोल उससे कहता, वह झट पिघलकर अपने शरीर के दूसरे हिस्सों में फैल जाती। हालाँकि उसका दिमाग मर्द और औरत के शारीरिक सम्बन्ध को एकदम बेकार की चीज समझता था, पर उसके शरीर के बाकी अंग सबके सब इसके बुरी तरह कायल थे। वे थकन चाहते थे— ऐसी थकन, जो उन्हें झकझोरकर, उन्हें मारकर, सोने पर मजबूर कर दे। ऐसी नींद जो थककर चूर-चूर होने के बाद आए कितनी मजेदार होती है वह बेहोशी, जो मार खाकर, जोड़ जोड़ ढीले हो जाने पर छा जाती है! कितना आनन्द देती है! कभी ऐसा लगता है कि तुम हो, कभी ऐसा लगता है कि तुम नहीं हो और इस होने और न होने के बीच में भी कभी ऐसा महसूस होता है कि तुम हवा में बहुत ऊँची जगह लटके हुए हो। ऊपर हवा, नीचे हवा, दायें हवा बायें हवा—बस, हवा ही हवा! और फिर उस हवा में दम घुटना भी एक खास मजा देता है।

बचपन में, जब वह आँख मिचौली खेला करती थी और अपनी माँ का बड़ा सन्दूक खोलकर उसमें छिप जाया करती थी तो नाकाफी हवा में दम घुटने के साथ साथ पकड़े जाने के डर से वह तेज धड़कन, जो उसके दिल में पैदा हो जाया करती थी, कितना मजा दिया करती थी!

सुग धी चाहती थी कि अपनी सारी जिन्दगी ऐसे ही किसी सन्दूक में छिपकर गुजार दे जिसके बाहर ढूंढ़ने वाले फिरते रहें। कभी कभी उसको ढूंढ़ निकाले, ताकि वह भी उनको ढढने की कोशिश करे। यह जिन्दगी, जो वह पाच बरस से बिता रही थी आख मिचौली ही तो थी। कभी वह किसीका ढढ लेती थी और कभी कोई उसे ढूढ लेता था बस, यो ही उसका जीवन बीत रहा था। वह खुश थी, इसलिए कि उसको खुश रहना पडता था। हर रोज रात को कोई न कोई मद उसके चौडे सागौनी पलग पर होता था और सुग धी, जिसको मर्दों को ठीक करने के अनगिनत गुर याद थे इस बात का बार बार निश्चय करने पर भी कि वह उन मर्दों की कोई ऐसी वैसी बात नही मानगी और उनके साथ बडे रूखेपन से पेश आएगी हमेशा अपनी भावनाओ की धारा मे बह जाया करती थी और सिर्फ एक प्यासी औरत रह जाया करती थी।

हर रोज रात को उसका पुराना या नया मुलाकाती उससे कहा करता था, 'सुग धी! मैं तुझसे प्यार करता हू।' और सुग धी, यह जानते हुए भी कि वह झूठ बोलता है मोम हो जाती थी और ऐसा महसूस करती थी, जसे सचमुच उससे प्यार किया जा रहा है! प्यार, कितना सुदर शब्द है! वह चाहती थी, उसको पिघलाकर अपने सारे अगो पर मल ले उसकी मालिश करे ताकि यह सारे का सारा उसके जिस्म मे रच जाए या फिर वह खुद उसके अन्दर चली जाए सिमट सिमटकर उसके अन्दर दाखिल हो जाए और ऊपर से ढकना बद कर दे। कभी-कभी जब प्यार करने और प्यार किए जाने की इच्छा उसके अन्दर शिद्दत से उठती तो कई बार उसके मन मे आता कि अपने पास पड़े हुए आदमी को गोद मे लेकर थपथपाना शुरू कर दे और लोरिया देकर उसे अपनी गोद मे ही सुला दे।

प्यार कर सकने की शक्ति उसमें अन्दर इतनी ज्यादा थी कि हर उस मद से, जो उसके पास आता था वह प्यार कर सकती थी और फिर उसको निभा सकती थी। अब तक चार मर्दों से (जिनकी तस्वीरें उसके सामने दीवार पर लटक रही थी) वह प्यार निभा ही तो रही थी। हर समय यह एहसास उसके दिल मे बना रहता था कि वह बहुत अच्छी है।

जरूरत हो और मुझे तरी ! पूरा म हवलदार हू । महीन मे एक बार आया करूगा तीन चार दिन के लिए यह धधा छोड मैं तुझे खच द दिया करूगा क्या भाडा है इस खोली का ?'

माधो न और भी बहुत कुछ कहा था, जिसका असर सुगधी पर इतना ज्यादा हुआ था कि वह कुछ क्षणा के लिए अपन आपको हवलदारनी समझन लगी थी। बातें करने के बाद माधो न उसके कमर की बिखरी हुई चीजें करीने स रखी थी और नगी तस्वीरें, जो सुगधी न अपन सिरहान लगा रखी थी, बिना पूछे फाड दी थी और कहा था, 'सुगधी, भई मैं एसी तस्वीरें यहा नहीं रखन दूगा और पानी का यह घडा देख तो, कितना मला है और ये ये चिथडे ये चिदिया उफ, कितनी बुरी बास आती है ! उठा के बाहर फेंक इनको और तूने अपन बालो का क्या सत्यानाश कर रखा है और और ।'

तीन घटे की बातचीत के बाद सुगधी और माधो दोना आपस म घुलमिल गए थे और सुगधी को तो ऐसा महसूस हुआ था, जैस वह बरसा से हवलदार को जानती है। उस वक्त तक किसीने भी कमरे मे बदबूदार चिथडा, मैले घडे और नगी तस्वीरा की मौजूदगी का खयाल नही किया था और न कभी किसीने उसको यह महसूस करन का मौका दिया था कि उसका एक घर है, जिसम घरलूपन आ सकता है। लोग आत थे और बिस्तर तक की गदगी को महसूस किए बिना चले जाते थे। कोइ सुगधी से यह न कहता था, देख तो आज तरी नाक कितनी लाल हो रही है ! कही जुकाम न हो जाए तुझे ठहर मैं तरे लिए दवा लाता हू। माधो कितना अच्छा था ! उसकी हर बात बावन तोला और पाव रत्ती की थी। क्या खरी खरी सुनाई थी उसन सुगधी को ! उसे महसूस होन लगा कि उस माधो की जरूरत है और इसलिए उन दोनो का सम्बध हो गया।

महीने मे एक बार माधो पूने से आता था और वापस जाते हुए हमेशा सुगधी से कहा करता था दख सुगधी ! अगर तून फिर स अपना धधा शुरू किया तो बस तेरी मेरी टूट जाएगी। अगर तून एक बार भी किसी मद को अपने यहा ठहराया तो चुटिया से पकडकर बाहर

निकाल दूंगा देख, इस महीने का गाय मैं तुझे पूना पहुँचाते ही मनीआर्डर कर दूंगा हाँ, क्या नाम है इस खोली का ?'

न माधो ने कभी पूना म नाय भेजा था और न सुगन्धी ने अपना धधा बन्द किया था। दोनों अच्छी तरह जानते थे, क्या हो रहा है। न सुगन्धी ने माधो से यह कहा था, 'तू यह टर टर क्या करता है ! एक फूटी कौडी भी दी है कभी तूने ?' और न माधो ने कभी सुगन्धी से पूछा था 'यह माल तरपास कहाँ से आता है, जबकि मैं तुझे कुछ देता ही नहीं !' दोनों झूठे थे, दोनों एक गिलट की हुई जिन्दगी बिता रहे थे। लेकिन सुगन्धी खुश थी। जिसको असल सोना पहनने को न मिले, वह गिलट किए हुए गहनों पर ही सन्तोष कर लिया करता है।

उस समय सुगन्धी थकी मादी सो रही थी। बिजली का हण्डा, जिसे वह आफ करना भूल गई थी, उसके सिर के ऊपर लटक रहा था। उसकी तेज रोशनी उसकी मुदी हुई आखो से साथ टकरा रही थी, पर वह गहरी नींद सो रही थी।

दरवाजे पर दस्तक हुई। रात के दो बजे यह कौन आया था ? सपनों में डूबे हुए सुगन्धी के कानों में दस्तक की आवाज भनभनाहट बनकर पहुँची। दरवाजा जब जोर से खटखटाया गया तो वह चौंककर उठ बैठी। दो मिली जुली शराबों और दांतों की रीखों में फसे हुए मछली के रेशों ने उसके मुँह के अन्दर ऐसा लुआब पैदा कर दिया था, जो बेहद कसैला और लेसदार था। धोती के पल्लू से उसने यह बदबूदार लुआब साफ किया और आँखें मलने लगी। पलग पर वह अकेली थी। झुककर उसने पलग के नीचे देखा तो उसका कुत्ता, सूखी हुई चप्पलों पर मुँह रख, सो रहा था और नींद में किसी अनजान चीज को मुँह चिढ़ा रहा था। तोता पीठ के बालों में सिर दिए सो रहा था।

दरवाजे पर फिर दस्तक हुई। सुगन्धी बिस्तर से उठी। उसका सिर दर्द के मारे फटा जा रहा था। घड़े से पानी का एक डोंगा निकालकर उसने कुल्ली की और दूसरा डोंगा गटागट पीकर उसने दरवाजे का पट थोड़ा-सा खोला और कहा, रामलाल !'

रामलाल, बाहर दस्तक देते देत थक गया था, भन्नाकर बोला 'तुझे साप सूघ गया था या क्या हो गया था ? एक घण्टे से बाहर खडा दरवाजा खटखटा रहा हू। कहा मर गई थी ?' फिर आवाज दबाकर उसन हौल से पूछा, 'अ दर कोइ है तो नही ?'

जब सुग धी ने कहा नही' तो रामलाल की आवाज फिर ऊची हो गई, 'तू दरवाजा क्यो नही खोलती ? भई हद हो गई। क्या नीद पाइ है ! ऐसे एक एक छोकरी को उठाने मे दो दो घण्टे सिर खपाना पडे तो मैं अपना धधा कर चुका। अब तू मेरा मुह क्या देखती है। झटपट यह धोती उतारकर वह फूलो वाली साडी पहन पाउडर वाउडर लगा और चल मेरे साथ बाहर मोटर मे एक सेठ बैठे तेरा इ तजार कर रहे है चल चल, एकदम जल्दी कर !'

सुग धी आरामकुर्सी पर बैठ गई और रामलाल आईने के सामने अपने बालो मे कघी करने लगा।

सुग धी न तिपाइ की तरफ हाथ बढाया और बाम की शीशी उठाकर उसका ढकना खोलते हुए कहा, 'रामलाल, आज मेरा जी अच्छा नही।

रामलाल न कघी दीवारगीर पर रख दी और मुडकर कहा, तो पहले ही कह दिया होता।

सुग धी ने माथे और कनपटियो पर बाम मलत हुए रामलाल का भ्रम दूर कर दिया, 'वह बात नही रामलाल ऐसे ही मेरा जी अच्छा नही बहुत पी गई।'

रामलाल के मुह म पानी भर आया, 'थोडी बची हो तो ला, जरा हम भी मुह का मजा ठीक कर लें।'

सुगधी ने बाम की श शी तिपाई पर रख दी और कहा, बचाइ होती तो यह मुआ सिर मे दद ही क्यो होता ! स्य रामलाल, वह जो बाहर मोटर म बठा है उस अ दर ही ल आ।'

रामलाल न जवाब दिया नही भई वे अ दर नही आ सकत। जेण्टलमन आदमी हैं। वे तो मोटर को गली के बाहर खडी करत हुए भी घबरात थे तू कपडे-वपडे पहन ले और जरा गली के नुक्कड तक चल सब ठीक हो जाएगा।'

साढे सात रुपये का सौदा था। सुगन्धी उस हालत में, जबकि उसके सिर में बेहिसाब दर्द हो रहा था, कभी स्वीकार न करती लेकिन उसे रुपयों की सख्त जरूरत थी। उसके साथ वाली खोली में एक मद्रासी औरत रहती थी, जिसका पति मोटर के नीचे आकर मर गया था। उस औरत को अपनी जवान लडकी के साथ अपने घर जाना था, लेकिन उसके पास चूंकि किराया ही नहीं था, इसलिए वह असहाय अवस्था में पडी थी। सुगन्धी ने कल ही उसको ढाढस दिया था और उससे कहा था, 'बहन, तू चिन्ता न कर। मेरा आदमी पूना से आनेवाला है। मैं उससे कुछ रुपये लेकर तेरे जाने का बन्दोबस्त कर दूंगी।'

माधो पूना से आनेवाला था पर रुपयों का प्रबन्ध तो सुगन्धी को ही करना था। इसलिए वह उठी और जल्दी-जल्दी कपडे बदलने लगी। पांच मिनट में उसने धोती उतारकर, फूलों वाली साडी पहनी और गालों पर लाल पाउडर लगाकर तैयार हो गई। घडे से ठण्डे पानी का एक और डोंगा उसने पिया और रामलाल के साथ हो ली।

गली जो कि छोटे शहरों के बाजारों में भी कुछ बडी थी बिलकुल खामोश थी। गैस के वे लैम्प जो खम्भों पर जडे थे पहले की बनिस्बत बहुत धुंधली रोशनी दे रहे थे। लडाई[1] के कारण उनके शीशों को गदला कर दिया गया था। उस अन्धी रोशनी में गली के आखिरी सिरे पर एक मोटर नजर आ रही थी।

कमजोर रोशनी में उस काले रंग की मोटर का साया नजर आया और रात के पिछले पहर का भेद भरा सन्नाटा—सुगन्धी को ऐसा लगा कि उसके सिर का दर्द सारे माहौल पर छा गया है। एक कसैलापन उसे हवा के अन्दर भी महसूस होता था, जैसे ब्राण्डी और ब्योडे की बास से वह भी बोझिल हो रही हो।

आगे बढकर रामलाल ने मोटर के अन्दर बैठे हुए आदमियों से कुछ कहा। इतने में जब सुगन्धी मोटर के पास पहुंच गई तो रामलाल एक तरफ हटकर बोला, 'लीजिए, वह आ गई—बडी अच्छी छोकरी है। थोडे

---

1 द्वितीय महायुद्ध

ही दिन हुए हैं इस धन्धा शुरू किए।' फिर सुगन्धी की ओर मुड़कर कहा, 'सुगन्धी, इधर आ, सेठजी बुलाते हैं।

सुगन्धी साड़ी का एक किनारा अपनी उंगली पर लपेटती हुई आगे बढ़ी और मोटर के पास खड़ी हो गई। सेठ साहब ने टार्च से उसके चेहरे के पास रोशनी की। एक क्षण के लिए उस रोशनी ने सुगन्धी की खुमार-भरी आंखों में चकाचौंध पैदा की। बटन दबाने की आवाज पैदा हुई और रोशनी बुझ गई। साथ ही सेठ के मुंह से एक 'ऊंह' निकली। फिर एक-दम मोटर का इंजन फटफड़ाया और कार यह जा, वह जा

सुगन्धी कुछ सोच भी न पाई कि मोटर चल दी। उसकी आंखों में अभी तक टार्च की तेज रोशनी घुसी हुई थी। वह सेठ का चेहरा भी तो ठीक तरह न देख सकी थी। यह आखिर हुआ क्या था ? इस 'ऊंह' का क्या मतलब था, जो अभी तक उसके कानों में भनभना रही थी ? क्या ? क्या ?

रामलाल दलाल की आवाज सुनाई दी, 'पसन्द नहीं किया तुझे। अच्छा भई मैं चलता हूं। दो घण्टे मुफ्त में ही बरबाद किए।'

यह सुनकर सुगन्धी की टांगों में, उसकी बांहों में, उसके हाथों में एक जबरदस्त हरकत का इरादा पैदा हुआ। कहां थी वह मोटर कहां था वह सेठ तो 'ऊंह' का मतलब यह था कि उसने मुझे पसन्द नहीं किया उसकी

गाली उसके पेट के अन्दर से उठी और जबान की नोक पर आकर रुक गई। वह आखिर गाली किसे देती ! मोटर तो जा चुकी थी। उसकी दुम की लाल बत्ती उसके सामने, बाजार के अंधियारे में डूब रही थी। और सुगन्धी को ऐसा महसूस हो रहा था कि यह लाल लाल अंगारा 'ऊंह' है, जो उसके सीने में बर्मे की तरह उतरा चला जा रहा है। उसके जी में आया कि जोर से पुकारे, 'ओ सेठ ओ सेठ जरा मोटर रोकना अपनी बस, एक मिनट के लिए।' पर वह सेठ, थू है उसकी जात पर, बहुत दूर निकल चुका था।

वह सुनसान बाजार में खड़ी थी। फूलों वाली साड़ी, जिसे वह खास-खास मौकों पर पहना करती थी, रात के पिछले पहर की हल्की फुल्की

हवा मे लहरा रही थी। यह साडी और उसकी रेशमी सरसराहट सुगधी को कितनी बुरी मालूम हो रही थी! वह चाहती थी कि उस साडी के चिथडे उडा दे, क्योकि साडी हवा मे लहरा लहराकर 'ऊह ऊह' कर रही थी।

गालो पर उसने पाउडर लगाया था कि होठो पर सुर्खी। जब उसे खयाल आया कि यह सिंगार उसने अपने आपको पसन्द कराने के लिए किया था तो शर्म के मारे उसे पसीना आ गया। यह शर्मिन्दगी दूर करने के लिए उसने क्या कुछ न सोचा, 'मैंने उस मुए रणधीर को दिखाने के लिए थोडे ही अपने आपको सजाया था। यह तो मेरी आदत है—मेरी क्या, सबकी यही आदत है पर पर यह रात के दो बजे और रामलाल दलाल और यह बाजार और वह मोटर और टार्च की चमक।' यह सोचते ही रोशनी के धब्बे उसकी नजर की हद तक फिजा मे इधर उधर तैरने लगे और मोटर के इजन की फडफडाहट उसे हवा के हर झोंके मे सुनाई देने लगी।

उसके माथे पर बाम का लेप, जो सिंगार करते समय बिलकुल हलका हो गया था, पसीना आने की वजह से उसके लोम रध्रो मे दाखिल होने लगा और सुगधी को अपना माथा किसी और का माथा मालूम हुआ। जब हवा का एक झोका उसके पसीने से भीगे माथे के पास से गुजरा तो उसे ऐसा लगा कि ठण्डा-ठण्डा टीन का टुकडा काटकर उसके माथे के साथ चिपका दिया गया है। सिर मे दर्द वैसे का वैसा मौजूद था पर विचारो की भीडभाड और उनके शोर ने उस दर्द को अपने नीचे दबा रखा था। सुगधी ने कई बार उस दर्द को अपने खयालो के नीचे से निकालकर ऊपर लाना चाहा, पर नाकाम रही। वह चाहती थी कि किसी न किसी तरह उसका अग अग दुखने लगे। उसके सिर मे दर्द हो—ऐसा दर्द कि वह सिर्फ दर्द ही का खयाल करे, बाकी सब कुछ भूल जाए। यह सोचते सोचते उसके दिल मे कुछ हुआ—क्या यह दर्द था?—पल भर के लिए उसका दिल सिकुडा और फिर फैल गया—यह क्या था? लानत है! यह तो वही ऊह' थी, जो उसके दिल के अन्दर कभी सिकुडती थी और कभी फैलती थी।

घर की तरफ सुगंधी के कदम उठे ही थे कि रुक गए और वह ठहर कर सोचने लगी, रामलाल दलाल का खयाल है कि उसे मेरी शक्ल पसंद नहीं आई—शक्ल का तो उसने जिक्र नहीं किया। उसने तो यह कहा था —सुगंधी, पसंद नहीं किया तुझे। उसे उसे सिर्फ मेरी शक्ल ही पसंद नहीं आती। वह, जो अमावस की रात को आया था, कितनी बुरी सूरत थी उसकी! क्या मैंने नाक-भौं नहीं चढ़ाई थी? जब वह मेरे साथ सोने लगा था तो मुझे घिन नहीं आई थी? क्या मुझे उबकाई आते आते नहीं रुक गई थी? ठीक है पर सुगंधी, तूने उसे दुत्कारा नहीं था, तूने उसे ठुकराया नहीं था, उस मोटर वाले सेठ ने तो तेरे मुंह पर थूका है ऊंह इस 'ऊंह' का और मतलब ही क्या है? यही कि इस छछूंदर के सिर में चमेली का तेल ऊंह यह मुंह और मसूर की दाल अरे रामलाल, तू यह छिपकली कहां से पकड़कर ले आया है इसी लौंडिया की इतनी तारीफ कर रहा था तू दस रुपये और यह औरत! खच्चर क्या बुरी है

सुगंधी सोच रही थी और उसके पैर के अंगूठे से लेकर सिर की चोटी तक गर्म लहरें दौड़ रही थीं। उसको कभी अपने आपपर गुस्सा आता था और कभी रामलाल दलाल पर, जिसने रात के दो बजे उसे बआराम किया। लेकिन फौरन ही दोनों को बेकसूर पाकर वह सेठ का खयाल करती थी। उस खयाल के आते ही उसकी आंखें उसके कान उसकी बांहें उसकी टांगें उसका सब कुछ मुड़ता था कि उस सेठ को कहीं देख पाए उसके अंदर यह इच्छा बड़ी शिद्दत से पैदा हो रही कि जो कुछ हो चुका है, एक बार फिर हो सिर्फ एक बार वह हौले हौले मोटर की तरफ बढ़े, मोटर के अंदर से एक हाथ टार्च निकाले और उसके चेहरे पर रोशनी फेंके 'ऊंह' की आवाज आए और सुगंधी अंधाधुंध अपने दोनों पंजों से उसका मुंह नोचना शुरू कर दे। जंगली बिल्ली की तरह झपटे और अपनी उंगलियों के सारे नाखून जो उसने नये फैशन के मुताबिक बढ़ा रखे थे, उस सेठ के गालों में गड़ा दे बालों से पकड़कर उसे बाहर घसीट ले और धड़ाधड़ पीटना शुरू कर दे, और जब थक जाए जब थक जाए तो रोना शुरू कर दे।

रोने का खयाल सुगन्धी को सिर्फ इसीलिए आया कि उसकी आंखों में गुस्से और बेबसी की शिद्दत के कारण तीन चार बड़े बड़े आंसू बन रहे थे। एकाएक सुगन्धी ने अपनी आंखों से सवाल किया, "तुम रोती क्यों हो? तुम्हें क्या हुआ है कि टपकने लगी हो?" आंखों से किया गया सवाल कुछ क्षणों तक उन आंसुओं में तैरता रहा, जो अब पलकों पर कांप रहे थे। सुगन्धी उन आंसुओं में देर तक उस शून्य को घूरती रही, जिधर सेठ की मोटर गई थी।

फड़ फड़ फड़ यह आवाज कहां से आई? सुगन्धी ने चौंककर इधर उधर देखा, लेकिन किसीको न पाया। अरे! यह तो उसका दिल फड़फड़ाया था—वह समझी थी, मोटर का इंजन बोला है। उसका दिल यह क्या हो गया था उसके दिल को! आज ही यह रोग लग गया था उसे। अच्छा भला चलता चलता, एक जगह रुककर धड़ धड़ क्या करता था, बिलकुल उस घिसे हुए रिकार्ड की तरह, जो सुई के नीचे एक जगह आकर रुक जाता था और 'रात कटी गिन गिन तारे' कहता कहता 'तारे-तारे' की रट लगा देता था।

आसमान तारों से अटा हुआ था। सुगन्धी ने उनकी ओर देखा और कहा, '*कितने सुन्दर हैं!*' *वह चाहती थी कि अपना ध्यान किसी और* तरफ पलट दे, पर जब उसने 'सुन्दर' कहा, तो झट से यह खयाल उसके दिमाग में कूदा, 'ये तारे सुन्दर हैं, पर तू कितनी भोण्डी है! क्या भूल गई कि अभी अभी तेरी सूरत को फटकारा गया है?'

सुगन्धी कुरूप तो नहीं थी। यह खयाल आते ही वे सारी परछाइयां एक एक करके उसकी आंखों के सामने आने लगीं, जो इन पांच बरसों के दौरान वह आइने में देख चुकी थी। इसमें कोई सन्देह नहीं कि उसका रंग रूप अब वह नहीं रहा था, जो आज से पांच साल पहले था, जबकि वह सारी चिन्ताओं से मुक्त, अपने मां बाप के साथ रहा करती थी। लेकिन वह कुरूप तो नहीं हो गई थी। उसकी शक्ल सूरत उन आम औरतों की सी थी, जिनकी ओर मर्द गुजरते गुजरते घूरकर देख लिया करते हैं। उसमें वे सारी खूबियां मौजूद थीं, जो सुगन्धी के खयाल में हर मर्द उस औरत में जरूरी समझता है, जिसके *साथ* उसे एक दो रातें बितानी होती

हैं। वह जवान थी, उसके अंग सुडौल थे। कभी-कभी, नहाते समय जब उसकी निगाह अपनी रानों पर पड़ती थी तो वह खुद उनकी गोलाई और गदराहट को पसन्द किया करती थी। वह हँसमुख थी। इन पांच बरसों के दौरान शायद ही कोई आदमी उससे नाखुश होकर गया हो। बड़ी मिलनसार थी, बड़ी महरूय थी। पिछले दिनों, क्रिसमस में, जब वह गोल पीठा में रहा करती थी, एक नौजवान लड़का उसके पास आया था। सुबह उठकर, जब उसने कमर में जाकर, खूँटी से अपना कोट उतारा तो बटुआ गायब पाया। सुगंधी का नौकर यह बटुआ ले उड़ा था। बेचारा बहुत परेशान हुआ। छुट्टियां बिताने के लिए हैदराबाद से बम्बई आया था। अब उसके पास वापस जाने के लिए भी किराया न था। सुगंधी ने तरस खाकर उसे उसके दस रुपये वापस दे दिए थे।

'मुझमें क्या बुराई है?' सुगंधी ने यह सवाल हर उस चीज से किया, जो उसकी आंखों के सामने थी। गैस के अंधे लैंप, लोहे के खम्भे, फुटपाथ के चौकोर पत्थर और सड़क की उखड़ी हुई बजरी—इन सब चीजों की तरफ उसने बारी-बारी से देखा, फिर आकाश की ओर निगाह उठाई, जो उसके ऊपर झुका हुआ था, पर सुगंधी को कोई जवाब न मिला।

जवाब उसके अंदर मौजूद था। वह जानती थी कि वह बुरी नहीं, अच्छी है, पर वह चाहती थी कि कोई उसका समर्थन करे, कोई, कोई उस वक्त कोई उसके कंधों पर हाथ रखकर सिर्फ इतना कह दे, सुगंधी! कौन कहता है तू बुरी है? जो तुझे बुरा कहे, वह आप बुरा है। नहीं, यह कहने की कोई खास जरूरत नहीं थी। किसीका इतना भर कह देना काफी था, सुगंधी, तू बहुत अच्छी है।'

वह सोचने लगी कि वह क्यों चाहती है, कोई उसकी तारीफ करे? इससे पहले उसे इतनी शिद्दत से इस बात की जरूरत महसूस न हुई थी। आज क्या वह बेजान चीजों को भी ऐसी नजरों से देखती है, जैसे उनपर अपने अच्छे होने का एहसास तारी करना चाहती हो! उसके जिस्म का जर्रा जर्रा क्या 'मां' बन रहा था? वह मां बनकर धरती की हर चीज को अपनी गोद में लेने के लिए क्या तैयार हो रही थी? उसका जी क्या चाहता था कि वह सामने वाले गैस के खम्भे के साथ चिमट जाए और

उसके ठण्डे लोहे पर अपने गाल रख दे—अपने गर्म-गर्म गाल—और उसकी सारी सर्दी चूस ले ?

थोड़ी देर के लिए उसे ऐसा लगा कि गैस के अन्धे लैम्प, लोहे के खम्भे, फुटपाथ के चौकोर पत्थर और हर वह चीज, जो रात के सन्नाटे में उसके आसपास थी, हमदर्दी की नजरों से उसे देख रही है और उसके ऊपर झुका हुआ आकाश भी, जो मटियाले रंग की एसी मोटी चादर मालूम होता था, जिसमें अनगिनत छेद हो रहे हों, उसकी बातें समझता था और सुगन्धी को भी ऐसा लगता था कि वह तारों का टिमटिमाना समझती है—लेकिन उसके अन्दर यह क्या गड़बड़ थी ? वह क्या अपने अन्दर उस मौसम की फिजा महसूस कर रही थी, जो बारिश से पहले देखने में आया करती है ?—उसका जी चाहता था कि उसके जिस्म का एक-एक रोम रन्ध्र खुल जाए और जो कुछ उसके अन्दर उबल रहा है, उनके रास्ते बाहर निकल जाए। पर यह कैसे हो... कैसे हो ?

सुगन्धी गली के नुक्कड़ पर खत डालने वाले लाल बम्बे के पास खड़ी थी। हवा के तेज झोंके से बम्बे की लोहे की जीभ जो उसके खुले हुए मुंह में लटकी रहती थी खड़खड़ाई तो सुगन्धी की निगाह एकदम उस ओर उठी, जिधर मोटर गई थी, पर उसे कुछ दिखाई न दिया। उसके अन्दर कितनी जबरदस्त इच्छा थी कि वह सेठ मोटर पर एक बार फिर आए और... और...

न आए... बला से... मैं अपनी जान क्या बेकार हलकान करूं ! घर चलते हैं और आराम से लम्बी तानकर सोते हैं। इन झगड़ों में रखा ही क्या है ? मुफ्त की सिरदर्दी ही तो है... चल सुगन्धी, घर चल... ठण्डे पानी का एक डोंगा पी और थोड़ा सा बाम मलकर सो जा... फस्ट क्लास नींद आएगी और सब ठीक हो जाएगा... सेठ और उस मोटर की ऐसी की तैसी...'

यह सोचते हुए सुगन्धी का बोझ हलका हो गया, जैसे वह किसी ठण्डे तालाब से नहा धोकर बाहर निकली हो। जिस तरह पूजा करने के बाद उसका शरीर हलका हो जाता था, उसी तरह अब भी हलका हो गया था।

घर की तरफ चलने लगी तो विचारों का बोझ न होने के कारण उसके कदम कई बार लड़खड़ाए ।

अपने मकान के पास पहुंची तो एक टीस के साथ फिर सारी घटना उसके मन में उठी और दर्द की तरह उसके रोएं-रोएं पर छा गई । कदम फिर बोझिल हो गए और वह इस बात को शिद्दत के साथ महसूस करने लगी कि घर से बुलाकर, बाहर बाजार में मुंह पर रोशनी का चांटा मार-कर, एक आदमी ने अभी- अभी उसकी हतक की है । *यह खयाल आया* तो उसने अपनी पसलियों पर किसीके सख्त अंगूठे महसूस किए, जैसे कोई उसे भेड़ बकरी की तरह दबा दबाकर देख रहा हो कि गोश्त भी है या बाल ही हैं । 'उस सेठ ने, परमात्मा करे ' सुगंधी ने चाहा कि उसे शाप दे, पर सोचा, शाप देने से क्या बनेगा ! मजा तो तब था कि वह सामने होता और वह उसके वजूद के हर जर्रे पर अपनी धिक्कारें लिख देती उसके मुंह पर कुछ ऐसी बात कहती कि वह जिंदगी भर बेचैन रहता । कपड़े फाड़कर उसके सामने नंगी हो जाती और कहती, 'यही लेने आया था न तू ? ले, दाम दिए बिना ले जा इसे पर जो कुछ मैं हूं, जो कुछ मेरे अंदर छिपा है वह तू क्या तेरा बाप भी नहीं खरीद सकता '

बदला लेने के नये नये तरीके सुगंधी के दिमाग में आ रहे थे । अगर उस सेठ से एक बार, सिर्फ एक बार उसकी मुठभेड़ हो जाए तो वह यह करे— यूं उससे बदला ले—नहीं, यूं नहीं, यूं—लेकिन जब सुगंधी सोचती कि सेठ से उसका दोबारा मिलना असम्भव है तो वह उसे एक छोटी सी गाली देने पर ही खुद को राजी कर लेती—बस, सिर्फ एक छोटी सी गाली, जो उसकी नाक पर चिपकू मक्खी की तरह बैठ जाए और हमेशा वहीं जमी रहे ।

इसी उधेड़बुन में वह दूसरी मंजिल पर अपनी खोली के पास पहुंच गई । चोली में से चाबी निकालकर ताला खोलने के लिए हाथ बढ़ाया तो चाबी हवा ही में घूमकर रह गई । कुण्डे में ताला नहीं था । सुगंधी ने किवाड़ अंदर की ओर दबाए तो हल्की-सी चरचराहट पैदा हुई । अंदर से किसीने कुण्डी खोली और दरवाजे ने जम्भाई ली । सुगंधी अंदर

दाखिल हो गई।

माधो मूछों में हँसा और दरवाजा बन्द करके सुगंधी से कहने लगा, 'आज तूने मेरा कहना मान ही लिया—सुबह की सैर तन्दुरुस्ती के लिए बड़ी अच्छी होती है। हर रोज इसी तरह सुबह उठकर घूमने जाया करेगी तो तेरी सारी सुस्ती दूर हो जाएगी और तेरी कमर का वह दर्द भी गायब हो जाएगा, जिसकी शिकायत तू आए दिन किया करती है। विक्टोरिया गार्डन तक तो हो आई होगी तू? क्यों?'

सुगंधी ने कोई जवाब नहीं दिया और न माधो ने जवाब चाहा। दर-असल जब माधो बात किया करता था तो उसका मतलब यह नहीं होता था कि सुगंधी उसमें जरूर हिस्सा ले और सुगंधी जब कोई बात किया करती थी तो यह जरूरी नहीं होता था कि माधो उसमें भाग ले—चूंकि कोई बात करनी होती थी, इसलिए वे कुछ कह दिया करते थे।

माधो बेंत की कुर्सी पर बैठ गया, जिसकी पीठ पर उसके तेल चुपड़े सिर ने मल का बहुत बड़ा धब्बा बना रखा था, और टाँग पर टाँग रख-कर अपनी मूछों पर उँगलियाँ फेरने लगा।

सुगंधी पलंग पर बैठ गई और माधो से कहने लगी, 'मैं आज तेरी बाट ही देख रही थी।'

माधो बड़ा सिटपिटाया, 'मेरी बाट! पर तुझे कैसे मालूम हुआ कि मैं आज आने वाला हूँ?'

सुगंधी के भिंचे हुए होंठ खुले, उनपर एक पीली-सी मुस्कराहट नमू-दार हुई, 'मैंने रात तुझे सपने में देखा था—उठी तो कोई भी न था। सो मन ने कहा, चलो, कहीं बाहर घूम आएँ और...'

माधो खुश होकर बोला, 'और मैं आ गया... भई, बड़े लोगों की बातें बड़ी पक्की होती हैं। किसी ने ठीक कहा है, दिल को दिल से राह है... तूने यह सपना कब देखा था?'

सुगंधी ने उत्तर दिया, 'चार बजे के करीब।'

माधो कुर्सी पर से उठकर सुगंधी के पास बैठ गया, 'और मैंने तुझे ठीक दो बजे सपने में देखा... जैसे तू फूलों वाली साड़ी... अरे, बिलकुल यही साड़ी पहने मेरे पास खड़ी है। तेरे हाथों में... क्या था तेरे हाथों

मे ? हा, तेरे हाथा मे रुपयो से भरी हुई थैली थी। तून वह थैली मेरी झोली मे रख दी और कहा, माधो, तू चिन्ता क्यो करता है ? ले यह थैली अरे, तेरे-मेरे रुपये क्या दो हैं ? सुगन्धी तरी जान की कसम, फौरन उठा और टिकट कटाकर इधर का रुख किया क्या बताऊ, बडी परेशानी है। बैठे बैठाए एक केस हो गया है। अब बीस-तीस रुपय हा तो इस्पेक्टर की मुटठी गम करके छुटकारा मिले थक तो नही गई तू ? लेट जा, मैं तरे पाव दबा दू। घूमन की आदत न हो तो थकन हो ही जाया करती है। इधर मेरी तरफ पैर करके लेट जा।'

सुगन्धी लेट गई। दोनो बाहा का तकिया बनाकर, वह उनपर सिर रखकर लेट गई और उस लहजे मे, जो उसका अपना नही था, माधो स कहन लगी, 'माधो, यह किस मुए ने तुझपर केस किया है ? जेल वेल का डर हो तो मुझसे कह दे। बीस तीस क्या, सौ पचास भी ऐसे मौका पर पुलिस के हाथ मे थमा दिए जाए तो फायदा अपना ही है—जान बची लाखो पाए - बस-बस, अब जाने दे, थकन कुछ ज्यादा नही है—मुट्ठी चापी छोड और मुझे सारी बात सुना। केस का नाम सुनते ही मेरा दिल धक धक करने लगा है वापस कब जाएगा तू ?'

माधो को सुगन्धी के मुह मे शराब की बास आई। उसने यह मौका अच्छा समझा और झट से कहा, 'दोपहर की गाडी से वापस जाना पडेगा। अगर शाम तक सब इस्पेक्टर को सौ पचास न थमाए तो ज्यादा देने की जरूरत नही, मैं समझता हू, पचास मे काम चल जाएगा!'

'पचास !' यह कहकर सुगन्धी बडे आराम से उठी और उन चार तस्वीरो के पास धीरे धीरे गई, जो दीवार पर लटक रही थी। बायी तरफ से तीसरे फ्रेम मे माधो की तस्वीर थी। बडे-बडे फूलो वाले पर्दे के आगे, कुर्सी पर वह दोनो राना पर अपने हाथ रखे बैठा था। एक हाथ मे गुलाब का फूल था। पास ही तिपाई पर दो मोटी मोटी किताबें धरी थीं। तस्वीर खिचवाते समय, तस्वीर खिचवान का खयाल माधो पर इतना छा गया था कि उसकी हर चीज तस्वीर से बाहर निकल निकलकर—जैसे पुकार रही थी—'हमारा फोटो उतरेगा' 'हमारा फोटो उतरेगा।

कैमरे की तरफ माधो आखें फाड फाडकर देख रहा था और ऐसा

मालूम होता था कि फोटो उतरवाते समय उन्हें बडी तकलीफ हो रही है।

सुगधी खिलखिलाकर हस पडी— उसकी हसी कुछ ऐसी तीखी और नुकीली थी कि माधो को सुइया सी चुभी। पलग पर से उठकर वह सुगधी के पास आ गया, 'किसकी तस्वीर देखकर तू इतने जोर से हसी है।'

सुगधी ने बाए हाथ की पहली तस्वीर की तरफ इशारा किया, जो म्युनिसिपैलिटी के सफाई-दारोगा की थी, 'इसकी म्युनशीपालटी के इस दारोगा की जरा देख तो इसका थोबडा, कहता था, एक रानी मुझपर आशिक हो गई थी ऊह! यह मुह और मसूर की दाल!' यह कहकर सुगधी ने फ्रेम को इस जोर से खींचा कि दीवार में से कील भी पलस्तर सहित उखड आई।

माधो का अचरज अभी दूर न हुआ था कि सुगधी ने फ्रेम को खिडकी से बाहर फेंक दिया। दो मजिला से वह फ्रेम नीचे जमीन पर गिरा और काच टूटने की झनकार सुनाई दी। सुगधी ने उस झनकार के साथ कहा, 'रानी भगिन कचरा उठाने आएगी तो मेरे इस राजा को भी साथ ले जाएगी।'

एक बार फिर उसी नुकीली और तीखी हसी की फुहार सुगधी के होंठों से गिरनी शुरू हुई, जैसे वह उनपर चाकू या छुरी की धार तेज कर रही हो।

माधो बडी मुश्किल से मुस्कराया। फिर हसा, 'ही-ही ही !'

सुगधी ने दूसरा फ्रेम भी नोच लिया और खिडकी से बाहर फेंक दिया, 'इस साले का यहा क्या मतलब है? भोण्डी शक्ल का कोई आदमी यहा नही रहेगा क्यो माधो?'

माधो फिर बडी मुश्किल से मुस्कराया और फिर हसा, 'ही ही-ही !'

एक हाथ से सुगधी ने पगडी वाले की तस्वीर उतारी और दूसरा उस फ्रेम की तरफ बढाया, जिसमें माधो का फोटो जडा था। माधो अपनी जगह पर सिमट गया, जैसे हाथ उसीकी तरफ बढ रहा हो। पल भर में फ्रेम कील सहित सुगधी के हाथ में था।

जोर का ठहाका लगाकर उसने 'ऊह' की ओर दोनो फ्रेम एकसाथ खिडकी मे से बाहर फेंक दिए। दो मजिला से जब फ्रेम जमीन पर गिरे और काच टूटने की आवाज आई तो माधो को ऐसा मालूम हुआ कि उसके अन्दर कोई चीज टूट गई है। बडी मुश्किल से उसने हसकर इतना कहा, अच्छा किया। मुझे भी यह फोटो पसन्द नही था।'

धीरे धीरे सुगन्धी माधो के पास आई और कहने लगी तुझे यह फोटो पसन्द नही था पर मैं पूछती हू, तुझमे है ऐसी कौन सी चीज, जो किसीको पसन्द आ सकती है—यह तेरी पकौडे सी नाक, यह तेरा बालो भरा माथा, ये तेरे सूजे हुए नथुने ये तेरे मुडे हुए कान, यह तेरे मुह की बास यह तेरे बदन का मैल! तुझे अपना फोटो पसन्द नहीं था। ऊह! पसन्द क्या होता, तेरे ऐब जो छिपा रखे थे उसने आजकल जमाना ही ऐसा है जो ऐब छिपाए वही बुरा

माधो पीछे हटता गया। आखिर जब वह दीवार के साथ लग गया तो उसने अपनी आवाज म जोर पैदा करके कहा 'देख सुगन्धी, मुझे ऐसा दिखाई देता है कि तूने फिर से अपना धन्धा शुरू कर दिया है अब तुझसे आखिरी बार कहता हू

सुगन्धी ने इसस आगे माधो की नकल उतारते हुए कहना शुरू किया 'अगर तूने फिर से अपना धन्धा शुरू किया तो बस तेरी मेरी टूट जाएगी। अगर तूने फिर किसीको अपने यहा ठहराया तो चुटिया से पकडकर तुझे बाहर निकाल दूगा इस महीने का खर्च मैं पूना पहुचते ही मनीआडर कर दूगा हा क्या भाडा है इस खोली का?'

माधो चकरा गया।

सुगन्धी ने कहना शुरू किया, 'मैं बताती हू, पन्द्रह रुपया भाडा है इस खोली का और दस रुपया भाडा है मेरा और जैसा तुझे मालूम है, अढाई रुपये दलाल के। बाकी रहे साढे सात, रहे न साढे सात? उन साढे सात रुपल्लियो म मैंने ऐसी चीज देने का वचन दिया था जो मैं दे ही नहीं सकती थी और तू ऐसी चीज लेने आया था, जो तू ले ही नहीं सकता था तेरा मेरा नाता ही क्या था? कुछ भी नही! बस, ये दस रुपये तेरे और मेरे बीच मे बज रहे थे, सो हम दोनो ने मिलकर ऐसी बात

की कि तुझे मेरी जरूरत हुई और मुझे तेरी पहले तेरे और मेरे बीच म दस रुपये बजते थे, आज पचास बज रहे है। तू भी उनका बजना सुन रहा है और मैं भी उनका बजना सुन रही हू यह तूने अपने वालो का क्या सत्यानाश कर रखा है?'

यह कहकर सुगन्धी ने माधो की टोपी उगली से एक तरफ उडा दी। यह हरकत माधो को बहुत बुरी लगी। उसने बडे कडे स्वर मे कहा, 'सुगन्धी!'

सुगन्धी ने माधो की जेब से रूमाल निकालकर सूघा और जमीन पर फेंक दिया, ये चिथडे, ये चिंदियां उफ! कितनी बुरी बास आती है, उठाके बाहर फेंक डालो '

माधो चिल्लाया, 'सुगन्धी!'

सुगन्धी ने तेज लहजे म कहा, 'सुगन्धी के बच्चे, तू आया किसलिए है यहा? तेरी मा रहती है इस जगह, जो तुझे पचास रुपये देगी? या तू कोई ऐसा बडा गबरू जवान है जो मैं तुझपर आशिक हो गई हू? कुत्ते, कमीने! मुझपर रौब गाठता है! मैं तेरी तबैल हू क्या? भिखमगा, तू अपने आपको समझ क्या बैठा है? मै पूछती हू तू है कौन? चोर या गठकतरा? इस समय तू मेरे मकान म क्या करने आया है? बुलाऊ पुलिस को? पूना म तुझपर केस हो या न हो यहा तो तुझ पर एक केस खडा कर दू

माधो सहम गया। दबे लहजे म सिर्फ इतना कह सका सुगन्धी, तुझे क्या हो गया है?

तेरी मा का सिर तू होता कौन है मुझसे ऐसे सवाल करने वाला? भाग यहा से, नहीं तो ' सुगन्धी की ऊची आवाज सुनकर उसका खाज-मारा कुत्ता, जो सूखी हुई चप्पलों पर मुह रखे सो रहा था, हडबडा कर उठा और माधो की तरफ मुह उठाकर भूकने लगा। कुत्ते के भूकने के साथ ही सुगन्धी जोर जोर से हसने लगी।

माधो डर गया। गिरी हुई टोपी उठाने के लिए वह झुका तो सुगन्धी की गरज सुनाई दी, 'खबरदार पडी रहने दे वहीं तू जा, तेरे पूना पहुचते ही मैं इसका मनीआर्डर कर दूगी।' यह कहकर वह जोर से हसी और

हसती-हसती बेंत की कुर्सी पर बैठ गई। उसके खाज मारे कुत्ते ने भूक भक-कर माधो को कमरे से बाहर निकाल दिया। उस सीढ़िया उतार जब कुत्ता अपनी रुण्डमुण्ड दुम हिलाता सुग धी के पास आया और उसके कदमा क पास बैठकर कान फडफडान लगा तो सुग धी चौंकी। उसने अपन चारो ओर एक भयानक स नाटा देखा—ऐसा स नाटा, जो उसन पहल कभी न देखा था। उसे ऐसा लगा कि हर चीज खाली है जसे मुसाफिरा स लदी हुई रेलगाडी सब स्टशना पर मुसाफिर उतारकर अब लोह के शेड म बिलकुल अकेली खडी है। यह खालीपन, जो अचानक सुग धी के अ दर पैदा हो गया था, उस बहुत तकलीफ द रहा था। उसन काफी देर तक उस शू य को भरन का प्रयास किया लेकिन व्यथ। वह एक ही समय म अनगिनत विचार अपने दिमाग म ठूसती थी, पर एकदम छलनी का सा हिसाब था। इधर दिमाग को भरती थी, उधर वह खाली हो जाता था।

बडी देर तक वह बेंत की कुर्सी पर बैठी रही। सोच विचार के बाद जब उसको अपना मन बहलान का कोई तरीका न सूझा तो उसने अपने खाज मार कुत्ते को गोद म उठाया और सागवान के चौडे पलग पर उस बगल म लिटाकर सो गई।

ममद भाई

फारस रोड स आप उस ओर भीतर गली मे चले जाइए जो सफेद गली कहलाती ह तो उसके अन्तिम सिरे पर आपको कुछ होटल मिलेंगे। यो तो बम्बई म कदम कदम पर होटल और रेस्टोरा होते हैं लेकिन ये रेस्टोरा इसलिए बहुत दिलचस्प और अनूठे है क्योंकि ये उस इलाके मे हैं जहा भान भात की वेश्याए बसती हैं।

एक युग बीत चुका है। बस, आप यही समझिए कि बीस वष के लग-भग जब इन रेस्टोराओ म मैं चाय पीया करता था और खाना खाया करता था। सफेद गली से आगे निकलकर 'प्ले हाउस' आता है। उधर दिन भर शोर शराबा रहता है। सिनमा के शो दिन-भर चलते रहते थे। चम्पिया होती थी। सिनमा घर शायद चार थे। उनके बाहर बडे विचित्र ढग से सिनेमा के कमचारी घटिया बजा बजाकर लोगो को निमन्त्रण देते थे—'आओ, आओ,—दो आन मे—फस्ट क्लास खेल दो आन म।'

कभी-कभी य घटिया बजाने वाले जबदस्ती लोगो को भीतर ढकेल देते थे—बाहर कुर्सियो पर चम्पी करान वाले बैठे होते थे जिनकी खोपडियो की मरम्मत बडे वज्ञानिक ढग से की जाती थी। मालिश अच्छी चीज है लेकिन मेरी समझ मे नही आता कि बम्बई के रहन वाले इसपर इतने मोहित क्यो है। दिन को और रात को हर समय उन्हे तेल मालिश की आवश्यकता अनुभव होती है। आप यदि चाह तो रात के तीन बजे बडी आसानी से तेल मालिशिया' बुलवा सकते हैं। या भी सारी रात, चाहे आप बम्बई के किसी कोन मे हा, आप अवश्य ही यह आवाज सुनते रहेंगे— पी —पी—पी।'

यह पी' चम्पी का सक्षिप्त रूप है।

फारस रोड या तो एक सडक का नाम है लेकिन वास्तव मे यह उस इलाके का नाम है जहा वश्याए रहती हैं। यह बहुत बडा इलाका है। इसम कई गलिया हैं, जिनके विभिन्न नाम है, लकिन सुविधास्वरूप

इसकी हर गली को फारस रोड या सफेद गली कहा जाता है। इसमे लगल लगी हुई सैकड़ा दुकानें हैं, जिनम छोटी बड़ी आयु और अच्छे बुरे रग की स्त्रिया अपना शरीर बेचती हैं। विभिन्न दामो पर आठ आने से आठ रुपये तक, आठ रुपये स आठ सौ रुपय तक—हर दाम की स्त्री आपको इस इलाके म मिल सकती है।

यहूदी, पजाबी, मराठी काश्मीरी, गुजराती, बगाली, एग्लो इडियन, फ्रासीसी, चीनी, जापानी अर्थात् हर प्रकार की स्त्री आपको यहा स प्राप्त हो सकती है—य स्त्रिया कहा से आती है—क्षमा कीजिए, इस सम्ब ध म आप मुझसे कुछ न पूछिए—बस स्त्रिया होती है—और उनको ग्राहक मिल ही जाते है।

इस इलाके म बहुत से चीनी भी आबाद है। मालूम नहीं य क्या कारोबार करते है लेकिन रहते इसी इलाके म है। कुछ एक तो रेस्तोरा चलाते हैं जिनके बाहर बोर्डों पर ऊपर नीचे कीडे मकोडा की शक्ल म कुछ लिखा होता है—मालूम नहीं क्या।

इस इलाके म हर बिजनेस और हर जाति के लोग आबाद है। एक गली है जिसका नाम अरब लेन है। वहा के लोग उसे अरब गली कहते है। उन दिनो, जिन दिनो की मैं बात कर रहा हू इस गली मे लगभग बीस पच्चीस अरब रहते थे जो स्वय को मोतियो के व्यापारी कहते थे बाकी आबादी पजाबिया और रामपुरियो की थी।

इसी गली मे मुझे एक कमरा मिल गया था जिसम कभी सूरज का प्रकाश न आ पाता था। हर समय बिजली का बल्ब जलता रहता था। इसका किराया साढे नौ रुपये मासिक था।

आप यदि कभी बम्बई मे नहीं रहे तो शायद आप मुश्किल ही स विश्वास करेंगे कि वहा किसी को किसी दूसरे से सरोकार नहीं होता। यदि आप अपनी खोली म मर रहे हैं तो आपको कोई नहीं पूछेगा। आपके पडोस म हत्या हो जाय क्या मजाल जो आपको उसकी खबर हो जाय —लेकिन वहा अरब गली मे केवल एक व्यक्ति ऐसा था जिसे अडोस पडोस के हर व्यक्ति से दिलचस्पी थी—और उसका नाम ममद भाई था।

ममद भाई रामपुर का रहने वाला था। कमाल का फकैत गतके

ग्रौर बनोट की कला में निपुण—मैं जब ग्ररब गली में ग्राया तो ग्रक्सर होटलों में उसका नाम सुनने में ग्राया लेकिन बहुत दिनों तक उससे मुलाकात न हो सकी।

मैं सुबह-सवेरे ग्रपनी खोली से निकल जाता था ग्रौर बहुत रात गए लौटता था—लेकिन ममद भाई से मिलने की बड़ी उत्सुकता थी, क्योंकि उसके सम्बन्ध में ग्ररब गली में बहुत सी कहानियाँ प्रचलित थीं—कि बीस पच्चीस ग्रादमी यदि लाठियों से लैस होकर उसपर टूट पड़ें, तो भी वे उसका बाल तक बांका नहीं कर सकते। एक मिनट में ग्रन्दर ग्रन्दर वह उन सबको चित कर देता है ग्रौर यह कि उस जैसा छुरीमार सारे बम्बई में नहीं मिल सकता। या छुरी मारता है कि जिसके लगती है उसे पता भी नहीं चलता—सौ कदम तक बिना कुछ ग्रनुभव किए चलता रहता है ग्रौर ग्रन्त में एकदम ढेर हो जाता है। लोग कहते हैं कि यह उसके हाथ की सफाई है।

उसके हाथ की यह सफाई देखने की मुझे उत्सुकता नहीं थी लेकिन यों उसके बारे में ग्रन्य बातें सुन-सुनकर मेरे मन में यह इच्छा ग्रवश्य उत्पन्न हो चुकी थी कि मैं उसे देखूं। उससे बातें न करूं लेकिन निकट से देख लूं कि कैसा है—इस पूरे इलाके पर उसका व्यक्तित्व छाया हुग्रा था। वह बहुत बड़ा दादा ग्रर्थात बदमाश था लेकिन इसके बावजूद लोग कहते थे कि उसने किसीकी बहू बेटी की ग्रोर कभी ग्रांख उठाकर नहीं देखा। 'लंगोट का बहुत पक्का है'—'गरीबों के दुःख दर्द का साझीदार है।' केवल ग्ररब गली ही नहीं, ग्रास पास जितनी गलियां थीं उनमें जितनी दीन, दरिद्र स्त्रियां थीं, सब ममद भाई को जानती थीं क्योंकि वह प्रायः उनकी ग्रार्थिक सहायता करता रहता था। लेकिन वह स्वयं कभी उनके पास नहीं जाता था, ग्रपने किसी कम ग्रायु के शिष्य को भेज देता था ग्रौर उनका कुशल पूछ लेता था।

मुझे मालूम नहीं कि उसकी ग्राय के क्या साधन थे, ग्रच्छा खाता था, ग्रच्छा पहनता था। उसके पास एक छोटा-सा तांगा था जिसमें बड़ा स्वस्थ टट्टू जुता होता था। वह स्वयं ही उसे चलाता था। साथ दो तीन शिष्य होते थे। भिंडी बाजार का एक चक्कर लगाकर या किसी दरगाह में

होकर वह उस तांगे पर वापस अरब गली आ जाता था और किसी ईरानी के होटल में बैठकर अपने शिष्यों के साथ गतके और बनोट की बातों में निमग्न हो जाता था।

मेरी खोली के साथ ही एक और खोली थी जिसमें मारवाड़ का एक मुसलमान नर्तक रहता था। उसने मुझे ममद भाई की सैंकड़ों कहानियां सुनाईं—उसने मुझे बताया कि ममद भाई लाखों रुपये का आदमी है। एक बार उसे हैजा हो गया था। ममद भाई को पता चला तो उसने फारस रोड के सबके सब डाक्टर उसकी खोली में इकट्ठे कर दिये और उनसे कहा, देखो, अगर आशिक हुसैन को कुछ हो गया तो मैं तुम सब को मरवा कर दूंगा।' आशिक हुसैन ने बड़े आदरपूर्ण स्वर में मुझसे कहा—'मंटो साहब! ममद भाई फरिश्ता है—फरिश्ता। जब उसने डाक्टरों को धमकी दी तो वे सब कांपने लगे। ऐसा लगकर इलाज किया कि मैं दो ही दिन में ठीक-ठाक हो गया।

ममद भाई के सम्बन्ध में अरब गली के गन्दे और बेहूदा रेस्टोरांओं में मैं और भी बहुत कुछ सुन चुका था। एक व्यक्ति ने जो शायद उसका शिष्य था और स्वयं को बहुत बड़ा फकैत समझता था, मुझसे कहा था कि ममद भाई अपने नेफे में एक ऐसा आबदार खंजर हमेशा उड़सकर रखता है जो उस्तरे की तरह शेव भी कर सकता है—और यह खंजर म्यान में नहीं होता—खुला रहता है—बिल्कुल नंगा और वह भी उसके पेट के साथ। उसकी नोक इतनी तीखी है कि यदि बातें करते हुए झुकते हुए उससे जरा सी गलती हो जाय तो ममद भाई का एकदम काम तमाम हो जाय।

प्रत्यक्ष है कि उसको देखने और उससे मिलने की उत्सुकता दिन प्रतिदिन मेरे मन में बढ़ती गई। मालूम नहीं, मैंने अपनी कल्पना में उसके चेहरे मोहरे का क्या रेखाचित्र बनाया था। जो हो, इतने समय के बाद मुझे केवल इतना स्मरण है कि मैं एक देवकाय व्यक्ति को अपनी मानसिक आंखों के सामने देखता था जिसका नाम ममद भाई था—उस प्रकार का व्यक्ति जो हरक्युलिस साइकिलों पर विज्ञापन स्वरूप दिया जाता है।

मैं सुबह सवेरे अपने काम पर निकल जाता था और रात के दस बजे

वे लगभग खान आदि से निपटकर वापस आकर तुरंत सो जाता था। इस बीच म मदद भाई स मुलाकात हो सकती थी। मैंने कई बार सोचा कि काम पर न जाऊं और सारा दिन अरब गली में गुजार कर ममद भाई को देखने की कोशिश करूं, लेकिन अफसोस कि म ऐसा न कर सका, इसलिए कि मेरी नौकरी बडी कड़ा ढग की थी।

ममद भाई से मुलाकात करने की सोच ही रहा था कि अचानक इन्फ्लुएन्जा ने मुझ पर घोर आक्रमण किया—ऐसा आक्रमण कि मैं बौखला गया। मुझे भय था कि यह बिगड़कर कहीं निमोनिया मे परिवर्तित न हो जाय क्योंकि अरब गली के एक डाक्टर ने ऐसा ही कहा था। मैं बिल्कुल अकेला था। मरे साथ जो एक व्यक्ति रहता था, उसे पूना मे एक नौकरी मिल गई थी, इसलिए वह भी पास न था। बुखार म फुका जा रहा था, प्यास इतनी लगती थी कि जो पानी खोली मे रखा था मेरे लिए काफी नही था, और मित्र सम्बन्धी कोई पास नही था जो मेरी देख रेख करता। मैं बहुत 'सख्त जान' हू, देख रेख की मुझे प्राय आवश्यकता नहीं हुआ करती, लेकिन न जाने वह कैसा बुखार था, इन्फ्लुएन्जा था, मलेरिया था या कुछ और था, लेकिन उसने मेरी रीढ की हड्डी तोड दी। मैं बिल-बिलाने लगा। मेरे मन म पहली बार इच्छा उत्पन्न हुई कि मेरे पास कोई हो जो मुझे ढारस दे। ढारस न दे तो कम से कम क्षण भर के लिए अपनी शक्ल दिखाकर चला जाय, ताकि मुझे इसीस ढारस हो जाय कि कोई मुझे पूछने वाला भी ह।

दो दिन तक मैं बिस्तर पर पडा कराहता रहा, लेकिन कोई न आया—आता भी कौन? मेरी जान पहचान के आदमी ही कितने थे—दो, तीन या चार—और वे इतनी दूर रहते थे कि उन्हे मेरी मत्यु का भी पता न चल सकता था। और फिर वहा बम्बई म कौन किसको पूछता है—कोई मर या जिए उनकी बला से।

मेरी बहुत बुरी हालत थी। आखिर हुमैन नतक की पत्नी बीमार थी, इसलिए वह अपने घर जा चुका था। यह मुझे होटल के छोकरे न बताया था। अब मैं किसको बुलाता?

बडी निढाल स्थिति मे था और सोच रहा था कि स्वय नीचे उतरू

और किसी डाक्टर के पास जाऊं कि किसीने दरवाजा खटखटाया। मैंने सोचा कि होटल का छोकरा, जिसे बम्बई की भाषा में 'बाहिर वाला' कहते हैं होगा। बड़े मरियल स्वर में कहा, 'आ जाओ।'

दरवाजा खुला और एक छरहरे बदन के व्यक्ति ने, जिसकी मूछें मुझे सबसे पहले दिखाई दीं भीतर प्रवेश किया।

उसकी मूछें ही सब कुछ थीं। मेरा मतलब यह है कि यदि उसकी मूछें न होतीं तो बहुत सम्भव है कि वह कुछ भी न होता। ऐसा मालूम होता था कि उसकी मूछों ने ही उसके पूरे अस्तित्व को जीवन प्रदान कर रखा है।

वह भीतर आया और अपनी विलियम कैसर एसी मूछों का एक उगली से ठीक करते हुए मेरी खाट के पास आया। उसके पीछे तीन चार व्यक्ति थे। विचित्र मुखाकृतिया थीं उनकी—मैं बहुत हैरान था कि ये कौन हैं और मेरे पास क्या आए हैं?

विलियम कैसर एसी मूछों और छरहरे बदन वाले व्यक्ति ने मुझसे बड़े कोमल स्वर में कहा 'मिन्टो साहब आपने हद कर दी, साला मुझे इत्तला क्यों न दी?'

मंटो का मिन्टो बन जाना मेरे लिए कोई नई बात नहीं थी। इसके अतिरिक्त मैं इस मूड में भी नहीं था कि मैं उसका सुधार करता। मैंने अपने क्षीण स्वर में उसकी मूछों से केवल इतना कहा—'आप कौन हैं?'

उसने संक्षिप्त सा उत्तर दिया—'ममद भाई।'

मैं उठकर बैठ गया। 'ममद भाई... तो... तो आप ममद भाई हैं —मशहूर दादा!'

मैंने यह तो कह दिया लेकिन तुरन्त मुझे अपने बड़ेपन का अनुभव हुआ और मैं रुक गया। ममद भाई ने छोटी उंगली से अपनी मूछों के सख्त बाल जरा ऊपर किए और मुस्कराया—'हां मिन्टो भाई—मैं ममद हूं—यहां का मशहूर दादा—मुझे बाहिर वाले से मालूम हुआ कि तुम बीमार हो—साला यह भी कोई बात है कि तुमने मुझे खबर न की। ममद भाई का मस्तक फिर जाता है जब कोई एसी बात होती है।'

मैं उत्तर म कुछ कहने वाला था कि उसने अपने साथियों में से एक स स्म्बोधित होकर कहा, 'अरे क्या नाम है तेरा जा भागकर जा, और क्या नाम है उस डाक्टर का समझ गए ना, उससे कह कि ममद भाई तुझे बुलाता है एकदम जल्दी आ एकदम सब काम छोड दे और जल्दी आ और देख, साले से कहना सब दवाएं लेता आए।'

ममद भाई ने जिसको यह आदेश दिया था, वह एकदम चला गया। मैं सोच रहा था—मैं उसको देख रहा था—वे समस्त कहानियाँ मेरे मस्तिष्क म तैर रही थी जो मैं उसके सम्बन्ध म लोगो से सुन चुका था, लेकिन गड्डमड्ड रूप मे क्योंकि बार बार उसकी ओर देखने क कारण उसकी मूछें सब पर छा जाती थी—बडी भयानक लेकिन बडी सुन्दर मूछें थी। लेकिन ऐसा लगता था कि उस चेहरे को, जिसके नयन नक्श बडे कोमल ह केवल भयानक बनाने के लिए यह मूछें रखी गई है। मैंने सोचा कि वास्तव म यह व्यक्ति उतना भयानक नही है जितना कि उसने स्वय को बना रखा है।

खोली मे कोई कुर्सी नही थी। मैंने ममद भाई से कहा कि वह मेरी चारपाई पर बैठ जाए लेकिन उसने इन्कार कर दिया और बडे रूखे से स्वर मे कहा, 'ठीक है—हम खडे रहेगे।'

फिर उसने टहलते हुए—हालांकि उस खोली मे इस ऐश्वर्य की कोई गुजाइश नही थी—कुर्ते का दामन उठाकर पायजामे के नफे स एक खजर निकाला—मैं समझा चादी का है। इस प्रकार चमक रहा था कि मैं आपसे क्या कहूं। यह खजर निकालकर पहले उसने अपनी कलाई पर फेरा जो बाल उसकी पकड म आ गए, सब साफ हो गए। इसपर वह स तुष्ट सा हो अपने नाखून तराशने लगा।

उसके आगमन ही से मेरा बुखार कई डिगरी कम हो गया था। अब मैंने कुछ होश म आकर कहा—'ममद भाई ! यह छुरी तुम इस तरह नफे म यानी बिल्कुल अपने पेट के साथ रखते हो—इतनी तेज है, क्या तुम्हे डर नही लगता ?'

ममद ने खजर से अपने नाखून की एक फाक बडी सफाई से उडाते हुए उत्तर दिया 'मिन्टो भाई ! यह छुरी दूसरो के लिए है। यह अच्छी

तरह जानती है । साली अपनी चीज है, मुझे कैसे नुकसान पहुंचाएगी।'

छुरी से जो सम्बन्ध उसने स्थापित किया था, वह कुछ ऐसा ही था जैसे कोई मां या बाप कहे कि यह मेरा बेटा है या बेटी है, इसका मुझपर कैसे हाथ उठ सकता है ?

डाक्टर आ गया—उसका नाम पिंटो था और मैं बिम्टो। उसने ममद भाई को अपने क्रिश्चियन ढंग में सलाम किया और पूछा कि मामला क्या है।

जो मामला था वह ममद भाई ने बता दिया—संक्षिप्त, लेकिन कड़े शब्दों में, जिनमें आज्ञा थी कि देखो, अगर तुमने बिम्टो भाई का इलाज अच्छी तरह न किया तो तुम्हारी खैर नहीं।

डाक्टर पिंटो ने आज्ञाकारी बच्चे की तरह अपना काम किया। मेरी नब्ज देखी। स्टैथेस्कोप लगाकर मेरी छाती और पीठ का निरीक्षण किया। ब्लड प्रेशर देखा। मुझसे मेरी बीमारी का विवरण पूछा। उसके बाद उसने मुझसे नहीं, ममद भाई से कहा 'कोई फिक्र की बात नहीं—मलेरिया है—मैं इंजेक्शन लगा देता हूं।'

ममद भाई मुझसे कुछ दूर खड़ा था। उसने डाक्टर की बात सुनी और खंजर से अपनी कलाई के बाल उड़ाते हुए कहा 'मैं कुछ नहीं जानता—इंजेक्शन देना है तो दे दो, लेकिन अगर इसे कुछ हो गया तो '

डाक्टर पिंटो कांप उठा, 'नहीं ममद भाई सब ठीक हो जाएगा।'

ममद भाई ने खंजर अपने नेफे में उड़स लिया। तो ठीक है।

तो मैं इंजेक्शन लगाता हूं,' डाक्टर ने अपना बैग खोला और सिरिंज निकाली।

ठहरो ठहरो।'

ममद भाई घबरा गया था। डाक्टर ने तुरंत सिरिंज बैग में वापस रख ली और मिमयाते हुए ममद भाई से बोला, क्या ?'

'बस—मैं किसीके सुई लगते नहीं देख सकता,' यह कहकर वह खोली से बाहर चला गया। उसके साथ ही उसके साथी भी चले गए।

डाक्टर पिंटो ने मुझे कुनीन का इंजेक्शन लगाया, बड़ी सावधानी से अन्यथा मलेरिया का यह इंजेक्शन बड़ा कष्टदायक होता है। जब

वह अपना काम कर चुका तो मैंने उससे उसकी फीस पूछी। उसने कहा—'दस रुपये।' मैं तकिए के नीचे से अपना बटुआ निकाल रहा था कि ममद भाई भीतर आ गया। उस समय मैं दस रुपये का नोट डाक्टर पिंटो को दे रहा था।

ममद भाई ने क्रुद्ध नजरों से मुझे और डाक्टर को देखा और गरज-कर कहा, 'यह क्या हो रहा है?'

मैंने कहा, 'फीस दे रहा हूं।'

ममद भाई पिंटो से सम्बोधित हुआ, 'साले! यह फीस कैसी ले रहे हो?'

डाक्टर पिंटो बौखला गया, 'मैं कब ले रहा हूं—ये दे रहे थे।'

'साला, हमसे फीस लेते हो—वापस करो यह नोट,' ममद भाई के स्वर में उसके खंजर जैसी तेजी थी।

डाक्टर पिंटो ने मुझे नोट वापस कर दिया और बैग बन्द करके ममद भाई से क्षमा मांगते हुए चला गया।

ममद भाई ने एक उंगली से अपनी कांटा जैसी मूछों को ताव दिया और मुस्कराया, 'मिण्टो भाई, यह भी कोई बात है कि इस इलाके का डाक्टर तुमसे फीस ले। तुम्हारी कसम अपनी मूछें मुंडवा देता, अगर इस साले ने फीस ली होती—यहां सब तुम्हारे गुलाम हैं।'"

किंचित विलम्ब के बाद मैंने उससे पूछा, 'ममद भाई! तुम मुझे कैसे जानते हो?'

ममद भाई की मूछें थरथराईं, 'ममद भाई किसे नहीं जानता—हम यहां के बादशाह हैं प्यारे—अपनी रियाया का खयाल रखते हैं। हमारी सी० आई० डी० है। वह हमें बताती रहती है, कौन आया है, कौन गया है, कौन अच्छी हालत में है कौन बुरी हालत में है। तुम्हारे बारे में हम सब कुछ जानते हैं।'

मैंने यों ही मजाक के तौर पर कहा, 'क्या जानते हैं आप?'

'साला, हम क्या नहीं जानते—तुम अमृतसर का रहने वाला है—काश्मीरी है, यहां अखबारों में काम करता है। तुमने बिस्मिल्ला होटल के दस रुपये देने हैं, इसलिए तुम उधर से नहीं गुजरते। भिण्डी बाजार में

एक पान वाला तुम्हारी जान को रोता है। उससे तुम बीस रुपये दस आने के सिगरट लेकर फूक चुके हो।'

मैं लज्जावश पानी पानी हो गया।

ममद भाई ने अपनी कटीली मूछो पर एक उगली फेरी और मुस्करा-कर कहा, 'विम्टो भाई, कुछ फिक्र न करो। तुम्हारे सब वज चुका दिए गए हैं, अब तुम नये सिर से मामला शुरू कर सकते हो। मैंन इन साला से कह दिया है कि खबरदार, अगर विम्टो भाई को तुमने तग किया और ममद भाई तुमस कहता है कि इन्शाअल्ला कोई तुम्ह तग नही करगा।'

मेरी समझ म नहा आता था कि उससे क्या कहू! बीमार था, कुनीन का टीका लग चुका था जिसके कारण काना म शाय शाय हो रही थी। इसके अतिरिक्त मैं उसके उपकारा तले इतना दब चुका था कि यदि कोई मुझे उस बोझ के नीचे से निकालन का प्रयत्न करता तो उस बडी महनत करनी पडती। मैं केवल इतना कह सका, ममद भाई, खुदा तुम्ह जिदा रखे! तुम खुश रहो!!'

ममद भाइ ने अपनी मूछो के बाल जरा ऊपर किए और कुछ कह बिना चला गया।

डाक्टर पिंटो प्रतिदिन सुबह शाम आता रहा। मैंन उसस कइ बार फीस का जिक्र किया लेकिन उसन काना को हाथ लगाकर कहा, 'नहीं, मिस्टर विम्टो, ममद भाई का मामला है, मैं एक धेला भी नही ले सकता।'

मैंन सोचा, यह ममद भाई कोई बहुत बडा आदमी है—अथात भया नक आदमी, जिससे डाक्टर पिंटो, जो वडा ओछा व्यक्ति है, डरता है और मुझम फीस लेन का साहस नही करता हालाकि वह अपनी जेव स इन्जेक्शना का रुपया खच कर रहा है।

बीमारी के दिनो मे ममद भाई हर रोज मर यहा आता रहा—कभी सुबह कभी शाम, अपने छ सात शिष्या के साथ और मुझे हर सभव ढग स ढारस दता था कि मामूली मलेरिया है। तुम डाक्टर पिंटो के इलाज से इन्शाअल्ला बहुत जल्द ठीक ठाक हो जाओगे।'

पद्रह रोज के बाद मैं ठीक ठाक हो गया। इस बीच मे मैं ममद भाई

का प्रत्येक नयन-नक्श अच्छी तरह देख चुका था।

जैसा कि मैं इससे पहले कह चुका हू, वह छरहरे बदन का व्यक्ति था। आयु यही पच्चीस-तीस के बीच होगी, पतली पतली बाहें, टागें भी ऐसी ही थी। हाथ बला के फुर्तीले थे। उनसे जब वह छोटा सा तेज-धार चाकू किसी शत्रु पर फेंकता था तो वह सीधा उसके दिल मे खुबता था—यह मुझे अरब गली के लोगो ने बताया था।

उसके सम्बन्ध मे अनगिनत बातें प्रसिद्ध थी। उसने किसीको कत्ल किया था यह तो मैं नही कह सकता, हा, छुरीमार वह कमाल का था, बनोट और गतके मे प्रवीण। सब कहते थे कि वह सैकडो हत्याए कर चुका है लेकिन मैं यह अब भी मानने को तैयार नही।

लेकिन जब मैं उसके खजर के बारे मे सोचता हू तो मेरे तन बदन मे झुरझुरी सी दौड जाती है। यह भयानक हथियार वह क्यो हर समय अपनी सलवार के नफे मे उडसे रहता है?

मैं जब अच्छा हो गया तो एक दिन अरब गली के एक थर्ड क्लास चीनी रस्टोरा म मेरी उसस मुलाकात हुई—वह अपना वही खजर निकालकर अपने नाखून काट रहा था—मैंने उसस पूछा—'ममद भाई! आजकल बदूक पिस्तौल का जमाना है—तुम यह खजर क्या लिए फिरते हो?'

ममद भाई ने अपनी कटीली मूछो पर एक उगली फेरी और कहा—'बिस्टो भाई बदूक पिस्तौल मे कोई मजा नही—उह कोई बच्चा भी चला सकता है। घोडा दबाया और ठस इसम क्या मजा है? यह चीज यह खजर यह छुरी यह चाकू मजा आता है ना, खुदा की कसम—यह वह है तुम क्या कहा करते हो? हा आर्ट इसम आर्ट है मेरी जान! जिस चाकू या छुरी चलाने का आर्ट न आता हो, वह एकदम कडम है—पिस्तौल क्या है, खिलौना है जो नुकसान पहुचा सकता है, पर इसम क्या लुत्फ आता है—कुछ भी नही—तुम यह खजर देखो—इसकी तेज धार देखो।' यह कहते हुए उसने अगूठे पर थूक लगाया और अगूठा उसकी धार पर फेरा, इससे धमाका नही होता—बस, यो पेट के अन्दर दाखिल कर दो—इस सफाई से कि किसी साले को मालूम भी न हो

बन्दूक पिस्तौल सब बकवास है।

ममद भाई से अब मेरी हर रोज किसी-न किसी समय मुलाकात होती थी। मैं उसका आभारी था लेकिन जब मैं इसका जिक्र करता था तो वह नाराज हो जाता था—कहता था कि 'मैंने तुमपर कोई एहसान नहीं किया यह तो मेरा फर्ज था।'

जब मैंने कुछ खोज पडताल की तो मुझे मालूम हुआ कि वह फारस रोड के इलाके का एक प्रकार का शासक था—ऐसा शासक जो प्रत्येक व्यक्ति की देख रेख करता था। कोई बीमार हो किसीको कोई कष्ट हो, ममद भाई उसके पास पहुंच जाता था और यह उसकी सी० आई० डी० का काम था जो उसे हर बात से सूचित रखती थी।

वह 'दादा' अर्थात् एक खतरनाक गुंडा—लेकिन मेरी समझ में अब भी नहीं आता कि वह किस रूप से गुंडा था। मैंने तो कभी उसमें कोई गुंडापन नहीं देखा बस एक उसकी मूछें जरूर ऐसी थीं जो उसे भयावह बनाए रखती थीं। लेकिन उसे उनसे प्यार था। वह उनका कुछ इस प्रकार पालन करता था जैसे कोई अपने बच्चे की करे।

उसकी मूछों का एक एक बाल खड़ा था—मुझे किसी ने बताया था कि ममद भाई हर रोज अपनी मूछों को बालाई खिलाता है। जब खाना खाता है तो शोरबा भरी उंगलियां से अपनी मूछें जरूर मरोडता है क्या कि, बुजुर्गों के कथनानुसार, यों बालों में शक्ति आती है।

मैं इससे पहले शायद कई बार कह चुका हूं कि उसकी मूछें बड़ी भयानक थीं—वास्तव में उन मूछों का नाम ही ममद भाई था—या उस खंजर का जो उसकी तंग घेरे की सलवार के नेफे में हर समय मौजूद रहता था—मुझे इन दोनों चीजों से डर लगता था, न जाने क्यों।

ममद भाई यों तो उस इलाके का बहुत बड़ा दादा था लेकिन वह सबका शुभचिन्तक था। मालूम नहीं कि उसकी आय के क्या साधन थे लेकिन जिस किसीको सहायता की आवश्यकता होती थी वह अवश्य उसकी सहायता करता था। इस इलाके की समस्त वेश्याएं उसे अपना गुरु मानती थीं। चूंकि वह एक माना हुआ गुंडा था इसलिए आवश्यक था कि उसका सम्बन्ध वहां की किसी वेश्या से होता, लेकिन मुझे पता चला

किया कि उसे अपने जीवन का सबसे बडा धचका पहुचा है। उसकी मूछें जो भयावह रूप से ऊपर का उठी हुई थी, अब कुछ झुक सी गई थी।

चीनी के होटल म उससे मेरी मुलाकात हुई। उसके कपडे, जो हमशा उजले होते थे, मैले थे। मैंने उसस कत्ल के सम्बन्ध मे कोई बात न की लेकिन उसने स्वय ही कहा, 'विम्टो साहब ! मुझे इस बात का अफसोस है कि साला देर से मरा—छुरी मारने म मुझसे चूक हो गई हाथ टेढा पडा—लेकिन वह भी उस साले का कसूर था—एकदम मुड गया—इस वजह से सारा मामला गडम हो गया—लेकिन मर गया—जरा तकलीफ के साथ, जिसका मुझे अफसोस है।'

आप स्वय सोच सकत है कि यह सुनकर मेरी प्रतिक्रिया क्या हुई होगी। अर्थात उसे यदि अफसोस था तो केवल इस बात का कि मरने वाले को जरा तकलीफ हुई थी।

मुकदमा चलना था—और ममद भाई उसस बहुत घबराता था। उसने अपने जीवन म कभी कचहरी की शक्ल तक न देखी थी। न जाने उसन इसस पहले भी कत्ल किए थे या नही, लेकिन जहा तक मुझे पता है वह मजिस्ट्रेट, वकील और गवाह के बारे मे कुछ नही जानता था, इसलिए कि इन लोगो म उसका कभी सरोकार नही पडा था।

वह बहुत चिंतित था—पुलिस न जब केस पश करना चाहा और तारीख नियत हो गई तो ममद भाई बहुत परेशान हो गया। अदालत म मजिस्ट्रेट के सामने कसे हाजिर हुआ जाता है, इस बारे म उसे कुछ मालूम नही था। बार बार अपनी कटीली मूछो पर उगलिया फेरता था और मुझसे कहता था— विम्टो साहब ! मैं मर जाऊगा, पर कचहरी म नहीं जाऊगा—साली मालूम नही कैसी जगह है?'

अरब गली म उसके कई मित्र थे। उन्होंने उसे ढाढस बधाया कि मामला सगीन नही है। कोई गवाह मौजूद नही, एक केवल उसकी मूछें है जो मजिस्ट्रेट के दिल म उसके विरुद्ध कोई विरोधी भाव उत्पन्न कर सकती हैं।

जैसा कि मैं इसस पहल कह चुका हू, उसकी केवल मूछें ही थी जो उसको भयावह बनाती थी—यदि यह न होती तो वह किसी पहलू स भी

'दादा' दिखाई न देता।

उसने बहुत सोचा। उसकी जमानत थाने म ही हो गई थी, अब उसे कचहरी म पश होना था। मजिस्ट्रेट से वह बहुत घबराता था। ईरानी के होटल मे जब मेरी उसकी मुलाकात हुई तो मैंन महसूस किया कि वह बहुत परेशान है। उसे अपनी मूछो की बडी चिन्ता थी, वह सोचता था कि यदि मूछो के साथ वह कचहरी मे पेश हुआ तो बहुत सम्भव है, उसको सजा हो जाए।

आप समझते हैं कि यह कहानी है, लेकिन यह वास्तविकता है कि वह बहुत परेशान था। उसके समस्त शिष्य हैरान थे—इसलिए कि वह कभी हैरान परेशान नही हुआ था। उसे अपनी मूछो की चिन्ता थी क्यो कि उसके कुछ अभिन्न मित्रो ने उसस कहा था—'ममद भाई! कचहरी मे जाना है तो इन मूछो के साथ कभी न जाना—मजिस्ट्रेट तुमको अन्दर कर देगा।'

और वह सोचता था हर समय सोचता था कि उसकी मूछो ने उस आदमी को कत्ल किया है या उसन—लेकिन वह किसी परिणाम पर नहीं पहुच पाता था। उसन अपना खजर, मालूम नहीं जो पहली बार लहू म डूबा था या इसस पहले कई बार डूब चुका था, अपने नेफ म निकाला और होटल के बाहर गली म फेंक दिया।

मैंन आश्चय से उसस पूछा ममद भाई! यह क्या?'

'कुछ नहीं विम्टो भाई—बहुत घोटाला हो गया है—कचहरी मे जाना है—यार दोस्त कहते हैं कि तुम्हारी मूछें देखकर वह जरूर तुमको सजा देगा—अब बोलो क्या करू?'

मैं क्या बोल सकता था? मैंने उसकी मूछो की ओर देखा जो सचमुच भयानक थी। मैंन उससे केवल इतना कहा, 'ममद भाई बात तो ठीक है—तुम्हारी मूछें मजिस्ट्रेट के फैसले पर जरूर असर डालेंगी—सच पूछो तो जो कुछ होगा, तुम्हारे खिलाफ नहीं, तुम्हारी मूछो के खिलाफ होगा।

'तो मैं मुडवा दू?' ममद भाई न अपनी चहेती मूछो पर बडे प्यार से उगली फेरी।

मैंने उससे पूछा, 'तुम्हारा क्या खयाल है ?'

मेरा खयाल जो कुछ भी है, वह मत पूछो—लेकिन यहा हर किसी का यही खयाल है कि मैं इन्हे मुडवा दू—वह साला मजिस्ट्रेट मेहरबान हो जाएगा। तो मुडवा दू बिम्टो भाई ?'

किंचित विलम्ब के बाद मैंने उससे कहा—'हा, अगर तुम मुनासिब समझते हो तो मुडवा दो—कचहरी का मामला है और तुम्हारी मूछें सचमुच बडी भयानक है।'

दूसरे दिन ममद भाई ने अपनी मूछें—अपने प्राणो से प्यारी मूछें मुडवा डाली क्योकि उसकी इज्जत खतरे मे थी, लेकिन केवल दूसरो के मशविरे पर !

मिस्टर एफ० एच० टेल की कचहरी मे उसका मुकद्दमा पेश हुआ। ममद भाई मूछो के बिना पेश हुआ। मैं भी वहा मौजूद था। उसके खिलाफ कोई गवाह मौजूद नही था। लेकिन मजिस्ट्रेट साहब ने उसको गुडा सिद्ध कर 'तडी पार' अर्थात प्रात छोड देने का दण्ड दे दिया। उसे केवल एक दिन मिला था जिसमे उसे अपना सब कुछ समेट बटोरकर बम्बई छोड देना था।

कचहरी से निकलकर उसने मुझसे कोई बात न की। उसकी छोटी-बडी उगलिया बार बार ऊपर के होठ की ओर बढती थी लेकिन वहा एक बाल तक न था।

शाम को जब उसे बम्बई छोडकर कही और जाना था मेरी उसकी मुलाकात ईरानी के होटल म हुई। उसके दस-बीस शिष्य आस पास की कुर्सियो पर बैठे चाय पी रहे थे। जब मैं उससे मिला तो उसने मुझसे कोई बात न की। मूछो के बिना वह बहुत भद्र पुरुष दिखाई दे रहा था लेकिन मैंने महसूस किया कि वह बहुत दुखी है।

उसके पास कुर्सी पर बैठकर मैंने उससे कहा, 'क्या बात है ममद भाई ?'

उसने उत्तर मे एक बहुत बडी गाली भगवान जाने किसको दी और कहा, 'साला अब ममद भाई ही नही रहा।'

मुझे मालूम था कि उसे प्रात छोडने का दण्ड दिया जा चुका है। मैंने

कहा, 'कोई बात नहीं ममद भाई—यहां नहीं तो किसी और जगह सही।'

उसने समस्त जगहों को अनगिनत गालियां दीं—'साला—अप्पन को यह गम नहीं—यहां रह या किसी और जगह रह—यह साला मूछें क्या मुंडवाई।' फिर उसने उन लोगों को जिन्होंने उसको मूछें मुंडवाने का मशविरा दिया था, एक करोड गालियां दीं और कहा, 'साला अगर मुझे 'तडी पाड' ही होना था तो मूछों के साथ क्यों न हुआ।'

मुझे हंसी आ गई—वह लाल भभूका हो गया—'साला तुम कैसा आदमी है क्रिस्टी—हम सच कहता है खुदा की कसम—फांसा लगा देते पर यह बेवकूफी तो हमने खुद की आज तक किसीसे नहीं डरा था साला अपनी मूछों से डर गया।' यह कहकर उसने अपने मुंह पर दोहत्तड मारा और चिल्लाकर बोला, 'ममद भाई, लानत है तुझ पर—साला—अपनी मूछों से डर गया—अब जा अपनी मां के'

और उसकी आंखों में आंसू आ गए जो उसकी मूछों से खाली चेहरे पर कुछ विचित्र दिखाई देते थे।

०००